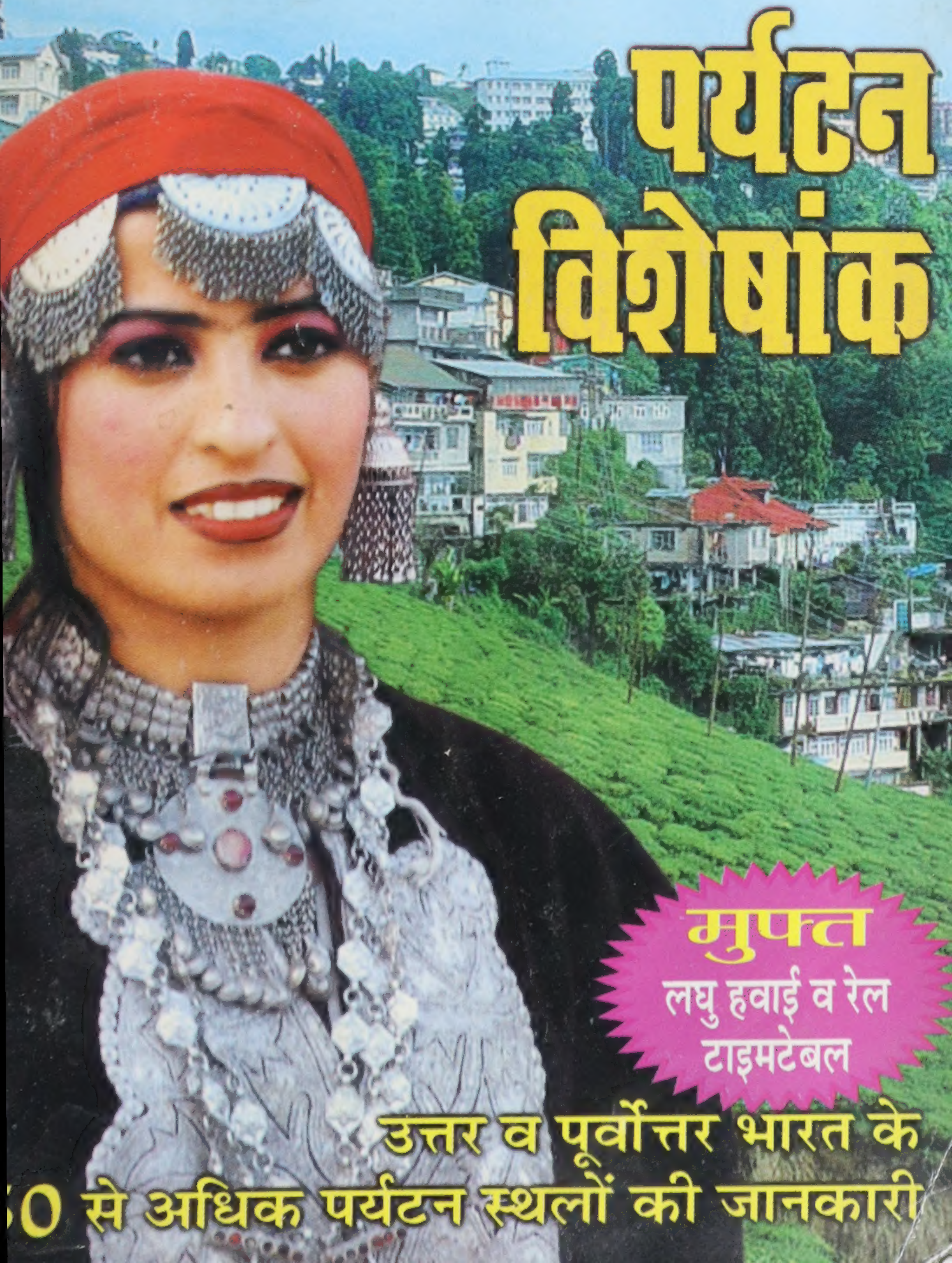
अप्रैल (प्रथम) 2006, रुपए 23.00

सरिता



पर्यटन विशेषांक

मुफ्त
लघु हवाई व रेल टाइमटेबल

उत्तर व पूर्वोत्तर भारत के
0 से अधिक पर्यटन स्थलों की जानकारी

संपादक
प्रकाशक
परेश नाथ

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

सरिता

अंक : 1223 अप्रैल (प्रथम), 2006

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

लेख

पर्यटन परिशिष्ट

कथा साहित्य

स्तंभ



कविताएं



मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय

दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
फोन : 51398888, 23529557, 23529562, 51540004, फैक्स : 23625020, 51540714.

अन्य कार्यालय : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 6577845.** जी-3, निचली मंजिल, एच.वी.एम. कोर्ट, 21 कनिंघम रोड, **बेंगलूर-560052. फोन : 2267233.** 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **मुंबई-400021. फोन : 22022409-22025492.** पोद्दार पाइंट, तीसरी मंजिल, 113 पार्क स्ट्रीट, **कोलकाता-700016. फोन : 22298981, 22175315.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 28554448, 28412161.** 122, चिनौय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 27896947, 27841596.** बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 2618856.** 111, आशियाना टावर्स, ऐग्जिबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 2685286.** जी-7, पायनियर टावर्स, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 2371537.** सी-12 (ग्राउंड फ्लोर), महाराणा प्रताप नगर, जोन-I, **भोपाल-462011. फोन : 2573057.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लिमिटेड, ए-36, साहिबाबाद, गाजियाबाद व दिल्ली प्रेस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली में मुद्रित एवं ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

वार्षिक मूल्य : केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लिमिटेड' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. नहीं.

विदेशों में मूल्य : हवाई डाक से.

वार्षिक : 45 अमेरिकी डालर, 2 वर्ष 80 अमेरिकी डालर, 3 वर्ष 110 अमेरिकी डालर.

ISSN 0971-1538

वर्ष : 61, अंक : 7

मूल्य : यह प्रति 23 रुपए, वार्षिक : 400 रुपए, दो वर्ष : 700 रुपए, तीन वर्ष : 1000 रुपए

वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.

सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतला, तेजपुर, इंफाल, दीमापुर, करीमगंज, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

आप के पत्र



सरित प्रवाह, फरवरी (द्वितीय)

सरित प्रवाह के अंतर्गत संपादकीय टिप्पणी 'क्यों गायब हुईं 1 करोड़ लड़कियां' पढ़ी. आप के विचार एकदम सटीक हैं. भले ही हम कितने भी आधुनिक क्यों न हो गए हों पर लड़की को बोझ समझने की मानसिकता से हम अभी भी नहीं उबर पाए हैं.

इस में संदेह नहीं कि लड़कियों को गर्भ में ही दफन करने में आज का शिक्षित मध्यम वर्ग सब से आगे है. धर्म के नाम पर इन लड़कियों के प्रति क्रूरता सभ्य देश का नागरिक होने की पहचान नहीं.

दहेज के नाम पर लड़की को मारने की मानसिकता तो है ही, 'वंशवृद्धि के लिए लड़का होना जरूरी है नहीं तो पितृ ऋण कैसे चुकेगा?' यह सोच भी लड़कियों की कमी का प्रमुख कारण है. हमें धर्म, मजहब की ओछी मानसिकता से बाहर आ कर लड़की को एक मानव की तरह अपनाना चाहिए क्योंकि इस के बगैर सृष्टि का संचालन संभव नहीं है.

– छैलबिहारी शर्मा 'इंद्र'

*

संपादकीय टिप्पणी 'पियो शराब करो बेईमानी' पढ़ी. यह एकदम सही है कि सिगरेट पर प्रतिबंध के साथ शराब को भी प्रतिबंधित करना चाहिए क्योंकि शराब भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है.

हर साल नकली और जहरीली शराब पीने से देश भर में हजारों लोग मौत के शिकार होते हैं. शराब को प्रतिबंधित न करने के पीछे सरकार को शुद्ध व्यापारिक सोच है. आज देश भर में शराब के वितरण पर सरकार की मोनोपोली है. इस से प्राप्त होने वाली आमदनी को सरकार नजरअंदाज नहीं कर सकती. देश के नागरिकों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने से सरकार भी नहीं चूकती है.

–मनमोहन भाटिया

*

बाबाओं की दुकानदारी को बढ़ावा

बाबा रामदेव के बारे में 'नारद बना मीडिया' शीर्षक के अंतर्गत फरवरी (द्वितीय) अंक की बाक्स सामग्री मीडिया का सटीक चित्रण करते हुए पाठकों की आंखें खोलने वाली है. रामदेव के बारे में राजनेताओं व सामाजिक संस्थाओं ने जैसा शुतुर्मुर्गीय रवैया अपनाया है वह भ्रमित व कायर जनमत का एक नमूना है.

जहां तक मीडिया की बात है तो उस की जिम्मेदारी लोगों को निष्पक्ष और सही सूचनाएं देने की होनी चाहिए न कि बाबाओं की दुकानदारी चमकाने की. इस बारे में आप की सार्थक टिप्पणी के लिए धन्यवाद.

यदि पूरा मीडिया सचाई के साथ खड़ा होता तो रामदेव जैसे नीमहकीम को मुंह दिखाते शर्म आती. सरकारें एक ओर तो नीमहकीमों को गिरफ्तार कर के दंडित कर रही हैं, दूसरी ओर अशिक्षित, बिना डिग्रीधारी को राजस्थान सरकार ने दसियों एकड़ जमीन मुफ्त में दे कर राजस्थान की जनता के हितों पर कुठाराघात किया है.

– सोहन सिंह भदौरिया

*

आलोचकों से डर क्यों?

लेख 'धंधे की पोल : धर्म पर हमले का सहारा' पढ़ा. तथ्यों से भरा हुआ यह लेख हमारे मस्तिष्क को झकझोरने के

लिए काफी है.

धूर्तों का काम समाज को ठगना है. धूर्तता कोई आसान कार्य भी नहीं क्योंकि पकड़े जाने पर दंड भी मिलेगा. यदि इस में भगवा रंग मिला दिया जाए तो यह काम बहुत आसान हो जाता है और पकड़े जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता. अगर कोई पकड़ने का दुस्साहस करे तो धर्मभीरुओं द्वारा उस का गला दबा दिया जाता है.

बाबा रामदेव अपनी योग विद्या के बल पर समूचे भारत को निरोग करने के लिए कटिबद्ध प्रतीत होते हैं पर अपने आलोचकों से इतना डर क्यों? वाह बाबा, क्या तर्क है. जो आप की आलोचना करे वही बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एजेंट हो गया.

सदियों से जब संक्रामक बीमारियों से लाखों लोग मर रहे थे तब आप का योग क्या कर रहा था? असाध्य बीमारी तो दूर की बात, पोलियो, चेचक, खसरा जैसे रोगों से आप हमें निजात दिला सकते हैं?

अब तो भ्रमित झारखंड सरकार स्कूली पाठयक्रम में योग शिक्षा सम्मिलित करने वाली है. सभी छात्र और शिक्षक अपनीअपनी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ कर समाधि का आनंद लेंगे. वाह, योग.

–सैनाथ महतो

*

विज्ञापन एक धोखा है

लेख 'शादी के विज्ञापन' फरवरी (द्वितीय) पढ़ा. शादी के विज्ञापनों और माल बेचने के विज्ञापनों में कोई खास फर्क नहीं है. आम विज्ञापनों में बढ़ाचढ़ा कर कहा जाता है और ग्राहक धोखा खाता है. शादी के विज्ञापनों को भी धोखा ही समझें क्योंकि इस में भी दहेज के झूठे केस चलते हैं और शादियां अंततः टूट जाती हैं.

वर्ष 2004 में एनडीए सरकार ने विज्ञापन कंपनियों की मदद से नारे लिखवाए और वह हार गई. झूठ बोल कर आप एक बार दूसरे को मूर्ख बना सकते हैं, बारबार नहीं. झूठ बोलना तलवार के घाव की तरह है. घाव तो भर जाएगा परंतु उस का निशान सदा बना रहेगा. इसी कारण आजकल कोई मित्र या रिश्तेदार शादी का रिश्ता कराना पसंद नहीं करता क्योंकि झूठ के कारण दोनों तरफ से ही जूते पड़ने का भय रहता है.

–इंदर गांधी

*

एड्स पीड़ित और समाज

कहानी 'तुम्हीं ने दर्द दिया है' फरवरी (द्वितीय) पढ़ी. यह वास्तविकता के बहुत करीब थी. एड्स के बारे में कम जानकारी ही लोगों में गलतफहमी पैदा करती है जिस से एड्स पीड़ित व्यक्ति और उस के परिवार को भारी कष्टदायक स्थिति से गुजरना पड़ता है.

सरित प्रवाह, फरवरी (द्वितीय)

संपादकीय टिप्पणी 'पियो शराब करो बेईमानी' अति सामयिक है. वास्तव में सिगरेट व शराब दोनों ही दुर्व्यसन हैं और इन से बच कर ही आम आदमी प्रगति के पथ पर बढ़ सकता है.

देश का यह दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता के बाद यह सब आदर्श कथन संविधान में लिखा ही रह गया है. यहां अन्य देशों का हवाला देते हुए शराब पीना आम बात हो गई है.

दिल्ली के सभी इलाकों में शराब की दुकानें खुल रही हैं और सड़कों पर आदमी शराब पीते देखे जा सकते हैं.

वास्तव में शराब की बिक्री से होने वाली आमदनी से कहीं अधिक नुकसान परिवार टूटने से होता है. अतः सरकार को चाहिए कि इस ओर प्रभावी कदम उठाए.

–विद्या सागर

उलझनें आपकी समाधान हमारे

प्रश्न : मै 23 वर्षीय अविवाहित लडकी हूँ। मेरे वक्ष (स्तन) बहुत ही छोटे है। मेरी शादी होने वाली है। इस कारण मेरे अन्दर हीन भावना आ रही है। आप कोई क्रीम का सुझाव लिखें। **सरीता, पुरी**

उत्तर : अपने वक्षों (स्तन) को सुन्दर बडे और कसावदार बनाने के लिये **2Much Breast Cream** प्रिन्स फार्मा कम्पनी की प्रतिदिन रात को सोने से 2 घंटे पहले लगातार आधा घंटा मालिश करें।

प्रश्न : मेरी उम्र 35 वर्ष है। बेटा होने के बाद मेरा वजन बढ़ता जा रहा है। मै कम से कम 10 किलो वजन कम करना चाहती हूँ। क्या मै आपके Slimmer Capsule खा सकती हूँ। **मीनाक्षी, पाठना**

उत्तर : आप Prince Pharma कम्पनी के **Slimmer Cap.** रात को सोने से पहले 2 इक्टठे गरम पानी से खायें। नाश्ते व खाना खाने के बाद गर्म पानी पिये। तली हुई, मीठी चीजें, मांसाहारी चीजो का परहेज रखे। बॉयवादी वाली चीजें कम खाये।

प्रश्न : हम 25 वर्षीय लड़की हूँ। मेरे बाल बहुत ही अधिक मात्रा में सफेद होते जा रहे है। रूसी के कारण, अब तो बाल भी झड़ने शुरू हो गये है। आयुर्वेदिक तेल लिखें। **प्रीति, मुजफ्फरपुर**

उत्तर : आप प्रतिदिन रात को सोने से पहले **2 Much Hair Oil (Prince Pharma)** कम्पनी का अपने बालो की जड़ों में अच्छी तरह लगाये। सिर एक ही प्रकार के साबुन व शैम्पू से धोये।

प्रश्न : मै 38 वर्ष का युवक हूँ। मुझे पिछले 3 वर्षो से शुगर की तकलीफ है इन्सुलिन भी लेता हूँ। अंग्रेजी दवाईयां खाकर परेशान हो चुका हूँ। क्या मै आपके Diamin Capsule का प्रयोग कर सकता हूँ। **विकास, जब्बलपुर**

उत्तर : आप अपनी शुगर की बीमारी के लिये **Diamin Capsule (Prince Pharma)** कम्पनी के एक सुबह खाली पेट और एक शाम को 5 बजे पानी से लगातार खा सकते है। मीठे, मांसाहारी चीजे और शराब का परहेज रखें।

प्रश्न : डा० साहब मेरी उम्र 21 वर्ष है। मै पिछले दो वर्ष से अनियमित माहवारी से पीड़ित हूँ। कृप्या इस समस्या का कोई आयुर्वेदिक समाधान बतायें। क्या यह रोग पूर्णतया ठीक हो सकता है? **चन्द्रवती, राँची**

उत्तर : आप अपनी माहावारी को नियमित करने के लिए प्रिंस फार्मा कम्पनी के **MENSAF cap.** एक सुबह एक शाम को लगातार दूध के साथ खाये। चावल, खटाई, गरम मसालों का परहेज रखें।

प्रश्न :नारी के अंग की सुडोलता और उसका आर्कषण प्राचीन युग से ही देखने को मिलता है। नारी सौन्दर्य उसके वक्षों में ही झलकता है। मेरे वक्षों की आयुनुसार ग्रोथ बहुत ही कम है उनका विकास नहीं हो रहा है। मार्च माह में शादी होने के कारण मै बहुत चिन्तित हूँ। सुझाव लिखें। **शिउली, आजमीर**

उत्तर : आपने जो लिखा वह सही है। पर आपका यह अब कोई समस्या नही है। इन सभी बातो को ध्यान मे रखकर **2Much Breast Cream** का प्रिन्स फार्मा कम्पनी ने निमार्न किया। आप इसे सुबह और शाम को लगाकर आधा घंटा मसाज करें।

प्रश्न :मेरे पति 30 वर्षीय है। उनके बाल काफी अधिक मात्रा में टूट रहे है सिर मे बाल कम होने के कारण गंज पड़ती जा रही है। आगे का माथा भी काफी चौड़ा हो गया है। इससे उनकी उम्र भी अधिक नजर आने लगी इसका प्रभाव उनकी सुन्दरता पर भी पड रहा है। शीघ्र परामर्श दें। **नन्दीनी, नवलगढ़**

उत्तर : आप अपने पति के बालो की समस्या के लिये **2Much Hair Oil** प्रिन्स फार्मा कम्पनी का प्रतिदिन हल्के हाथो से उनके सिर मे लगावे। सिर एक ही प्रकार के साबुन या शैम्पू से धोये।

प्रश्न : मेरे बेटे को Piles (बावासीर) की बीमारी पिछले दो माह से हो गई है। इस बीमारी के कारण शौच के समय उसको Blood (खून) बहुत जाता है। इससे वह बहुत कमजोर और रंग पीला पड़ता जा रहा है। अंग्रेजी दवाईयाँ वह खाता नही आयुर्वेद मे सलाह दे। **अर्पिता, जब्बलपुर**

उत्तर : आप अपने बेटे को Piles (बावासीर) के लिये Prince Pharma कम्पनी के **Pilrid Capsule** 2इक्टठे सुबह खाली पेट छाछ या कच्ची लस्सी के साथ दें। गर्म मसाले, गर्म चीजें, मांसाहारी चीजो और शराब का परहेज रखें।

प्रश्न :डा० साहब मै 20 वर्षीय छात्रा हूँ। मेरे आधे सिर मे हर समय दर्द रहता है और यह दर्द कान मे चीसे मारकर कंधो तक आ जाता है। जिससे कंधे भी दर्द करने लग जाते है, उल्टियाँ लग जाती है, चक्कर आते है, आँखें नही खुलती। प्रभावशाली उपचार लिखें। **मलय, पाठना**

उत्तर : आपको यह माइग्रेन की समस्या है। आप अपनी माइग्रेन की समस्या के लिये **Migro-2 Cap.** प्रतिदिन एक शाम को Fresh Air मे सैर करने के बाद ताजे दूध से 2 माह लगातार खायें। उड़द की दाल का परहेज रखें।

वैद्धिक परामर्श के लिये लिखें या मिलें।
प्रात: 9 बजे से सांय 5 बजे तक
(रविवार बन्द रहेगा)

Mkt. by **Pripha Pharma**, Ludhiana
Mfd. by **Prince Pharma**, Kailash Cinema Chowk,
P. Box No. 425, Ludhiana. Ph. : 0161-5547958



सम्पूर्ण नारी की पहचान
सुन्दर और सुडोल वक्ष

महिलाओं
का आकर्षण

छोटे वक्षों को बढ़ाने के लिये

ढीले वक्षों के कसाव के लिये



Pripha

नोट : सभी मैडीकल स्टोर पर उपलब्ध है।

2 Much(TM)
Breast Cream

पता: Mkt. by Pripha Pharma, Ludhiana

Mfd. by Prince Pharma, P Box No 425, Ludhiana, Ph : 0161-5547958

इस कहानी में बच्ची व उस के मातापिता पर समाज द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर क्या बीतती है इसे बहुत ही रोचक ढंग से पेश किया गया है और सचमुच ही पीड़ित व्यक्ति के साथ समाज द्वारा ऐसा ही व्यवहार किया जाता है. लोग इसे छुआछूत की बीमारी ही ज्यादा समझते हैं. दिल्ली प्रेस की पत्रिकाओं में कहानियां जनजीवन से ज्यादा जुड़ी हुई होती हैं.

–सरिता चंद 'सरु'

*

वृद्धों का मार्गदर्शन

'सरिता' के दिसंबर (प्रथम) 2005 अंक में किसी पाठक ने देश में चल रहे वृद्धाश्रमों की जानकारी चाही थी. जिस के बारे में आप ने हमारे आश्रम 'मानव सेवा समिति, 57-58 दिव्य कृपा, मानवपुरम, बरल द्वितीय, विजय नगर, जिला अजमेर (राजस्थान)' का उल्लेख किया था.

हमारे पास व्यक्तिगत तौर पर कई शहरों से भी पत्र आते हैं जिन्हें जानकारी दी जाती है. 'सरिता' के माध्यम से आप वृद्धों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, इस के लिए धन्यवाद.

–डा. जय प्रकाश गुप्ता

*

अपराधों की छानबीन आवश्यक

पश्चिम बंगाल में एक बैंक कर्मचारी ने 13 करोड़ रुपए का घपला कर लिया. आएदिन इस तरह के समाचार प्रकाश में आते हैं. जब ऐसे कर्मचारी को कानून से कोई सजा नहीं मिलती तो और लोगों का हौसला बढ़ता है. 'डेब्ट्स रिकवरी ट्रिब्यूनल' को ऐसे अधिकार मिलने चाहिए कि वह बैंकों में हो रहे आर्थिक अपराधों की छानबीन करे और सजा दे सके.

जनता के समक्ष आंकड़े प्रस्तुत होने चाहिए कि पिछले 5 सालों में बैंक कर्मचारियों द्वारा कितने करोड़ रुपए के घोटाले हुए और कितने कर्मचारी इस में सजा भुगत रहे हैं.

जाली दस्तावेजों के आधार पर ऐसी संस्थाओं और प्रतिष्ठानों को पैसा दे दिया जाता है जिन का कोई अस्तित्व ही नहीं है. बैंकों के वरिष्ठ अधिकारी तथा लीगल विभाग कैसे बिना जांच किए इन ऋणों को मंजूरी दे देता है, यह सोचने वाली बात है.

बैंक अपने कर्मचारियों को अच्छा वेतन, आवास तथा अन्य कई सुविधाएं प्रदान करता है. इस के उपरांत भी बैंक कर्मचारी गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं. इस की रोकथाम बेहद जरूरी है.

–प्रेम रतन जैन

*

लचर कानून व्यवस्था

भारत की कानून व्यवस्था एकदम लचर है. माडल जेसिका लाल की हत्या में शामिल हत्यारा इतने वर्ष बाद अंततः बरी हो गया. अदालत का कहना है कि सुबूत का अभाव है. तो क्या जेसिका ने खुद को गोली मारी? यदि अंगरेजों का शासन होता तो हत्यारों को जरूर सजा होती. भ्रष्टाचार में लिप्त इन न्यायाधीशों से सटीक न्याय पाना कोरी मूर्खता है. इस हत्याकांड की गहराई से छानबीन की जाए तो हत्या के सुबूत निश्चित तौर पर मिल सकेंगे और हत्यारा अवश्य पकड़ा जा सकेगा.

–एक पाठक

सरिता में प्रकाशित रचनाओं तथा अन्य सामयिक विषयों पर इस स्तंभ के लिए अपने विचार भेजिए. पत्र टाइप किए हुए या कागज के एक ओर स्पष्ट लिखाई में हों. कृपया पत्रों पर अपना पता अवश्य लिखें अन्यथा उन पर ध्यान नहीं दिया जाएगा. पत्र इस पते पर भेजिए :
आप के पत्र, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

सरित प्रवाह

सुप्रीम कोर्ट का एक ठोस फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने आखिर छोटे दुकानदारों के खिलाफ आम आदमी के हक को मान ही लिया. वर्षों पहले के फैसलों में सुप्रीम कोर्ट ने बारबार कहा था कि कारपोरेशनें सड़क पर सामान बेचने वालों को नहीं हटा सकतीं क्योंकि यह संविधान के अनुच्छेद 21 के जीवन व स्वतंत्रता के अधिकार के खिलाफ है. अदालत का मानना था कि अगर पैसा न होने के कारण जो दुकान न खरीद सके तो पटरी पर काम कर के वह अपना व अपने घर का काम तो चला ही सकता है.

इस तरह के फैसलों की आड़ में देश भर में पटरियों पर खूब दुकानें फलीफूलीं. उन के दुकानदारों को तो फायदा हुआ ही, उस से ज्यादा कमाई पुलिस और कारपोरेशनों के कर्मचारियों ने की. दुकानदार को मुफ्त में तो कोई बैठने नहीं देता. सब से वसूली होती है पर वह वसूली गई रकम सरकार की नहीं अफसरों की जेबों में जाती है.

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सरकार की जमीन लोगों के उपयोग की है और दुकानदार उस पर कब्जा नहीं कर सकते. दिल्ली में पटरियों और सड़कों को 30 दिन के भीतर खाली कराने का आदेश दिया गया है.

बढ़ते शहरीकरण की यह जरूरत है कि अब कदमकदम पर ढंग का अनुशासन लागू किया जाए ताकि एक आम आदमी चैन से जी सके. पटरी पर बैठा दुकानदार चाहे गरीब हो या न हो, वह सस्ते में सामान दे या न दे, वह शहरी का बहुत सारा समय यानी पैसा खा जाने के लिए जिम्मेदार है. शहरों में एक जगह से दूसरी जगह जाने में जो समय लगता है उस का आधा पटरियों के घेरे जाने के कारण है. जिन सड़कों पर पटरियां खाली होती हैं वहां भीड़ के समय भी वाहनों की गति तेज रहती है. पटरी वाले बैठे नहीं कि ट्रैफिक समस्या सिर पर खड़ी हो गई.

शहरों को गंदा रखने में ये पटरी वाले ही जिम्मेदार हैं क्योंकि इन को अपने आसपास गंद फैलाने में हिचक नहीं होती. इन के लिए शौचालय या कूड़ा फेंकने की जगह तो बनती नहीं है. इसीलिए ये आसपास की जगह को ही गंद फेंकने के लिए इस्तेमाल करते हैं. बहुत जगह तो गंदगी और खाना साथसाथ मिल जाता है. जरा से सस्ते खाने के नाम पर लोग खाने के साथ जहर भी निगलते रहते हैं.

पटरियां साफ होने पर दुकानदारों को अपनेआप रोजगार के नए अवसर मिलेंगे. वे भूखे नहीं मरेंगे. आज भी वे रिश्वत, चोरीचकारी, सूद आदि पर बहुत सा पैसा खर्चते हैं. पटरी पर दुकानदारी आसान लगती है, इसलिए लगाते हैं. अगर यह सुविधा नहीं होगी तो वे खुद जोर मारेंगे और सही जगह काम ढूंढ़ेंगे.

शहरों को इस से जो लाभ होगा उस की गिनती करना आसान नहीं. लाखों लीटर पेट्रोल और डीजल बचेगा. शहरों में प्रदूषण कम होगा. सड़कें साफ होंगी. दुर्घटनाएं कम होंगी. अब जमाना आ गया है कि थोथी बातों पर नहीं ठोस फैसलों पर काम किया जाए.

आतंकवाद से चमका धर्म का धंधा

वाराणसी के बम विस्फोटों ने यह बात पक्की कर दी है कि धर्म के नाम पर खूनखराबा समाप्त नहीं होगा, बढ़ेगा. हिंदू और मुसलिम दोनों तरफ के कट्टरपंथी धर्म के दुकानदारों के लिए यह खुशी की ही बात है और इसीलिए भारत में काफी आतंकवादी हमले मंदिरों में हो रहे हैं.

अलकायदा ने अमेरिका में हमला किसी चर्च पर नहीं किया था. वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन व्यावसायिक व सरकारी भवन थे. पश्चिमी देशों में धर्म स्थलों पर यदाकदा ही कुछ किया गया है क्योंकि वहां धर्म स्थल पर हमला कर के जनता को उकसाना आसान नहीं है.

यहां अयोध्या, अक्षरधाम, बाबरी मसजिद, संकटमोचन मंदिर, अमरनाथ यात्रा, स्वर्ण मंदिर जैसे धर्म स्थल आतंक का निशाना बन रहे हैं क्योंकि धर्म की दुकानदारी तभी चलती है. अब वाराणसी के हमलों के बाद इसलाम के नाम पर खूब चंदा जमा किया जा सकेगा. इसी तरह हिंदू धर्म को बचाने के नाम पर भी खूब तिजोरियां भरेंगी. यह धर्म का टैक्स जबरन नहीं होता पर दबाव ऐसा होता है कि लोग सरकारी टैक्स बचा लें पर धार्मिक टैक्स को जरूर खुद लंबी लाइन में लग कर देते हैं.

जिस को बचाने वाला, पालने वाला कणकण में मौजूद समझा जाता हो उस के दरवाजे पर लोग बारबार बिना किसी कारण मरें, आखिर यह कैसे हो रहा है और क्यों हो रहा है? जिसे सर्वशक्तिमान समझा जाता है उस की ही सुरक्षा के लिए करोड़ों खर्च किए जाएं और वहां ही लोग अपनी जानें दें. आखिर यह क्यों और कैसे होता है?

धर्म के नाम पर सदियों से लोगों को उकसाया जा रहा है और उन से न केवल पैसा वसूला जा रहा है बल्कि जान भी मांगी जा रही है. यह मानना पड़ेगा कि धर्म के प्रचारक इतने सफल हैं कि वे किसी तरह के सवाल भी पैदा नहीं होने देते और वाराणसी जैसे आतंकवादी हमले के बाद भी लोग भगवान की लाचारी को नहीं सरकार की कमजोरी को ही दोष देते हैं.

धर्म के नाम पर हो रहे खूनखराबे को बंद करना आसान इसलिए नहीं क्योंकि हर हमला दोनों धर्मों की दुकानदारी को नया दम देता है.

मुकरते गवाहों को सबक

बेस्ट बेकरी के मामले में बयान से मुकरने वाली जाहिरा शेख को 1 साल की कैद और 50 हजार रुपए के जुर्माने की सजा दे कर सुप्रीम कोर्ट ने अदालतों में मुकरते गवाहों को चेतावनी दी है. अब तक अदालतें समझती थीं कि यह गवाह का हक है कि वह कब सच बोले और कब झूठ क्योंकि वह गुनहगार तो है नहीं कि उस के सच या झूठ को पकड़ा जा सके. हमारे देश में अदालती आपाधापी का एक बड़ा कारण गवाहों का बातबात पर मुकरना ही है और अदालतें यदि मुकदमों को लंबे समय तक खिसकने देती हैं तो इसीलिए कि वे

समझती हैं कि गवाहों के मुकरने पर अपराधी तो छूट ही जाएंगे.

न्याय तभी संभव है जब अदालतों को जनता का पूरा सहयोग मिले. अगर मौके पर मौजूद गवाह डर कर या लालच में सच न बोले तो कानूनी ढांचा चरमराएगा ही.

गवाह केवल डर के कारण झूठ बोलते हों ऐसा नहीं है. जो डरते हैं वे पहले दिन भी पुलिस के सामने न आते. गवाह पहले दिन तो जोरशोर से हल्ला मचाते हैं पर जब अदालतों में उन्हें बारबार आना पड़ता है तो ढीले पड़ने लगते हैं. इस दौरान दोषी को भी सजा मिल रही होती है क्योंकि बहुत सारे मामलों में अदालतें जमानत ही नहीं देतीं. गवाह समझने लगते हैं कि अपराध किए जाने के 10-15 साल बाद किसी को सजा दिलाना कोई न्याय नहीं है. वे जब पूरी कानून व्यवस्था को अदालत की पेशियों के दौरान हृदयहीन और उदासीन देखते हैं तो खुद भी बदलने को तैयार हो जाते हैं.

वैसे भी किसी घटना के 10 साल बाद गवाह से बारीकी से जिरह की जाए तो वह गलतसलत बोल ही सकता है. जब पता चले कि पीड़ित खुद या उस के घर वाले भी चुप से हैं तो वह भी दोषी को छोड़ देने का मन बना लेता है. ऐसी हालत में थोड़ा सा लालच या थोड़ी सी धमकी ही काफी होती है उस का मन बदलने को.

अब जाहिरा शेख के मामले से अगर सुप्रीम कोर्ट एक नया संदेश निचली अदालतों और पूरी कानूनी प्रक्रिया को दे रही है तो अच्छी बात है पर अगर इस बदलाव के साथ अदालतों का बाकी रवैया न बदला तो पता चलेगा कि अपराध करने वाले तो पिसेंगे ही, गवाह भी कानूनी मशीन के शिकार बन जाएंगे. सुधार के नाम पर लाखों बेगुनाह अदालतों के चक्कर काटते नजर आएंगे.

ग्लोबल वार्मिंग से महाप्रलय का खतरा

अटलांटिक महासागर के उत्तर का ग्रीनलैंड आजकल वैज्ञानिकों की चिंता का कारण बन रहा है. विश्व के नक्शे पर बड़ा सा दिखने वाला यह द्वीप असल में लगभग समूचा ही बर्फ का बना हुआ है और कहींकहीं तो यह बर्फ 3 किलोमीटर ऊंची है. परेशानी यह है कि पिछले वर्षों में यह मौसम की गरमाहट की वजह से लगातार सिकुड़ रहा है और उस की बर्फ पानी बन रही है. अगर कहीं पूरा का पूरा ग्रीनलैंड पानी बन जाए तो समुद्र के पानी का स्तर 3 से 6 मीटर ऊंचा हो सकता है और यह फर्क सारे विश्व में तबाही मचा सकता है.

यद्यपि ऐसा होने में वर्षों लग सकते हैं पर वैज्ञानिकों को अभी से इस के कारण ढूंढ़ने में लगना पड़ रहा है. एक तरफ काफी लोग इस के लिए मानव को ही जिम्मेदार मान रहे हैं कि उस ने पेट्रोल पदार्थों का जो दुरुपयोग किया है उस के कारण मौसम गरम हो रहा है और उसी से ग्रीनलैंड की बर्फ पिघल रही है. पिछले 2-3 साल में यूरोप की भयंकर गरमी, सुनामी, कैटरीना जैसे तूफानों आदि के लिए भी बढ़ती पेट्रोल की मांग को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है.

ग्लोबल वार्मिंग आदमी की खुद की पैदा की गई है या यह प्रकृति की अपनी देन है, इस पर अभी तक वैज्ञानिक एकमत नहीं हैं. कुछ इसे भेड़िया आया भेड़िया आया मान रहे हैं. कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि साफ पानी के समुद्र में आने से उस का खारापन कम हो जाएगा और तापमान में

फर्क हो जाएगा, पर कैसा और कितना, यह अंदाजा लगाना आसान नहीं है.

विश्व के मौसम गरमाने का उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर क्या फर्क पड़ेगा, यह भी पक्का नहीं है. वहां की बर्फ पिघल सकती है पर यह भी संभव है कि तब बर्फ की ये चोटियां सूर्य की गरमी को सोख लें और गरमाहट कम हो जाए.

मौसम वैज्ञानिक धार्मिक प्रलय की बात करने वालों की तरह तो नहीं हैं पर सबकुछ फिलहाल इतना उलझा हुआ है कि कई बार वे पंडितों की तरह ही महाप्रलय की चेतावनी दे रहे हैं. इतना फर्क है कि पंडित प्रलय से बचाने के लिए दान स्वीकार करते हैं.

साबरमती में आग लगने का झूठसच

गोधरा में वर्ष 2002 में साबरमती एक्सप्रेस में जो आग लगी वह कोई साजिश नहीं थी, एक दुर्घटना थी. यह रिपोर्ट हमारी भजभज मंडली के लिए परेशान करने वाली है. इस दुर्घटना में अयोध्या से लौट रहे 59 कारसेवक मारे गए थे और गुजरात सरकार ने इस आग को मुसलिम कट्टरपंथियों की देन बताया था. इसी बहाने गुजरात में हिंदुओं को उकसा कर मुसलमानों की भारी संख्या में हत्याएं कराई गई थीं और कई सप्ताह तक गुजरात जलता रहा था. भाजपा मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी इस आग पर वोटों की रोटी सिकती देखते रहे थे.

इसी आग का असर था कि बाद में गुजरात विधानसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी ने जम कर परवेज मुशर्रफ को घसीटा था और 5 के 25 की कहानियां झूठ के थैलों से निकाल कर प्रसाद की तरह बांटी थीं. यह उन का प्रताप था कि हजार से ज्यादा हत्याओं के लिए शायद ही कोई सजा पाया था. अब कई साल बाद मुंबई में लगी अदालत ने बड़ौदा की बेस्ट बेकरी में की गई 14 हत्याओं के लिए 9 लोगों को दोषी ठहराया है.

साबरमती एक्सप्रेस में जो आग लगी थी उस पर पहले दिन से ही लोगों को शक था कि क्या खचाखच भरे स्टील के डब्बों में बाहर से आग लगाई जा सकती है. पेट्रोल या मिट्टी का तेल फेंकने या आग लगाने के लिए जो जगह चाहिए थी वह तो डब्बों में थी ही नहीं पर यह सच है कि अगर किसी झूठ को हजार बार बोला जाए तो वह सच बन जाता है. जो समाज यह मानता हो कि घी, पत्ते आदि जला कर वातावरण शुद्ध होता है और धुएं से हवा ताजा होती है, वह उन्हीं मुंहों से कही गई साबरमती एक्सप्रेस की आग की कहानी को गलत कैसे मानता.

न्यायमूर्ति यू.सी. बनर्जी की रेल मंत्रालय की दी गई रिपोर्ट पर भाजपाई व भजभजी खिन्न हैं पर अब फर्क नहीं पड़ता. यह पक्का है कि इस झूठ को फैलाने की सजा तो कोई किसी को देगा नहीं क्योंकि जब हत्याओं की सजा देने के लिए सुबूत न मिल रहे हों तो महज झूठ फैलाने के लिए सजा कैसे दी जा सकती है.

रही भक्तों की बात तो वे तो बहुत सारे झूठों का प्याला खुशीखुशी हर रोज ऐसे ही पीते हैं जैसे शंकर जहर का प्याला पी गए थे. अगर यह झूठ धर्म की रक्षा के लिए कहा जाए या सुना जाए तो यह पुण्य का काम होता है. धर्म को मानने वाले जब ईश्वर के झूठ को डकार रहे हैं तो आग लगने के झूठसच को भला कैसे जान सकते हैं? ●


बुश की
तरक्की के

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बुश की भारत यात्रा से हुए नफेनुकसान को ले कर सरकार और विपक्षी दलों में बहस चल पड़ी है. सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी बुश के साथ हुए समझौते को ऐतिहासिक और दूरगामी फायदे का बता रही है तो सरकार के ही सहयोगी, वाममोर्चा व समाजवादी पार्टी समेत विपक्षी, दल इसे अमेरिका के आगे झुकने व देश के स्वाभिमान को गिरवी रखने वाला करार दे रहे हैं.

कहा जा रहा है कि संप्रग सरकार ने भारत के परमाणु संयंत्रों को अंतर्राष्ट्रीय निगरानी के लिए खोल दिया है. देश को फिर से विदेशी कंपनियों के हाथों गुलाम बनाया जा रहा है. इस से देश फिर से अपनी संप्रभुता खो देगा.

यात्रा के दौरान भारतअमेरिका ने महत्त्वपूर्ण परमाणु समझौते के अलावा कृषि, विज्ञान और तकनीक, स्वास्थ्य व पर्यावरण सहित अनेक क्षेत्रों में आपसी सहयोग के लिए करार किया है.

विरोध करने वालों में कट्टर मुसलिम संगठनों ने भी दिल्ली, लखनऊ, हैदराबाद, कोलकाता आदि जगहों पर बुश विरोधी धरनेप्रदर्शन किए. वामपंथी दलों और समाजवादी पार्टी ने संसद में भी विरोध जाहिर किया है.

बुश 1 मार्च को अफगानिस्तान होते हुए 3 दिन की यात्रा पर भारत

भारत यात्रा

नए दौर की शुरुआत

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बुश की भारतयात्रा ने हमारे देश के लिए पश्चिम से विकास के नए द्वार खोले हैं. देश की तरक्की के नए विकल्प सामने आए हैं लेकिन अब सवाल यह उठता है कि देश में विकास की जो उम्मीद जगी है वह कितनी कारगर होती है.

आए थे. दोनों देश आर्थिक, सामाजिक व सामरिक महत्त्व के क्षेत्रों में सहयोग समझौते के इच्छुक थे पर सब से ज्यादा विवाद और आशंका परमाणु समझौते को ले कर थी क्योंकि अमेरिका भारत के परमाणु कार्यक्रम को परमाणु अप्रसार संधि के तहत पाबंद करने के लिए प्रयासरत था पर भारत इस के लिए तैयार नहीं था.

अमेरिका के विरोध के बाद भी भारत ने पोखरण परमाणु परीक्षण किए. नतीजतन अमेरिका ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए पर भारत ने इस की परवा नहीं की और अपना परमाणु कार्यक्रम जारी रखा.

इस परमाणु समझौते की बुनियाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पिछले साल जुलाई में अमेरिकी यात्रा के दौरान रखी गई थी.

अपने परमाणु निर्माण व संयंत्रों के बारे में भारत को कितनी स्वतंत्रता देनी है, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पहले ही तय कर लिया था. भारत के विदेश, रक्षा व परमाणु विशेषज्ञ अधिकारियों के साथ अमेरिक अधिकारियों ने लंबी जद्दोजहद की पर भारत अपनी तय सीमा से टस से मस नहीं हुआ. अमेरिका चाहता था कि भारत के तमाम परमाणु संयंत्र अंतर्राष्ट्रीय निगरानी के दायरे में आ जाएं.

आधिकारिक स्तर पर बात नहीं बनी तो हैदराबाद हाउस में आखिर दोनों देशों के प्रमुखों ने भारत के अनुरूप परमाणु समझौते सहित दूसरे करारों को मंजूरी दे दी. प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एक सप्ताह पहले ही संसद को भरोसा दे चुके थे कि परमाणु समझौते के तहत उन्हें किस हद तक रहना है. शिखर वार्त्ता में उन्होंने बुश से भी कहा कि वह अपनी संसद में दिए गए आश्वासन से आगे नहीं बढ़ सकते. आखिर बुश ने भारत की शर्तों को मानते हुए परमाणु समझौते को अपनी स्वीकृति दे दी.

क्या है परमाणु समझौता?

समझौते में प्रावधान है कि भारत अपने परमाणु संयंत्रों को सैन्य और असैन्य



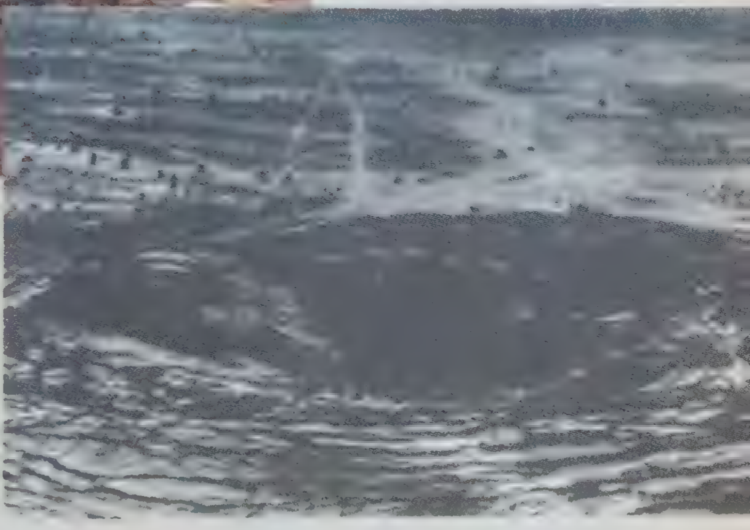


जार्ज बुश की भारत यात्रा का विरोध करते वामपंथी दल (ऊपर).

बुश के विरोध में कट्टरपंथी मुसलिम समुदाय (बाएं).



परमाणु समझौते के तहत भारत को अपने नाभिकीय हथियार बनाने के कार्यक्रम जारी रखने की पूरी छूट दी गई है : पोखरण में 1998 में किया गया परमाणु परीक्षण (बाएं) तथा 1974 में किया गया परमाणु परीक्षण (नीचे).



संस्थानों में वर्गीकृत करेगा. असैन्य परमाणु संयंत्र अंतर्राष्ट्रीय निगरानी के दायरे में होंगे. बदले में भारत को उच्च परमाणु प्रौद्योगिकी और यूरेनियम मिलेगा.

समझौते के तहत भारत को अपने नाभिकीय हथियार बनाने के कार्यक्रम जारी रखने की पूरी छूट दी गई है. इस के तहत भारत को केवल अपने परमाणु संयंत्र सायरस को बंद करना होगा जो 1954 से चल रहा है. इसे अंतर्राष्ट्रीय मानकों के लागू होने से पहले स्थापित किया गया था. भारत को अपनी इच्छानुसार ही अपने परमाणु संयंत्रों को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की निगरानी में देने का अधिकार मिला है.

इस में हमारे नागरिक परमाणु संयंत्रों को ईंधन आपूर्ति की गारंटी भी अमेरिका द्वारा दी गई है.

भारत अपने 22 में से 14 रिएक्टर्स को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु मानदंडों के लिए खोलने को तैयार होगा. देश के दोनों फास्ट ब्रीडर रिएक्टर निगरानी से बाहर रहेंगे. भारत में अभी 6 स्थानों पर 15 परमाणु रिएक्टर काम कर रहे हैं तथा 7 अन्य निर्माणाधीन हैं.

समझौते के तहत देश की गिनती अब न केवल विश्व के 6 बड़े परमाणु देशों में होगी, बल्कि उसे भरपूर मात्रा में परमाणु ईंधन भी मिलेगा. इस से बिजली का उत्पादन बहुत आसान हो जाएगा.

जानकारों का कहना है कि अगर इस समझौते पर अमल समुचित तौर पर हो जाए तो देश में बिजली संकट का निदान हो जाएगा.

अब तक भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम पिछड़ा रहा था. वर्ष 2000 तक 10 हजार मेगावाट परमाणु बिजली पैदा करने का लक्ष्य रखा गया था जो अब तक पूरा नहीं हो सका है.

दरअसल, भारत अपेक्षाकृत कम मात्रा में परिष्कृत यूरेनियम का उत्पादन करता है. इसलिए उसे परिष्कृत यूरेनियम से चलने वाले आयातित रिएक्टर के लिए

ईंधन की गारंटी भी चाहिए. हालत यह है कि दाबित भारी जल पर आधारित रिएक्टर्स के लिए प्राकृतिक यूरेनियम का भी अभाव है, जबकि वह उच्च क्वालिटी का भी नहीं है. साथ ही, वह अंतर्राष्ट्रीय बाजार के हिसाब से महंगा भी है.

इन परिस्थितियों में यह परमाणु समझौता भारत की ऊर्जा आवश्यकता की दृष्टि से अहम है. अभी भारत के ऊर्जा उपयोग में कोयला और हाईड्रोकार्बन का हिस्सा सब से ज्यादा है.

भारत ने अब तक परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं. यह पहला ऐसा देश है जो एनटीपी पर हस्ताक्षर किए बगैर ही परमाणु ऊर्जा संबंधी तकनीक अमेरिका व अन्य पश्चिमी देशों से हासिल करने में समर्थ होगा.

असल में बुश को इस समझौते के लिए अमेरिकी कांग्रेस की स्वीकृति लेनी पड़ेगी जो आसान नहीं है पर उन्होंने इस काम की जिम्मेदारी खुद अपने ऊपर ली है इसलिए भरोसा कुछ हद तक किया जा रहा है. यही नहीं स्वीकृति के बाद अमेरिका को अपने कानून में संशोधन भी करना होगा.

अंतर्राष्ट्रीय निगरानी के तहत अभी देश की कुल स्थापित परमाणु बिजली, क्षमता का 19 प्रतिशत है जिस के वर्ष 2014 तक 65 प्रतिशत हो जाने की उम्मीद है.



देश ने पहली बार 1974 में परमाणु परीक्षण किया था. इस के बाद 1998 में दूसरी बार परमाणु परीक्षण किया गया. इन परमाणु परीक्षणों का मकसद खुद को नाभिकीय शक्ति संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित करना था पर इतने सालों से चल रहे परमाणु अनुसंधान के बाद भी भारत को नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी.

इस के उलट विश्व के कई अन्य देश नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में कहीं ज्यादा आगे निकल गए. ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्हें दूसरे देशों का सहयोग मिला. भारत को यह सहयोग इसलिए नहीं मिला क्योंकि उस ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने से हमेशा इनकार किया. अगर भारत इस संधि पर दस्तखत कर देता तो उसे नाभिकीय ऊर्जा के लिए उपयुक्त तकनीक मिल जाती.

विपक्षी विरोध के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने संसद में साफ कह दिया कि देश के परमाणु कार्यक्रम किसी हाल में नहीं रुकेंगे. अंतर्राष्ट्रीय निगरानी में रखे नागरिक रिएक्टर्स के लिए ईंधन की निर्बाध आपूर्ति अमेरिका सुनिश्चित करेगा.

उन्होंने कहा कि फिलहाल देश के 22 में से 14 रिएक्टर्स को निगरानी में रखने का समझौता हुआ है जबकि भारत के नागरिक परमाणु रिएक्टर अंतर्राष्ट्रीय निगरानी में रखे जाएंगे. नई सामरिक परमाणु सुविधाएं बनाने पर पाबंदी नहीं होगी. यह भी भारत तय करेगा कि कौन सा रिएक्टर सैन्य है और कौन असैन्य.

विभाजन योजना के तहत वर्ष 20 से 2014 के बीच 22 में से 14 रिएक अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी निगरानी में आ जाएंगे. इन 14 रिएक्टर्स अभी चिह्नित किया जाना शेष है.



भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र : इस के दो रिएक्टरों को स्थायी तौर पर बंद करने का फैसला लिया गया है.

प्रधानमंत्री ने भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अहम बताते हुए कहा कि इस परिसर को अंतर्राष्ट्रीय निगरानी और दखलंदाजी से मुक्त रखने के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं. इसी मकसद से परिसर में स्थित 2 रिएक्टरों, 'सायरस' और 'अप्सरा' को 2010 में स्थायी तौर पर बंद करने का फैसला किया गया है.

इस महत्त्वपूर्ण परमाणु समझौते के अलावा कृषि क्षेत्र में 3 साल के गहरे सहयोग का जिक्र है जिस के तहत विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों के लिए वित्तीय पैकेज, कृषि शिक्षा के लिए व्यापारिक सहयोग और संयुक्त अनुसंधान व योजनाओं को अंतिम रूप देना शामिल है.

बुश ने अपने रुख में बदलाव लाते हुए संकेत दिया है कि वह यहां से ताजे फल, सब्जियां, दूध व पोल्ट्री उत्पादों के आयात पर लगे प्रतिबंध को हटाएंगे.

इस के अलावा प्रत्यक्ष निवेश को भी बढ़ावा दिया जाएगा. इस से अमेरिका से भारत में होने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि होने की संभावना है. दोनों देश शुल्कीय व गैरशुल्कीय बाधाओं या समस्याओं को शीघ्र दूर करने के लिए तैयार हैं. वित्तीय क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ाया जाएगा.

दोनों देशों ने एक द्विराष्ट्रीय विज्ञान व तकनीक आयोग बनाने का फैसला किया है. यह आयोग औद्योगिक शोध व विकास को बढ़ावा देगा.

दोनों नेताओं की शीर्ष बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान में कहा गया है कि परस्पर व्यापार व निवेश को और तेजी से बढ़ाने की जरूरत है. द्विपक्षीय आर्थिक रिश्ते बेहतर बनाने के लिए अमेरिका-भारत सीईओ फोरम की सिफारिशों को शीघ्रता से लागू करने पर भी सहमति बनी है. भारत और अमेरिका ने द्विपक्षीय बाधाओं को दूर करते हुए इसे 3 सालों में दोगुना करने का लक्ष्य रखा है.

दोनों देश ज्ञान आधारित उद्योग के क्षेत्र में मौजूदा अपार संभावनाओं का इस्तेमाल करने के लिए रजामंद हुए हैं. बौद्धिक संपदा अधिकार के मामले में भी दोनों देश संयुक्त रूप से कार्य करेंगे.

आतंकवाद के खिलाफ सूचनाओं के आदानप्रदान करने पर भी सहमति हुई है.

बुश ने आतंकवाद पर कहा भी कि भारत, पाकिस्तान और अमेरिका को आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होना चाहिए. हमें आतंकवाद की विचारधारा को हटा कर आशा और लोकतंत्र की

“ समाज को अमेरिका के प्रति अपनी पुरानी धारणा तोड़नी होगी”

-डा. नरेश कुमार



अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ सदस्य डा. नरेश कुमार ने अमेरिका से हुए समझौते को देश के सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र के लिए दूरगामी परिणाम देने वाला करार दिया है. सामाजिक क्षेत्र में इन समझौतों का क्या असर होगा, प्रस्तुत हैं, उन से हुई बातचीत के मुख्य अंश :

अमेरिकी राष्ट्रपति की यात्रा को ऐतिहासिक बताया जा रहा है?

इसे ऐतिहासिक कहने में कोई हर्ज नहीं है. बुश के साथ परमाणु, कृषि, व्यापार आदि क्षेत्रों में जो समझौते हुए हैं उन का निश्चित तौर पर भारत की बेहतरी पर असर पड़ेगा. अगर सही तौर पर अमल हुआ तो कुछ सालों के बाद देश बिजली जैसे संकट से मुक्ति पा सकेगा.

देश के किसानों के लिए कृषि संबंधी समझौता अच्छे नतीजे देने वाला होगा. भारत की खुशहाली का रास्ता गांवों की ओर से आता है. दोबारा से हरित क्रांति अमेरिका से आ रही है. आज हमारे किसानों के पास न साधन है, न सुविधा है. भारत के किसानों के लिए इस से एक नया रास्ता मिलेगा, जो किसानों के लिए भारी लाभदायक साबित होगा.

विचारधारा को सफल बनाना चाहिए.

दरअसल, भारत अमेरिका के सब से बड़े व्यापारिक साझेदारों में से है. दोनों देशों के रिश्तों का पिछले दशकों में इतिहास उतारचढ़ाव वाला रहा है. शीतयुद्ध के समय भारत को सोवियत समर्थक माना जाता था जबकि पाकिस्तान को अमेरिका के ज्यादा करीब समझा जाता था. लिहाजा, आज भी भारत के कुछ राजनीतिक दल और लोग अमेरिका को भरोसेमंद दोस्त मानने को तैयार नहीं दिखते हैं.

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पिछले दशक से दुनिया में भारी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक बदलाव आ रहे हैं. भारत हमेशा अतीत का दास बना रहा है. अपनी परंपराओं व संस्कृति के कुएं से निकलने को यह कभी तैयार नहीं था पर अब धीरेधीरे वह खुले आसमान में आया है तो उसे विकास की विस्तृत संभावना दिखाई दी हैं. दुनिया के ताकतवर देशों उस की अहमियत को पहचाना है.

विश्व को भारत में व्यापार की अप उम्मीदें नजर आ रही हैं पर देश में अभी कट्टरपंथी संकीर्ण सोच हावी है. भार दुनिया का सब से बड़ा लोकतंत्र है पर इ के अनुरूप आचरण उदार नहीं है.

भाजपा, वामपंथी और समाजवा पार्टी के विरोध में संकीर्ण मानसिक देखी जा सकती है. समाजवादी पार्टी ब को मुसलिम विरोधी मान कर देश भर विरोध जता रही थी. उस के विरोध जाहिर किया है कि वह अभी मजहबी स के संकीर्ण दायरे में कैद है. गुलामी का र अभी उस की नसों में व्याप्त है.

वामपंथी पूंजीवाद को स्वीकार या नहीं, अभी इसी उधेड़बुन में फंसे

परमाणु समझौते को किस रूप में देखा जाना चाहिए?

इस समझौते से भारत में ईंधन, बिजली व तकनीक की कमी दूर होगी. अमेरिका व दूसरे पश्चिम देश यूरेनियम के सब से बड़े उत्पादक देश हैं. इस से भारत को सस्ती व सुलभ आपूर्ति संभव हो सकेगी. यह वही अमेरिका है जिस ने कभी भारत को परमाणु परीक्षण के लिए दंडित किया था. अब वही यहां के विकास की गति को देख कर मजबूर हो गया है कि भारत की शर्तों पर समझौता करे.

देश में बुश की यात्रा का विरोध देखा जा रहा है? इसे आप किस रूप में देखते हैं?

जहां तक समाज के अध्ययन की बात है तो इस मिथ्य को तोड़ना होगा, यह धारणा खत्म करनी होगी कि अमेरिका धोखेबाज है या मित्रता के काबिल नहीं है. असल में अमेरिका जैसे देश के प्रति यह विरोध पुरानी रुसी का प्रतिरूप विरोध बन कर उभर रहा है. इस के पीछे राजनीतिक दलों व कुछ ओछी सोच वाले संगठनों के अपने स्वार्थ भी हैं. हमारी सामाजिक सोच अभी भी किसी तरह के बदलाव को स्वीकार करने में हिचक रही है पर पहले और आज के हालात में बहुत अंतर आ चुका है. सारी दुनिया बदल रही है इसलिए हमें भी अपनी पुरानी अवधारणाओं से मुक्ति पा लेनी चाहिए. बुश की बौडी लैंग्वेज बता रही है कि अब अमेरिका व भारत के रिश्ते बड़े भाई व छोटे भाई के बन चुके हैं. आज अमेरिका को भारत की जरूरत है. वह इराक, ईरान में उलझा हुआ है और उस का सुरक्षित ठिकाना ढूंढ़ना चाहता है. भारत भी उस की तरह आतंकवाद पीड़ित देश है, वह भारत के साथसाथ अपना भी हित देख रहा है. इस से भारत निश्चित तौर पर एशिया में मजबूत होगा.

भाजपा खुलेपन को स्वीकारने, न स्वीकारने के बीच हिचकोले खा रही है.

असल में यह कट्टरपंथियों का विरोध है क्योंकि बुश की नीतियां कट्टरता के खिलाफ हैं. कट्टरता चाहे धार्मिक हो या दूसरे विचारों की, हमेशा नुकसानदेह होती है. सब से पुराने लोकतांत्रिक देश के नेता बुश यों ही ताकतवर नहीं हैं.

भारत के लोकतंत्र में अभी खामियां हैं. भारत की धार्मिक, जातीय कट्टरता यहां समानता, एकता और तरक्की में सब से बड़ी बाधक है.

दरअसल, अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश की यात्रा ने भारत के लिए पश्चिम से विकास की रोशनी के नए द्वार खोले हैं. अतः इस यात्रा को दोनों देशों के रिश्तों के नए दौर के रूप में देखा जाना चाहिए.

बुश की यात्रा ऐसे समय हुई है जब दक्षिण एशिया समेत इसलामी देशों में एक मजहबी नायक के कार्टून मुद्दे को ले कर बुश व अमेरिका का भारी विरोध हो रहा है. पर तमाम विरोधों के बावजूद भारत के साथ हुए कई क्षेत्रों के करार ने भविष्य के लिए नई उम्मीदें जगाई हैं. देश को विकसित राष्ट्र बनने के लिए ऊर्जा शक्ति संपन्न बनना पड़ेगा.

देश की जनता को देखना चाहिए कि अमेरिका अपने यहां व्यापार, नौकरियां, सैरसपाटा तथा अन्य सामाजिक व आर्थिक मौके सहज उपलब्ध करा रहा है तो इस से लोगों को फायदा तो है ही, देश की तरक्की भी इस में निहित है. अमेरिकी राष्ट्रपति बुश यहां कोई धर्म प्रचार करने नहीं आए थे और उन की यात्रा से देश को फायदा होगा. ●



वाराणसी

मुद्दों की

लेख ● शैलेंद्र सिंह

वाराणसी में आतंकवादियों द्वारा किए गए बम धमाकों से देश की राजनीति में भी उबाल आ गया। धर्म की सीढ़ी के सहारे सत्ता तक पहुंची भारतीय जनता पार्टी के लिए तो यह वरदान साबित हो गया क्योंकि अयोध्या के राममंदिर को मुद्दा बना कर ही भाजपा ने पहली बार 1991 में उत्तर प्रदेश में बहुमत से सरकार बनाई थी। राममंदिर तो बन नहीं पाया उल्टे वहां खड़ा ढांचा जरूर गिर गया।

इस घटना के बाद उत्तर प्रदेश में भाजपा का जनाधार गिरता गया और 1998 तक आतेआते भाजपा को सत्ता तक पहुंचने के लिए कई दलों की बैसाखी का सहारा लेना पड़ा। इस के बाद जब प्रदेश में चुनाव हुआ तो वह तीसरे दरजे की पार्टी बन कर रह गई.

2004 के लोकसभा चु

बम धमाके

तलाश में जुटे नेता

में भाजपा की हार का एक बड़ा कारण यह था कि राम के प्रदेश में ही उस को वनवास मिल गया था. भाजपा इस सच को जानती है कि अगर देश में राजनीति करनी है तो उत्तर प्रदेश में जनाधार बढ़ाना होगा. यही कारण है कि राजनाथ सिंह को पार्टी का अध्यक्ष बनाया गया है.

राजनाथ सिंह वाराणसी के पास चंदौली के रहने वाले हैं. उन्हें लगता है कि वाराणसी की घटना से न केवल भारतीय जनता पार्टी को लाभ हो सकता है बल्कि खुद राजनाथ सिंह को भी लाभ हो सकता है. वाराणसी की इस घटना के बाद भाजपा के बड़े नेता लालकृष्ण आडवाणी ने 2 रथ यात्रा निकालने का ऐलान किया. इस रथ यात्रा को 'राष्ट्रीय एकता यात्रा' का नाम दिया गया है.

पहली रथ यात्रा की अगुवाई खुद लालकृष्ण आडवाणी करेंगे जो गुजरात से







संकटमोचन मंदिर पर पुलिस सिक्योरिटी : अपराधी को पकड़ने में नाकामयाब.

धार्मिक नगरी वाराणसी बम धमाकों से गूंज उठी और कई बेगुनाहों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा. धर्म की नुमाइंदगी करने वाली भाजपा व अन्य राजनीतिक दलों ने एक बार फिर इन धमाकों की आग में राजनीतिक रोटियां सेंकना शुरू कर दिया है. इस दुखद घटना पर राजनीतिक दलों के स्वार्थपरक रवैये को क्या उचित ठहराया जा सकता है?

चल कर बंगाल तक जाएगी. दूसरी रथ यात्रा कश्मीर से ले कर कन्याकुमारी तक जाएगी जिस की अगुवाई का जिम्मा पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह को दिया गया है. एकसाथ शुरू होने वाली इन यात्राओं का समापन एक ही जगह पर किया जाएगा. यही नहीं, भाजपा ने हिंदुओं की भावनाओं को भड़का कर वोट में बदलने के लिए ऐलान किया है कि हिंदू इस साल होली न मनाएं.

आप को याद दिलाते चलें कि राममंदिर को मुद्दा बनाने के लिए भी भाजपा ने राम रथ यात्रा का आयोजन लालकृष्ण आडवाणी की अगुवाई में किया था. इस का बहुत लाभ भाजपा को मिला था. अब देखना है कि रथ यात्रा रूपी 'काठ की हांडी' दोबारा आग पर चढ़ पाती है या नहीं.

वाराणसी शहर की संस्कृति की जब भी चर्चा होती है तब उस की खुशनुमा सुबह का नाम सब से पहले आता है. शायद य
कारण है कि वाराण
को लोग सुबहेबनारस
नाम से जानते हैं. 7 मा
2006 को भी बनारस
सुबह उसी अंदाज में
थी पर शाम होते ही
नजारा बदल गया
पूरी काशी नगरी बम
धमाकों से हिल गई. सब से प
धमाका संकटमोचन मंदिर परिसर
बज कर 15 मिनट पर उस समय
जब वहां पर कुछ शादियां चल रही
यह धमाका इतना जोरदार था कि
मंदिर की चूलें तक हिल गईं. कुछ
पहले तक मंदिर में बज रही शहनाई
में बदल गई. चारों तरफ खून ही खून
गया. मांस के लोथड़े दीवारों और फ
इस तरह फैल गए कि उन को चाद
बटोरना पड़ गया.

अभी संकटमोचन के धमाके
लोग समझ पाते कि वाराणसी

स्टेशन पर भी धमाका हो गया. 6 बज कर 35 मिनट पर हुए इस धमाके के समय वाराणसी से चल कर दिल्ली जाने वाली शिवगंगा एक्सप्रेस प्लेटफार्म नंबर 1 पर खड़ी हुई थी. यह धमाका स्टेशन के प्रथम श्रेणी यात्री प्रतीक्षालय के अंदर हुआ था. यहां यात्रा करने वालों के अलावा काशी हिंदू विश्वविद्यालय फाइन आर्ट के छात्र पेंटिंग बना रहे थे. धमाका इतना जोरदार था कि फर्श पर 15 इंच गहरा गड्ढा हो



मंदिर से लाशें ले जाते लोग : कितने ही घरों के चिराग बुझ गए.

गया. दोनों धमाकों में मरने वालों की तादाद 26 के करीब और घायलों की तादाद 100 के ऊपर थी.

इस से पहले वाराणसी शहर में कभी इतना शक्तिशाली बम विस्फोट नहीं हुआ था. इस बम धमाके में घायलों और मरने वालों की तादाद और भी बढ़ सकती थी क्योंकि आतंकवादियों ने एक बम गोदौलिया बाजार में भी रखा था. वह तो पायदान बेचने वाले पुल्लू नामक युवक ने शोर मचा कर यह खबर पुलिस तक पहुंचाई और वह तुरंत आ गई और बम डिस्पोजल करने वाली टीम को बुलाया गया.

इस बैग में ताला लगा था. पुलिस ने बैग का ताला तोड़ने के लिए एक बिजली मिस्त्री को बुलाया तो ताला तोड़ते वक्त अनजाने में उस से बम के टाइमर का तार भी कट गया. उस समय बम में लगी घड़ी में 6 बज कर 55 मिनट हो रहे थे जबकि टाइमर 7 बज कर 5 मिनट पर सेट था.

बम बैग के अंदर रखे खाना पकाने वाले नए कुकर में रखा था. कुकर को छिपाने के लिए उस के ऊपर सफेद नई चादर रखी गई थी. जाने अनजाने बिजली मिस्त्री के द्वारा वह तार कट गया जिस से बम फट नहीं पाया. इस के बाद बम को निष्क्रिय करने का काम उस दस्ते ने किया जो बम डिस्पोजल करने आया था.

जानकार लोगों का कहना है कि गोदैलिया सब से भीड़ भरा इलाका है और अगर यह ताकतवर बम यहां फट जाता तो यहां पर जानमाल का भारी नुकसान हो सकता था.

वाराणसी में बम धमाके के साथ आरोपप्रत्यारोप के दौर भी चल निकले. केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार को पहले ही सचेत किया गया था कि आतंकवादी इस

तरह की घटना को अंजाम दे सकते हैं. वाराणसी में युवक कांग्रेस के नेता शैलेंद्र पांडेय 'मधुकर' कहते हैं, 'कुछ दिन पहले एक बम धमाका वाराणसी में हो चुका था पर पुलिस प्रशासन इसे गैस सिलेंडर फटने की बात कह कर दबा गया था. वाराणसी के एसएसपी नवनीत सिकेरा कहते हैं कि इस मामले की जांच अब दोबारा कराई जाएगी और जो भी पुलिस वाला दोषी पाया जाएगा उस को दंड दिया जाएगा.

वाराणसी में बम विस्फोट की खबर मिलते ही केंद्रीय गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने वाराणसी जाने का मन बनाया तो कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी उन के साथ चलने को तैयार हो गईं. घटना की रात कुछ ही घंटे में सोनिया गांधी गृहमंत्री शिवराज पाटिल, उत्तर प्रदेश कांग्रेस प्रभारी अशोक गहलोत और वाराणसी के सांसद राजेश मिश्रा के साथ रात 1 बजे वाराणसी पहुंच गईं.

3 घंटे में घायलों से मिल कर और घटनास्थल को देख कर सोनिया वाराणसी से दिल्ली वापस आ गईं. सोनिया ने घटना पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह दुखद घटना है. राज्य के साथ मिल कर केंद्र घटना की तह तक जाने की कोशिश करेगा. सोनिया गांधी ने किसी भी तरह की टिप्पणी करने से इनकार कर दिया.



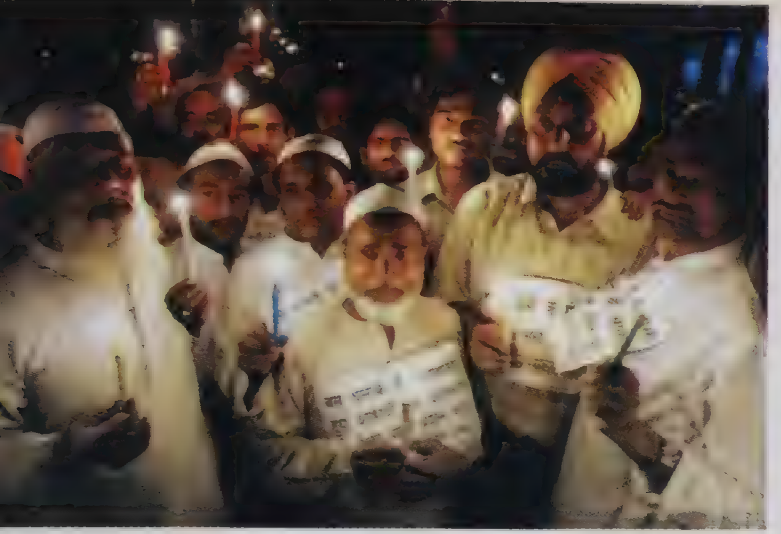
सोनिया गांधी के बाद तो दूसरे दलों के नेताओं में वाराणसी पहुंचने की जैसे होड़ सी लग गई. अपने पैर की तकलीफ भूल कर मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव भी वाराणसी पहुंच गए और संकटमोचन मंदिर के पुजारी को आश्वासन देते हुए मरने वालों को 5 लाख तथा घायलों को 1 लाख रुपए देने की घोषणा कर दी. इस के बाद भी बनारस के लोगों ने उन के काफिले पर न सिर्फ पथराव किया बल्कि उन को काले झंडे भी दिखाए. मुलायम सिंह यादव ने इस घटना के लिए पाक पोषित आतंकवाद को जिम्मेदार माना और घटना की जांच एसटीएफ (स्पेशल टास्क फोर्स) से कराने के लिए कहा है.

मुलायम सिंह यादव के बाद भाजपा नेताओं का वाराणसी जाने का सिलसिला ही शुरू हो गया. पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह, कलराज मिश्र, विनय कटियार और केशरीनाथ त्रिपाठी के साथ ही हिंदू युवावाहिनी चलाने वाले सांसद योगी आदित्यनाथ और विश्वहिंदू परिषद के नेता अशोक सिंहल भी वाराणसी आ गए. भाजपा से निकाली गई फायर ब्रांड नेता उमा भारती और सपा से निकाले गए सांसद राजबब्बर भी यहां आए.

एक बड़ी बात जो देखने में आ वह यह कि वाराणसी के लोग किस तरह के बहकावे में नहीं आए और घटन की रात से ही शहर सामान्य सा दिख लगा था. दूसरे दिन विद्यार्थी परीक्षा दे गए और बच्चे गलियों में क्रिकेट खेल नजर आए.

पुराने रंग में पुलिस की तफ्तीश

वाराणसी के बम धमाकों की घट



बम विस्फोटों के बाद वाराणसी के लोगों ने मोमबत्तियां जला कर सर्वधर्म शांति रैली का आयोजन किया.

भले ही बड़ी हो लेकिन पुलिस अपने पुराने रंग में ही जांच करती नजर आ रही है. जिस रात वाराणसी में बम धमाका हुआ उसी की सुबह गोसाईंगंज कसबे के पास स्पेशल टास्क फोर्स ने एक आतंकवादी को मार गिराया. एसटीएफ के अधिकारी राजेश पांडेय के मुताबिक यह आतंकवादी सालार उर्फ डाक्टर उर्फ सलीम के नाम से जाना जाता था और यह मध्य प्रदेश के रतलाम का रहने वाला था. पुलिस को इस की लंबे समय से तलाश थी. सलीम दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में आपराधिक वारदातें कर चुका था. यह लश्कर का एरिया कमांडर था.

दिल्ली में भी पुलिस ने 2 लोगों को मार गिराया. इन के पास से भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक सामग्री पाई गई. मारे गए लोगों में से पुलिस ने एक की पहचान गुलाम राजदानी के रूप में की है. वाराणसी की घटना के लिए पुलिस लश्कर, जैश और सिमी तथा उस से जुड़े आतंकवादी संगठनों को जिम्मेदार मान रही है. बम विस्फोट में मारे गए लोगों का पोस्टमार्टम करने वाले डाक्टर एस.के. त्रिपाठी बताते हैं कि मरे लोगों के शवों से आरडीएक्स, अमोनियम नाइट्रेट व फ्यूल आयल के अंश मिले हैं जो इस बात को साबित करते हैं कि मरने वाले बारूद से ही मरे हैं.

वाराणसी के एसएसपी नवनीत सिकेरा ने प्रत्यक्षदर्शियों के बताने के आधार पर आतंक- वादियों के हुलिए से मिलतेजुलते चेहरों का स्केच बना कर 6 मार्च को जारी किया तो इन स्केचों के आधार पर मिलतेजुलते चेहरों को हरदोई जिले में पुलिस ने पकड़ लिया. इन लोगों के नाम अंसार और सादिक बताए गए. ये लोग अपने को बिहार के रहने वाले बताते हैं. हरदोई के पुलिस अधीक्षक काशीनाथ सिंह बताते हैं कि ये लोग बोलचाल से कश्मीरी लग रहे हैं.

पकड़े गए लोगों का कहना है कि वह अपने साथियों के साथ चश्मा बेचने का काम करते हैं. पुलिस ने इन लोगों के अलावा इन के साथियों को भी पकड़ा है.

उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक यशपाल सिंह कहते हैं कि जो भी इस घटना का सुराग देगा उस को 1 लाख रुपए का इनाम दिया जाएगा. इस के पहले पुलिस अयोध्या में हुए बम विस्फोट के आरोपी को भी पकड़ चुकी है. उस से पुलिस को क्या पता चला होगा यह तो वह जानती होगी लेकिन अयोध्या के बाद वाराणसी में हुए बम धमाके बताते हैं कि पुलिस आतंकवादियों की योजना को जानने में असफल रही है. वाराणसी बम धमाकों की तफ्तीश में अगर पुलिस ने सही अपराधी को नहीं पकड़ा तो आतंकवादियों के मनसूबों पर पानी फेरना आगे भी आसान नहीं होगा. ●

संसद पर आतंकवादी हमले के बाद भारतपाक सीमा पर सेना को जिस तरह तुरतफुरत से तैनात किया गया उसे देख कर यही लगा था कि एक और युद्ध होने वाला है और देश सांस रोक कर इस काररवाई की प्रतीक्षा करता रहा पर युद्ध नहीं हुआ.

जाहिर है लोग यह तो सोचेंगे ही कि जो गरमी शिखर तक पहुंची थी वह बिना विस्फोट के शांत कैसे हो गई, तो इस का कारण 'कंट्रोलर एंड आडिटर जनरल की हाल ही में छपी रिपोर्ट में निहित है. उस में सुरक्षा मंत्रालय के काम करने के ढंग की जो कहानी छपी वह तो यही बताती है कि देश को खतरा किसी बाहरी संकट से नहीं अपने कर्णधारों की नालायकी से ही है. हालात के चलते यदि हम अपनी सेना को संघर्ष में झोंक देते तो आम लोग सोचने लगते कि

लेख ● डा. भाई महावीर

देश को खतरा

शत्रु से अधिक अपनी अक्षमता से



भारतीय सेना का यह दल किसी रामलीला में वानर सेना की भूमिका करने निकला था, भूल से इधर आ गया है.

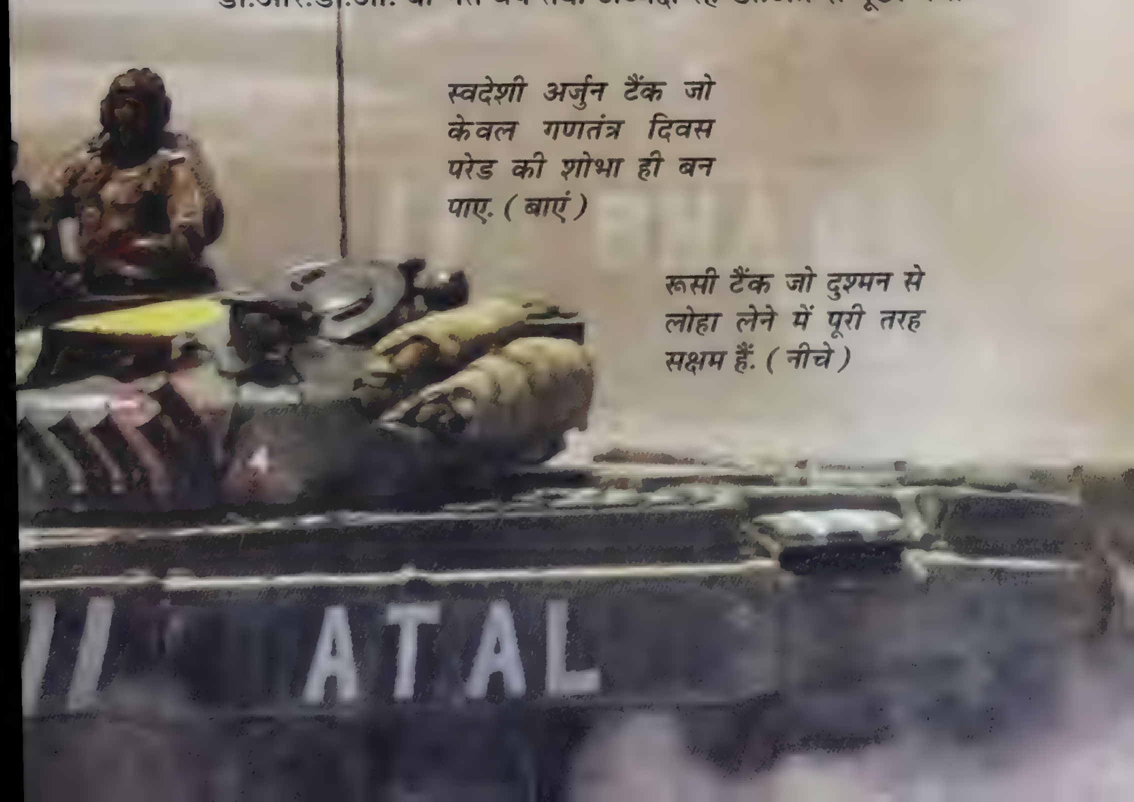
हर साल गणतंत्र दिवस पर परेड में हमारे सामरिक सामर्थ्य के पहलुओं अवरोधी और आक्रामक दोनों के प्रतीकों को सजधज के साथ दिखाया जाता है. स्वाभाविक प्रश्न यह है कि इन का घातक रूप भी उतना ही प्रभावशाली है जितना नयनाभिराम उन का दर्शन है, अथवा नहीं.

अर्जुन टैंक के निर्मित होने में 31 साल का लंबा समय लगने के बाद भी अभी तक देश का यह प्रमुख युद्ध टैंक तैयार नहीं है. इस की कहानी शैतान की आंत की तरह लंबी ही खिंचती चली जा रही है. अगस्त 2004 में रक्षा मंत्री प्रणव मुखर्जी ने 5 टैंकों की पहली खेप सेना को भेंट की थी किंतु मंत्रीजी अपने दलबल सहित उस स्थान से हटे ही थे कि वे टैंक तमिलनाडु स्थित अवाड़ी कारखाने में वापस भेज दिए गए.

'अर्जुन' के निर्माता डा. एम. नटराजन जब सुरक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ) के अध्यक्ष बने तो उन से पूछा गया कि क्या अर्जुन लड़ाई के मैदान के लिए तैयार (इंडक्शन रेडी) है? तो उन्होंने तपाक से उत्तर दिया, ''हां.'' लेकिन साथ ही उन्होंने अपनी 'हां' की एक नई व्याख्या भी कर दी कि वे आपरेशन इंडक्शन के लिए तैयार किए जा रहे है, यानी वे अभी तक 'सैरेमोनियल हैंडिंग ओवर' के लिए ही तैयार थे.

अर्जुन टैंक के बारे में कहा जाता है कि यह सूरतगढ़ और हनुमानगढ़ जैसे इलाकों में नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि वह इतना वजनी है कि पुल उस का वजन नहीं झेल सकेंगे.

डी.आर.डी.ओ. के गत वर्ष तक अध्यक्ष रहे डा.अत्रे से पूछा गया



स्वदेशी अर्जुन टैंक जो केवल गणतंत्र दिवस परेड की शोभा ही बन पाए. (बाएं)

रूसी टैंक जो दुश्मन से लोहा लेने में पूरी तरह सक्षम हैं. (नीचे)

गणतंत्र दिवस की परेड में अर्जुन और रूसी टैंकों का प्रदर्शन कर उन की सामरिक क्षमता का जम कर बखान किया गया लेकिन भ्रष्ट राजनीतिबाज और अधिकारियों ने मुनाफा कमाने के चक्कर में ऐसे टैंकों को खरीदा जिन का सामरिक दृष्टि से कोई महत्त्व ही नहीं है. देश की सुरक्षा का सारा जिम्मा सेना के ऊपर ही होता है तो आंतरिक सुरक्षा से खिलवाड़ क्यों?

तो कहने लगे, "हां, वह भारी तो है . उस के लिए हमें पुलों को मजबूत करना होगा,"

अर्जुन टैंक भारी ही नहीं है बल्कि उस की और भी कमियों की ओर सी.ए.जी. ने संकेत किया है, मसलन बंदूक की परिशुद्धता आदि.

1974 में अर्जुन की परियोजना शुरू हुई तो व्यय का अनुमान साढ़े 15 करोड़ था, अब वह 350 करोड़ रुपए हो गया है. स्वदेशीकरण के लिए सेना को 2000 में 124 अर्जुन टैंकों के लिए आर्डर देने को कहा गया पर सेना रूसी टैंकों को पसंद करती है जो 120 की संख्या में लिए जा चुके हैं और 190 के लिए आर्डर दिया गया है.

अर्जुन, रूसी टैंकों से भारी और महंगा है, आज भी उस के स्वदेशी होने का हाल यह है कि उस के 50 प्रतिशत अंश आयातित हैं. संसद की लोक लेखा समिति ने इस परियोजना का 26 सालों का लेखा देख कर 2000 में कहा था कि इस के विकास और उत्पादन में देरी का एक बड़ा कारण दोषपूर्ण प्रबंधन और पड़ताल रहा है. अब सेना द्वारा इस टैंक का इस्तेमाल केवल ट्रेनिंग में किए जाने की संभावना है.

लाइट काम्बैट एयरक्राफ्ट 1983 में मंजूर किया गया जो 'मिग' का स्थान लेने वाला था. 22 वर्ष बाद भी इस की संभावना पहले से ज्यादा दूर है जबकि इस पर सरकारी खजाने से 5,500 करोड़ रुपए व्यय किए जा चुके हैं. कारणों में अमेरिका द्वारा जनरल इलैक्ट्रिक के इंजन के निर्यात पर लगा प्रतिबंध बता दिया जाता है.

हमारे मिसाइलों में भी गर्व अनुभव करने के लिए कुछ नहीं है. त्रिशूल, आकाश, और नाग कुछ सफल रहे हैं पर 2,000 करोड़ रुपए के व्यय के बाद नौसेना को अपने फ्रिगेट ब्रह्मपुत्र के लिए 'जमीन से आकाश में मार करने वाले मिसाइल की जरूरत थी. यहां भी डी.आर.डी.ओ. के विफल रहने के कारण भारत को डा. कलाम के निर्ण[य] से इजराईल की बराक लेनी पड़ी.

एक सर्वेक्षण के बाद 'आउटलुक पत्रिका का निष्कर्ष था : यह है दुखड़ा डी.आर.डी.ओ. का, कोई इसे ठीक क्यों नहीं करता? कहते हैं हथियार बना[ने] वालों की लौबी बहुत शक्तिशाली है जब तक भारत अपनी जरूरतें आयात [से] पूरी करता है, उन का नफा ही नफा [है.] निर्यातक चाहते हैं कि विकासशील दे[श] आत्मनिर्भर न हों किंतु हथियार निर्यातक और बिचौलिए ही दोषी न[हीं] हैं, अधिक दोषी भ्रष्ट राजनीतिबा[ज] और सरकारी अफसर हैं जो रिश्वत ख[ाते] हैं और नाकारा डी.आर.डी.ओ. [उन्हें] माफिक आता है.

डी.आर.डी.ओ. की अक्षमता [की] कीमत केवल धन की भरपूर बरबादी [के] रूप में ही देश को नहीं चुकानी पड़[ती] बल्कि सेना के काबिल जांबाजों

अपनी जान की शहादत भी देनी पड़ती है. एक रोंगटे खड़े कर देने वाला उदाहरण पेश है :

पिछले साल फरवरी की एक सुबह को अभ्यास में विंग कमांडर रवि खन्ना ने जगुआर का नेतृत्व करते हुए बीकानेर से उड़ान भरी थी. कुछ मिनट में ही लक्ष्य को निशाने में लिया और बम छोड़ा पर सेकंड बीततेबीतते पाइलट और विमान एक उग्र विस्फोट में भस्म हो गए.



एक टैंक पर रखी देश में बनी 'आकाश' मिसाइल जिसे कुछ सफल पाया गया.

उस दुर्घटना के लिए जांच ने पहली बार डी.आर.डी.ओ. की पुणे प्रयोगशाला को अपराधी पाया जिस ने एफ.बी.आर.एन.फ्यूज को एक पुराने सोवियत डिजाइन की नकल कर के बनाया कि जिस में पहले ही एक दोष असुरक्षित 'संकेंतक' नहीं था और न ही उस के सेंसर काम कर रहे थे. पर यही फ्यूज वायु सेना एक हजार पौंड के सभी बमों में लगाती है.

डी.आर.डी.ओ. के निकम्मेपन का कारण साधनों की कमी नहीं, 14 हजार करोड़ के सालाना बजट और 51 'हाईटेक' प्रयोगशालाओं के रहते हुए भी यह स्थिति अपवाद नहीं, सामान्य नियम है. इस अवस्था का कारण जानने का किसी ने प्रयास नहीं किया. क्यों?

विज्ञान का छात्र न होते हुए भी मैं इस क्षेत्र की समस्याओं को जानने व समझने में लग गया, जब एक पुराने मित्र ने सहज बातचीत में कह दिया कि एक राष्ट्रीय परियोजना को भ्रष्टाचारियों ने 'बरबाद' कर दिया है. वह परियोजना मिसाइल के एक अंश-'इंफ्रारेडडिटेक्टर' को देश में बनाने की थी.

मिसाइल सोवियत रूस से आते थे और उस की आंई-डिटेक्टर भी वहीं से आते थे किंतु उस डिटेक्टर का जीवन केवल 6 महीनों का होता था जिस कारण साल में 2 बार आयात के लिए रूस जाना पड़ता था.

मिसाइल की दूरगामी उपयोगिता को देखते हुए इस के लिए सुयोग्य वैज्ञानिक की खोज हुई तो 'नासा' में कार्यरत भारतीय वैज्ञानिक डा. रमेश चन्द्र त्यागी मिले और देश को अपनी सेवा देने के लिए वह भारत आ गए तथा दिल्ली की एक भौतिकी प्रयोगशाला में काम भी करने लगे. कुछ समय बाद एक अन्य प्रोफेसर जैन भी अमेरिका से भारत आ गए.

इन वैज्ञानिकों को अपने कार्य में सफलता के संकेत मिलने लगे पर तभी उन्हें उस सरकारी प्रतिष्ठान में चल रहे भ्रष्टाचार की जानकारी भी मिली जिस की शिकायत उन्होंने तब के मंत्री गाडगिल और उन के वैज्ञानिक सलाहकार से की. बस फिर क्या था, उन के खिलाफ भ्रष्ट लोगों ने ऐसा षडयंत्र रचा कि इस ईमानदारी की उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी.

इसी भ्रष्टाचार का जिक्र 1976 में होने पर तत्कालीन रक्षा मंत्री जगजीवन राम द्वारा जांच करवाई गई थी तथा इस की पुष्टि भी हुई थी जिस के आते ही डा. त्यागी को तार द्वारा पुणे तबादला कर दिया गया.

विडंबना यह कि पुणे के अध्यापन संस्थान के अध्यक्ष ने ही ऐसे विद्वान की योग्यता का कुछ भी उपयोग करने में अपनी असमर्थता जाहिर की थी और 17 साल लंबी मुकदमेबाजी के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने डा. त्यागी के स्थानांतरण आदेश को अवैध तथा अस्तित्वहीन



लाइट कांम्बैट एअरक्राफ्ट : 1983 में इसे मिग का स्थान लेने के लिए मंजूर किया लेकिन सरकारी खजाने से करोड़ रुपए व्यय होने के बाद भी ऐसी कोई संभावना नहीं.

ठहराया था.

डा. त्यागी पहले और शायद एकमात्र रक्षा वैज्ञानिक हैं जिन्हें निलंबित करने के बाद बरखास्त किया गया और जिन्हें सर्वोच्च न्यायालय ने पुनः नौकरी पर बहाल किया क्योंकि उन का स्थानांतरण आदेश ही कपटपूर्ण था.

आश्चर्य तो यह है कि एक ऐसा व्यक्ति जिस ने फ्लैश इवैपोरेशन अटैचमेंट की खोज की, जो व्यापारिक उपयोग में आया है, जिस के लिए उसे हरिओम प्रेरित भटनागर अवार्ड मिला है. सेंट्रल प्रशासनिक अधिकरण को भी उन्हें न्याय देने में असमर्थ बना दिया गया, इस बहाने से कि हम ने अभी गवाहों को बुलाने के नियम नहीं बन[illegible] हैं.

सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक ब[illegible] डा. रमेश चंद्र त्यागी का मामला यह [illegible] बंद कर दिया था कि हम इस स्थिति [illegible] और कुछ करना नहीं चाहते -बिना [illegible] संकेत दिए कि कब करेंगे और कै[illegible] और अन्त में उन्हें फिर स्थापित किया [illegible] 17 अवैध निलंबन के वर्षों के लि[illegible] आधे के बजाय एक तिहाई वेतन [illegible] दिलवाया. सामान्य नियम से हट कर ज[illegible] उन्हें रिटायर किया गया तो यह खबर [illegible] टेलेक्स से दी गई.

प्रताड़ना की इस लंबी सूची [illegible] बाद, डा. रमेश चंद्र त्यागी ही हैं जो स[illegible] से डिगे नहीं, बिके नहीं. इस के अंश [illegible] तिकड़म और परेशानी का शिकार ह[illegible] पर कितने लोग आस्था पर टिके [illegible] जाते? इन को कितना कुछ झेलना प[illegible]

यह चुटकियों में अमेरिका जा [illegible] फिर आराम का जीवन हासिल [illegible] सकते थे, उन के लिए यह और भी स[illegible] था क्योंकि उन के दोनों बेटे अमेरि[illegible] के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक हैं पर उन्होंने स[illegible] से मुंह नहीं मोड़ा.

दूसरी ओर इन को परेशान क[illegible] वालों में प्रमुख प्रो.एम.जी. के मेनन [illegible] बारबार अदालती बुलावों के बाव[illegible] सामने नहीं आए, उन को पद्म विभू[illegible] का अलंकरण भी मिला और एक [illegible] राजनीतिक दल की सम्मानित सदस[illegible] भी.

भ्रष्ट सोच और अवसरवादित[illegible] कीचड़ में भी कोई कमल खिल स[illegible] है यह दिखाने वाले डा. त्यागी ही [illegible] किंतु प्रतिभा पलायन का दुखड़ा [illegible] वाले नेता बताएं कि आमंत्रित प्रतिभ[illegible] अपमान के दोषियों [illegible] इंफ्रारेडडिटेक्टर परियोजना की [illegible] करने वालों को दंड के बजाय सं[illegible] क्यों?

दिन दहाड़े

पिछली गरमियों की बात है. मेरी ननद तथा उस की बेटी आकांक्षा नागपुर से बिलासपुर जाने हेतु रेलगाड़ी में सफर कर रही थी. सीट पर बैठेबैठे जब वह दोनों थक गईं तो उन्होंने चप्पलें उतार कर पैर ऊपर कर सीट पर आराम से बैठ गईं.

तभी एक लड़का आया, जो पुराने कपड़े से झाड़ू लगा रहा था. सब की चप्पलें हटाहटा कर वह फर्श साफ करता जा रहा था तथा लोगों से पैसे भी लेता जा रहा था.

थोड़ी देर बाद जब आकांक्षा ने बाथरूम जाने के लिए चप्पल पहननी चाही तो वह गायब थी. वह लड़का उस पुराने कपड़े में लपेट कर चप्पलें भी ले गया था. दिन दहाड़े आंखों के सामने वह उन की चप्पल ले गया और पता भी नहीं चला. यात्रा के दौरान दोनों को नंगे पैर ही रहना पड़ा.

–इशू मूलचंदानी

मैं अपने पिताजी के साथ आगरा गई थी, लौटते समय हम ग्वालियर आने के लिए आटो में बैठ कर स्टेशन जा रहे थे. आटो वाले ने रास्ते में पिताजी के मना करने के बावजूद 2 महिलाओं, जिन के साथ एक छोटा बच्चा भी था, बैठा लिया. थोड़ी देर में महिला बोली कि बच्चे को धूप लग रही है, इसे बीच में बैठा लीजिए. पिताजी ने मना कर दिया, लेकिन मेरे कहने पर दया दिखाते हुए पिताजी ने उसे मेरे और अपने बीच बैठा दिया. बच्चे को दूध पिलाने के बहाने महिला ने आंचल फैला लिया और थोड़ी देर बाद उतर गई.

स्टेशन पहुंच कर जब पिताजी ने टिकट लेने के लिए जेब में हाथ डाला तो सारे रुपए नदारद थे. वह महिला मेरी दया के बदले बच्चे को दूध पिलाने की आड़ में दिन दहाड़े हम लोगों को ठग ले गई थी.

–बृजेंद्र कुशवाह

*

बात मार्च 2005 की है, जब सपरिवार श्रीनगर घूमने जा रहा था. पहली हवाई यात्रा होने के कारण हम सब उत्साहित थे. प्रातः 7 बजे की फ्लाइट होने के कारण हम लोग सवेरे साढ़े 5 बजे टैक्सी से पालम हवाई अड्डे पहुंचे.

एअरपोर्ट में प्रवेश करते, हमें बताया गया कि यह प्रवेश द्वार केवल निजी एअरलाइंस के यात्रियों के लिए है, इंडियन एअरलाइंस के यात्रियों के लिए प्रवेश द्वार पास में ही है.

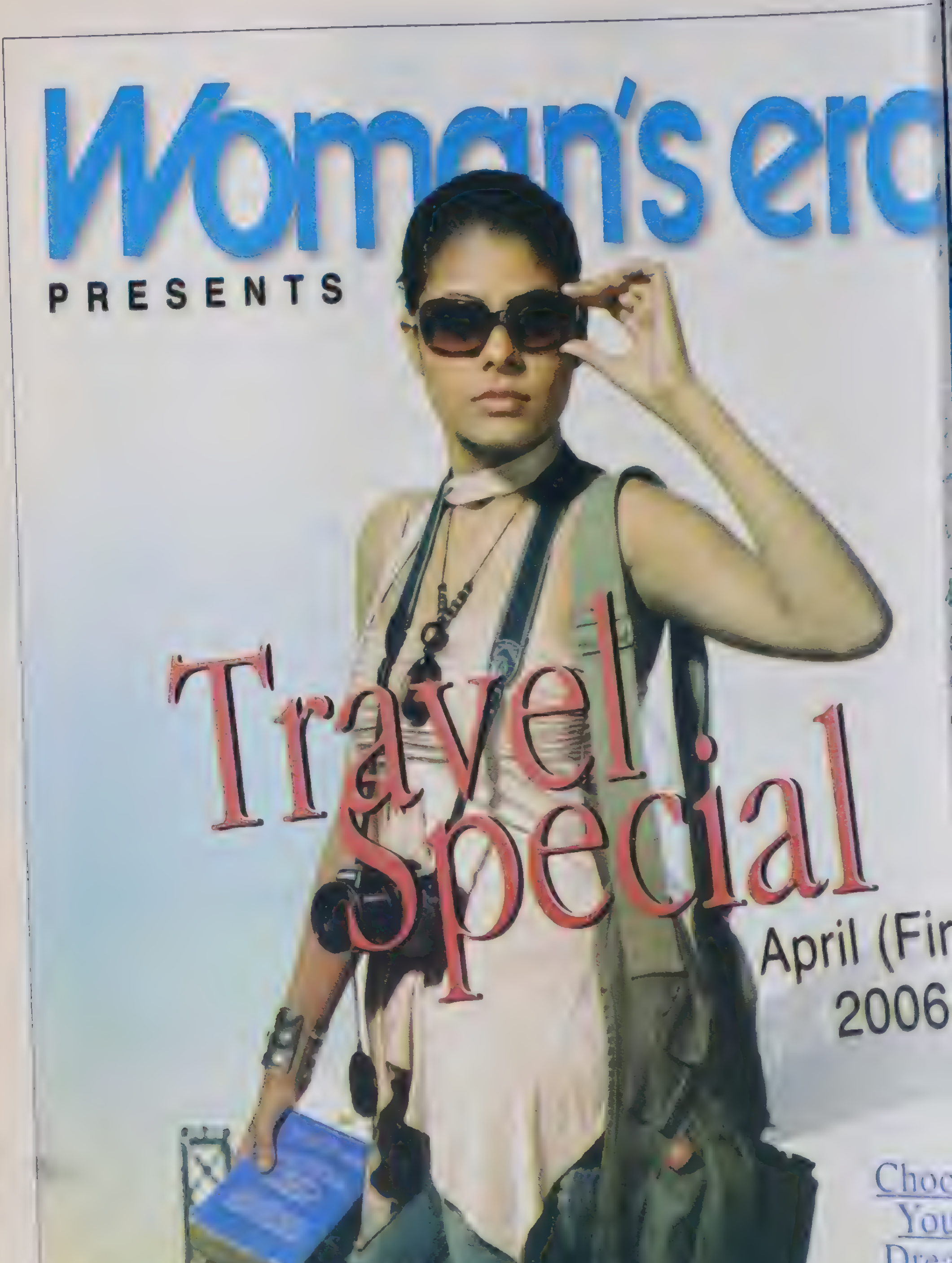
अभी हम कुछ सोचते कि तभी एक टैक्सी वाले ने कहा कि वह हमें सही जगह पहुंचा देगा जो लगभग ढाईतीन किलोमीटर दूर है और सिर्फ 100 रुपए लेगा. फ्लाइट छूटने के भय से हम जल्दी से टैक्सी में बैठ गए. टैक्सी ड्राइवर ने मुश्किल से 200 गज की दूरी पर हमें उतार दिया. वह ड्राइवर दिन दहाड़े हमें मूर्ख बना कर पूरे 100 रुपए ले गया.

–अशोक कुमार रायचंदानी ●

आप भी लिखिए

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित अनुभवों पर 100 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पता है :

सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.


PRESENTS
Travel Special
April
2006

एवियन फ्लू

मुरगी पालकों को अधिक खतरा

लेख ● डा. राजेश अग्रवाल



इन्फ्लूएंजा या एवियन फ्लू आर्थोमिक्सो वायरस की वजह से होता है. इस में श्वास के द्वारा संक्रमण फैलता है. इसे ड्रापलेट इन्फेक्शन कहते हैं. इस के वायरस का प्रकोप समय समय पर होता रहता है और इस के जीन्स बदलते रहते हैं. यही खास वजह है कि इस में मौत अधिक होती है. वायरस की 3 प्रजातियां एबीसी होती हैं. मुरगी पालन का काम करने वालों में इस वायरस का संक्रमण अधिक होता है.

लक्षण

सर्दी, खांसी, जुकाम, नाक बंद होना, बुखार, शरीर में दर्द, घबराहट, उलटी के साथ इस का प्रभाव 1 से 7 दिन तक रहता है. इस के अलावा गला खराब होना, चेहरा व आंखों का लाल होना आदि भी इस के लक्षण हैं.

उपचार

लक्षणों के आधार पर इस का उपचार किया जाता है. वैसे इस रोग की कोई भी शर्तिया दवा नहीं है. जहां बहुत अधिक लोग इस से प्रभावित होते हैं वहां एंटीवायरल दवाइयों का उपयोग किया जा सकता है.

उपचार के समय



मुरगी पालन करने वाले लोग मास्क, दस्ताने आदि का प्रयोग जरूर करें ताकि वायरस से बचाव हो.

चिकित्सक ध्यान रखें कि युवा मरीजों में एस्प्रीन का प्रयोग न करें क्योंकि कभीकभी रेयीज सिंड्रोम जिस में लीवर और मस्तिष्क ज्वर जैसे लक्षण (एनसिफेलोपेथी) हो सकते हैं, यह जानलेवा भी हो सकता है.

एवियन फ्लू का खतरा विश्व के अधिकतर देशों पर मंडरा रहा है. मुरगी पालकों को इस वायरस का संक्रमण अधिक होता है. अतः उन्हें बचाव की सब से ज्यादा जरूरत है.

गंभीर प्रभाव

वैसे तो यह वायरस जानलेवा नहीं होता लेकिन जिन व्यक्तियों की रोग प्रति- रोधकक्षमता कम होती है उन में यह जानलेवा भी बन सकता है.

सायनस की अवस्था में नाक, कान में पस पड़ना, फेफड़ों, हृदय और मस्तिष्क की झिल्ली पर सूजन (पैरी कार्ड
मायोकार्डटिस आदि) से मरने वाले
एवियन फ्लू से पीड़ित हो सकते
व्यक्ति के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्ष
कम होने की वजह निम्न हैं. जैसे, मधु
एड्स, क्षय रोगी, स्टीरौयड ले रहे
(श्वास या चर्म रोग से पीड़ि
ट्रांसप्लांट किया गया व्यक्ति जो इ
सप्रसेंट ले रहा होता है, रक्त कैंस
रोगी और समय से पहले पैदा हुए ब

बचाव

- रोगी यदि मुंह पर कपड़ा रख
खांसी और छींक के साथ व
हवा में नहीं बनेंगे तथा संक्रमण
फैलेगा.
- मुरगा मुरगी से संबंधित पकवान
से पका कर खाएं.
- मुरगियों को मारने से इस समस्
हल नहीं है बल्कि मुरगियों को
से ज्यादा नुकसान की आशंक
है.
- मुरगी फार्म पर कार्य कर रहे
को मास्क, दस्ताने, ट
रोकथाम के लिए प्रदान ह
सकती हैं.
- टीके का प्रयोग करें.

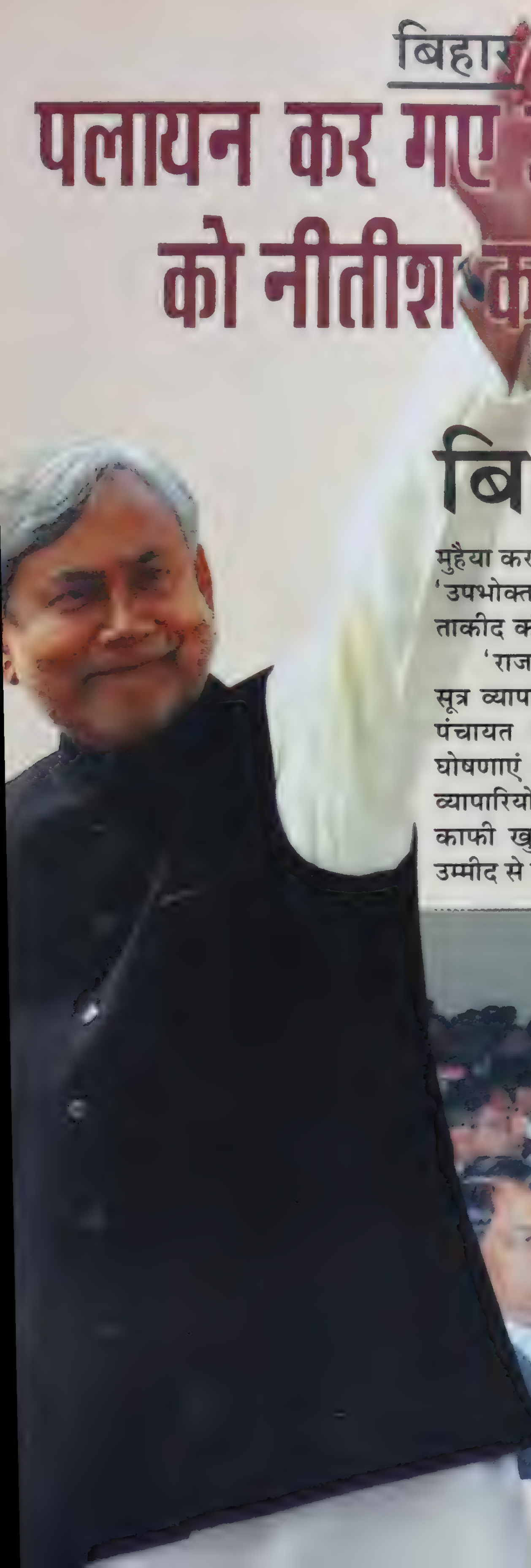
बिहार

पलायन कर गए उद्योगपतियों को नीतीश का न्योता

लेख ● सीटू तिवारी

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने व्यवसायियों और उद्योगपतियों को हरसंभव सुविधाएं और सुरक्षा मुहैया कराने का वचन देते हुए उन्हें बिहार को 'उपभोक्ता नहीं उत्पादक राज्य' बनाने की ताकीद की.

'राजस्व बढ़ाइए, सुविधाएं पाइए' का सूत्र व्यापारियों को देते हुए मुख्यमंत्री ने वैट पंचायत में ताबड़तोड़ मगर 'प्रासंगिक' घोषणाएं कीं. सरकार की इस पहल से व्यापारियों और उद्योगपतियों का तबका काफी खुश है और उन की इस खुशी को उम्मीद से दोगुना कर रही है राज्य के लोगों की





खुशी. राजनीति में रुचि रखने वाले बिहार के लोग इतना तो जानते ही हैं कि व्यवसाय में गति और नए उद्योगों की स्थापना विकास की गारंटी है.

बिहार चैंबर्स आफ कामर्स के महासचिव एन.के. ठाकुर का कहना है, ''ऐसा पहली बार हुआ है जब मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री ने लगातार 6-7 घंटे बैठ कर व्यापारियों से बातचीत की और उन की परेशानियों को सुना. यह सकारात्मक कदम है और मैं समझता हूं कि देश में पहली बार किसी मुख्यमंत्री ने ऐसा किया है.''

आज का जो बिहार है उस में कृषि पर आधारित उद्योगों की भारी संभावनाएं हैं. यह देखते हुए ही सरकार चीनी मिलों

लगता है बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राज्य के विकास के प्रति दृढ़संकल्प हैं. इसीलिए वह राज्य से पलायन कर गए उद्योगपतियों को पुनः बिहार में अपने उद्योग स्थापित करने का न्योता दे रहे हैं. अब देखना यह है कि मुख्यमंत्री की यह पहल राज्य के चहुंमुखी विकास में कितनी कारगर होती है?

पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है. एक मोटे अनुमान के मुताबिक एक चीनी मिल प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 1 लाख लोगों को रोजगार देती है. दूसरी संभावना लघु उद्योगों को ले कर है. बिहार प्रदेश लोक समिति से जुड़े त्रिपुरारी शरण का कहना है कि बिहार के लोगों को आर्थिक विकास का अपना मौडल विकसित करना होगा. अब जरूरत इस बात की है कि हर परिवार को आर्थिक इकाई मान कर लघु उद्योगों का विकास किया जाए.

कुछ इसी तरह की बात बिहार महिला उद्योग की अध्यक्ष पुष्पा चोपड़ा भी कहती हैं जो पिछले 10 सालों से महिला उद्योगों को उस की पहचान दिलाने के आंदोलन चला रही हैं. पुष्पा कहत ''विकास के लिए हम सब को एक ले कर चलना होगा. सरकार को कम अधिक समय की योजनाएं अपने हा लेनी होंगी. फिलहाल तो सरकार का जोर कम समय वाले उद्योगों पर चाहिए क्योंकि इस प्रदेश को आज इ जरूरत है.''

नीतीश सरकार को पता है कि उद्योगों की स्थापना के बाद भी राज्य तरक्की का रास्ता आसान नहीं है. इस सरकार अभी से 'एडवांस्ड एक्शन मूड में आ गई है. प्रदेश के उपमुख सुशील कुमार मोदी ने वैट पंचायत साफ कर दिया उन का पहला उद्दे राज्य में 'ट्रेडर फ्रें माहौल' बनाना गौरतलब है कि कुछ सालों में ही से 10 हजार व्य पलायन कर चुके

मुख्यमंत्री भी विकास में के महत्त्व को जा इसलिए वह हैदराबाद में आय अप्रवासी सम्मेलन में खुद गए थे. पहले भी नीतीश बिहार कैड अधिकारियों के लिए दिल्ली में आयोजित कर चुके हैं ताकि बि योजनाएं सुचारु रूप से चल सकें ही वह उद्योगपतियों से बारबार य रहे हैं कि आप पूंजी लगाइए, शुरू कीजिए, सरकार आप क सुरक्षा की गारंटी देती है.

हालत यह है कि बिहार चैंबर कामर्स और इंडस्ट्रीज के फो घनघनाने शुरू हो गए हैं. एन राजीव रंजन शिक्षा के क्षेत्र में करना चाहते हैं. हाजीपुर औद्योगि

से जुड़े पुराने लोग अपनी माटी में वापस आना चाहते हैं.

प्रदेश का वित्तीय ढांचा बुरी तरह चरमराया हुआ है. हर साल बिहार सरकार अपने कर्मचारियों को वेतन और पेंशन देने के लिए 12 हजार करोड़ रुपए उधार लेती है जबकि सिर्फ 2,400 करोड़ रुपए सरकार सेल्स टैक्स के तौर पर वसूलती है. उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने व्यापारियों और उद्योगपतियों को साफ बता दिया है कि राजस्व में बढ़ोतरी ही उन की तरक्की की अहम शर्त है.

सरकार ढांचागत सुविधाओं को ले कर भी खासी संजीदा है. इस में भी सरकार का ध्यान सब से ज्यादा सड़कों पर केंद्रित है. बिहार में जब भी सड़क निर्माण का काम शुरू होता है, उस से जुड़े लोगों को रंगदारी की समस्या से दोचार होना पड़ता है.

निर्माण कार्यों में कोई परेशानी न आए इस के लिए मुख्यमंत्री ने यह घोषणा कर दी है कि राज्य सरकार अपने खर्च पर ही एक बटालियन केंद्रीय सशस्त्र बल की लेगी.

एक मुद्दा वैट को ले कर भी है. सरकार 2006 तक सेंट्रल सेल्स टैक्स को 4 से 2 फीसदी और बाद में शून्य करने की घोषणा कर चुकी है जबकि इस समय सरकार, कई ऐसी चीजें हैं जिन पर वैट या फिर वैट की ज्यादा दरें व्यापारियों से वसूल रही है, जो दूसरे राज्यों में टैक्स फ्री हैं या घटी दरों पर हैं. मसलन, पेट्रोलडीजल पर लगने वाले टैक्स बिहार में ज्यादा हैं, फुटवियर पर यहां 12.5 फीसदी टैक्स लगता है जबकि दूसरे राज्यों में सिर्फ 4 फीसदी, सरकार ने साफ किया है कि वैट में परिवर्तन लाया जाएगा और सरकार की हरसंभव यही कोशिश रहेगी कि व्यापारियों और उद्योगपतियों पर ज्यादा बोझ न लादा जाए. और इस की शुरुआत उपमुख्यमंत्री की घोषणा से हो चुकी है. सुशील कुमार मोदी यह घोषणा कर चुके हैं कि 5 लाख से कम के टर्नओवर वाले व्यापारियों को वैट से मुक्ति मिलेगी.

राज्य की फिजा बदलने की कोशिशें हो रही हैं, फिजा में फर्क भी महसूस हो रहा है. जातिगत सम्मेलनों से परे पटना में अब विकास की बातें होने लगी हैं. विकास आगे बढ़े धरातल पर उतर सके इस के लिए जरूरी है नागरिक और सरकार के बीच एक मजबूत व समझदार गठजोड़ की.

सरकार की घोषणाएं

- ट्रेडर फ्रेंडली माहौल बनाने की कोशिश.
- वैट में अपेक्षित बदलाव.
- अगले साल तक 6 कंप्यूटराइज्ड चेकपोस्ट का निर्माण.
- कारोबारियों को स्थानीय बैंकों में कर जमा करने की सुविधा. अब तक यह व्यवस्था सिर्फ ट्रेजरी तक ही सीमित थी.
- वाणिज्य विभाग की छवि बदलने की यह कोशिश कि कारोबारियों और अधिकारियों की मुलाकात कम से कम हो.
- राज्य और जिला स्तर की कमेटियों में उद्योग जगत के लोगों को सलाहकार के रूप में शामिल करना.
- 5 लाख से कम के टर्नओवर वाले व्यापारियों को वैट से मुक्ति.
- बाढ़ पीड़ित इलाकों में सड़क निर्माण के लिए विशेष योजनाएं.
- पर्यटन विकास के लिए नई योजनाएं.
- हर मंगलवार को शाम 4 से साढ़े 4 बजे तक सुशील कुमार मोदी आधे घंटे तक व्यापारियों की समस्याएं सुनेंगे.



वाघा सीमा
पर्यटकों की नई सैरगाह

लेख ● बिमल श्रीवास्तव

अमृतसर के नजदीक भारतपाक सीमा पर स्थित है 'वाघा बार्डर. पहले यह स्थान केवल समाचारपत्रों तक ही सीमित था और राजनीतिक कारनामों की वजह से ही लोग



कभीकभार इस सीमा तक जाया करते थे. लेकिन अब दोनों देशों के संबंध मधुर होने से वाघा सीमा इतनी लोकप्रिय हो गई है कि यहां आएदिन पर्यटकों से भरी बसों के काफिले के काफिले शाम को होने वाले ध्वाजारोहण समारोह को देखने पहुंचते हैं. अवकाश वाले

दिन तो दर्शकों की संख्या 12 से 15 हजार तक पहुंच जाती है.

अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा

अमृतसर से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर वाघा नामक स्थान भारत तथा पाकिस्तान की सीमा है जो शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित ग्रांड ट्रंक रोड (जी.टी. रोड) पर स्थित है. वैसे तो भारत और पाकिस्तान के बीच और भी कई स्थानों पर सीमाएं बनी हैं किंतु वाघा सीमा उन में सब से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यही वह स्थान है जहां पर सब से अधिक व्यापारिक आदानप्रदान होता है तथा दोनों देशों के बीच आवाजाही का भी यही मुख्य केंद्र है. एक और खास बात है कि इस के पास ही अटारी नामक रेलवे स्टेशन है जो अमृतसर तथा लाहौर को जोड़ने वाली रेल लाइन का सीमावर्ती स्टेशन है जहां से भारतपाक के बीच समझौता एक्सप्रेस चलती है.

भारतपाक सीमा के वाघा बार्डर पर हर शाम विशालकाय फाटक खोल कर समारोह आयोजित किया जाता है जो दर्शकों को एक अलग ही जोश और उत्साह से भर देता है. अपनी तरह के इस दिलकश नजारों को देखने के लिए हर रोज हजारों पर्यटक वहां इकट्ठा होते हैं.

अमृतसर से वाघा सीमा तक नियमित रूप से बसें, आटोरिकशा तथा टैक्सियां चलती हैं जो पहुंचने में लगभग 1 घंटे का समय लगाती हैं. उधर लाहौर से भी लगभग इतने ही समय में इस सीमा तक लोग पहुंच जाते हैं.

सीमा पर समारोह

हर रोज सूर्यास्त के समय वाघा सीमा पर दोनों देशों के ध्वजारोहण, समय अनोखा समारोह आयोजित कि जाता है जो देखने लायक होता है.

इस आकर्षक नजारे को देखने द देशों के असंख्य दर्शक आते हैं.

वाघा सीमा से लगभग किलोमीटर पहले ही चहलपहल शुरू जाती है. कारें, टैक्सियां, बसें, आटोरिक आदि की भीड़ रहती है. पैदल चलने व की संख्या भी कम नहीं रहती. कुछ आगे जा कर वाहनों का प्रवेश रोक दि जाता है. केवल विशेष अनुमति वाहनों को ही जाने की अनु होती है लेकिन भी एक विशेष तक ही बढ़ने जाता है.

सीमा पर विशाल फाटक जिस के दूसरी हरी वरदी पाकिस्तानी रेंजर्स होते हैं तो इस भारत के बी.एस.एफ. के जवान. सीम इस पार भारतीय तिरंगा और दूसरी हरे रंग का पाकिस्तानी ध्वज लहरात सीमा पर बैरियर तथा बीचोबीच विशाल फाटक है.

फाटक से कुछ हट कर दोनों वाघा सीमा पर भारत के इलाके सीढ़ियों वाला स्टेडियम बनाया ग जो लगभग पूरा भरा रहता है. नीचे सुरक्षा बल के जवान कवायद के जमा रहते हैं. लाउडस्पीकर देशभक्ति के गीत बजते हैं. स देखने आए सभी बच्चे, बूढ़े इ आनंद लेते हैं. पर्यटकों का समूह माता की जय' का उद्घोष व 'हिं जिंदाबाद' के नारे लगाता है. कुल कर शाम के समय वहां चारों

देशभक्ति का उन्माद सा छाया रहता है.

कुछकुछ इसी तरह का माहौल पाकिस्तानी सीमा के उस पार भी रहता है. उधर भी नारेबाजी होती है, गाने बजते हैं तथा पाकिस्तानी सेना के जवान कवायद में लगे रहते हैं. बस, अंतर केवल इतना रहता है कि पाकिस्तान की तरफ महिलाओं के लिए अलग तथा पुरुषों के लिए अलग बैठने की व्यवस्था होती है, जबकि भारत की ओर सभी दर्शक एकसाथ ही बैठते हैं.



वाघा बार्डर : शाम के वक्त यहां का मंजर देखते ही बनता है.

अंतिम समारोह

सूर्यास्त होते ही अचानक लाउडस्पीकर बंद कर दिए जाते हैं और दोनों तरफ के जवान कदमताल करते हुए फाटक के निकट जमा हो जाते हैं. उन का जोश से भरा कदमताल देख कर ऐसा लगता है कि जमीन फट जाएगी.

फौजी जवान अपनेअपने झंडे नीचे उतारते हैं. चारों ओर सन्नाटा छा जाता है. आखिर में सीमा पर स्थित विशालकाय फाटक खोल दिया जाता है. भारतीय तथा पाकिस्तानी जवान मुस्तैदी के साथ आगे बढ़ते हैं. तेजी से एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं. फिर पलट कर उतनी ही तेजी से वापस अपनेअपने इलाके में चले जाते हैं. फाटक फिर बंद कर दिया जाता है. और वह फिर से भारतपाकिस्तान सीमा रेखा का प्रतीक बन जाता है.

फाटक खुलने, सैनिक अधिकारियों के हाथ मिलाने और फाटक बंद होने का खेल खत्म हो जाता है.

वाघा सीमा पर हर शाम यह समारोह धूमधाम से मनाया जाता है पर किसी समय इसे एक रोजमर्रा की कवायद माना जाता था. जब से इस कार्यक्रम को आकर्षक बनाया गया है इसे देखने वालों की भीड़ बढ़ती ही जा रही है. अब तो अमृतसर और लाहौर दोनों शहरों की पर्यटन एजेंसियां अपने भ्रमण कार्यक्रम में वाघा सीमा को शामिल करना नहीं भूलती हैं. ●


TATA HITACHI
अवैध निर्माण
प्रशासन भी
जिम्मेदार



लेख ● भारत भूषण श्रीवास्तव

शहरों की बसावट कैसी हो इस पर कानून साफसाफ कुछ भी नहीं कहता मगर यह कैसी न हो इसे ले कर अकसर देश भर के शहरों में बवाल मचा करते हैं. अतिक्रमण और अवैध निर्माण के मामलों पर आएदिन सरकारी नुमाइंदे और आम लोग सड़कों पर अपनीअपनी दलीलों के साथ लड़ते-झगड़ते नजर आते हैं तो कई दफा नौबत हिंसा तक की भी आ जाती है.

जाहिर है, विवाद व्यक्तिगत न हो कर कानून की खामियों को ले कर होते हैं जिन का सड़क पर खड़े हो कर सुलझ पाना संभव नहीं है, इसीलिए मुकदमा दायर होने पर अदालतों को भी फैसला देने में सालों लग जाते हैं. सरकार जीते या हारे इस से उसे तो कोई फर्क नहीं पड़ता मगर भवन निर्माता हारता है तो काफी नुकसान में रहता है.

सरकारों के नजरिए से देखें तो समझ पाना मुश्किल है कि अवैध निर्माण क्यों खटकते हैं, उन से कर नहीं मिलता इसलिए या इसलिए कि कायदेकानूनों की अनदेखी कर गलत तरीके से निर्माण कर लिया गया है.

आम लोगों की असुविधा से सरकार को कोई मतलब भी होगा, यह बात सहज गले नहीं उतरती. वजह, वह नियम खुद की सुविधा और ज्यादा से ज्यादा पैसा बटोरने के लिए बनाती है और यही नियम जब टूटते हैं तो वह कानून का डंडा ले कर चढ़ाई कर देती है.

क्यों होते हैं अवैध निर्माण

भवन निर्माण संबंधी कानून भले ही सख्त हों मगर नियम इतने कमजोर हैं कि उन्हें आसानी से तोड़ा जा सकता है. भवन निर्माता को अनापत्ति प्रमाणपत्र हासिल करने के लिए जो भागादौड़ी कानून

कराता है उस की थकान अकसर घूस दे कर ही उतरती है.

कोई निर्माण अगर अवैध है तो जाहिर है वह बिना सुविधा शुल्क दिए नहीं हुआ है. यह बेहद हास्यास्पद बात है कि घूसखोरी के चलते अवैध निर्माण की इजाजत ले लेना आसान काम है बजाय वैध निर्माण की अनापत्ति हासिल कर लेने के. अवैध निर्माण गैरकानूनी है यह तो हर कोई जानता है मगर इस बाबत सब खामोश रहते हैं कि नियमों की जिन कड़ी प्रक्रियाओं से भवन निर्माता को गुजरना होता है उन के चलते यह संभव कैसे हुआ.

सीधेसीधे इस का दोषी प्रशासन नजर आता है जिस के अधिकारी, कर्मचारी कायदे कानूनों को ताक पर रख कर अवैध निर्माण होने देते हैं. इस के लिए निर्माता को बस अपनी जेब हल्की भर करनी होती है.

पानी जब सिर से गुजर जाता है और हायतौबा मचने लगती है तो प्रशासन नोटिस और बुल्डोजर ले कर अवैध निर्माण हटाने पहुंच जाता है. सरकारी जमीनों पर मकान बना लेना बगैर सरकारी कर्मचारियों की मिलीभगत के मुमकिन नहीं है.

अवैध निर्माणों के मामलों में प्रशासन की कोई कानूनी जवाबदेही तय नहीं है. लिहाजा धड़ल्ले से कर्मचारी घूस ले कर पैसा बनाया करते हैं. जैसेजैसे जमीनों के दाम आसमान छूते जा रहे हैं वैसेवैसे अवैध निर्माण भी बढ़ रहे हैं. भवन निर्माण की अनुमति देने वाले स्थानीय निकाय व प्राधिकरण अपनी जिम्मेदारियों पर खरे नहीं उतर रहे जो सरकार से मिली जमीन की निगरानी भी नहीं करते कि वह किस हाल में हैं.

जिन इलाकों में 3 मंजिला मकान बनाने की इजाजत प्रशासन नहीं देत[...] सैकड़ों मकान 3 मंजिला खड़े [...] जबकि मकान बनाने वाला नक[...] मकान को 2 मंजिला ही दिखाता है[...] यह मान कर चलता है कि निर्मा[...] समय कोई अड़ंगा प्रशासन ने नहीं [...] है तो भविष्य में भी नहीं डालेगा.

बिल्डरों की पनपती फौज[...] मुनाफा काटने और अनापत्ति का [...] हासिल करने के लिए सरकारी एजें[...] को थैलियां भेंट करती है. इन थैलिय[...]

> *अतिक्रमण और अवैध निर्माण [...] कर अकसर बवाल मचा रहता है. [...] लोगों की असुविधा से सरका[...] कोई मतलब भी होगा, यह बात [...] गले नहीं उतरती. असलियत तो [...] नजर आती है कि प्रशासन नियम[...] की सुविधा और ज्यादा से ज्यादा [...] बटोरने के लिए बना[...]*

बदौलत देश भर में अवैध निर्मा[...] कदर फलफूल रहे हैं कि कई ज[...] कालोनियां ही अवैध रूप से बन [...] फिर छिटपुट मकान तो दूर की बात[...]

अब समझौता शुल्क

मध्य प्रदेश की राजधानी भो[...] कुछ पाश इलाकों में प्रशासन ने [...] ऐसे मकानों की पहचान पिछले ति[...] जो कानूनन अवैध निर्माण के [...] आते हैं. ये निर्माण किस के लि[...] कैसे सिरदर्द थे इस बात पर तो [...] गौर नहीं किया, उलटे यह [...] सुर्खियों में आ गया कि अगर[...] निर्माण वाले समझौता शुल्क जमा[...] उन के निर्माण वैध किए जा सक[...]

किसी कानून में नहीं लिख[...]

समझौते के नाम पर शुल्क ले कर निर्माण वैध भी घोषित किए जा सकते हैं मगर नियम बनाने के अधिकार चूंकि प्रशासन के पास हैं लिहाजा उस ने यह छूट दे दी.

इस मसौदे पर भी प्रशासन की नीयत साफ नहीं दिखी. पहले अवैध निर्माणों की पहचान कर उन पर लाल निशान नगर निगम ने लगा दिए और निर्माताओं को नोटिस भी तुरंत थमा दिया कि वे 29 नवंबर, 2005 तक निर्माण वैध करा लें नहीं तो निर्माण तोड़ दिए जाएंगे. मगर दिसंबर के आखिर तक अवैध निर्माण नहीं तोड़े गए थे जबकि सभी ने निर्माणों को वैध कराने का शुल्क भी जमा नहीं किया था. एक बिल्डर की बात पर भरोसा करें तो इस मामले में भी घूसखोरी चली क्योंकि अवैध निर्माता चाहते थे कि वैधता शुल्क घटाया जाए, भले ही इस के लिए अलग से कुछ रकम देनी पड़े.



अवैध निर्माण की वजह यही है कि भवन निर्माण संबंधी कानून भले ही सख्त हों मगर नगरनिगम व संबंधित विभागों द्वारा लापरवाही व भ्रष्टाचार के कारण उन पर पूरी तरह अमल नहीं हो पाता.

अव्वल तो यह बात ही समझ से परे है कि कल तक जो निर्माण अवैध थे वे अब वैध कैसे किए जा रहे हैं. यह मान भी लिया जाए कि इस नियम से निर्माताओं की लागत बच रही है तो प्रशासन यह क्यों नहीं बता रहा कि शहरी बसावट संबंधी कायदेकानूनों और नियमों को किनारे कर हजारों अवैध निर्माण कैसे हुए.

समझौता शुल्क ले कर निर्माणों को वैध करने के मामले में प्रशासन अपने ही जिम्मेदार अधिकारियों कर्मचारियों का बचाव कर रहा है. यह रिवाज चल पड़ा तो अवैध निर्माणों को शह देने वाला ही साबित होगा.

होना यह चाहिए था कि अवैध निर्माण तोड़ दिए जाते जिस से रिश्वत देने वालों को सबक मिलता कि शार्ट कट हमेशा नहीं चलता. दूसरे, घूसखोर कर्मचारियों पर निर्माता ही चढ़ाई करते जिन्होंने अवैध निर्माण के लिए चढ़ावा चढ़ाया था.

इस से प्रशासन को नुकसान था. वजह, गुस्साए निर्माता सीधेसीधे उन मुलाजिमों के नाम मय कागजात के पेश करते जिन्होंने घूस खाई थी. समझौता शुल्क इसी आरोप और परेशानी से बचने की कवायद है जो अवैध निर्माताओं को नुकसान से बचने का लालच दे रहा है.

गौर इस बात पर होना चाहिए कि भविष्य में अवैध निर्माण न हों. समस्या अकेले भोपाल की नहीं देश भर की है मगर इस पर समझौता शुल्क का प्रस्ताव रख सुविधा देने की बात से लगता है घूसखोरी चलाए और बढ़ाए रखने के लिए नई परंपरा की शुरुआत हो चुकी है. अब जिसे करोड़ों की जायदाद बचानी होगी वह लाखों की रिश्वत वैधता के नाम पर देना ही फायदे का सौदा समझेगा. ●



उत्तर प्रदेश

धार्मिक स्थलों के विकास में जुटी सरकार

लेख ● शैलेंद्र

जब उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल एक ही राज्य हुआ करते थे उस समय जो भी उत्तर प्रदेश घूमने आता था वह अल्मोड़ा, रानीखेत, मसूरी और नैनीताल जैसी पहाड़ी जगहों पर ही घूमने जाता था. इस के बाद जब उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल अलगअलग हो गए तो घूमने वालों के लिए उत्तर प्रदेश में कुछ रह ही नहीं गया. उत्तर प्रदेश सरकार ने उस समय दावा किया था कि प्रदेश में पर्यटन स्थलों को विकसित किया जाएगा. पिछले 5 सालों में एक भी ऐसी जगह नहीं बन पाई है जहां पर्यटक घूमने आ सकें. प्रदेश के पर्यटन मानचित्र में आज भी त
वाराणसी, इलाहाबाद, मथुरा,
और झांसी का ही नाम खास
लिया जा सकता है.

इस पर्यटन मानचित्र में
नया नाम नहीं दिख रहा है
आकर्षण में पर्यटक उत्तर प्रदे
आएं. अगर वर्ष 2004-05 औ
06 में जिन जगहों पर पर्यटन क
दिया गया उन पर नजर डाले
चलता है कि इन सालों में उ
सरकार ने धार्मिक जगहों में
नाम पर लाखों रुपया खर्च क
2004-05 में जिन जगहों पर

नाम पर पैसा खर्च हुआ, उन में प्रमुख नाम सहारनपुर जिले के शाकम्भरी देवी मंदिर, बाबा हरिदास मंदिर और कुतुब अलम दरगाह का आता है. सरकारी कागजों से मिली जानकारी के मुताबिक इन जगहों के विकास पर लगभग 50 लाख रुपया खर्च किया गया.

इसी साल मथुरा में राधा कुंड और श्याम कुंड की सजावट और रखरखाव पर 145 लाख रुपया खर्च करने की बात कही गई. गोवरधन में बने कुसुम सरोवर के सौंदर्यीकरण में भी 100 लाख रुपया खर्च करने की योजना तैयार हुई. घाटों के शहर वाराणसी के अस्सी घाट को भी 464 लाख रुपया खर्च करने के लिए दिया गया. इसी साल वाराणसी के गंगा महोत्सव के लिए 2 लाख 50 हजार रुपया खर्च किया गया. मथुरा जिले के बरसाना में होली खेलने के लिए 5 लाख रुपया खर्च किया गया.

वर्ष 2005-06 में भी सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मंदिर और दूसरे धार्मिक स्थलों के विकास पर



राज्य सरकार चुनार फोर्ट के सौंदर्यीकरण के लिए मिली राशि का सही सदुपयोग कर पाएगी या नहीं.

उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के नाम पर धार्मिक स्थलों के सुधार पर लाखों रुपए खर्च किए लेकिन कोई नया पर्यटन स्थल विकसित नहीं किया. यही वजह है कि कुछ सालों से वहां पर्यटकों की संख्या निरंतर घट रही है.

ही पैसा खर्च किया. इटावा जिले में काली वैहन मंदिर बनाने के लिए 47 लाख रुपया खर्च किया गया. कानपुर के पास बसी बिठूर नगरी के सौंदर्यीकरण के लिए भी सरकार ने 422 लाख रुपए खर्च करने की योजना बनाई है. इस साल भी 58 लाख रुपया गोवरधन मंदिर की छतरी को ठीक कराने के लिए खर्च करने की बात कही गई है. गढ़-मुक्तेश्वर में ब्रजघाट बनाने के लिए सरकार ने 256 लाख रुपए खर्च करने की बात कही है.

कांग्रेस नेता सोनिया गांधी की संसदीय सीट होने के कारण वीवीआईपी दर्जा हासिल कर चुके रायबरेली जिले के सौंदर्यीकरण के लिए 490 लाख रुपए खर्च करने की योजना पास की गई है. इसी तरह प्रतापगढ़ जिले के घुइसरनाथ धाम को सुंदर बनाने के लिए 258 लाख रुपए खर्च करने की भी योजना तैयार की



मथुरा में राधा कुंड की सजावट और रखरखाव पर लाखों रुपए करने का औचित्य क्या है.

गई है. विंध्याचल पर्यटन क्षेत्र में आने वाले मिर्जापुर, चुनार, राबर्ट्सगंज के सौंदर्यीकरण के लिए 800 लाख रुपए खर्च करने की योजना भी सरकार ने बनाई है.

इन योजनाओं को तैयार करते समय अगर पर्यटकों की मानसिकता का ध्यान रखा जाए तो एक अच्छा और बेहतर पर्यटन स्थल तैयार किया जा सकता है. उत्तर प्रदेश घूमने आने वाला हर पर्यटक किसी धार्मिक स्थल पर जाएगा यह कोई जरूरी नहीं है. धार्मिक जगहों पर जिस तरह से पूजापाठ के नाम पर घूमने आने वालों को लूटा जाता है वह हर पर्यटक को पता है. इसलिए जो भी विदेशी पर्यटक उत्तर प्रदेश घूमने आता है तो वह केवल ताजमहल देख कर ही लौट जाने में अपनी भलाई समझता है. यही वजह है कि इन 5 सालों में उत्तर प्रदेश में विदेशी पर्यटकों की संख्या घट रही है.

विदेशी पर्यटकों के साथ होने वाले अपराधों और धार्मिक जगहों पर होने वाली लड़ाईझगड़ों के चलते भी प्रदेश
खराब होती है. ऐसे में केवल धार्मि
पर पैसा खर्च कर के राज्य सरकार
है कि उस को पर्यटकों की चिंत
वह केवल धर्म का प्रचार करने
ही खुश रखने का प्रयास कर रही

अगर राज्य सरकार प्रदेश क
के लिहाज से विकसित करना
आसानी से कर सकती है. उत्तर
आगरा, लखनऊ, वाराणसी,
चित्रकूट और झांसी ऐसे पर्यटन
जहां फिल्मों की शूटिंग हो
जरूरत इस बात की है कि इन
सुधारा जाए. सरकारी व्यवस्था
जाए ताकि जो भी फिल्म निर्मा
फिल्मों की शूटिंग करना चाहे व
वाराणसी फिल्म शूटिंग के लिहा
अच्छी जगह है. कुछ कट्टरवादी
इस जिले को बदनाम कर दि
कारण है कि फिल्मों की शूटिंग
यहां बंद हो गया है. उत्तर प्रदेश
चाहिए कि धार्मिक स्थलों के
बजाय ऐसे क्षेत्रों के विकास पर
करे जहां लोग पैसा खर्च कर
पसंद करते हों.

कर समस्याएं

नए कानून के अनुसार बेटी पिता की दौलत में विवाह के बाद भी हकदार रहती है, लेकिन क्या पुरखों की दौलत में भी वह हकदार रहेगी?

–सुधा पांडे, इलाहाबाद

पिता की अपनी कमाई हुई संपत्ति में उस की मृत्यु के बाद उस की लड़की का हक उस के लड़के के बराबर रहता है. यानी लड़का और लड़की में उत्तराधिकार कानून के मामले में कोई अंतर नहीं है. हां, यदि पिता वसीयत के अनुसार अपनी जायदाद को किसी विशेष प्रकार से वितरित करना चाहें तो उसे इस बात का पूर्ण अधिकार है.

ऐसे वह अपने पुत्र या पुत्री किसी को भी कोई संपत्ति वसीयत के अनुसार नहीं दे तो इस में पुत्री का कोई अधिकार नहीं बनता, लेकिन हिंदू संयुक्त परिवार की संपत्ति में अब पुत्रियों का भी हक पुत्र के बराबर होगा और विभाजन के समय यदि जायदाद हिंदू संयुक्त परिवार की थी तो उस में लड़की का हक उतना ही होगा जितना कि लड़के का है. केवल पुरखों की संपत्ति होने से ही पुत्र का अधिकार नहीं बनता.

जैसे यदि कोई दादा अपनी व्यक्तिगत संपत्ति छोड़ कर मर जाए और वह उस की निज की संपत्ति हो तो उस में पुत्रियों का या पोतियों का कोई अधिकार नहीं बनता है.

मैं 69 वर्षीय वरिष्ठ नागरिक हूं. मुझे पेंशन मिलती है जो मेरी आमदनी का जरिया है तथा 13 हजार के लगभग जमा धनराशि का ब्याज आदि आ जाता है. मैं यह जानना चाहती हूं कि वर्ष 2005 और 2006 का कर निर्धारण कैसे होगा? कितना सलेब है. कितनी छूट है तथा किनकिन जमा पर क्या छूट है जो पहले 60 हजार रुपए तक थी. मसलन बीमा, पी.पी.एफ., एन.एस.सी. इत्यादि. वरिष्ठ नागरिक को कितने आयकर पर छूट है जो पहले 15 या 20 हजार रुपए तक थी. मेरी पेंशन 7 हजार रुपए महीना है. क्या मुझे रिटर्न भरना जरूरी है?

–सुधारानी बहल, मयूर विहार–1

आप वरिष्ठ नागरिक हैं इसलिए आप को 1,85,000 रुपए तक की आमदनी, जो आप के वित्तीय वर्ष 2005–06 अर्थात कर निर्धारण वर्ष 2006–07 में होगी, पर कोई आयकर नहीं लगेगा. इस रकम को अर्थात 1,85,000 को निकालने के लिए आप को बीमा पालिसी प्रीमियम एवं पी.पी.एफ. आदि में कुल मिला कर कर 1,00,000 रुपए तक की कटौती धारा 80 (सी) के अंतर्गत प्राप्त होगी.

यानी आप की कुल आय 2,85,000 रुपए है और आप ने 1,00,000 रुपए की रकम का निवेश पी.पी.एफ., जीवन बीमा प्रीमियम तथा एन.एस.सी. आदि में किया है तो आप की कर योग्य आय कुल मिला कर 1,85,000 रुपए रहेगी जिस पर कोई आयकर नहीं लगेगा. पुरानी 15 और 20 हजार की छूट के स्थान पर अब करमुक्त आय की सीमा बढ़ा दी गई है. यदि आप की आमदनी 1,85,000 रुपए से कम रहेगी तो आप को आयकर रिटर्न भरना जरूरी नहीं है. ●

कर सलाहकार ● रामनिवास लखोटिया

इस स्तंभ में पाठकों के कर संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं. अपने प्रश्न इस पते पर भेजें :

कर समस्याएं, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.


रिटर्न गिफ्ट
श्रीमतीजी कहां से आ रही हो?
यह बढ़िया साड़ियां खरीद कर लाई हूं.
कुछ दिन पहले ही तो तुम ने 3-3 साड़ियां खरीदी थीं.
तब मेरा जन्मदिन था.
और जो दो महीने पहले चारचार साड़ियां लाई थीं?
तब मेरी


पर अब किस खुशी में यह खरीदारी कर रही हो?
क्या घर में फिर कोई विशेष अवसर, शादी या वर्षगांठ है?
नहीं, अब तो यह सब श्रीमानजी के लिए खरीद रही हूं.
श्रीमानजी के लिए?
श्रीमानजी का जन्मदिन है. जब मैं यह सुंदर बुके उपहार में दूंगी तो वह भी तो रिटर्न गिफ्ट में मुझे यह साड़ियां देंगे. वही लाई हूं.
! ? !

खरी खोटी

● गोपाल च

पर्यटन का महत्त्व

हमारे बुजुर्ग समझदार थे. उन्होंने जानबूझ कर मेहमान को भगवान का दरजा दिया था. जब हम किसी के यहां मेहमानी के इरादे से तशरीफ ले जाते हैं तो अपना भी यही नजरिया रहता है. यह देश का दुर्भाग्य है कि इधर भक्ति भावना में कमी आ गई है. पिछली बार हम पूर्व सूचना के बाद गए तो हमारे मेजबान घर में ताला ठोक कर गायब हो लिए. आसपड़ोस से पता लगा कि उन की पत्नी मायके गई है, उन के पप्पू मां के साथ हैं और वह खुद कल तक यहीं थे.

हम ने एकदो घंटे बंद ताले को घर के बरामदे में बैठ कर इस उम्मीद से घूरा कि शायद वह खुदबखुद खुल जाए. कहीं मन में यह धुंधली उम्मीद भी थी कि शायद मेजबान की आत्मा उन्हें कचोटे और वह

लौट आएं. ऐसा कुछ नहीं हु
पड़ोस के सज्जन ने हमें नसीहत
क्यों सवेरे से अपना वक्त जाया
जब कोई आने वाला होता है, र
दिन के लिए ऐसे ही अंतर्ध्यान हो

इस अनुभव से सीख ले
एकदूसरे दोस्त के यहां बिना बत
लिए. हमें देखते ही वह दौड़ते
आए, 'अरे यार, गोपी,' कह कर
भुजपाश में ऐसे बांधा कि अपनी
तक कराह उठीं. वह तो गनीमत
अपना व्यक्तित्व कुछ चर्बीदार है
न कहीं, कुछ न कुछ का जरूर च

हमें चकनाचूर करने के
के उपरांत उन्होंने अपनी पत्नी
दहाड़ कर बुलाया. हमें शक
हमारा मित्र किसी नारा लगाती



एकल प्रतिनिधि है और किसी अगले 'मोरचे' की रियाज कर रहा है. हमें खुशी हुई. रेखा एकदम बाहर तो नहीं पधारीं पर उन का लरजता उत्तर जरूर सड़क तक सुनाई दिया, 'क्यों आसमान सर पर उठा रखा है. तुम बहरे होगे, हम बहरे नहीं है.'

हमारे दोस्त के चेहरे पर शिकन तक नहीं आई. हमें लगा कि यह एक बेहद संतुलित और पारस्परिक समझ वाला बराबरी का जोड़ा है. दोनों फुरसत में एकदूसरे पर चीखनेचिल्लाने अन्यथा पंजा लड़ाने का अभ्यास करते होंगे. कुछ देर बाद गोलमटोल रेखा पधारीं.

उन के पति फिर चहके, 'आओ, तुम्हें अपने जिगरी से मिलाएं, हम दोनों यूनिवर्सिटी में साथसाथ फेल हुए थे.' हमें उन के साथ पढ़ने का स्मरण तो था, फेल होने का नहीं. कौन जाने, उन की क्लासफेलो की यही परिभाषा हो. हम ने 'भाभी प्रणाम' कह कर उस वजनदार महिला के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया. उन्होंने हमारी ओर एक वक्र सी मुसकान फेंकी और पति से बोलीं, 'अब क्या करें?' हम ठगे से खड़े रहे. यह पतिपत्नी किस विषय पर अपनी मजबूरी जता रहे हैं?

हमारे मित्र पूरे महल्ले को सुनाते हुए चहके, 'अब कैसी चिंता, अपना यार आ गया है.' हम अंदर ही अंदर गद्गद हुए. हमें भ्रम हुआ. कहीं यह द्वापर का आधुनिक कृष्ण तो नहीं है जो अपने बाल सखा को देख कर ऐसा मगन है. फिर उन की चिंता से हम भी चिंतित हुए. अगर यह प्रसन्न है तो चिंतित क्यों है? हम उन के लिए कैसे और क्यों चिंतानिवारक देवदूत बन कर अवतरित हुए हैं? हमें खामोश देखा तो रेखा ने पति को प्रेरित किया, 'इन को भी तो बता दो. बेचारे बुत बने खड़े हैं.'

मित्र ने हमें असलियत से परिचित कराया, 'आज घर में गैस खत्म हो गई है. पप्पू बिना लंच बाक्स के स्कूल गए हैं. किसी ने सवेरे से चाय तक नहीं पी है. ऐसे

भारतभूमि युगेयुगे

पैसों के पांडा

कृष्ण भक्ति और बीवी को सताए जाने की वजह से देश भर में सुर्खी बन चुके आई.जी. पांडा पिछले दिनों रायपुर आए तो हिंदूवादी संगठनों ने उन का जम कर विरोध किया और अपने शहर से खदेड़ कर ही दम लिया.



पांडा को वाकई ज्ञान प्राप्त हो गया है क्योंकि अब वह भी दूसरे संतों की तरह प्रवचन और रासलीला से पैसा उगाहने लगे हैं. हिंदूवादियों को यह नागवार और भोंडा लग रहा है कि पांडा यह दावा नहीं करते कि वह सीधे हिमालय से तपस्या कर, भगवान से मिल कर जनकल्याण का आदेश ले कर आए हैं. पांडा यदि हिंदुत्व की वार मंच से करने लगें तो तमाम हिंदूवादी संगठन उन्हें हाथोंहाथ लेने लगेंगे.

एक करोड़ वापस करो

बिहार में भले ही राम विलास पासवान का जादू न चला हो मगर मध्य प्रदेश में लोकजनशक्ति पार्टी के पांव जमाने के लिए उन्होंने पूर्व बसपा अध्यक्ष फूलसिंह बरैया के सिर पर हाथ रख दिया है.

ग्वालियर में लोजपा रैली में पासवान मायावती पर आरोप लगाते नजर आए कि उन्होंने दलितों का जो एक करोड़ रुपए डकार रखा है वह मय ब्याज के उन्हें वापस करना चाहिए. इस बारे में बरैया कहते हैं, ''कांशीराम ने फोन पर मुझ से कहा था कि मायावती ने उन्हें बंधक बना रखा है.''

इस बातचीत का टेप जनता के सामने लाना चाहिए. सच कुछ भी →

बेजावक्त मेहमान आए तो गृहस्वामिनी को चिंतित होना ही होना है, उन्होंने हमें आश्वस्त किया, 'पर तुम मेहमान तो हो नहीं, तुम तो अपने हो. तुम से क्या परदा. चलो, तुम्हें चौराहे की दुकान से चायनाश्ता करा दें. फिर सिर्फ दो वक्त के खाने का चक्कर है. कल तो हम लोग पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सुबह की गाड़ी से शिमला जा रहे हैं.'

भागते भूत की लंगोटी भली. हम ने उन की चाय पी. 2 जलेसिके टोस्ट खाए. लौटे तो रेखा बाहर जाने के लिए तैयार थीं, हमें मूंड़ने के लिए भी. बोलीं, 'पहली बार मिले हैं भाई साहब, आज का खाना तो आप को खिलाना ही पड़ेगा.'

रेखा, उन के पति और दोनों के लल्लू ने हमें डट कर चूना लगाया. बिल देखा तो अपने होश फाख्ता हो गए. अपना इरादा 2 दिन की मेहमानी का था. पर एक बार ही खाना खिला कर अपना दीवाला निकल गया. हम ने लंच के बाद लौट कर सामान सहेजा और स्टेशन जाने का मन बनाया. रेखा और उन के पति ही नहीं, लल्लू ने भी आग्रह किया, 'अंकल,हम भी कल जा रहे हैं. आप भी कल तक रुक जाओ. रात को 'पैराडाइज' में खाना खाएंगे.'

हम उन के स्नेह से अभिभूत थे पर अपनी जेब से विवश. 'पैराडाइज' जैसा पांचसितारा होटल हमें ढाबे तक के काबिल न छोड़ता. हम ने रेख
ली और मित्र और लल्लू से भ

हम ब्रीफकेस ले कर ब
तो एक टैक्सी आ कर रुकी.
एक सज्जन उतरे और अंदर
सोचा, इसी पर बैठ कर
प्रस्थान करें. इतने में हमारे
मैगाफोन गूंजा, 'बड़े वक्त
सालारजंगजी. अभी एक
मेहमान को, 'गैस तकनीक'
भेजा है. बाहर खा कर ऐसी
है कि कुछ दिनों तक याद रखे

'सालारजंग' मुसकराते
तो हम खिसियाते टैक्सी के
लिए. लौटे तो हम सदमाग्रस्त
अच्छा हुआ कि दिल का दौर
वरना कौन जाने स्टेशन पर ही

हमें अहसास हुआ. अपने
शौक की वजह से हम ने कितन
और पुराने दोस्तों का नया अ
है. इसीलिए हम सब के सामने
महत्त्व को रेखांकित करते हैं.
कारण इनसान इनसान को प
दोस्त दोस्त की असलियत
होता है. नहीं तो पूर्व सूचना के
ताला मार कर फरार होने वाल
गैस न होने का कामयाब अ
वाले 'क्लासफेलो' की असलि
कैसे उजागर हो पाती.

मुन्ना भाई की आत्मकथा का अ

लेखकीय टिप्पणी : (जेल में अपराधी बाहर की आपाधापी, तनाव और व्यस्तताओं से आजाद हो कर अपनी जन्मजात प्रतिभा को कभी पहचानते हैं तो कभी उस का प्रदर्शन करते हैं. अगर कैदी खास हुए तो कहना ही क्या. उन की हर इच्छा जेलर और अन्य कर्मचारी तत्काल पूरी करने में जुटते हैं. वह जानते हैं कि आज यह महान हस्ती भले सींखचों
इस का कल उज्ज्वल है. इस प
का है तो क्या हुआ. इस में मं
गुण मौजूद हैं. जिस हाथ से यह
है उसी से कलम चलाने में
अगर मंत्री नहीं बना तो जासूस
लिख ही लेगा. अगर उस ने अ
सच्चे प्रसंग ही लिख दिए तो

यथार्थ, साहित्य का दरजा प्राप्त करेगा.

यू.पी.बिहार में खास लोगों को उपलब्ध जेल सुविधाओं को देखते हुए हमें कोई शक नहीं है कि हमारा जेल साहित्य कुछ दिनों में दुनिया में अपनी पहचान बनाने जा रहा है. एक ऐसे ही उदीयमान डाक्टर, लेखक की आत्मकथा का अंश पाठकों के ज्ञानवर्धन हेतु प्रस्तुत है.)

मेरी मम्मी बताती हैं कि बचपन से मुझ में महानता के कीटाणु थे. मसलन, मैं रोता तो हर बात के लिए था पर मुसकराता कभी नहीं था. गंभीरता की यह प्रवृत्ति बड़प्पन का लक्षण है. मुझ में कामयाबी की अटूट लगन थी. मेरे तीसरे बर्थडे पर डाक्टर पिता ने शानदार पार्टी की. गवर्नर, मुख्यमंत्री, मंत्री, अफसर, डाक्टर जैसे शहर के नामीगिरामी लोग सब उस में पधारे.

तब 'पेज थ्री' की खबरों का चलन नहीं था पर हर अखबार ने मेरे जन्मदिन की खबर छापी. शैंपेन की बोतल खुलने के साथ मेरे जन्मदिन का केक भी कटा. बच्चों और बड़ों ने फटे बांस के स्वर में 'हैप्पी बर्थडे' गाया. मैं अंदर ही अंदर महसूस कर रहा था कि इस से बड़ा अन्याय क्या होगा कि मेरा केक दूसरे भी खाएं. मम्मी ने पहला टुकड़ा मेरे मुंह में रखा तो बड़ा मजा आया, दूसरा टुकड़ा मेरी बड़ी बहन को दिया तो मुझे कुछ बुरा सा लगा.

मेरा प्रिय केक वह दूसरे बच्चों को बांटने लगीं तो मेरा रोने का मन हुआ. साहसी रोते नहीं हैं. मैं ने सप्रयास आंसुओं को रोका और अपनी बहन से शुरू कर, केक खाते बच्चों पर हमला बोल दिया. किसी की प्लेट को धक्का दे कर गिराया तो किसी को उछाला. थोड़ी ही देर में हंसतेखेलते, किलकारी भरते बच्चों का क्रीड़ास्थल केक और प्लेट के अवशेषों के हाहाकार स्थल में बदल गया था.

मेरी मम्मी को आज तक याद है. इस विध्वंस लीला के बाद मुझे जैसे खुशी का दौरा पड़ा था. सब सिसकियां भर रहे थे

हो, पासवान की नजरों में बसपा की दुर्दशा छिपी नहीं है. ऐसे में बरैया के जरिए दलितों को वह अपने साथ कर पाए तो मध्यप्रदेश में तीसरी ताकत बनने का सपना देखने में हर्ज क्या है?

सोचसमझ कर शादी करें

सामूहिक विवाहों के धूमधड़ाके में बालविवाह तो इफरात से हो ही जाते हैं, इस के उलट विधवाओं और विधुरों के साथसाथ तलाकशुदाओं के विवाह भी बड़े पैमाने पर होने लगे हैं मगर इन समारोहों में शादी करने से पहले खुद उम्मीदवार को अपने होने वाले जीवनसाथी की शादीशुदा जिंदगी की जांचपड़ताल कर लेनी चाहिए. क्योंकि एक समारोह में कुछ शादियां ऐसी भी हो गई थीं जिन में कुछ मर्द या तो शादीशुदा थे या आदतन अपराधी.



धार का धरम

वसंत पंचमी के दिन धार की भोजशाला इस दफा भी सैनिक छावनी में तबदील हो गई थी. हिंदू इस बात पर अड़े थे कि सिर्फ पूजा होगी और कुछ नहीं. मगर शुक्रवार होने की वजह से कानूनन मुसलिम समुदाय के लोग भी नमाज पढ़ने को आमादा थे. हिंदुओं की तरफ से आम लोग कम साधुसंत ज्यादा जमा हुए थे. बीच का रास्ता निकालते हुए प्रशासन ने 14 मुसलमानों को छत पर नमाज पढ़ने की इजाजत दी.

भोजशाला का विवाद मध्य प्रदेश की अयोध्या बने इस के पहले ही इस पर ताला जड़ देना ही बेहतर होगा ताकि लोग सुकून से रह सकें. ऐसा धर्म किस →



और मैं खिलखिला रहा था. मैं ने अपने हक का केक प्रतिद्वंद्वियों के मुंह के अंदर से छीन ही लिया. आगे की सफलताओं की सीढ़ी पर यह मेरा पहला सोपान था. इस के बाद मेरे मातापिता ने मेरा जन्मदिन मनाया तो, पर चुपचाप मनाया, कभी दूसरों को मेरे केक में हिस्सा बंटाने नहीं बुलाया. जैसा सब को पता है, सफलता का न कोई सगा है, न उस के नातेरिश्तेदार होते हैं.

दुनिया के तमाम बड़े लोगों के समान, दकियानूसी शिक्षा से मुझे अरुचि रही है. मैं स्कूल इसलिए जाता था कि दूसरों का टिफिन खा सकूं. लड़केलड़कियां मेरी शिकायत करते. पर मैं बचपन से समझ गया था कि जो अपने खाने की हिफाजत न कर सके उसे खाने का क्या अधिकार है? अपने से ताकतवर की शिकायत सभी करते हैं. ऐसे भी स्कूल के प्रिंसिपल से ले कर टीचरचपरासी तक मेरे पिता के मरीज थे. मैं दूसरों के टिफिन खातेखाते बिना पढ़ेलिखे परीक्षा भी पास करता रहा.

शायद ऐसी ही बहादुरियों की वजह से मम्मीडैडी ने मेरा नाम मुन्ना बहा
था. मेरा पूरा नाम शायद ही किसी
भी लिया हो. घर के बाहर क्या
क्या सहपाठी, सब मुझे मुन्ना भा
और घर पर मम्मीडैडी प्यार से सि

मेरे डैडी की शानदार प्रैक्टिस
गरीबों की मदद भी करते थे.
डिस्पैंसरी तो क्या घर तक म
तांता लगा रहता. मुझे उन का ध
आया. बस, गले में स्टैथेस्कोप
और पर्चियां लिखते रहे.

डाक्टर बनने की असली प्रे
मम्मी से मिली. वह एक दिन
रही थीं. मुझे काटने का शौक
बचपन में एक अंकल ने मुझे
उठाते ही फौरन से पेश्तर नीचे
ने उन को काट लिया था. मैं ने
फल काटते देख निश्चय किया
सर्जन बन कर इनसानों को का

मैं ने पढ़ाई की परवाह कभी
इम्तिहान का तनाव झेला. परीक्ष
का जोर नहीं चलता है वही टैंश

पेपर आउट करने की कला और उत्तरपुस्तिकाओं को बदलवाने के विज्ञान में, मैं ने स्कूल के दिनों से ही महारत हासिल कर ली थी. मैं हंसतेखेलते डाक्टर बन गया.

यह दीगर है कि मैं ने क्लास तो सारे 'अटेंड' किए और 'एग्जाम' भी, पर कापियां सादी ही छोड़ दीं. यह दायित्व उन पेशेवर जानकारों का था जो बाहर बैठे मुश्किल सवालों के सही और आसान उत्तर लिखते. बाद में वह मेरी उत्तरपुस्तिका बन जाती.

मैं स्वभाव से समाजसेवक हूं. अपने ऐसे दूसरे छात्रों का खयाल मेरे मन में छाया रहा. मैं ने डाक्टर बन कर अपना नर्सिंग होम भी बना लिया है. दूसरे भी बनवाएं. मरने के लिए मुल्क में बीमारों की कमी नहीं है. होनहार छात्र डाक्टर बनें तो कैसे बनें? उन के रास्ते में टैस्ट, परीक्षा हर तरह की बाधा और रोड़े हैं. मैं ने इन का संस्थागत हल निकाला है. सही फीस दो, प्री मेडिकल और मेडिकल पास करवाने का बीड़ा हमारा है.

'निदान' नामक हमारी समाजसेवी संस्था विधाता की प्रतिबद्धता के साथ डाक्टर निर्माण में लगी थी कि किसी कमीने कापुरुष ने हमारी शिकायत कर दी. किसी भी नेक काम करते इनसान की पीठ में छुरा घोंपना हमारी राष्ट्रीय सिफत है.

नतीजतन, जांच के बाद फिलहाल हम जेल में हैं और खाली वक्त के उचित उपयोग के लिए, जो कभी नहीं किया आज कर रहे हैं. यानी अपनी आत्मकथा 'जनसेवा की कांटों भरी राह' 'डिक्टेट' कर रहे हैं.

परिचित हमारे दृढ़ निश्चय के कायल हैं. अपने लाखों चाहने वालों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि निदान की डाक्टर निर्माण गतिविधि को रोकने वाला कोई माई का लाल न पैदा हुआ है, न होगा. हम जल्दी ही बाहर आएंगे और इच्छुकों को डाक्टर बनाएंगे. समाज सेवकों का जेल आनाजाना तो लगा ही रहता है. ●

काम का जो आदमी को बजाय शांति के आतंक और तनाव दे.

स्कूल में मौडल्स

भोपाल के बड़े स्कूल अब अपने सालाना जलसों में फिल्मी हस्तियों और मौडलों को बुला कर उन की नुमाइश को कामयाबी का पैमाना मानने लगे हैं तो इसे एक गलत रिवाज की शुरुआत ही कहा जाएगा. एक मौडल सीमा मलिक स्कूल के जलसे में आई तो बच्चों ने उस से काम की कोई बात, जो जिंदगी में कभी रास्ता दिखाए, सीखी हो लगता नहीं. प्राइवेट स्कूल अब खुद को बड़ा साबित करने के लिए फिल्मी तामझाम पर उतारू हो आए हैं तो यही लगता है कि धंधा चमकाने का और कोई रास्ता उन के पास नहीं बचा है.

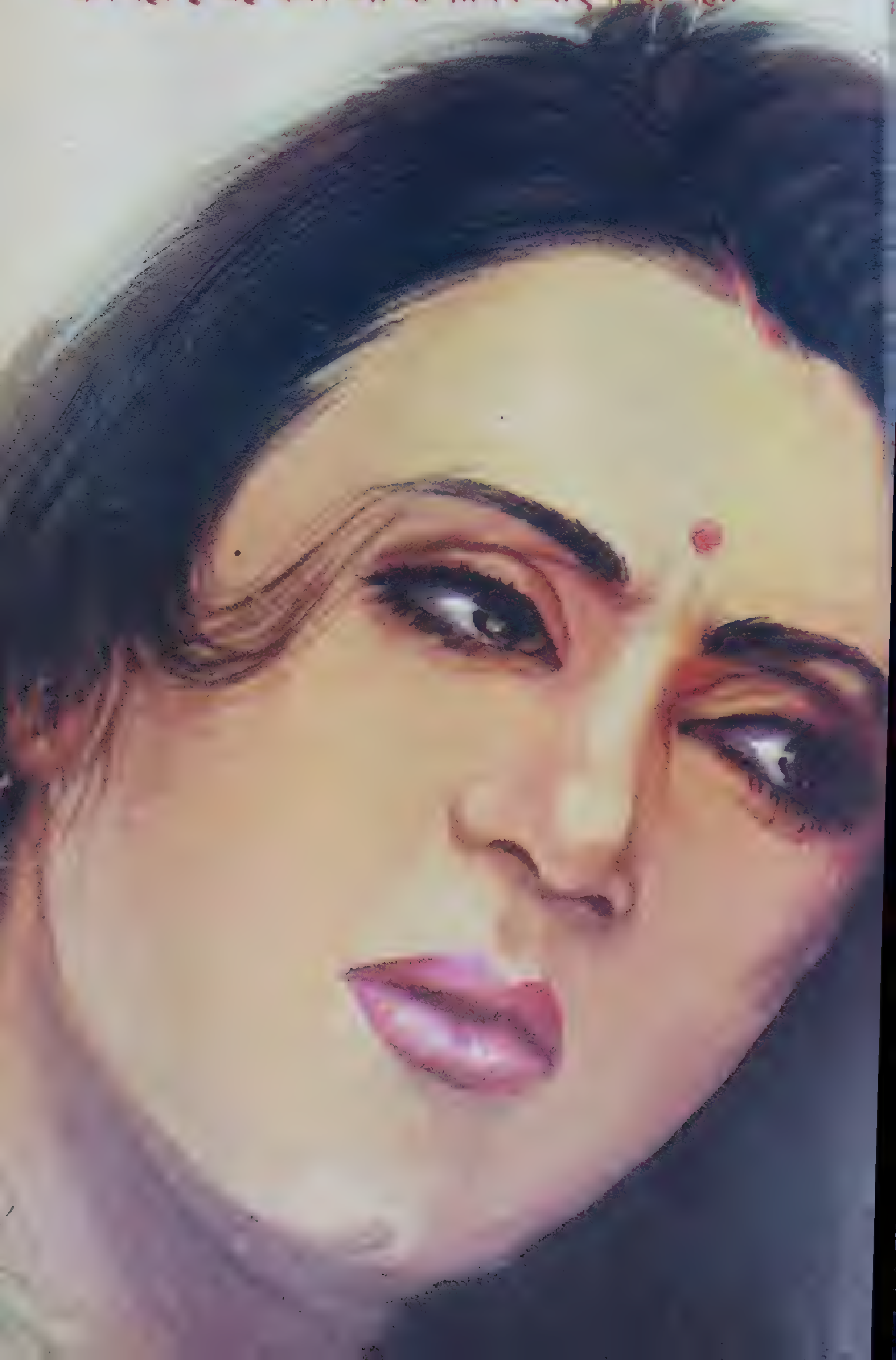
गंदगी क्यों



किसी भी सरकारी दफ्तर की पहचान होती है उस की दीवारों पर पान और तंबाकू की पीकों के चित्र बने होना और गंदगी का ढेर एक कोने में रखा होना. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने यह बदहाली भोपाल के विंध्याचल भवन में देखी तो चौंक गए और अफसर की सफाई सुन हंस पड़े.

दरअसल, सरकारी कर्मचारी ही दफ्तरों में गंदगी फैलाने के जिम्मेदार हैं. जहां वे काम करते हैं वहां साफसफाई रहे इस से उन्हें कोई सरोकार नहीं होता. जो दफ्तर गंदगी से लबरेज पाया जाए उस के मुखिया को सजा की बात सरकार लागू कर दे तो सरकारी इमारतें और बाथरूम चमकने में देर भी नहीं लगेगी. ●

कितना क्षणिक है मानव जीवन. अगर मनुष्य जीवन का यह
जान ले तो व्यर्थ की पीड़ा, द्वेष में अपने आज का सुखचैन न
गंवाए. कितनी चिंता रहती थी वीना को अपने घर की, बच्चों
लेकिन न वह, न कोई और जानता था कि जिस कल की वह
कर रही है वह कल उस के सामने आएगा ही नहीं.



कहानी ● सुधा गुप्ता

कौन जाने

घर में मरघट सी चुप्पी थी. सबकुछ समाप्त हो चुका था. अभी कुछ पल पहले जो थी, अब वो नहीं थी. कुछ भी तो नहीं हुआ था उसे. बस, जरा सा दिल घबराया और कहानी खत्म.

''क्या हो गया बीना को?''

''अरे, अभी तो भलीचंगी थी?''

सब के होंठों पर यही वाक्य थे.

जाने वाली मेरी प्यारी सखी थी और एक बहुत अच्छी इनसान भी. न कोई तकलीफ, न कोई बीमारी. कल शाम ही तो हम बाजार से लंबीचौड़ी खरीदारी कर के लौटे थे.

बीना के बच्चे मुझे देख दहाड़ें मार कर रोने लगे. बस, गले से लगे बच्चों को मैं मात्र थपक ही रही थी, शब्द कहां थे मेरे पास. जो उन्होंने खो दिया था उस की भरपाई मेरे शब्द भला कैसे कर सकते थे?

इनसान कितना खोखला, कितना गरीब है कि जरूरत पड़ने पर शब्द भी हाथ छुड़ा लेते हैं. ऐसा नहीं कि सांत्वना देने वाले के पास सदा ही शब्दों का अभाव होता है, मगर यह भी सच है कि जहां रिश्ता ज्यादा गहरा हो वहां शब्द मौन ही रहते हैं, क्योंकि पीड़ा और व्यथा नापीतोली जो नहीं होती.

''हाय री बीना, तू क्यों चली गई? तेरी जगह मुझे मौत आ जाती. मुझ बुढ़िया की जरूरत नहीं थी यहां...मेरे बेटे का घर उजाड़ कर कहां चली गई री बीना...अरे, बेचारा न आगे का रहा न पीछे का. इस उम्र में इसे अब कौन लड़की देगा?''

दोनों बच्चे अभीअभी आई अपनी दादी का यह विलाप सुन कर स्तब्ध रह गए. कभी मेरा मुंह देखते और कभी अपने पिता का. छोटा भाई और उस की पत्नी भी साथ थे. वो भी क्या कहते. बच्चे चाचाचाची से मिल कर बिलखने लगे. शव को नहलाने का समय आ गया. सभी कमरे से बाहर चले गए. कपड़ा हटाया तो मेरी संपूर्ण चेतना हिल गई. बीना उन्हीं कपड़ों में थीं जो कल बाजार जाते हुए पहने थी.

'अरे, इस नई साड़ी की बारी ही नहीं आ रही...आज चाहे बारिश आए या

आंधी, अब तुम यह मत कह देना कि इतनी सुंदर साड़ी मत पहनो कहीं रिकशे में न फंस जाए...गाड़ी हमारे पास है नहीं और इन के साथ जाने का कहीं कोई प्रोग्राम नहीं बनता.

'मेरे तो प्राण इस साड़ी में ही अटके हैं. आज मुझे यही पहननी है.'

हंस दी थी मैं. सिल्क की गुलाबी साड़ी पहन कर इतनी लंबीचौड़ी खरीदारी में उस के खराब होने के पूरेपूरे आसार थे.

'भई, मरजी है तुम्हारी.'

'नहीं पहनूं क्या?' अगले पल बीना खुद ही बोली थी, 'वैसे तो मुझे इसे नहीं पहनना चाहिए...चौड़े बाजार में तो कीचड़ भी बहुत होता है, कहीं कोई दाग लग गया तो...'

'कोई सिंथेटिक साड़ी पहन लो न बाबा, क्यों इतनी सुंदर साड़ी का सत्यानास करने पर तुली हो...अगले हफ्ते मेरे घर किटी पार्टी है और उस में तुम मेहमान बन कर आने वाली हो, तब इसे पहन लेना.'

'तब तो तुम्हारी रसोई मुझे संभालनी होगी, घीतेल का दाग लग गया तो.'

किस्सा यह कि गुलाबी साड़ी न पहन कर बीना ने वही साड़ी पहन ली थी जो अभी उस के शव पर थी. सच में



गुलाबी साड़ी वह नहीं पह
दाहसंस्कार हो गया और धीरेध
और फिर तेरहवीं भी. मैं हर
जाती रही. बीना द्वारा संजोया घ
बिना सूना और उदास था. ऐस
जैसे कोई चुपचाप उठ कर चल
और उम्मीद सी लगती कि अभी
निकल कर बीना चली आएगी
को चायनाश्ता पूछेगी, पढ़ने को
टीवी बंद करने को कहेगी.

क्याक्या चिंता रहती थी ब
पल भर को भी अपना घर छो
कठिन लगता था. कहती कि
सब अस्तव्यस्त हो जाता है,
देखो, कितना समय हो गया, व
घर और चल रहा है उस के बिन

एक शाम बीना के पति हमारे
आए. परेशान थे. कुछ रु
जरूरत आ पड़ी थी उन्हें. बीना
पर और उस के बाद आयाग
रहा कि पूरी तनख्वाह और कु
पास जो होगा सब समाप्त हो
अभी नई तनख्वाह आने में सम

मेरे पति ने मेरी तरफ देख
मुझे याद आया कि अभी
पहले ही बीना ने मुझे बताय
उस के पास 20 हजार रुपए
चुके हैं जिन्हें वह बैंक
डिपाजिट करना चाहती है.
बीना की कही हुई बातों को
'मुझे किसी के आगे हाथ फैल
नहीं लगता. कम है तो कम
सब्जी के पैसे नहीं हैं तो नमक
रोटी खा कर ऊपर से पानी पी
लोग हैं जो रात में बिना रोटी
जाते हैं. कम से कम हमारी ह
तो अच्छी है न.'

जमीन से जुड़ी थी बीन
उस के पति की आंखों
असहनीय हो रही थी. घर



"रुपए आप के घर में हैं भाईसाहब, आप बीना की अलमारी में देखिए," मैं ने बीना के पति को बताया.

है उन्होंने कभी मुड़ कर भी नहीं देखा था.

''क्या सोच रही हो निशा?'' मेरे पति ने कंधे पर हथेली रख मुझे झकझोरा. आंखें पोंछ लीं मैं ने.

''रुपए हैं आप के घर में भाई साहब, पूरे 20 हजार रुपए बीना ने जमा कर रखे थे. वह कभी किसी से कुछ मांगना नहीं चाहती थी न. शायद इसीलिए सब पहले से जमा कर रखा था उस ने. आप उस की अलमारी में देखिए, वहीं होंगे 20 हजार रुपए.''

बीना के पति चीखचीख कर रोने लगे थे. पूरे 25 साल साथ रह कर भी वह अपनी पत्नी को उतना नहीं जान पाए थे जितना मैं पराई हो कर जानती थी. मेरे पति ने उन्हें किसी तरह संभाला, किसी तरह पानी पिला कर गले का आवेग शांत किया.

''अभी कुछ दिन पहले ही सारा सामान मुझे और बेटे को दिखा रही थी. मैं ने पूछा था कि तुम कहीं जा रही हो क्या जो हम दोनों को सब समझा रही हो तो कहने लगी कि क्या पता मर ही जाऊं. कोई यह तो न कहे कि मरने वाली कंगली ही मर गई.

''तब मुझे क्या पता था कि उस के कहे शब्द सच ही हो जाएंगे. उस के मरने के बाद भी मुझे कहीं नहीं जाना पड़ा. अपने दाहसंस्कार और कफन तक का सामान भी संजो रखा था उस ने.''

बीना के पति तो चले गए और मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सी सोचती रही. जीवन कितना छोटा और क्षणिक है. अभी मैं हूं पर क्षण भर बाद भी रहूंगी या नहीं, कौन जाने. आज मेरी जबान चल रही है, आज मैं अच्छाबुरा, कड़वामीठा अपनी जीभ से टपका रही हूं, कौन जाने क्षण

सूक्तियां

भाषण

भाषण मानव के मस्तिष्क पर शासन करने की कला है. –प्लेटो

सौंदर्य

सौंदर्य को देखने वाले में भी अंशत: सौंदर्य होता है. –बोवी

मनुष्य

मनुष्यों का यह स्वभाव है कि वह दूसरों को अपने से अधिक सुखी समझते हैं और स्वयं वैसा ही होना चाहते हैं.

–सुकरात

सीख

सीख का कदाचित ही स्वागत होता है. जिन को इस की अधिक आवश्यकता है, वे ही इस को सब से कम पसंद करते हैं. –जानसन

अवसर

जब तुम्हें अवसर मिले तो अपने से अधिक अच्छों का साथ करो, यही ठीक और वास्तविक अभिमान है.

–चेस्टरफील्ड

समाचार

समाचारों का प्रात:कालीन वायु के सदृश स्वागत होता है.

–चैपमैन

भर बाद मैं रहूं न रहूं. कौ
कौन से शब्द आखिरी शब
वाले हैं. मेरे द्वारा किया गय
कर्म आखिरी कर्म बन जा
कौन जाने.

मौत एक शाश्वत सचाई
गाली जैसा न मान अगर कड़
मान लूं तो हो सकता है मैं
अन्याय, कोई भी पाप करने से
यही सच हर प्राणी पर लागू
आज हूं, कल रहूं न रहूं कौन

मेरे जीवन में भी
घटनाएं घटी हैं जिन्हें मैं कभ
पाती हूं. मेरे साथ चाहेअ
कुछ रिश्ते जो सदा कांटे से
हैं. कुछ ऐसे नाते जिन्होंने स
ही किया है.

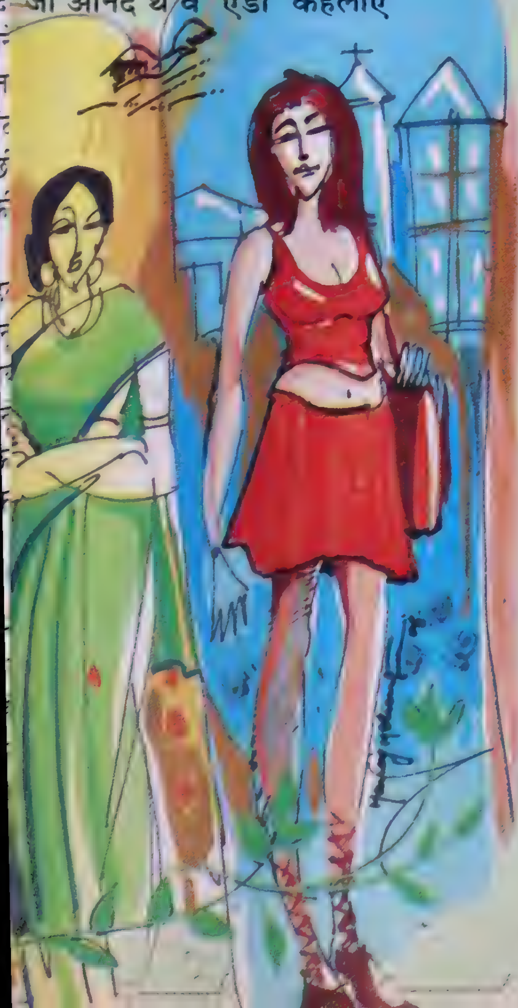
उन के शब्द मन में
उबलते रहते हैं, जिन से मि
तनाव से भरती रही हूं. एका
लगी हूं कि मेरा जीवन इतन
नहीं है, जिसे तनाव और घृ
चढ़ा दूं. कुदरत ने अच्छा
संतान दी है जिस के लिए
आभारी हूं.

इतना सब है तो थोड़ी
को झटक देना क्यों न श्रेयस
क्यों न हाथ झाड़ दूं तनाव से.
को आक्रोश और तनाव से
जो मिला है उसी का सुख क
क्यों व्यर्थ पीड़ा में अपने
नाश करूं.

प्रकृति ने इतनी नेमतें
तो क्यों न जरा सी क
सिरआंखों पर ले लूं, क्यों
उन्हें, जिन्होंने मुझ से कभी
किया. और मैं ने उन्हें तत्क
दिया, बिना एक भी क्षण ग
जीवन क्षणिक है न. मैं अभ
बाद रहूं न रहूं, कौन जाने.

हुए उन के जैसे

देखो हम कैसे अपने मतलब में
सफल हो गए
भारत से जब हम विदेश पहुंचे तो
कितनी जल्दी उन जैसे हो गए.
भाषा की समस्या आई तो अपनी बोली
भूल कर 'एक्स क्यूज मी' सीख गए,
खाने की बात आई तो दालरोटी छोड़ कर
बड़ी आसानी से हेमबरगर
और गाय की चर्बी से सनी फ्राई खा गए.
अंगरेजों को हमारा नाम लेने में
कठिनाई आई तो
हम मुकेश से 'माइक' हो गए.
2 सेकंड में बाबूलाल से 'बाबी' बने
सुरेश से उन के समान 'सेम' हो गए.
जो कभी बैजयंती कहलाती थीं
वह माडर्न 'वर्जीनिया' बन गई,
जो आनंद थे वे 'एंडी' कहलाए



संगीता थीं वह 'सेंडी' बन गई.
विदेश का पानी क्या पिया कि
ऐसा नशा चढ़ गया कि फिर हमारी
ना कोई जाति रही और
न ही कोई धर्म बाकी रहा,
दिमाग में यदि कोई था तो वह था केवल
'इन गाड वी ट्रस्ट' का
हरा डालर ही बसा रहा.
हम ने मंदिर भी बनवाया और पूजा भी की
तो केवल स्वार्थ इतना ही भर रहा,
किसी तरह से टैक्स बचाया जाए और
'नान प्रोफिट आरगेनाइजेशन' के नाम पर
भगवान के घर में गाड का
डालर छिपाया जाए.
ये पूर्व देश है और उस की वह हवा है
यहां 14 साल की मांएं हैं,
और पचास साल के पिता हैं, लेकिन
डी.एन.ए. रोज ही चैक करो
तब भी बच्चे किस के हैं,
ये किसी को न पता है.
इतनी तो समानता है यहां कि
वीसा भर मिले बस,
और शादी किसी से भी जुड़े,
अपना मतलब पूरा हो केवल,
फिर तुलसी के स्थान पर चाहे
घर में क्रिसमस ट्री ही क्यों न सजे.
अपनी फूटी किस्मत है ये,
और चाहे इसे दास्तां ही कहो हमारी
चैन तो हमें न अपने घर में था, और
ना ही अपने देश में,
उसी चैन की तलाश में
हम विदेश में तो आ गए,
पर हमें क्या पता था कि हम यहां रहते हुए
न केवल उन के जैसे हो गए,
बल्कि ईसाइयों के बीच में रहते हुए
हिंदू रहे और ना ही मुस्लिम
बल्कि ईसाइयों जैसे ही हो गए.

-शरोवन

पर्यट

जम्मूकश्मीर

कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता का अंदाजा इसी से लग जाता है कि अ
भयानक दौर में भी दुनिया भर के सैलानी यहां पहुंचते थे. आजकल
कश्मीर के सीमांतों तक घूम आते हैं. चारों ओर पुलिस व सैनिकों की मौजूद
खुद को कहीं असुरक्षित नहीं पाते. लोगों का मानना है कि पर्यटक य
व्यावसायिक धांधली का शिकार भी नहीं होते.

1846 की संधि के तहत अंगरेजों ने सिखों के खिलाफ युद्ध में सहायत
गुलाबसिंह को कश्मीर समेत जम्मू और लद्दाख इनाम में दिया था. डोगरा
गुलाबसिंह के बाद इस रियासत के अंतिम शासक हरिसिंह थे. अंगरेज
नियंत्रण करते थे.





परिदृश्य

भारतपाकिस्तान बंटवारे के समय से कश्मीर की दावेदारी के पुराने झगड़े बढ़ते गए और भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध भी हुए. इस का नाजायज फायदा आतंकवादियों ने कश्मीर के अलगाववादियों को भड़का कर उठाया और कश्मीर में घुसपैठ करने लगे. जब उन्होंने पाकिस्तान में भी हिंसा व तोड़फोड़ शुरू की तो पाकिस्तान संभला. अब दोनों ओर से शांति प्रयासों के कारण कश्मीर में तनाव कम हुआ है.

जम्मूकश्मीर के नाम से मशहूर यह प्रदेश हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों पर भारत के मुकुट की भांति लगता है. इस राज्य में अलगअलग ऊंचाइयों वाले 3 इलाके जम्मू, कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं. दुर्गम सियाचिन और कारगिल क्षेत्र लद्दाख में आते हैं. श्रीनगर राज्य की ग्रीष्म राजधानी है. सर्दियों में जम्मू में राजधानी रहती है. लेह में लद्दाख के मुख्य प्रशासनिक काम होते हैं. 2,22,236 वर्ग किलोमीटर में फैले जम्मूकश्मीर राज्य की आबादी 1 करोड़ से अधिक है. अधिकांश लोग कृषि व पशुपालन पर निर्भर हैं. विदेशी सैलानियों के लिए पूरा क्षेत्र खुल जाने के बाद यहां पर्यटन व्यवसाय बढ़ रहा है. यहां डोगरी, कश्मीरी, उर्दू, लद्दाखी, हिंदी व पंजाबी भाषाएं बोली जाती हैं.



श्रीनगर

कश्मीर का सब से बड़ा शहर श्रीनगर समुद्रतल से 1,730 मीटर की ऊंचाई पर झेलम नदी और डलझील के खूबसूरत किनारों पर बसा है. श्रीनगर देशीविदेशी सैलानियों का मुख्य पड़ाव है. चारों ओर पर्वतों से घिरा यह नगर बहुत बड़े मैदानी भूखंड पर बसा है जिस का क्षेत्रफल 103.93 वर्ग किलोमीटर है.

यह खूबसूरत बागों, ऐतिहासिक व कलात्मक इमारतों, चिनार और देवदार से भरे रास्तों की धरती है, जहां हर मौसम नए रंग बिखेरता हुआ आता है. पहलगाम, गुलमर्ग और सोनमर्ग के पहाड़ों से घिरा, शालीमार और निशात जैसे कई बागों से सजा श्रीनगर वास्तव में ही श्री यानी सौंदर्य का नगर है.

श्रीनगर में लोकल बसें, टैक्सी, कार और तिपहिया हर जगह उपलब्ध हैं. डलझील के चारों ओर जाने के लिए बसें, शिकारे व नावें हैं.

पर्यटन स्थलों पर घुमाने के नाम पर जिस तरह देश में हर कहीं गुमराह क[...] मिलते हैं, कश्मीर में आमतौर पर [...] मिलेंगे. डलगेट पर बैठ कर आ[...] अपना घूमने का कार्यक्रम बना स[...]

दर्शनीय स्थल

डलगेट, डलझील : शहर के [...] प्रसिद्ध डलझील स्थित है. [...] सैलानियों से भरा रहता है. श्री[...] वाला हर सैलानी डलझील के [...] पहुंचता है. डलगेट श्रीनगर के के[...] से ढाई किलोमीटर और पर्यटक[...] के पास है.

यहां से जरा आगे निकल[...] एकांत में अपने लिए किसी भी स्त[...] पा लेता है. यहां हर तरह के होटल[...] गेस्टहाउस और मकान मिलते हैं [...] आमनेसामने इन की कतारें हैं.

डलझील इतनी बड़ी है कि [...]

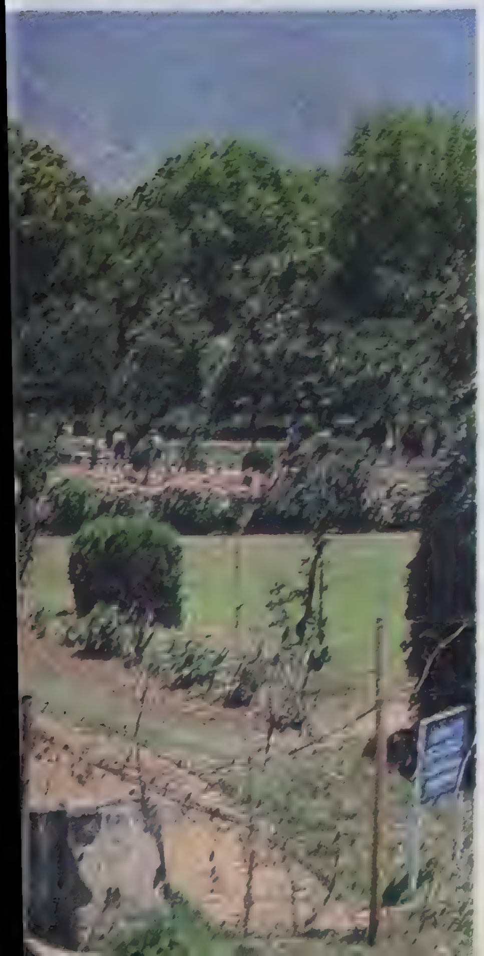


: नहीं देखा जा सकता. ऽभी यह झील 28 वर्ग क़लोमीटर क्षेत्र में ऽली होती थी लेकिन ग़ेधव सिकुड़ जाने के महाद यह आज भी 12 र्ग किलोमीटर में ऽली है. डलगेट से ागे आप दिन भर इस ऽ एकांत किनारों पर श्तर कर सकते हैं. कामान्य नाव या शिकारे चगाप को झील पर गे्माएंगे भी और आप ाक हाउसबोट या होटल कक पहुंचाएंगे भी. हाउसबोट तैरते हैं पर लते नहीं.

डल में बने सुंदर टापू यानी नेहरू पार्क इ बिना आराम किए बात नहीं बनती. चार चिनार नामक टापू पर भी जाएं. यहां हर कहीं



कश्मीरी बालाएं अपनी पारंपरिक वेशभूषा में इतनी आकर्षक लगती हैं कि देखने वालों का मन मोह लेती हैं.



ल झील तथा पहाड़ों के बीच स्थित निशात बाग की खूबसूरती देखने लायक है.

एक से बढ़ कर एक रेस्तरां मौजूद हैं. श्रीनगर के मशहूर बाग डल के किनारों से ही लगे हैं. बढ़िया रेस्तरां और ढाबे झील के दाहिने किनारे पर ज्यादा हैं.

नगीन झील : शहर से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह झील भी डलझील का ही एक हिस्सा है लेकिन अपनी खूबसूरती के लिए यह झील प्रसिद्ध है. झील तक पहुंचने के लिए सब से छोटा रास्ता हजरत बल की ओर से है. झील के नीले पानी में चारों ओर अंगूठी की तरह दिखने वाले पेड़ों के झुंड के कारण इस का नाम नगीन पड़ा है.

निशात बाग : डल झील के दाहिने किनारे पर बनी चौड़ी सड़क से आगे चलें तो 8 किलोमीटर आगे यह बाग सैलानियों का मन मोह लेता है. फूलों, दरख्तों, फौआरों और झरनों से सजे इस बाग से आप झील और उस के पीछे नजर आने वाली बर्फ से ढकी चोटियों को देख सकेंगे. इस बाग को नूरजहां के भाई आसिफ खान ने 1633 में बनवाया था. यह सब से बड़ा मुगल गार्डन है. बाग की मखमली धरती पर पेड़ों की छांव में हर कहीं सैलानी बैठे मिलते हैं.

शालीमार बाग : निशात बाग से 4 किलोमीटर आगे एक पहाड़ की तलहटी में फूलों व वनों से सजा शालीमार बाग है. इसे

1616 में जहांगीर ने अपनी बीवी नूरजहां के लिए बनवाया था. इस के बीचोंबीच झील से लाई गई एक नहर गुजरती है और ऊपर से नीचे तक झरनों, फौआरों व तालाबों का रूप ले लेती है. यहां से भी सैलानी डलझील और सामने की पर्वतमालाओं को एक नजर में देख सकते हैं. इस बाग में 4 बारादरियां बनी हैं जिन में से 3 मुगल शासकों व एक शाही परिवारों के लिए आरक्षित थीं. यहां रात को लाइट एंड साउंड प्रोग्राम दिखाया जाता है.

बोटेनिकल गार्डन : शालीमार बाग से डलगेट लौटते हुए सैलानी झील से कुछ हट कर पहाड़ की ढलान पर फैले बहुत बड़े वनस्पति बाग को देख सकते हैं. इस बाग में दुनिया भर से लाए गए पेड़पौधों और फूलों की दुर्लभ और सुंदर किस्में मौजूद हैं. यहां के खुले और मखमली भूखंडों के बीच नौका विहार के लिए छोटी झील भी है. यह बाग दूरदूर से आए स्कूली बच्चों और विदेशी सैलानियों से भरा मिलता है.

चश्मे शाही : बोटेनिकल
तरफ ढलानों पर शाहजहां
यह बाग स्थित है जो अद्भु
करता है.

परी महल : शहर से 11
दूरी पर स्थित यह महल पहले एक
शाहजहां के बेटे दारा शिकोह
शिक्षा का केंद्र बनाया. आज यह
घिरा एक खूबसूरत पर्यटन स्थ
डलझील और पर्वतों के नजारे कु
में देखने को मिलते हैं.

सुलेमान पहाड़ : इसे तख
के नाम से भी जाना जाता है.
हजार फुट की ऊंचाई पर स्
सैलानी श्रीनगर शहर, डलझील
ऊंचे व बर्फीले पहाड़ों को देख
इस चोटी पर अपना वाहन ले
अनुयायी सम्राट अशोक के पुत्र
बनवाए गए एक प्राचीन भवन
यहां देखा जा सकता है. अब य

श्रीनगर : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : श्रीनगर के लिए मुंबई, दिल्ली, चंडीगढ़, अमृतसर, लेह
इंडियन एअरलाइंस, सहारा इंडिया और जेट एअरवेज की सीधी उड़ानें हैं,
उड़ानें सदा नियमित नहीं रहतीं. श्रीनगर हवाई अड्डा नगर की सीमा से 13
बाहर है.

रेल मार्ग : श्रीनगर का निकटतम रेलवे स्टेशन जम्मू 300 किलोमीट
देश के प्रमुख स्टेशनों से जुड़ा हुआ है.

सड़क मार्ग : श्रीनगर के लिए देश के कई शहरों से बसें आतीजाती

कब जाएं : अप्रैल से जून और मध्य सितंबर से अक्तूबर तक श्रीन
मौसम रहता है. सामान्य गर्म कपड़े साथ रखने चाहिए.

कहां ठहरें : हाउसबोट ओनर एसोसिएशन का दफ्तर डलगेट में प
केंद्र के सामन है. वहां किराए की दरें देख लें. बुकिंग कराने से आप
हाउसबोट मिले, यह जरूरी नहीं. डलझील के बाएं तट पर खुद देख
करना ठीक रहेगा. शिकारे या नाव के लिए भी साथ ही किराया तय क
मकानों में भी 100 से 200 रुपए में अच्छे कमरे मिलते हैं. यहां होटल
पर हैं. प्रमुख होटल निम्न हैं :

'होटल रचना' (फोन : 2474365); 'होटल स्विस', (2472
होटल', (2473242); 'ग्रीन एकर्स गेस्ट हाउस', (2453859); 'जह
(2471830-31); 'मधुबन होटल', (24536/800).

एस.टी.डी. कोड : 0194



ंदिर बना हुआ है.

हजरत बल : डलगेट से 6 किलोमीटर दूर डलझील के पश्चिमी तट पर निशात बाग के बिलकुल सामने यह मसजिद स्थित है. इस मसजिद के पीछे की ओर नसीम बाग है जिसे अकबर ने बनवाया था. हजरत बल का निर्माण मूलतः शाहजहां ने किया था. नसीम बाग में चनार के बहुत पुराने पेड़ देखने को मिलते हैं. यहां बैठ कर सैलानी सामने के पहाड़ों को नए रूप में देखते हैं.

लाल चौक : यह श्रीनगर का सब से बड़ा और खुला बाजार है. यहां आप हर तरह की चीजें सही दामों में खरीद सकते हैं. आतंकवादियों से पुलिस व सेना की मुठभेड़ के लिए मशहूर इस जगह पर सैलानी कम ही जाते जबकि स्थानीय लोगों की ज्यादा भीड़ यहीं मिलती है. कश्मीरी बाजारों की पूरी झलक देखने के लिए लाल चौक के इर्दगिर्द के बाजार देखने लायक हैं.

हरिपर्वत किला : श्रीनगर के उत्तरपूर्व में स्थित इस किले का निर्माण अत्ता मुहम्मद खान ने करवाया था जो एक अफगान शासक था. इस किले के चारों ओर बादाम के बाग हैं. किले में जाने के लिए पुरातत्त्व विभाग से अनुमतिपत्र लेना जरूरी है जिस का कार्यालय लालमंडी चौक में स्थित है.

गुलमर्ग कश्मीर के सब से सुंदर प्राकृतिक स्थलों में से एक है.

आसपास के दर्शनीय स्थल

गुलमर्ग : कश्मीर में होने का सही अर्थों में एहसास यहां आ कर ही होता है. श्रीनगर से गुलमर्ग तक 52 किलोमीटर की सर्पीली व सजीली यात्रा बेहद रोचक है. समुद्रतल से 2,730 मीटर की ऊंचाई पर पहाड़ों के पीछे छिपा गुलमर्ग कश्मीर के सब से सुंदर प्राकृतिक स्थलों में से एक है. देवदार के जंगलों और पर्वतों की बर्फ भरी चोटियों से घिरे गुलमर्ग के मखमली और फूलों से भरे टीले गर्मियों में सदा सैलानियों से आबाद मिलते हैं.

कश्मीर का आखिरी मुगल शासक और उस की शायर पत्नी हब्बा खातून बारबार गुलमर्ग आ कर रहते थे. जहांगीर भी नूरजहां के साथ यहां रहा था.

गुलमर्ग करीब साढ़े 3 किलोमीटर लंबे और 1 किलोमीटर चौड़े भूखंड पर फैला है. वहां ठहरना न हो तो आधे दिन में घूमफिर कर सैलानी श्रीनगर लौट सकते हैं. श्रीनगर के बटमालू बस अड्डे से गुलमर्ग के लिए दिन भर



सोनमर्ग जिसे सोने की घाटी भी कहा जाता है, एक रमणीक पर्यटन स्थल है.

बसें मिलती हैं.

अहरबल : श्रीनगर से 51 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अहरबल 24.4 मीटर की ऊंचाई से गिरते झरने के लिए प्रसिद्ध है जो इस स्थान की समुद्रतट से ऊंचाई 2,400 मीटर है.

सोनमर्ग : अपने सुनहरे फूलों के कारण यह मैदान सोनमर्ग कहलाया. लेह मार्ग पर श्रीनगर से 86 किलोमीटर की दूरी पर सोनमर्ग स्थित है. सिंध नदी के किनारे, समुद्रतल से 2,740 मीटर की ऊंचाई पर इसे सुंदर और खतरनाक ढलानों के लिए जाना जाता है, जिन से हो कर पहाड़ों पर बनी रोमांचक झीलों और ग्लेशियरों तक रास्ते जाते हैं. यह कश्मीर की अंतिम घाटी है, जहां से जोजिला पास, कारगिल, लद्दाख और अमरनाथ को रास्ते जाते हैं. यहां यात्रियों के ठहरने के लिए काफी सुविधाएं हैं.

मट्टन : श्रीनगर से 61 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान पहलगाम जाने वाले सैलानियों की विश्रामस्थली है. यहां एक खूबसूरत झरना है. इस स्थान से केवल 3 किलोमीटर की दूरी पर मार्तंड है जहां ऐतिहासिक कुछ खंडहर मौजूद हैं, जो सूर्य मंदिर के नाम से जाने जाते हैं. इस का निर्माण काल 7वीं व 8वीं सदी माना गया है.

पहलगाम : जम्मूश्रीनगर मार्ग पर अनंतनाग से पहलगाम 42 किलोमीटर दूर है. किसी जमाने में यह गड़रियों का गांव था. पहलगाम का मतलब गड़रियों का गांव ही है. यह भी कहा जाता है कि सूली से बच निकलने के बाद जब लंबी यात्रा के बाद ईसा कश्मीर पहुंचे तो यहां आ कर रहे थे और उन्हीं के कारण इस जगह का नाम पहलगाम पड़ा.

पहलगाम लिद्दर नदी के किनारे पर स्थित है. शेषनाग नाला यहीं लिद्दर नदी में मिलता है. घने जंगलों और बर्फ से ढकी चोटियों से घिरी इस मखमली घाटी पर जगहजगह ठं पानी की जलधाराएं मिलती हैं. भरपूर प्रकृति भरे वनों की यहां कमी नहीं है. –सैन्नी अशे

जम्मू

दर्शनीय स्थल

अमर महल संग्रहालय : तवी नदी के पर स्थित इस संग्रहालय की बनावट पर्यट की आंखों में एक अलग ही मनमोहक छवि तानाबाना बुनती है. इस महल का निर्माण फ्रे महल के नमूने पर किया गया है. संग्रहालय अंदर शाही अंदाज की झलक आज भी देखी सकती है. यहां शाही परिवारों के चित्रों पहाड़ी चित्रकला से संबंधित चित्रों पुस्तकालयों का संग्रह है जिसे देखने समझने का मजा ही कुछ और है.

रणवीरेश्वर मंदिर : अमर म संग्रहालय के अलावा महाराज रणवीर द्वारा बनवाया गया अद्भुत बनावट का

क प्राचीन मंदिर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है. यहां का साढ़े 7 फुट लंबा शिवलिंग अपनेआप में अनूठा है. मंदिर नए चिवालय के पास शालीमार रोड पर स्थित है जस की ऊंचाई के सामने जम्मू की सारी मारतें बौनी दिखाई देती हैं.

मुबारक मंडी : यह कभी राजाओं के हल थे. इस के अंदर कुछ हिस्से टूटे दिखाई ते हैं. लेकिन बचे हुए अधिकांश भागों में कारीगरी के बेहतरीन नमूनों को देखना पनेआप में एक अलग ही एहसास देता है.

डोगरा आर्ट गैलरी : यहां जम्मू तथा सोहली की पहाड़ी कला तथा चित्रकला की ीजें संगृहीत हैं. इस आर्ट गैलरी में बसोहली ली के आभूषण देखने लायक हैं. आजकल ह भी पुराने सचिवालय में हैं.

बाहू किला : जम्मू शहर से करीब 4 कलोमीटर दूर पहाड़ी पर बना बाहू किला यहां का ब से पुराना किला है. करीब 3 हजार साल पहले जा बाहुलोचन द्वारा बनवाए गए इस किले की चीर आज भी अपनी पुरानी स्थिति में मौजूद है.

किले के नीचे बागेबहू उद्यान पिकनिक लिए उत्तम स्थान है, जहां से पूरा शहर खाई देता है.

च शैली में बने अमर महल म्यूजियम में ाड़ी चित्रकला को देखा जा सकता है.

पीर खो : शहर से 3.5 किलोमीटर दूर सर्कुलर रोड पर स्थित पीर खो एक महत्त्वपूर्ण पर्यटक स्थल है जहां एक प्राकृतिक गुफा में शिवलिंग दर्शनीय है.

आसपास के दर्शनीय स्थल

जम्मू से करीब 100 किलोमीटर दूर स्थित कुद का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है. सर्दियों में जब यहां की पहाड़ियां सफेद बर्फ की चादर ओढ़ लेती हैं तो पर्यटक खुद को किसी स्वप्नलोक में पहुंचा हुआ पाते हैं. यहां ट्रैकिंग और अन्य खेलों का भी आनंद बखूबी लिया जा सकता है.

मानेसर झील : जम्मू से लगभग 62 किलोमीटर की दूरी पर यह झील स्थित है. यहां सैलानियों के लिए नौकायन की सुविधा है. जम्मू के लोगों के लिए यह बेहतर पिकनिक स्थल है. इस झील के किनारे महल के खंडहर हैं. जम्मू से यहां के लिए सीधी बस सेवा है.

मानसर में बैसाखी के अवसर पर जम्मूकश्मीर पर्यटन विभाग द्वारा हर साल 'फूड एंड क्राफ्ट' मेले का आयोजन किया जाता है.

सुरिनसर झील : यह झील मानेसर जितनी बड़ी तो नहीं है लेकिन खूबसूरत पर्यटन स्थल जरूर है. झील के पास ही एक



जम्मू : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : **अमृतसर, चंडीगढ़, दिल्ली, मुंबई, श्रीनगर तथा लेह से जम्मू के लिए इंडियन एअरलाइंस की सीधी उड़ानें हैं. हवाई अड्डा पुराने शहर से 7 किलोमीटर दूर स्थित है.**

सड़क मार्ग : **जम्मू शहर में स्कूटर, रिकशा, टैक्सी तथा मैटाडोर, मिनी बसें, आसानी से उपलब्ध होती हैं. मिनी बसें सब से सस्ता साधन हैं और स्कूटर, रिकशा व टैक्सियां मीटर से नहीं चलतीं. अतः दूरी को देखते हुए किराया पहले ही तय कर लें.**

रेल मार्ग : **देश के सभी प्रमुख शहरों से जम्मू के लिए रेल सेवा उपलब्ध है. कोलकाता, भोपाल, अहमदाबाद, दिल्ली, मुंबई, पठानकोट, चेन्नई तथा कन्याकुमारी के लिए जम्मू से सीधी रेल सेवाएं हैं.**

सड़क मार्ग : **राष्ट्रीय राजमार्ग से जम्मू देश के मुख्य शहरों से जुड़ा हुआ है. जम्मू से अन्य प्रमुख शहरों को जाने के लिए अच्छी सड़कें हैं.**

कहां ठहरें : **'जम्मू होटल', फोन-2435757-8-9-60; 'जम्मू अशोक', फोन-2543574; 'हरि निवास पैलेस', फोन-2547216; 'कासमोपोलिटन होटल', फोन-2577571; 'मानसर होटल', फोन-2573030, 2573610; 'माडर्न होटल', फोन-2543425; 'अरोमा', फोन-2574587; 'सम्राट', फोन-2544957; 'विशाल होटल', फोन-2573865; 'ज्यूल चौक', फोन-2547630; 'केसी रेजीडेंसी', फोन-2542773; 'प्रीमियर', फोन-2543731, 2543436; 'जियाफत', फोन-2543926, 2577377; 'दुर्गा पैलेस', फोन-2578446; 'अमर पैलेस'; 'स्वागत', फोन-2542224.**

कब जाएं : **पर्यटक वर्षा ऋतु को छोड़ कर वर्ष के किसी भी महीने में जम्मू घूमने का कार्यक्रम बना सकते हैं.**

एस.टी.डी. कोड : 0191

अभयारण्य है जिस में तरहतरह के पक्षी देखे जा सकते हैं.

अखनूर : चिनाब नदी के किनारे जम्मू से 32 किलोमीटर दूर स्थित अखनूर एक ऐतिहासिक कसबा है. इस कसबे के साथ सोहनीमहीवाल का किस्सा जुड़ा है. यहां की फिजा अलग ही रूमानियत लिए हुए है जिस में चिनाब का विहंगम दृश्य अलग ही रंग घोलता है. सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष आज भी यहां मौजूद हैं. –विनीत कुमार झा 'उत्पल'

पटनीटाप

घने देवदार और चीड़ के जंगल, कलकल करते झरने, बर्फ से ढकी चोटियां और भीड़भाड़ से दूर शांत पटनीटाप को 'धरती का स्वर्ग' कहना शायद गलत न होगा.

जम्मू से 110 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान कम आबादी वाला है. श्रीनगर से भी अधिक ऊंचाई पर होने के कारण यहां का मौसम हमेशा खुशगवार बना रहता है. चेनाब की घाटी का सौंदर्य, मनलुभावन वादियां और कोहरे के बीच यहां का प्राकृतिक सौंदर्य सैलानियों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है.

समुद्रतल से 2,024 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पटनीटाप, जम्मूश्रीनगर मार्ग पर स्थित है. पटनीटाप पहुंचने के लिए जम्मू और कटरा से नियमित बस सेवाएं हैं. इन के अलावा ट्रैवल एजेंसियों द्वारा टैक्सी भी किराए पर मिल जाती है. आप चाहें तो चार्टर्ड लक्जरी कोच से भी जा सकते हैं. ऐसे में आप मनमाने ढंग से किराया वसूलने वालों से बचें.

गरमी से ज्यादा लोग यहां सर्दियों का

मजा लेने पहुंचते हैं. सर्दियों में यहां पैराग्लाइडिंग और स्कीइंग का अलग ही आनंद होता है. इन का मजा लेने से यदि आप डर रहे हैं तो आप की मदद करने के लिए बहुत कम शुल्क में पर्यटन विभाग इस की ट्रेनिंग भी देता है. यही नहीं यहां गोल्फ के मैदान में आप गोल्फ खेलने का आनंद भी ले सकते हैं.

पटनीटाप में ठहरने के लिए राज्य पर्यटन विभाग के कई टूरिस्ट बंगले, हट और कमरे हैं. इस में ड्राइंग रूम, डायनिंग रूम, सुसज्जित किचन और अन्य सभी आधुनिक सुखसुविधाएं भी मिलेंगी. पटनी एन्क्लेव, पडोरा गांव, वरदान रिसोर्ट्स और एशिया-द ओएसिस रिसोर्ट (एशिया ग्रुप आफ होटल) आदि कई

पटनीटाप से लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस हरीभरी घाटी की खूबसूरती बेमिसाल है जिसे सैलानी बैठ कर घंटों देखता रहता है. प्याले के आकार की शांत व सुरम्य इस घाटी के चारों ओर हरेभरे मैदान हैं. भीड़भाड़ से दूर सुकून के साथ यहां बिखरी धूप का आनंद लेना आप को अवश्य पसंद आएगा. आप चाहें तो यहां गोल्फ कोर्स में गोल्फ का आनंद लें या फिर पैराग्लाइडिंग से अपना मनोरंजन करें.

बटोट : जम्मू से 125 किलोमीटर दूर बटोट स्थित है. जम्मूश्रीनगर नेशनल हाइवे पर समुद्रतल से 1,560 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्थान देखते ही बनता है. पटनीटाप पर्वतश्रेणियों की ढलान पर स्थित यह मनोरम



मू का सब से खूबसूरत पर्यटन स्थल पटनीटाप व भर के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित ता है.

स्थान चिनाब की घाटियों का सुंदर दृश्य पेश करता है.

कुद : जम्मू से 103 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कुद यहां का प्रसिद्ध रिसोर्ट है. जम्मूश्रीनगर हाइवे पर समुद्रतल से 1,738 मीटर की ऊंचाई पर कुद स्थित है. अपनी सुंदर व मनोरम छटा से यह रिसोर्ट सैलानियों को प्रभावित करने में सक्षम है.

शिवगढ़ : पटनीटाप से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित शिवगढ़ समुद्रतल से 3,500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. मरीजों के स्वास्थ्य लाभ के लिए यह उपयुक्त जगह है क्योंकि यहां का हवा व पानी बहुत शुद्ध है.

–सुषमा कुमारी

नी होटलों की भी अच्छी व्यवस्था है.

र्शनीय स्थल

किस्तवाड़ : पटनीटाप से 15 किलोमीटर दूरी पर चीड़ और देवदार के वृक्षों से घिरा स्तवाड़ एक अच्छा ट्रैकिंग स्थल है. यहां के लिए बटोट से हो कर आप को गुजरना . ट्रैकिंग का मजा जितना आप को यहां गा शायद ही कहीं और मिले.

सनासर : जम्मू से 129 किलोमीटर और



लेह (लद्दाख)

लद्दाख में बर्फानी दर्रों के बीच प्रकृति का ऐसा अनमोल खजाना समाया है कि देख कर मन रोमांच से भर उठता है.

लद्दाख को 'बर्फ का रेगिस्तान' भी कहते हैं. यहां आबादी बहुत कम है. यह पश्चिम हिमालय का ऐसा दुर्गम इलाका है जिसे सदियों से एक रहस्य की तरह देखा जाता है. दिल्ली से लेह की दूरी 1,045 किलोमीटर है.

मनाली से लेह तक 475 किलोमीटर का लंबा रास्ता दुनिया का सब से रोमांचक बसमार्ग है. इस रास्ते में कई ऊंचे दर्रे, ग्लेशियर, नदियां, मीलों लंबे मैदान, झीलें, बर्फ से ढकी चोटियां और नंगे चट्टानी पहाड़ आते हैं.

251 किलोमीटर पर सरचू नामक स्थान से आगे जम्मूकश्मीर राज्य की सीमा शुरू होती है. यहीं से सैलानी लद्दाख क्षेत्र में प्रवेश करते हैं. इस इलाके में किसी भी मौसम में बारिश की जगह सिर्फ बर्फ गिरती है.

लद्दाख के पूर्व में तिब्बत, पश्चिम में पाकिस्तान, दक्षिणपश्चिम में कश्मीर और दक्षिण में हिमाचल की लाहुलस्पीति घाटी पड़ती है. लद्दाख की आबादी 1 लाख के आसपास है जिस में आधी आबादी सैनिकों की है.

लद्दाख दक्षिणपश्चिम ग्रेट हिमालयन रेंज से जुड़ा है. इस में सब से ऊंची चोटियां नुन (7,135 मीटर) और कुन (7,087 मीटर) शामिल हैं. दक्षिण हिमालय और उत्तरी सिंधु नदी के बीच आने वाली जयशंकर रेंज लद्दाख में ही है. किसी युग में लद्दाख के लोग याक यानी सुरागाय चराते थे और उसी पर ज्यादा निर्भर रहते थे. आज यहां बौद्ध और मुसलिम लोगों की बस्तियां हैं. यहां लोग लद्दाखी बोली के साथ ही हिंदी भी बोलते हैं.

दर्शनीय स्थल

लेह शहर : सैकड़ों किलोमीटर के वीराने में चलने के बाद सहसा जब मुसाफिर की नजर इस बड़े शहर पर पड़ती है तो वह हैरान रह जाता है कि बर्फानी दर्रों के बीच प्रकृति का ऐसा अनमोल खजाना समाया हुआ है. सिंधु नदी के किनारे बसे इस प्राचीन शहर का रूप अब आधुनिक हो चुका है. यहां हर कहीं विदेशी सैलानी ऐसे घूमते मिलेंगे, मानो वे यहीं के रहने वाले हैं.

लेह का बाजार बहुत चौड़ा है. कहा जाता है कि आजादी से पहले अंगरेज यहां पोलो खेला करते थे. लेह में सैलानी घूमने या कुछ विशेष देखने का उद्देश्य ले कर नहीं आते क्योंकि यह कोई बड़ा शहर नहीं है. यहां तो सैलानी जिंदगी के कुछ दिन प्रकृति की गोद में रह कर बिताने के लिए आते हैं. 17वीं शताब्दी में बना लेह महल और बौद्ध मठ देखने लायक है. 1430 में बना नामग्याल त्सेमो गोंपा, शांति स्तूप, हाल आफ फेम म्यूजियम आदि कुछ और देखने लायक स्थान लेह नगर के आसपास ही हैं. वैसे

ा का मुख्य बाजार भी कम दर्शनीय नहीं है ां सैलानियों को कश्मीरी, लद्दाखी और ब्बती कलाओं वाली ढेरों चीजें सजी देखने मिलती हैं.

पहाड़ों से बर्फ खिसकने के कारण जून में लद्दाख के रास्ते खतरनाक हो जाते जुलाई से अक्तूबर तक ही इस इलाके में त्रा करना ठीक रहता है. यहां बारिश नहीं होती किन ठंड काफी होती है. हां, जुलाई और ास्त में लेह नगर में ठंड नहीं होती.

लेह पहुंचने के बाद आप लद्दाख के छ खास इलाकों की यात्रा कर सकते हैं, जैसे के पश्चिम में स्पितुक, लिकिर, आलची र खालसी. पूर्व दिशा में चोग्लाम्सर, स्टाक ास, शे गोंपा, ठिकसे गोंपा और हेमिस गोंपा. ्दाख के ज्यादा दुर्गम, अनोखे व रोमांचक टन स्थलों में नुरबा, सुरू और पादुम आदि घाटियां फुरसत में देखने योग्य हैं लेकिन के लिए पर्यटकों को पहले से काफी अच्छी ारी की जरूरत पड़ती है.

ससपोल गुफा लद्दाखी कला व संस्कृति आईना है. एक दशक पहले तक यह गुफा ों के लिए अनजानी थी लेकिन अब यह ालय कला का जीवंत संग्रहालय लगता है. ागरलेह राजमार्ग पर लेह से 60 किलोमीटर ते ही ससपोल गांव बसा है जिस के उत्तर में पहाड़ी की खड़ी कटान पर अनेक कंदराएं हैं.

लद्दाखी समाज गीतनृत्य का बहुत दीवाना है. यहां अकसर नृत्यगीतों का सामूहिक आयोजन होता रहता है. सामाजिक आयोजनों की झलक जहां तीजत्योहारों पर देखने को मिलती है वहीं धार्मिक नृत्यों का आयोजन यहां के मशहूर मठों में होता है. लद्दाख का मुखौटा नृत्य तो इतना मशहूर है कि इसे देखने के लिए दूरदूर के सैलानी खासतौर से यहां आते हैं. इस नृत्य की विशेषता यह है कि इस में केवल लामा लोग ही भाग लेते हैं.

लद्दाख के दूसरे प्रमुख नगर कारगिल में आधुनिकीकरण की लेह जैसी चमक नहीं है. कारगिल की लेह से दूरी 234 किलोमीटर है. यह मुसलिम बहुल इलाका है जो लेह के पूर्व में पड़ता है. कारगिल पहुंचने के लिए खतरनाक जोजीला दर्रा पार करना पड़ता है. भारतपाक युद्ध से पहले तक कारगिल देश के आम लोगों के लिए अनजान सा नाम था लेकिन अब भारत के नक्शे में इस का महत्त्व बढ़ गया है.

लेह में काफी होटल हैं. हम चांग्स्पा में ठहरे, जहां स्थानीय लोगों ने घरों में सस्ते मगर सुंदर गेस्टहाउस बना रखे हैं. कुछ गेस्टहाउसों के नाम नीचे दिए जा रहे हैं, जिन में 100 से 300 रुपए में अच्छे कमरे मिल सकते हैं.

–अशेष

लद्दाख : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मू और श्रीनगर से लेह के लिए नियमित वायु ाएं उपलब्ध हैं. लेह से 7 किलोमीटर दूर स्थित हवाई अड्डे से टैक्सी व जीप ्यादि की अच्छी व्यवस्था है.

सड़क मार्ग : जम्मू व श्रीनगर से लेह के लिए अच्छी बस सेवाएं हैं. लेह से श्रीनगर 8 किलोमीटर, कारगिल 230 किलोमीटर तथा जम्मू 690 किलोमीटर दूर है.

कहां ठहरें : यहां ठहरने व खाने की अच्छी व्यवस्था है. प्रमुख होटलों में ल्डन कांटीनेंटल', 'शामबाला', 'लिंगजी', 'कानग ला चान', 'कगरी', 'इंडस', ागबे पैलेस', 'याक टेल', 'लुंग से जुंगे', 'ओमासिला', 'शेलजंग' तथा 'शैलडन' दि हैं. इन के अलावा धर्मशालाएं भी हैं.

कब जाएं : यहां घूमने का सब से अच्छा मौसम मईजून है. अधिक जानकारी के ए 'निदेशक पर्यटन रेजीडेंसी रोड, जम्मू', फोन-2544527; 'टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर , लद्दाख', फोन-252297 तथा 'जम्मूकश्मीर टूरिस्ट आफिस नई दिल्ली', न-23345373 से संपर्क कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 01982

हिमाचल प्रदेश

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हिमाचल प्रदेश दूरदूर तक फैली हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाओं, हरेभरे मैदानों व कलकल करते बहते झरनों की वजह से शुरू से ही पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है. यहां का मौसम इतना खुशगवार है कि वर्ष भर पर्यटक यहां मौजमस्ती मनाने आते रहते हैं.

वर्तमान हिमाचल प्रदेश 30 रियासतों को मिला कर 15 अप्रैल, 1948 को अस्तित्व में आया. कुछ समय बाद पंजाब का कुछ हिस्सा भी इस में शामिल कर दिया गया. 25 जनवरी, 1971 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिला.

55,673 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हिमाचल प्रदेश की अपनी अलग संस्कृति है. पंजाबी, डोगरी, पहाड़ी और हिंदी भाषाएं यहां बोली जाती हैं.

हिमाचल प्रदेश के लोग अत्यंत सरल स्वभाव के होते हैं. वे आज भी अपनी संस्कृति व परंपराओं को कायम रखे हुए हैं. पर्वों के अवसरों पर हिमाचल प्रदेश लोक नृत्यों और संगीत की मधुर ध्वनि से गूंज उठता है.

यहां के पर्यटन स्थलों में शिमला, चंबा, धर्मशाला, कुल्लूमनाली, डलहौजी और लाहुलस्पीति मुख्य हैं.

शिमला

मेरे लिए 20 साल के बाद शिमला को नए सिरे से देखना रोमांचक था. समरहिल से ले कर कुफरी और नारकंडा तक जहां देखो वहीं नईनई इमारतें और होटलों की नई कतारें. हर कहीं सैलानियों की मौजूदगी और चहलपहल.

1819 में जब अंगरेजों ने शिमला की खोज की तो पर्यटक यहां आने लगे वरना किसी जमाने में नेपाली राज्य के अधीन रह चुके शिमला में देवदार व बांझ के घने जंगलों के अलावा कुछ नहीं था.

कोलकाता की गरमी से बचने के लिए 1864 से 1939 तक अंगरेजों ने शिमला को गरमियों की राजधानी बनाया. 1903 में छोटी लाइन बिछा कर शिमला को रेल से जोड़ दिया गया. उस दौरान शिमला पंजाब का हिस्सा था. 1966 के बाद यह हिमाचल प्रदेश की राजधानी बना.

समुद्रतल से 2,205 मीटर की ऊंचाई पर एक लंबीचौड़ी अर्द्धचंद्राकार पहाड़ी पर बसा



मला एक सुंदर व ठंडा नगर है. नगर की बादी काफी घनी है. पर्यटक नगर के बाहरी नाकों में जा कर ही प्राकृतिक सुकून पाते हैं.

रिज और मालरोड शिमला में स्थानीय गों और सैलानियों की चहलपहल के मुख्य द्र हैं. पास ही लक्कड़ बाजार है. माल रोड रीदारी, हिमाचली वस्तुओं और खानपान के ए बेहतर स्थान है. मालरोड पर वाहन नहीं लाए जाते. बस अड्डे से आगे कार्ट रोड पर फ्ट द्वारा माल पर पहुंचें या लोअर बाजार ला चढ़ाईदार रास्ता पकड़ें.

र्शनीय स्थल

गेयटी थियेटर : यह नाटकघर विश्व के ब से पुराने नाटकघरों में एक है जो माल रोड स्थित है. अकसर यहां चर्चित नाटकों का चन किया जाता है.

स्केंडल प्वाइंट : यह मालरोड के निकट है.

: शाम के समय यहां पर्यटकों का मेला सा ा रहता है.

रिज पर बने विशाल मैदान पर ग्रीष्म उत्सव, राजकीय समारोह और फिल्मों की शूटिंग देखने को मिल जाती है. सवारी के लिए घोड़े और याक मौजूद हैं. यहां लगी बैंचों पर बैठ कर आप बर्फ से ढकी पर्वतमालाएं और सूर्यास्त के नजारे भी देख सकते हैं. यहीं से जाखू चोटी तक रास्ता जाता है.

जाखू हिल : शिमला की सब से ऊंची यह पहाड़ी ऊंचेऊंचे देवदार के पेड़ों के लिए मशहूर है. यहां से शहर और ऊंचेऊंचे पर्वतों का नजारा देखते ही बनता है.

राज्य संग्रहालय व पुस्तकालय : स्केंडल प्वाइंट वाली दिशा पर 2 किलोमीटर आगे स्थित यह संग्रहालय दिन भर खुला रहता है. यहां हिमाचल की प्राचीन, दुर्लभ, कलात्मक चीजों और पुस्तकों का संग्रह है. यहां रखे चित्र, दस्तकारियां व आदमकद मूर्तियां देखते ही बनती हैं.

वाइसरीगल : आज भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान और एडवांस स्टडीज के नाम से प्रसिद्ध यह भवन शिमला के ब्रिटिशकालीन भवनों में पहले स्थान पर है. वायसरायों के आवास के



शिमला : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : शिमला का निकटतम हवाई अड्डा 22 किलोमीटर की दूरी पर है. यहां के लिए दिल्ली से नियमित उड़ानें उपलब्ध हैं. शिमला से 120 किलोमीटर की दूरी पर चंडीगढ़ हवाई अड्डा भी है जो देश के मुख्य नगरों से नियमित उड़ान सेवाओं द्वारा जुड़ा हुआ है.

रेल मार्ग : शिमला का निकटतम रेलवे स्टेशन कालका 94 किलोमीटर दूर है. कालका देश के कई प्रमुख नगरों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां से शिमला के लिए खिलौना ट्रेनें चलती हैं.

सड़क मार्ग : उत्तर भारत के सभी प्रमुख शहरों, खासतौर से चंडीगढ़, दिल्ली, आगरा और जयपुर से सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. राज्य परिवहन निगम की बसों के अलावा टूरिस्ट बसों एवं टैक्सियों की भी अच्छी सुविधाएं उपलब्ध हैं. शिमला पहुंचने के लिए सब से ज्यादा नजदीक (116 किलोमीटर) और सुविधाजनक बस अड्डा चंडीगढ़ है.

कहां ठहरें : यहां महंगे और सस्ते दोनों तरह के होटल एवं लौज उपलब्ध हैं. इन के अलावा कई पेइंग गेस्ट हाउस भी हैं. 'हिम लैंड वैस्ट', फोन-2224313; 'शिलान रिसोर्ट्स', फोन-2228333-34-35; 'वुड विला पैलेस', फोन-2223919; 'आशीर्वाद', फोन-2211752; 'एशिया द डान', फोन-2231162; 'अल्पाइन हेरिटेज इन', फोन-2223139; 'बाइट लैंड', फोन-2252659; 'ब्रिज व्यू', फोन-2258871; 'कासमस', फोन-2202033; 'क्लासिक', फोन-2253078; 'चाणक्य', फोन-2254465; 'क्रिस्टल पैलेस', फोन-2257588; 'सिटी व्यू', फोन-2211666; 'चंदन', फोन-2211641 आदि प्रमुख होटल हैं.

कब जाएं : वैसे शिमला कभी भी जाया जा सकता है फिर भी वर्षा का मौसम यहां के लिए सुविधाजनक नहीं होता. पर्यटन की दृष्टि से अप्रैल से जून तक का मौसम ज्यादा सुविधाजनक माना जाता है. अधिक जानकारी के लिए पर्यटन सूचना केंद्र नई दिल्ली व शिमला से संपर्क कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 0177

लिए इस का निर्माण 1888 में हुआ था. यह राज्य संग्रहालय से 2 किलोमीटर आगे है. इस भव्य व कलात्मक भवन के चारों ओर के वनस्पति बाग भी दर्शनीय हैं.

चैल : शिमला से 65 किलोमीटर दूर यह ऊंचे पर्वत पर बनी एक शानदार सैरगाह है. इसे पटियाला रियासत के राजा भूपेंद्र सिंह ने अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में तब बसाया था जब अंगरेजों ने उस पर एक अंगरेज महिला से अनैतिक संबंध बनाने का आरोप लगा कर शिमला से निष्कासित कर दिया था.

1972 से सरकारी संपत्ति बनने के बाद चैल महल और चैल क्षेत्र को पर्यटन स्थल बना दिया गया. यहां की पर्वतमाला पर अनेक पिकनिक स्थल हैं. दुनिया का सब से ऊंचा क्रिकेट मैदान और वन्यजीव अभ्यारण्य देखने योग्य है.

कुफरी : शिमला से 16 किलोमीटर दूर चैल के रास्ते पर यह सुंदर स्थल बर्फ के खेलों और कुदरती नजारों के लिए मशहूर है. यहां की ढलानें सपरिवार घूमने वालों से भरी मिलती हैं.

कुफरी से शिमला के कुछ और सुंदर स्थलों, मशोबरा, नालदेहरा, तत्तापानी और नारकंडा को रास्ते जाते हैं. –सै.अ.

डलहौजी

अं गरेजों ने 1853 में इस इलाके की जलवायु से प्रभावित हो कर पैर्टिन, कठलोग, रा, बकरोटा और वलून नामक पहाड़ियां ा के राजा से खरीद कर एक शहर की पना की जिस का नाम लार्ड डलहौजी के पर 'डलहौजी' रखा गया. देवदार और चीड़ पेड़ों को छू कर आती सुहानी हवा यहां की वायु को स्वास्थ्यवर्धक बनाती है. गरमी के सम में इस इलाके की शीतल आबोहवा से कर्षित हो कर सैलानी डलहौजी पहुंचते हैं. में चारों ओर फैली सफेद बर्फ की चादर ति प्रेमियों को मोहित करती है. इस तरह तो डलहौजी हर मौसम का पर्यटन स्थल ा जाता है.

डलहौजी की एक बड़ी विशेषता यह भी के यह शहर अन्य पहाड़ी शहरों की तरह ी भी कंकरीट के ऊंचे भवनों के रूप में ल में तबदील नहीं हुआ है.

पठानकोट से करीब साढ़े 3 घंटे का का सफर तय कर सैलानी जब डलहौजी चते हैं तो खिली हुई धूप के साथ मंदमंद बहती सर्द हवा उन का स्वागत करती है. अपने होटल से सैलानी धौलाधार पर्वत शृंखला का मनमोहक नजारा देख सकते हैं. नीले आकाश के साए में अटल खड़े ऊंचे हिमशिखरों की लंबी कतार को देख कर ऐसा लगता है मानो प्रकृति ने हिमलिपि से किसी महाकाव्य की रचना की हो.

डलहौजी के चारों ओर बिखरे प्राकृतिक वैभव को आत्मसात करना हो तो यहां की सड़कों पर किसी घुमक्कड़ की भांति जरूर घूमना चाहिए.

इस शहर का लगभग डेढ़ सौ साल पुराना इतिहास है. जाहिर है प्रकृति की गोद में लोग कुछ दिन आराम की जिंदगी काटने आते हैं तो मन बहलाने के लिए भी कुछ न कुछ होना ही चाहिए. इसलिए यहां कई सैरगाहें विकसित की गई हैं.

दर्शनीय स्थल

सुभाष चौक : यह एक छोटा सा व्यू पाइंट है जहां अकसर पर्यटक जमा होते हैं. यहां पहाड़ी के किनारे पर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगी है. उन्होंने अपने जीवन के कुछ दिन डलहौजी में गुजारे थे. यहां से रेलिंग के सहारे खड़े हो कर सैलानी हरीभरी पहाड़ियों के अलावा पंजाब के मैदानी इलाकों का विहंगम दृश्य भी देखते हैं.

गांधी चौक : डलहौजी आए सैलानियों

यार : यह तश्तरीनुमा ऐसा मैदान है जिस के ओर देवदार के ऊंचेऊंचे वृक्ष मन को ते हैं.



डलहौजी : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : डलहौजी के लिए निकटतम हवाई अड्डा जम्मू है. दिल्ली से इन शहरों के लिए नियमित उड़ानें हैं. जम्मू से डलहौजी की दूरी 188 किलोमीटर है.

रेल मार्ग : यहां के निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट से डलहौजी की दूरी मात्र 80 किलोमीटर है. पठानकोट से डलहौजी के लिए बस, टैक्सी सेवा उपलब्ध है.

सड़क मार्ग : यहां हिमाचल परिवहन निगम, पंजाब रोडवेज तथा जम्मूकश्मीर राज्य परिवहन निगम की बसें हर मौसम में यात्रियों के लिए उपलब्ध हैं.

कहां ठहरें : डलहौजी में वर्ष भर भारी संख्या में पर्यटक आते हैं. यहां ठहरने की अच्छी सुविधाएं हैं. प्रमुख होटल हैं 'होटल अभिषेक', फोन-240801; 'होटल चाणक्य', फोन-242671; 'होटल राक साइड', फोन-240227; 'होटल तेज पैलेस', फोन-242406; 'होटल स्नो व्यू', फोन-242585; 'होटल प्रिंसेस', फोन-242154; 'लालजी टूरिस्ट रिजोर्ट', फोन-242638; 'फेयर व्यू होटल', फोन-242206; 'मेहराज होटल', फोन- 242179; 'होटल मनिमहेश', फोन-242793.

कब जाएं : अप्रैल से जून तक यहां सुहावना मौसम रहता है. रात में ठंड हो जाती है. अतः अपने साथ गरम कपड़े जरूर रखें.

क्या खरीदें : डलहौजी में लकड़ी का सुंदर व आकर्षक सामान मिलता है. इन में टेबललैंप, लकड़ी के खिलौने, विभिन्न प्रकार की घड़ियां, नामपट्टिका आदि शामिल हैं. इस के अतिरिक्त तिब्बती शाल, गलीचे, मफलर भी यहां से खरीदे जा सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 01899

का यहां जमघट लगा रहता है. यहां गांधी की प्रतिमा से कुछ दूर सेंटजौन चर्च है. इस स्थान को पहले 'जीपीओ स्क्वेयर' कहा जाता था क्योंकि सामने ही डाकघर है. यहां सैलानी घुड़सवारी का आनंद ले सकते हैं और यहीं से थोड़ी दूर पर तिब्बती बाजार है.

ठंडी सड़क गरम सड़क : सुभाष चौक और गांधी चौक को जोड़ने वाले 2 रास्ते हैं जिन में से एक को ठंडी सड़क और दूसरे को गरम सड़क कहा जाता है. दरअसल, जिस सड़क पर धूप ज्यादा पड़ती है उसे गरम सड़क और जिस पर सूर्य के दर्शन कम होते हैं वह ठंडी सड़क कहलाती है. ठंडी सड़क को मालरोड भी कहा जाता है. यहां से हिमाच्छादित पर्वत शृंखला देखने के लिए कुछ व्यू पाइंट भी बने हैं. इन सड़कों पर तिब्बती धर्मावलंबियों द्वारा चट्टानों पर उकेरे गए थंका शैली के भित्तिचित्र भी दर्शनीय हैं.

पंजपुला : यह एक छोटा सा पिकनिक स्थल है. यहां स्वतंत्रता सैनानी सरदार अजीत सिंह की समाधि स्थित है जो शहीद भगत सिंह के चाचा थे. यहीं पहाड़ों से एक छोटा सा झरना बहता है. इस झरने से एक पैदल रास्ता धर्मशाला की ओर जाता था जिस पर 5 छोटेछोटे पुल बने थे. उसी आधार पर स्थानीय लोग इसे 'पंजपुला' कहने लगे.

सप्तधारा : गांधी चौक से सैलानी जब



ला की ओर चलते हैं तो रास्ते में एक चश्मा है. इसे सप्तधारा कहते हैं. पहले यहां जल धाराएं बहा करती थीं. आज 1 साधारण लधारा बहती दिखाई पड़ती है.

सुभाष बावली : गांधी चौक से करीब किलोमीटर दूर इस स्थान पर नेताजी चंद्र बोस अपने डलहौजी प्रवास के आया करते थे. यहां एक बावली है जो योग्य है.

जंदरीघाट : यहां चंबा के राजाओं का एक है. पर्वतीय शैली में बने इस महल में बहुत तिहासिक वस्तुओं तथा चित्रों का अच्छा है. पाइन वृक्षों से घिरे इस स्थान पर स्थानीय पिकनिक मनाने आते हैं. पहाड़ के ढलानों ढ़ीनुमा खेत आकर्षक नजारा पेश करते हैं.

डलहौजी में गांधी चौक और सुभाष के निकट बाजार हैं. यहां से हिमाचल के हस्तशिल्प तथा वस्त्र खरीदे जा सकते खासतौर से डलहौजी की पहचान के यहां कोई विशेष वस्तु प्रसिद्ध नहीं है.

डायना कुंड : यह डलहौजी का सब से स्थान है. यहां से व्यास, चिनाब तथा रावी टियों का विहंगम दृश्य देखने को मिलता स्थान को संगीतमय पहाड़ी भी कहा है. यहां हर मौसम में सैलानियों की भीड़ हती है.

कालाटोप : समुद्रतल से 2,250 मीटर की पर स्थित यह स्थान देवदार के काले घने से घिरा है. सैरगाह होने के साथसाथ यह वों की शरणस्थली भी है. यहां के वन्य जीवों को देखने के लिए वन विभाग से इजाजत लेनी पड़ती है.



खजियार

डलहौजी से 22 किलोमीटर दूर इस स्थान को 'हिमाचल का स्विट्जरलैंड' कहा जाता है. यह विशाल तश्तरीनुमा एक ऐसा घास का मैदान है जिस के चारों ओर चीड़ एवं देवदार के ऊंचेऊंचे वृक्ष खड़े हैं. घास के ढलवां मैदान के बीच में एक छोटी सी झील बनी है जो इस के सौंदर्य को और भी बढ़ाती है. झील से कुछ दूरी पर उत्तर गुप्त कालीन एक मंदिर है जो पहाड़ी वास्तु शैली में बना है.

शाम ढलने पर खजियार का दृश्य कुछ अलग ही लगता है. चांदनी रात में सर्द हवाओं का एहसास करने के लिए कई सैलानी तो मफलर, स्वेटर आदि से लैस हो कर मैदान में आ जाते हैं.

चंबा

पश्चिमी हिमालय के बीच समुद्रतल से लगभग 3,200 फुट की ऊंचाई पर स्थित चंबा की पृष्ठभूमि में धौलाधार एवं पंगीधार की ऊंची पर्वत चोटियां स्पष्ट नजर आती हैं. यह पूरा इलाका अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा पुरातत्त्व के अवशेषों के लिए भी जाना जाता है. डलहौजी से चंबा की दूरी केवल 49 किलोमीटर है. इसलिए प्रायः दोनों स्थानों के घूमने का कार्यक्रम सैलानी एकसाथ बनाते हैं.

रावी नदी के किनारे बसा यह शहर एक ऊंचे पठार पर स्थित है जिस के एक ओर घाटी में रावी नदी बहती नजर आती है तो दूसरी ओर ऊंची पहाड़ियों का सिलसिला है. चंबा का बस स्टैंड शहर के शुरू में ही बना है इसीलिए वहां से मुख्य शहर तक पर्यटक पैदल ही पहुंच जाता है. 'होटल इरावती' में ठहरने के बाद मैं ने महसूस किया कि चंबा में डलहौजी से कम ठंडक है. शायद इस की वजह दोनों में समुद्रतल से ऊंचाई का अंतर है.

चौगान चंबा का खास आकर्षण है. शहर के मध्य यह एक बड़ा सा घास का मैदान है. यह

रावी नदी के किनारे बसे चंबा में पहुंचते ही रजवाड़ों के समय की याद ताजा हो जाती है.

चंबा : महत्त्वपूर्ण जानकारी

कैसे जाएं : **चंबा का निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट (पंजाब) है. पठानकोट रेल मार्ग से देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा है. पठानकोट से चंबा 120 किलोमीटर दूर है.**

सड़क मार्ग : **चंबा के लिए दिल्ली, देहरादून, फरीदाबाद, चंडीगढ़, शिमला, मनाली, पठानकोट व जम्मू से सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं.**

कब जाएं : **वैसे तो चंबा किसी भी मौसम में जाया जा सकता है लेकिन यदि आप जुलाई के आखिर में चंबा आने का कार्यक्रम बनाएं तो सप्ताह भर चलने वाले मिंजर मेले का लुत्फ भी उठा सकते हैं. अधिक जानकारी के लिए चंबा स्थित पर्यटन विभाग के कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं. फोन -224002.**

कहां ठहरें : **चंबा में पर्यटकों के ठहरने हेतु पर्याप्त मात्रा में होटल उपलब्ध हैं. कुछ प्रमुख होटलों में 'इरावती' (पर्यटन निगम), 222671; 'आरोया पैलेस', फोन-225177; 'चामुंडा व्यू', फोन-224067; 'अखंडचंडी', फोन-224072; 'चंपक', (पर्यटन निगम) फोन-222774; 'महाजन गेस्ट हाउस', फोन-225125 आदि हैं.**

शहर में लोक निर्माण, वन व बिजली बोर्ड के सरकारी रेस्ट हाउस भी मौजूद हैं. संबंधित विभागों से अनुमतिपत्र ले कर आप यहां भी ठहर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : **01899**

मैदान कभी यहां के राजाओं का 'पोलोग्राउंड' था. आज यह एक उद्यान तथा मेला मैदान है.

चौगान में घूमते समय पर्यटकों को पहाड़ी पर बसा पूरा चंबा शहर दिखाई पड़ता है. चौगान के एक ओर चंबा का बाजार है तो दूसरी ओर की सड़क से रावी नदी का विहंगम नजारा दिखाई पड़ता है. यहीं हिमालयन पर्यटन विभाग का कैफेटेरिया 'रावी व्यू' है.

भूतपूर्व राजाओं का निवास स्थल अखंड चंडी महल भी चंबा का एक दर्शनीय स्थल है. पहाड़ी शैली में बना यह महल राजस्थान के महलों जैसा भव्य तो नहीं, लेकिन पहाड़ी स्थापत्य कला का एक महत्त्वपूर्ण नमूना जरूर है. महल की बहुत सी ऐतिहासिक वस्तुएं आज चंबा के संग्रहालय में देखने के लिए रखी गई हैं.

राजमहल से कुछ ही दूर 'रंगमहल' नामक एक अन्य ऐतिहासिक इमारत है. यह इमारत अब हिमाचल हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम का केंद्र है.

चंबा कला के साथसाथ सांस्कृतिक दृष्टि से भी अति समृद्ध है. यहां की संस्कृति में 'मिंजर मेले' का नाम खासतौर से आता है. चंबा के लोगों के जीवन में त्योहारों एवं मेलों का खास महत्त्व है. हर साल सावन में मनाया जाने वाला यह मेला उत्सव कृषि से जुड़ा है. सप्ताह भर चलने वाले इस मेले में महल से चौगान तक एक शोभायात्रा निकलती है जिस में हिमाचल की संपूर्ण संस्कृति के दर्शन होते हैं. -अविनाश शर्मा

धर्मशाला

धौलाधार पहाड़ियों के बीच बसे कांगड़ा जिले के मुख्यालय धर्मशाला पहुंचने पर ऐसा लगता है जैसे हम तिब्बत के किसी गांव में पहुंच गए हैं. सुरम्य वातावरण, मनमोहक हरीभरी वादियां और बर्फ से ढके पर्वत ऐसा सामंजस्य स्थापित करते हैं मानो प्रकृति ने अपना सारा वरदान इसी स्थल को दे दिया है.

धर्मशाला 2 भागों में विभक्त है. निचली धर्मशाला के रूप में पुराना शहर है और ऊपरी धर्मशाला को मैक्लोडगंज के नाम से जाना जाता है. यहीं तिब्बत के धार्मिक गुरु दलाई लामा रहते हैं.

समुद्रतल से लगभग 1,500 मीटर की ऊंचाई पर बसे धर्मशाला को कभी लो

वंदे दी सरां' के नाम से जानते थे. यहां के ने लोगों को ठहरने के लिए एक बहुत बड़ी बनवाई थी. अंगरेज वायसराय डी. नाड ने इस स्थान का नाम बदल कर ाला रख दिया था.

दिल्ली से 13 घंटे का रास्ता तय कर धर्मशाला यानी मैक्लोडगंज पहुंचने पर लगता है जैसे तिब्बत के किसी गांव में आ हैं जहां गोलमटोल चेहरे व टमाटर जैसे गाल वाले तिब्बती बच्चे बड़े प्यारे लगते हां आ कर पता चला कि भारत में चेरापूंजी ाद सब से अधिक वर्षा धर्मशाला में ही है.

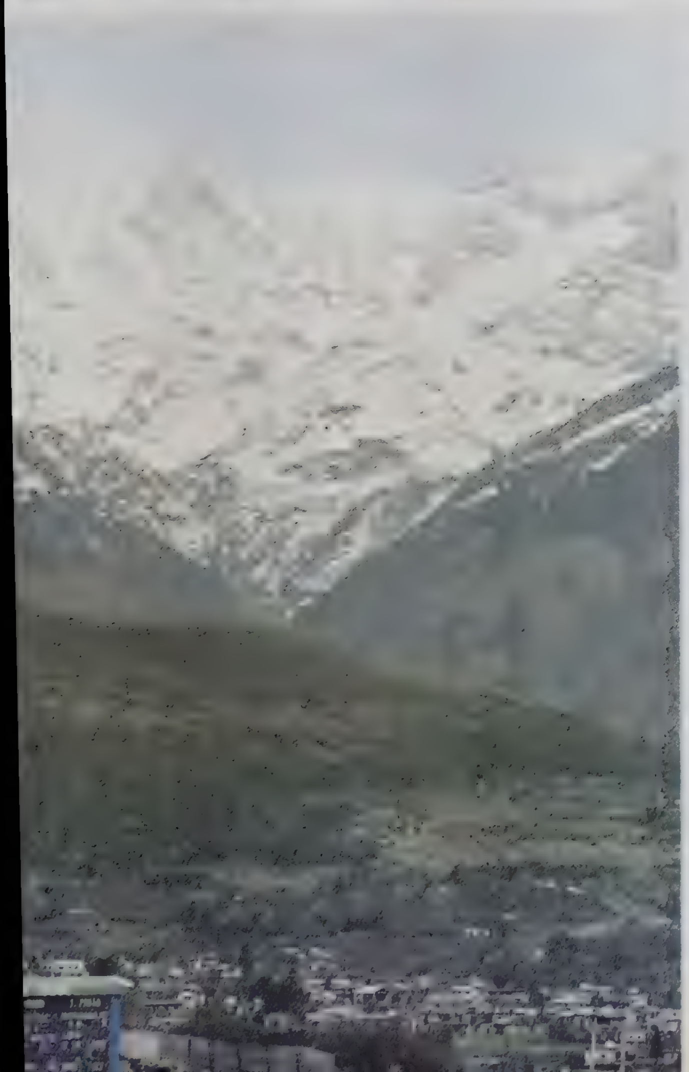
पुराने धर्मशाला से लगभग 7 किलोमीटर करीब 10 किलोमीटर के दायरे में फैले ोडगंज बाजार के दोनों किनारों पर तियन शैली के मकान अपना अलग ही रंग रते हैं.

तिब्बती जीवनशैली, तिब्बती रोजमर्रा स्तुएं और तिब्बती संस्कृति में रचेबसे इस शहर में विदेशी पर्यटकों की संख्या काफी दिखती है. तिब्बती पुस्तकों और पारंपरिक पीले रंग के लंबेलंबे चोंगे भी बाजार में खूब मिलते हैं. तिब्बत के धार्मिक गुरु दलाई लामा का महल, बौद्ध मंदिर आदि मैक्लोडगंज में हैं. मैक्लोडगंज में बस से उतरते ही पास ही तिब्बतियों का मंदिर दिखाई देता है, जिसे बौद्ध लोग पगोडा कहते हैं. मंदिर के अंदर गौतमबुद्ध की विशाल प्रतिमा है.

मंदिर के सामने ही दलाई लामा का भव्य निवास है. उन के दर्शन के लिए देशविदेश के सैलानियों की भीड़ हमेशा जमा रहती है. वहीं तिब्बत सरकार में प्रमुख भूमिका निभाने वाली मैरी बेथ मार्के भी रह रही हैं.

इतने खुशनुमा शहर में सड़कों व नालियों में गंदगी का अंबार लगा रहता है जिस की दुर्गंध सड़क पर चलने वालों को परेशान कर देती है. यहां के रेस्टोरेंट में मोमोज खाते वक्त दिमाग में एक ही बात घूमती है कि इतनी ऊंचाई पर इतना स्वादिष्ठ भोजन कैसे उपलब्ध हो पाता है.

धर्मशाला से लगभग 8 किलोमीटर और मैक्लोडगंज से करीब 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित सेंट जार्ज चर्च पहुंचने पर इस के चारों तरफ लगे ऊंचेऊंचे देवदार के वृक्ष एक अलग ही आनंद देते हैं. इस चर्च के समीप ही लार्ड एलगिन की समाधि है. धर्मशाला के नजदीक ही ततवानी है. रास्ते में मछरियाल आता है. मछरियाल में जहां एक खूबसूरत जलप्रपात बिना प्रभावित किए नहीं रहता वहीं



सदाबहार दरख्तों से भरी पहाड़ियों पर बसा धर्मशाला धौलाधार की हिमाच्छादित पर्वत-मालाओं के सपनीले नजारों के कारण जाना जाता है.

ततवानी में गरमपानी का चश्मा एक अलग ही रोमांच प्रस्तुत करता है.

मैक्लोडगंज से 11 किलोमीटर तथा धर्मशाला से केवल 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित डल झील पहुंचने पर ऐसा लगता है जैसे कश्मीर के डल झील का आनंद उठा रहे हैं. यहां ट्रैकिंग की अच्छी सुविधा है. हर साल सितंबर माह में यहां एक मेले का आयोजन किया जाता है जिस में आने वाले पर्यटक कांगड़ा के लोकगीतों व लोकनृत्यों का आनंद उठाते हैं.

पूरे कांगड़ा जिले के तराई भाग व धौलाधार की चोटियां धर्मकोट से दिखाई देती हैं. धर्मकोट के पास ही भागसुनाथ मंदिर है. यहां भागसु नामक नाग की प्रतिमा है. पास ही में शीतल जल का एक कुंड भी है जो पिकनिक के लिए आदर्श स्थान है.

यहीं साफ पानी की एक नदी बहती है जो एक विशाल जलप्रपात के रूप में नीचे गिरती है. यहां चारों ओर बिखरी प्राकृतिक छटा आंखों को इस कदर बांध लेती है मानो पर्वत हम से बात कर रहे हों. इस शीतल जल के झरने के किनारे घंटों बैठे रहने के बाद भी वहां से हटने को जी नहीं चाहता.

समुद्रतल से 3 हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित त्रियूंड का शब्दों में वर्णन करना आसान नहीं है. धौलाधार की गगनचुंबी चोटियों को देखने तथा ट्रैकिंग का मजा लेना खुद में एक अलग ही अनुभव होता है. त्रियूंड से धर्मशाला या मैक्लोडगंज जाने में काफी ऊंचीनीची पथरीली सड़कों पर अंधेरे में गाड़ी चलाना अपनी मौत को निमंत्रण देना होता है. वैसे कुछ ही कुशल ड्राइवर आजकल इन सड़कों पर आराम से गाड़ी चला पाते हैं.

धर्मशाला से 22 किलोमीटर दूर स्थित करेरी झील के इर्दगिर्द शीतल हवा का झोंका हर पर्यटक के शरीर में एक अलग ही किस्म की गुदगुदी पैदा करता है. आसपास की मखमली घास का मैदान सैलानियों के लिए प्रकृति का एक अनुपम उपहार है. –विनीत

धर्मशाला : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : धर्मशाला का निकटतम हवाई अड्डा गगल है. धर्मशाला से गगल की दूरी 14 किलोमीटर है. दिल्ली से गगल के लिए हर सप्ताह सोमवार, बुधवार व शुक्रवार को इंडियन एअरलाइंस का विमान उड़ान भरता है.

रेल मार्ग : धर्मशाला का निकटतम रेलवे स्टेशन कांगड़ा मंदिर है जो 18 किलोमीटर दूर है. पठानकोट से खिलौनानुमा रेलगाड़ी द्वारा कांगड़ा घाटी के अनूठे दृश्यों का दीदार करते हुए कांगड़ा मंदिर रेलवे स्टेशन उतर कर धर्मशाला पहुंचा जा सकता है. रेलगाड़ी का सफर जहां आरामदायक है वहीं बस की तुलना में रेल का किराया तीनगुना कम है.

सड़क मार्ग : धर्मशाला से दिल्ली, देहरादून, अमृतसर, जम्मू, डलहौजी, शिमला, मनाली, पठानकोट के लिए सीधी बस सेवा है.

कहां ठहरें : धर्मशाला व मैकलोडगंज में रहने की पर्याप्त सुविधा है. कुछ प्रमुख होटल : 'आकृति रिसोर्ट्स', फोन-223137; 'होटल भागसू', फोन- 221091; 'चिनार लाज', फोन-221767; 'होटल धौलाधार', फोन-224926; 'होटल हिम क्वीन', फोन-222974; 'निशाद', फोन-221507; 'बी मेहरा होटल', फोन-223582; 'इंडिया हाउस', फोन-221144.

कब जाएं : मार्च से जून और सितंबर से अक्तूबर तक का मौसम यहां जाने वाले पर्यटकों के लिए उपयुक्त है.

क्या खरीदें : यहां चाइनीज व तिब्बती हस्तशिल्प से जुड़ी वस्तुएं खरीद सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 01892



गरम पानी के चश्मों से भरी पार्वती नदी के किनारे बसा मणिकर्ण जहां मईजून में काफी चहलपहल रहती है.

कुल्लू घाटी

ल्लूमनाली नामक विश्वप्रसिद्ध घाटी बर्फ से ढकी चोटियों, देवदार और सेब के ं से सजे गांवों, सलोनी दूधिया नदियों, ई से गिरते झरनों और सुंदर सैरगाहों के जानी जाती है.

समुद्रतल से 1,220 मीटर की ऊंचाई पर ू शहर जिले का मुख्यालय है जो मनाली से किलोमीटर पहले आता है. सरवरी नदी ने ू को 2 हिस्सों में बांटा हुआ है. पहला यानी भाग ढालपुर और दूसरा अखाड़ा बाजार ाता है.

ढालपुर मैदान में हर साल अंतर्राष्ट्रीय मेले प में दशहरे का मेला लगता है जो एक ह तक चलता है. कुल्लू के चारों ओर कई रत घाटियां हैं, जिन में ब्यास नदी के पार और पार्वती नदी के आरपार कसोल व र्ण मुख्य हैं. इन दोनों घाटियों से मलाना उस अनोखे गांव को पैदल रास्ते जाते हैं, 'दुनिया का सब से पुराना गणतंत्र' कहा है.

कुल्लू घाटी जाने वाले रास्ते पर हर कहीं शाल, टोपी व दूसरे पहरावों की दुकानें ुई मिलती हैं. ढालपुर बाजार में सूखे मेवे ीदे जा सकते हैं.

दर्शनीय स्थल

भूंतर : कुल्लू से 10 किलोमीटर पहले यह हवाई अड्डा आता है. यहीं ब्यास व पार्वती नदी का संगम स्थल है. ब्यास के पार पार्वती नदी के किनारे से इस छिपी घाटी का सफर शुरू होता है. भूंतर से कसोल 32 किलोमीटर है जो कुदरती नजारों से भरा है.

मणिकर्ण : भूंतर से एक संपर्क मार्ग मणिकर्ण तक जाता है जो कुल्लू से 45 किलोमीटर दूर है. यहां गरम पानी के चश्मों और धार्मिक कार्यकलापों का शोर अधिक देखने को मिलता है. यहां पार्वती नदी बेग से बहती है. मईजून में यहां काफी चहलपहल रहती है. आबादी से बाहर नदीनालों व देवदार से सजे पिकनिक स्थल हैं. साहसी लोग यहां से 3 दिन की पैदल यात्रा पर मानतलाई जाते हैं जो पार्वती नदी का उद्गम स्थान है.

नग्गर : कुल्लू से पतली कूहल हो कर ब्यास नदी के पार नग्गर पहुंचा जा सकता है. कुल्लू से 26 किलोमीटर दूर नग्गर प्राचीनकाल में कुल्लू की राजधानी रहा है. यहां पुराना किला और आर्ट गैलरी दर्शनीय है. किले को अब एक कलात्मक होटल का रूप दे दिया गया है.

कुल्लूमनाली : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : यहां का निकटतम हवाई अड्डा भूंतर है जो मनाली से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. कुल्लू से मनाली 40 किलोमीटर दूर है इसलिए मनाली से कुल्लू आसानी से पहुंचा जा सकता है. हवाई जहाज से चंडीगढ़ पहुंच कर बस द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है.

रेल मार्ग : यहां के लिए सीधी रेल सेवाएं नहीं हैं. कुल्लूमनाली देश के कई शहरों से जुड़ा है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन चंडीगढ़ है जो यहां से 258 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. शिमला होते हुए भी यहां पहुंचा जा सकता है. यदि आप शिमला होते हुए यहां आना चाहते हैं तो कालका तक रेलगाड़ी से आ सकते हैं.

सड़क मार्ग : यहां के लिए सड़क यातायात सब से अच्छा साधन है. कुल्लू शिमला से सीधे सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. कुछ प्रमुख शहरों शिमला, चंडीगढ़ और दिल्ली से हिमाचल परिवहन निगम की बसें यहां के लिए उपलब्ध रहती हैं.

कहां ठहरें : कुल्लूमनाली में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है. सरकारी होटलों के साथसाथ प्राइवेट होटल भी उपलब्ध हैं. लौज व गेस्ट हाउस काफी संख्या में हैं. 'स्पैन रिसोर्ट', फोन-240138; 'एप्पल वैली रिसोर्ट', फोन-224115; 'वैली व्यू', फोन-224122; 'ब्लू हैवन', फोन-252802; 'आउट टाउन', फोन-252525; 'बेनन', फोन-252490; 'अंबेसडर', फोन-252235; 'चांद पैलेस', फोन-252529; 'एप्पल कंट्री', फोन-254188; 'चंद्रमुखी', फोन-253279; 'पुष्पक', फोन-253338; 'पुजारा शिराज', फोन-252499; 'कनिष्का', फोन-252171; 'मून स्टोन', फोन-252422; 'पैराडाइज', फोन-252265; 'सन फ्लावर', फोन-252419 आदि प्रमुख होटल हैं.

कब जाएं : वैसे गरमियों का मौसम यहां घूमने के लिए ज्यादा उपयुक्त माना जाता है लेकिन सर्दी के मौसम में भी यहां जा कर बर्फ से ढके प्रकृति के अद्भुत दृश्यों का लुत्फ लिया जा सकता है.

एस.टी.डी. कोड : कुल्लू-01902, मनाली-01901

देवदार से घिरे रास्तों से सजा नगर एकांतप्रेमियों को ज्यादा लुभाता है. यह स्थान समुद्रतल से 1,768 मीटर की ऊंचाई पर है.

कुल्लू में रायसन से ले कर डाभी तक के नदी तटों पर सुंदर पिकनिक स्थल हैं. हर कहीं नदी से लगे खुले रेस्तरां हैं.

मनाली

कुल्लू घाटी के सब से खूबसूरत स्थान के रूप में मनाली विश्वप्रसिद्ध है. किसी जमाने यहां गिनेचुने पर्यटक ही पहुंचते थे. इस घाटी की खूबसूरती को देख कर जवाहरलाल नेहरू ने इसे स्विट्जरलैंड से ज्यादा सुंदर और रोमांचक घाटी कहा था. वैसे तो अब यहां साल भर दुनिया भर से सैलानी आते हैं.

इस घाटी में अप्रैल से ले कर जून तक बेहद प्यारा मौसम रहता है, इसीलिए इन दिनों भीड़ कुछ अधिक ही देखने को मिलती है. माल रोड से ले कर रोहतांग की चोटी तक मनाली समुद्रतल से 2,050 मीटर से ले कर 3,978 मीटर तक की ऊंचाई में फैला है जिस की खूबसूरती को हर मौसम में पर्यटक अपने कैमरों में कैद करते देखे जा सकते हैं.

दर्शनीय स्थल

माल रोड : बस अड्डे के पास ही माल रोड है जहां मनाली का मुख्य बाजार, अधिकांश

होटल और रेस्तरां हैं. रामबाग यानी नेहरू पार्क, बौद्ध गोंपा और वनविहार भी आसपास ही हैं.

यह मनाली का सब से व्यस्त व भीड़ भरा इलाका है जिस में सैलानी पैदल ही 1 घंटे के भीतर आराम से पूरा इलाका घूम सकते हैं. हां, नेहरू पार्क या वनविहार में भ्रमण व विश्राम अलग से किया जा सकता है.

मनाली के ज्यादातर दर्शनीय स्थल ऊपरी मनाली में हैं, जहां पहुंचने के लिए सैलानियों को तिपहिया वाहन या टैक्सी का सहारा लेना पड़ता है. हिडिंबा मंदिर, लाग हट्स, पुरानी मनाली और मनालसू नदी के किनारे क्लबहाउस देखने योग्य हैं.

होता है जिस की वजह से सैलानियों को बीच रास्ते से ही लौटना पड़ता है या पैदल जाना पड़ता है, जबकि टैक्सी वाले पहले ही पूरा भाड़ा वसूल कर लेते हैं. जो लोग सुबह जल्दी वहां पहुंचते हैं उन्हें समय पर लौटने में कठिनाई कम होती है. सितंबर में रोहतांग यात्रा आसान है.

कुल्लूमनाली हर कहीं होटल : भूंतर से ले कर रोहतांग पर्वत के कोठी गांव तक हर कहीं सभी स्तर के होटल और गेस्टहाउस बने हुए हैं. चूंकि अधिकांश सैलानी मनाली में ही ठहरते हैं इसलिए इसे अब होटलों का शहर कहा जाता है. मनाली बस अड्डे के आसपास अपनी पसंद का



ाली की माल रोड पर्यटकों के आकर्षण का ख्य केंद्र है.

होटल देखना आसान है. यहां मनाली से बाहर के एकांत स्थलों वाले कुछ होटलों के पते दिए जा रहे हैं, जहां 200 से ले कर 500 रुपए तक के अच्छे कमरे मिल सकते हैं : -खेमचंद

वशिष्ठ गांव में गरम पानी के चश्मों में ाने के बाद आप ब्यास नदी के साथसाथ लते हुए सोलंग नाला पहुंचेंगे, जहां हैंड ाइडिंग जैसे कई रोमांचक खेल चलते हैं. ठी, गुलाबा और मढ़ी को देखते हुए आप ाली से 50 किलोमीटर दूर के रोहतांग त शिखर पर जा पहुंचेंगे, जो गरमियों में बर्फ से ढका रहता है. गरमियों में यहां के और खतरनाक रास्तों पर बेहद ट्रैफिक

चिंडी

हिमाचल पर्यटन के दौरान आमतौर पर सैलानियों के दिमाग में शिमला, कुल्लू, मनाली आदि का ही नाम घूमता है. पर्यटक यहां जाते हैं, महंगे होटलों में रहते हैं,

भीड़भाड़ में घूमते हैं तो ज्यादातर पर्यटकों को यही लगता है कि मजा नहीं आया. अगली बार कहीं और जाएंगे मगर कहां, उन्हें यह पता नहीं होता है.

आइए, आप को इस मौसम में एक नई जगह ले जाते हैं जिस का नाम चिंडी है. शिमला से 100 किलोमीटर दूर चिंडी जाने के लिए आप नालदेहरा होते हुए जा सकते हैं. मंडी हो कर आप मनाली जा रहे हैं तो भी कार्यक्रम बदल कर मंडी, नेरचौंक, बग्गी, रोहांडा, चार कुफरी हो कर चिंडी जा सकते हैं.

करसोंग घाटी में 6,675 फुट की ऊंचाई पर बसे चिंडी में पहुंच कर लगता है आप किसी और दुनिया में हैं. शोरशराबे से दूर यह जगह शांत है. यहां बाजार नहीं है, टैक्सियां नहीं हैं, यहां तो प्रकृति अपने असीमित सौंदर्य के साथ पसरी पड़ी है.

कहते हैं कि चीड़, देवदार और कैल के वृक्ष आमतौर पर एक स्थान पर नहीं होते मगर यहां हैं. वृक्षों से लिपटी लताएं, चहचहाते पक्षी और खुशबू फैलाते फूलों पर तितलियों को देख कर आप को कुदरत के बीच रहने का सही अर्थों में एहसास होगा.

रात में चिंडी करसोंग घाटी की जगमगाती रोशनियों के साथ ही शिमला की लाइटें भी देखी जा सकती हैं. बखरोट के 3 किलोमीटर के पैदल रास्ते में प्रकृति का नैसर्गिक नजारा बिखरा पड़ा है. कामाक्षा मंदिर में लकड़ी पर की गई नक्काशी पुरातत्त्व प्रेमियों को विभोर करने में सक्षम है. कमरूनाग, सरौर शिवगुफा आदि भी दर्शनीय हैं.

ट्रैकिंग प्रेमियों के लिए शिकारीधार, केलोधार, सेरी, चौआसीगढ़, घुमनीटिब्बा, छतरी जैसे अनेक स्थानों की पूरी शृंखला है. चिंडी में बर्फ भी पड़ती है मगर ज्यादा दिन नहीं टिकती.

नवविवाहितों के हनीमून के लिए चिंडी बेमिसाल है. यहां का लवर्स हिल जवांदिल प्रेमियों का खास स्थान है, यहां आ कर लगेगा आप स्वयं प्रकृति का हिस्सा हो गए हैं. चिंडी से करसोंग, छतरी, आनी, खनाग, जलोड़ीपास, बंजार औट व कुल्लू की प्राकृतिक छटाओं का आनंद लेते हुए मनाली जा सकते हैं.

नई जगह जाएं तो अपनी पसंद की खानेपीने की चीजें साथ ले जाएं तो मजा दोगुना हो जाता है. वैसे पहाड़ी जगहों पर जा कर स्थानीय खाने का स्वाद भी लेना चाहिए.

चिंडी पहुंच कर हिमाचल प्रदेश पर्यटन निगम का 'एप्पल वैली रिसोर्ट' के नाम से जाना जाने वाला खूबसूरत होटल मम्लेश्वर आप को बेहद आरामदायक कमरे और स्वादिष्ठ भोजन उपलब्ध करवाता है.

चाहें तो एक फर्लांग दूर बेहद सुंदर जगह पर बनाए गए पीडब्लूडी रेस्ट हाउस में भी रुक सकते हैं. यहां 5 सूट्स हैं जिन में सरकारी कर्मचारियों (20 रुपए प्रति सेट) को प्राथमिकता मिलती है, जगह खाली है तो अन्य (150 रुपए) भी ठहर सकते हैं.



नवविवाहितों के घूमने के लिए चिंडी बेमिसाल जगह है और यहां ठहरने के लिए कई होटल, गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं.

बुकिंग एक्सईएन करसोंग (01907-222229) के माध्यम से होती है. चिंडी से 13 किलोमीटर दूर करसोंग के बीच 5 किलोमीटर की दूरी पर चुराग नामक जगह पर प्राइवेट गेस्ट हाउस है. 3 किलोमीटर आगे सनारली में फारेस्ट हट है.

करसोंग में पीडब्लूडी रेस्ट हाउस, म्यूनिसिपल रेस्ट हाउस व कई प्राइवेट गेस्ट हाउस हैं.

–संतोष उत्सुक

लाहुलस्पीति

प्रकृति के रहस्यरोमांच से भरपूर स्थलों में शुमार लाहुलस्पीति हिमाचल प्रदेश का एक मावर्ती इलाका है. लद्दाख के साथसाथ ब्बत से जुड़ा यह जिला वैसे तो एक है लेकिन गोलिक दृष्टि से लाहुल और स्पीति दोनों लगअलग जगह हैं. दोनों जिलों की आबादी द्र और भागा नदियों के किनारे बसी हुई है. माचल प्रदेश के रोहतांग दर्रे के उस पार बसा हुलस्पीति दुनिया के अधिकतर पर्यटकों के च काफी लोकप्रिय है.

लाहुल में जहां केलांग और चंद्रताल दि क्षेत्र काफी मशहूर हैं वहीं स्पीति में काजा ताबा क्षेत्र अधिकतर पर्यटकों को खूब लुभाते हिमाचल की गोद में बसे इन इलाकों में चने पर ऐसा महसूस होता है मानो किसी टार्टिक से संबद्ध स्थल पर पहुंच गए हों, ोंकि हर तरफ बर्फ ही बर्फ नजर आती है. दूर तक हरियाली का नामोनिशां तक नजर आता. बस, पहाड़ियों की चोटियों सहित ओर बर्फ ही बर्फ है. यही कारण है कि यहां नदी, नालों, झरनों और झीलों में पानी भरा ा है.

जुलाई से सितंबर माह के बीच पर्यटकों लुभाने वाले इस क्षेत्र में मंडी और मनाली के में लाहुल तथा शिमला और किन्नौर जाने ास्ते में स्पीति आती है.

लाहुलस्पीति जिले का मुख्यालय केलांग है इस घाटी का सब से सुंदर और खुला क्षेत्र है. ांग से लगभग 8 किलोमीटर दूर गुरुघंटाल है जिसे 8वीं सदी में पद्मसंभव ने बनाया था. क्षेत्र में कारदंग गोंपा का पुस्तकालय और संग्रहालय भी है. जिला मुख्यालय से 3 ोमीटर की दूरी पर ही 17वीं सदी का शाशुर है. वैसे यहां कई बौद्ध मंदिर हैं जहां बुद्ध की लकाय प्रतिमा, ग्रंथ, वाद्ययंत्र, भित्तिचित्र के वा एक ध्यानकक्ष भी है.

लाहुलघाटी का प्रवेशद्वार कुंजमदर्रा है ाल भर बर्फ से ढका होता है. यह दर्रा प्रसिद्ध रोहतांग दर्रे से भी काफी ऊंचा है. आने वाले सैलानियों की भीड़ हमेशा ड़े शिगड़ी ग्लेशियरों को देखने में रहती है. एशिया का सब से बड़ा ग्लेशियर यहीं है.

कुंजम दर्रे से पहले बाटल नामक जगह से दाईं ओर मुड़ कर चंद्र नदी का रमणीक स्रोत चंद्रताल झील पहुंचने पर महसूस होता है कि हम प्रकृति की एक अजूबी दुनिया में पहुंच गए हैं. वहां पहुंचने वाला हर पर्यटक खुद को एक अलग ही दुनिया में पाता है. चारों ओर बर्फ की फैली सफेद चादर को देखने का एक अलग ही मजा है.

इसी स्थल से चंद्र नदी आगे सूरजताल झील से निकली भागा नदी से मिल कर चंद्रभागा कहलाती है जो लाहुल से निकलते ही चिनाब बन जाती है.

लाहुल की अपेक्षा स्पीति में अधिक ठंड पड़ती है तथा यहां बारिश भी कम होती है. वैसे स्पीति के काजा में आक्सीजन की कमी को साफ महसूस किया जा सकता है. जहां एक ओर पर्यटक काजा को 'हिमालय का करिश्मा' बताते हैं वहीं वहां नौकरी कर रहे लोग इसे 'कालापानी की सजा' के बतौर महसूस करते हैं. यहां कहीं भी हरियाली का नामोनिशां तक नहीं दीखता. हर तरफ नंगा और खुला चट्टानी पहाड़ ही नजर आता है.

काजा से 12 किलोमीटर की दूरी पर 'की' गोंपा नामक स्थान है. इसी बौद्ध गोंपा की छत पर खड़े हो कर बहुत नीचे तक फैली नदी, घाटी और सामने की पर्वतमालाओं को देखना अपनेआप में एक सुखद अनुभव है.

समुद्रतल से 4,200 मीटर की ऊंचाई पर स्थित किब्बर उस से आगे है. यहां पहुंचने पर एक खास बात की जानकारी मिलती है कि यह दुनिया के ऐसे पहले स्थायी गांव के रूप में चर्चित हैं जहां बसें जाती हैं. 'हिमालय की छत' के नाम से मशहूर किब्बर में बिजली, टेलीफोन केंद्र के अलावा गेस्ट हाउस भी है.

'हिमालय की अजंता' और 'ताबो मठ' भी यहीं हैं जो समुद्रतल से 3,500 मीटर की ऊंचाई पर बसा है. ताबोमठ तिब्बत के थोलिंग गोंपा के बाद हिमालय का सब से बड़ा बौद्ध केंद्र है. यहां 9 मंदिर, 23 स्तूप, एक भिक्षु कक्ष और एक भिक्षुणी कक्ष दर्शनीय है.

10वीं सदी के आसपास प्राचीन साधकों की ध्यानमुद्राओं वाली प्रतिमा हर पर्यटक को अपनी ओर बरबस खींच लेती है. इन में कुछ निर्वस्त्र नरनारियों की ध्यानमग्न मूर्तियां भी हैं जिन पर अब वस्त्र डाल दिए गए हैं.

उत्तरांचल

उत्तरांचल की शीतल आबोहवा, खूबसूरत पहाड़ियों और हरेभरे मैदानों का आकर्षण भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों को यहां आने के लिए मजबूर करता है. पहले उत्तरांचल उत्तर प्रदेश का पहाड़ी इलाका था, लेकिन यहां के लोगों द्वारा चलाए गए उत्तराखंड आंदोलन के कारण गढ़वाल व कुमाऊं को उत्तर प्रदेश से अलग कर वर्ष 2000 में नए राज्य उत्तरांचल का गठन किया गया.

53,483 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला उत्तरांचल भौगोलिक रूप से 2 भागों में बंटा हुआ है, उत्तर का पर्वतीय मैदान तथा भावर व तराई का प्रदेश.

उत्तरांचल के पर्यटन स्थलों की अपनी अलग प्राकृतिक खूबसूरती है इसीलिए अंगरेज अधिकारियों ने यहां अनेक इमारतें बनवाई और इन्हें सैरगाहों के रूप में विकसित किया. नैनीताल, मसूरी, रानीखेत, पिथौरागढ़, फूलों की घाटी उत्तरांचल के ऐसे पर्यटन स्थल हैं जहां आ कर पर्यटक सुकून का अनुभव करते हैं.

उत्तरांचल जहां वन संपदाओं से भरा हुआ है वहीं यहां अनेक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान भी हैं. खासतौर से देहरादून की शिक्षा के एक महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में पहचान है. यहीं स्थित हैं इंडियन मिलिटरी अकादमी और वन अनुसंधान संस्थान. इन के अतिरिक्त कई अच्छे स्कूल व कालिज भी हैं.

ट्रैकिंग व पर्वतारोहण के शौकीन लोगों के लिए उत्तरांचल में अनेक स्थल हैं.

उत्तरांचल में गढ़वाली व कुमाउंनी भाषाएं बोली जाती हैं लेकिन यहां के लोग हिंदी भी जानते हैं. उत्तरांचल ने देश को सुमित्रानंदन पंत जैसे अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार व कवि दिए हैं.

मसूरी

उत्तरांचल की पर्वतशृंखलाओं के बीच बसा मसूरी एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है. समुद्रतल से 1,971 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस रमणीक स्थान की खोज अंगरेज अधिकारी मेजर हियरसे ने 1811 में की थी. ऐसा माना जाता है कि यहां आ कर बसने वाले पहले अंगरेज कैप्टन यंग थे. दिल्ली से 290 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस जगह का मौसम यों तो साल भर घूमने लायक रहता है किंतु साल के कुछ महीनों जैसे मई से ले कर जुलाई तक यहां घूमने का मजा ही कुछ और है.

यह शहर रुचि के अनुसार सैलानियों को आनंद प्रदान करता है. यदि कोई सैलानी एकांतप्रिय है और शांतचित्त हो कर प्राकृतिक दृश्यों को आत्मसात करना चाहता है तो यह जगह उस के लिए मील का पत्थर साबित होगी. और यदि कोई सैलानी चहलपहल व बाजार की रंगीनियों का आनंद उठाना चाहता है तो मसूरी की माल रोड उस का स्वागत करती मिलेगी. आमतौर पर मसूरी आने वाले लोग दिन भर में माल रोड के कम से कम 2 चक्कर अवश्य लगाते हैं.

दर्शनीय स्थल

कैंपटी फाल : मसूरी से महज 12 किलोमीटर दूर लगभग 4,500 फुट की ऊंचाई

र स्थित यह ठंडे पानी का एक खूबसूरत झरना यहां गरमी के मौसम में पर्यटक स्नान का जा लेते दिखाई देते हैं.

मिस्ट लेक : कैंपटी फाल के रास्ते में ही सूरी से 7 किलोमीटर दूर यह झील स्थित है. हां लकड़ियों का एक होटल, एक तरणताल और झील देखने योग्य है.

कंपनी गार्डन : यह मसूरी से 4 किलोमीटर की दूरी पर है. इस में बच्चों के लिए नौकायन, अन्य खेल व झूलों आदि का त्तम प्रबंध है. इस के निकट ही देहरादून मार्ग र मसूरी झील, 6 किलोमीटर की दूरी पर सर र्ज एवरेस्ट हाउस और 7 किलोमीटर की री पर अट्टा प्रपात भी मसूरी भ्रमण के रान देखने योग्य स्थल हैं.

लाइब्रेरी प्वाइंट : मसूरी स्थित इस प्वाइंट 4 किलोमीटर दूर तिब्बती शैली में बना बौद्ध दिर वास्तुकला की दृष्टि से दर्शनीय है तो सूरी से केवल 5 किलोमीटर की दूरी पर यहां सर्वोच्च शिखर चाइल्ड्स लाज है, जहां बीन की सहायता से पर्यटक दूरदूर तक के र्कीले दृश्यों का लुत्फ उठाते हैं. गनहिल शहर का दूसरा सब से ऊंचा पर्वत शिखर है. यहां से भी मनोहारी पर्वतशृंखलाओं को देखा जा सकता है. माल रोड से रोपवे ट्राली में बैठ कर अथवा 1 किलोमीटर पैदल चढ़ाई चढ़ कर आप गनहिल पहुंच सकते हैं. इन के अलावा यहां कैमल्स बैक मार्ग और झड़ी प्रपात भी देखे जा सकते हैं.

कृति की गोद में बसा मसूरी पर्वतों की रानी के म से जाना जाता है.

मसूरी के आसपास के पर्यटन स्थलों में देव वन, 27 किलोमीटर दूर स्थित यमुना ब्रिज, 28 किलोमीटर धनौल्टी, 35 किलोमीटर दूर बसे नाग टीला व सरकुंडा, चंपा, चकराता और 83 किलोमीटर दूर टाइगर प्रपात भी घूमने के लिहाज से उत्तम स्थल हैं.

मसूरी में कुछ पर्वतीय स्थल ऐसे भी हैं जहां प्रकृति अपने अनूठे सौंदर्य से आगंतुकों का मनमोह लेती है. ऐसे स्थानों में कई पुराने होटल और आवास आदि हैं जिन का प्राचीन स्वरूप आज भी मौजूद है. इन में लंडौर नामक जगह पर 70 वर्ष पुराना फर्स्ट एस्टेट आवास है. 58 वर्ष पुराना रैड बर्न ओम्स एस्टेट और लाल बहादुर शास्त्री अकादमी के पास बना 100 वर्ष पुराना कलात्मक कार्लटन होटल व लाइब्रेरी है जहां पुराने कलात्मक साजोसामान को बेहद संभाल कर रखा गया है जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है.



मसूरी : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल मार्ग : ***राज्य की राजधानी देहरादून मसूरी का निकटतम रेलवे स्टेशन है जो यहां से 34 किलोमीटर दूर है. देहरादून देश के लगभग सभी बड़े शहरों से रेल मार्ग से जुड़ा है.***

सड़क मार्ग : ***मसूरी के लिए लक्जरी एवं सामान्य सभी तरह की बसें चलती हैं. यह देश के कई प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. देहरादून से मसूरी के लिए सुबह 6.30 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक अच्छी बस सेवा है.***

कहां ठहरें : ***खाने व ठहरने की यहां उत्तम व्यवस्था है. मसूरी में अत्याधुनिक व साधारण सभी तरह के होटल, रेस्टोरेंट व गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं. प्रमुख होटलों में – 'गढ़वाल टेरिस', फोन-2632238; 'हनीमून इन', फोन-2632378; 'हिलक्वीन', 'विष्णु पैलेस', फोन-2631732 आदि हैं.***

कब जाएं : ***वैसे तो मसूरी साल भर जाया जा सकता है लेकिन पर्यटन की दृष्टि से यहां के लिए गरमी का मौसम यानी अप्रैल से अगस्त के महीने ज्यादा सही रहते हैं. जनवरीफरवरी में भी पर्यटक यहां हिमपात का लुत्फ उठाने आते हैं.***

एस.टी.डी. कोड : ***01362***

मसूरी किसी भी मौसम में घूमने जाएं तो अपने साथ गरम कपड़े ले जाना न भूलें. खासतौर से सर्दी के मौसम में यहां का तापमान 7 डिगरी सेंटीग्रेड से 10 डिगरी सेंटीग्रेड तक रहता है. ऐसे में पूरी तरह गरम कपड़े ही साथ ले जाएं.

मसूरी भ्रमण से संबंधित अधिक जानकारी के लिए आप गढ़वाल मंडल विकास निगम से संपर्क कर सकते हैं. –मंजू तिवारी

देहरादून

उत्तरांचल की राजधानी देहरादून एक बहुत पुराना और खूबसूरत शहर है. प्राकृतिक सौंदर्य व स्वास्थ्यवर्धक जलवायु वाले इस शहर को दून घाटी भी कहा जाता है.

देहरादून जानेमाने संस्थानों का मुख्यालय भी है जिन में प्रमुख हैं, ओएनजीसी, सर्वे आफ इंडिया, राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कालिज, भारतीय सैन्य अकादमी और दून पब्लिक स्कूल.

इस शहर में आवागमन के सभी साधन मौजूद हैं. सिटी बस व विक्रम, बस अड्डे, रेलवे स्टेशन से हर जगह के लिए उपलब्ध रहते हैं. लंबी दूरी के लिए टैक्सी व आटोरिकशा भी उपलब्ध रहते हैं, लेकिन चलने से पहले आप किराया तय कर लें.

दर्शनीय स्थल

सहस्रधारा : **यह पर्यटक स्थल देहरादून से मात्र 14 किलोमीटर की दूरी पर है जो गंधक के झरनों के लिए मशहूर है. बलदी नदी और गुफाएं मिल कर स्तब्ध कर देने वाला विस्मयकारक दृश्य प्रस्तुत करती हैं. 9 मीटर की ऊंचाई से गिरते झरने के नीचे पर्यटक नहाने का लुत्फ उठाते हैं.**

सहस्त्रधारा जाते समय शहर से ही बच्चों के लिए खानेपीने का सामान आदि साथ ले कर चलें तो ज्यादा अच्छा रहेगा. वैसे तो यहां पर भी अच्छी मार्केट है लेकिन दुकानदार मनमाने दाम वसूलते हैं.

तपोवन : यह खूबसूरत पर्यटन स्थल देहरादूनराजपुर रोड से केवल 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है.

कलांग मैमोरियल : अपने में 180 साल पहले की यादें समेटे यह स्थान ब्रिटिश और गोरखा युद्धकाल का एक प्रतीक स्थल है जो सहस्त्रधारा जाते समय रास्ते में पड़ता है.

लच्छीवाला : देहरादून से 22 किलोमीटर की दूरी पर हरिद्वारऋषिकेश मार्ग पर यह एक खूबसूरत पिकनिक स्थल है.

भागीरथी रिसोर्ट : यह खूबसूरत पर्यटन थल देहरादूनहर्बटपुर रोड पर घंटाघर से 19 किलोमीटर की दूरी पर है. यहां काफी बड़ा



क के झरनों के लिए मशहूर सहस्त्रधारा देखने दूर से पर्यटक आते हैं.

मिंग पूल है, जहां पर्यटक नहाने का मजा हैं.

वाडिया इंस्टीट्यूट संग्रहालय : यह भारत सब से बड़ा भूगर्भ विज्ञान संबंधी चीजों संग्रहालय है. घंटाघर और जनरल देव सिंह रोड से इस की दूरी मात्र 5 लोमीटर है.

वन अनुसंधान संस्थान : यह भारत का संबंधी उत्पादों का सब से बड़ा प्रशिक्षण ान है. यहीं से सारे वनाधिकारी अपना प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं.

गुचूपानी : यह भी एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है. देहरादून से इस की दूरी केवल 5 किलोमीटर है.

डाक पत्थर : यह देहरादून का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, यहां आने वाला हर पर्यटक जरूर इसे देखने जाता है. शहर से इस की दूरी 45 किलोमीटर है. यहां जाने के लिए परेड ग्राउंड से रोजाना बसें चलती हैं. यहां की हरियाली देखने लायक है. सैलानियों के लिए स्वीमिंग पूल में स्नान की सुविधा है.

कोटिपावर हाउस : यह देश की सब से बड़ी अंडरग्राउंड बिजली उत्पादक इकाई है. शहर से इस स्थान की दूरी 83 किलोमीटर है.

कालसी : डाक पत्थर से केवल 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कालसी में अशोक के शिलालेख हैं. इस शिलालेख में अशोक ने अपनी शासन पद्धति और अपने नैतिक नियमों का उल्लेख किया है. यह स्तंभ अब सर्वे आफ इंडिया की धरोहर है.

मालसी डियर पार्क : देहरादून से 10 किलोमीटर दूर मसूरी की ओर जाने वाले रास्ते पर यह पार्क स्थित है. शिवालिक पहाड़ियों के कदमों में बसा खूबसूरत मालसी डियर पार्क प्राकृतिक सुंदरता से घिरा है जो एक छोटे जंतुपार्क का नमूना है.

बुद्ध प्रतिमा : यहां बौद्ध शाक्यमुनि की 103 फुट ऊंची प्रतिमा स्थापित की गई है. यह शहर के क्लिमनटाउन नामक जगह पर स्थित है. यहां खूबसूरत बगीचे और हरीभरी घास के

देहरादून : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : ***देहरादून के जौलीग्रांट हवाई अड्डे के लिए दिल्ली से जेट एअरवेज की नियमित उड़ानें हैं.***

रेल मार्ग : ***देहरादून पहुंचने के लिए उत्तर रेलवे की अच्छी सेवाएं हैं.***

सड़क मार्ग : ***देहरादून के लिए समीपवर्ती राज्यों से अच्छी सरकारी व निजी बस सेवाएं हैं.***

कहां ठहरें : ***रेलवे स्टेशन व बस स्टैंड के समीप ही कई छोटेबड़े सुविधासंपन्न होटल, रेस्तरां उपलब्ध हैं. इन के अलावा देहरादून में कई धर्मशालाएं व गेस्ट हाउस भी उपलब्ध हैं.***

कब जाएं : ***देहरादून आप वर्ष भर जा सकते हैं.***

एस.टी.डी. कोड : ***0135***

मैदान चारों तरफ फैले हैं.

टाइगर फाल : **चकराता से केवल 5 किलोमीटर की दूरी पर यह फाल स्थित है. यहां 50 मीटर की ऊंचाई से गिरता पानी पर्यटकों का मनमोह लेता है.**

राजाजी राष्ट्रीय उद्यान : **इस उद्यान की स्थापना 1966 में 820 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में हुई.** राजाजी राष्ट्रीय उद्यान हाथियों के संरक्षण के लिए जाना जाता है. यहां ठहरने की भी उचित व्यवस्था है. यहां पर्यटक विश्राम गृह व वन विभाग के विश्रामगृह भी हैं.

यहां घूमने के लिए सब से अच्छा मौसम नवंबर से मध्य जून के बीच का है.

पौड़ी गढ़वाल

विविध रूपांतरित स्थलाकृति पौड़ी गढ़वाल जिले की प्रमुख विशेषता है. जिले में जहां समुद्रतल से लगभग 3 हजार मीटर की ऊंचाई पर बसा दूधातोली का विस्तृत मैदान है जो सर्दियों में बर्फ से ढक जाता है वहीं कोटद्वार का तराई इलाका भी है जो जिले का सब से गरम क्षेत्र है.

पौड़ी गढ़वाल में अलगअलग स्थानों की जलवायु भी अलगअलग है. पौड़ी बेहद खूबसूरत पहाड़ी पर्यटन स्थल है जिस की समुद्रतल से ऊंचाई 1,814 मीटर है. जिला मुख्यालय व अनेक शैक्षणिक संस्थान होने की वजह से यहां हमेशा चहलपहल बनी रहती है.

अगर मौसम साफ हो तो यहां से हिमालय पर्वत की अनेक बर्फ से ढकी चोटियां जैसे बंदरपूंछ, स्वर्गारोहिणी, जोगिन, सुमेरू, चौखंबा, नीलकंठ, हाथी पर्वत, नंदा देवी और त्रिशूल आदि दिखाई देती हैं.

पौड़ी जाने के लिए कोटद्वार आखिरी रेलवे स्टेशन है जिस की शहर से दूरी लगभग 110 किलोमीटर है. कोटद्वार से पौड़ी के लिए बराबर बसें, जीप व टैक्सी चलती रहती हैं जो लगभग 4-5 घंटे में पहुंचा देती हैं.

यहां वर्ष भर जाया जा सकता है लेकिन फरवरी से अक्तूबर तक का समय बहुत अच्छा रहता है. वसंत ऋतु का मौसम तो पहाड़ों को देखने लायक होता है. हरे जंगल, घाटियों में खिले एकदम लाल बुरांस के फूल व सरसों के लहलहाते खेत मनमोहक लगते हैं.

आप कोटद्वार, ऋषिकेश या देहरादून से अगर टैक्सी या जीप से पौड़ी आ रहे हैं तो इन से पहले किराया ठीक से तय कर लें. रास्ते में इन लोगों से ठंडा आदि न पिएं क्योंकि ये लोग इस में कुछ मादक पदार्थ मिला कर आप का सामान लूट सकते हैं.

दर्शनीय स्थल

कोटद्वार : यह गढ़वाल के प्रवेशद्वार के रूप में भी जाना जाता है. यहीं से शुरू होती हैं गढ़वाल की सुरम्य वादियां. यह तराई इलाका

और गढ़वाल का अंतिम रेलवे स्टेशन. खोई
ी के तट पर बसे कोटद्वार की समुद्रतल से
चाई 640 मीटर है.

कण्वाश्रम : कालिदास के अभिज्ञान
कुंतलम् का कथा क्षेत्र, शकुंतला पुत्र भरत,
स के नाम पर यह देश भारतवर्ष कहलाया,
टद्वार से 14 किलोमीटर की दूरी पर
ण्वाश्रम स्थित है.

कालागढ़ : कोटद्वार से मात्र 84
लोमीटर की दूरी पर बसा है कालागढ़.
मगंगा पर बांध बनने से यहां पर 17
लोमीटर लंबी झील बन गई है और यह
ाह कार्बेट नेशनल पार्क के जंगलों से घिरी
जो पर्यटकों के लिए नयनाभिराम दृश्य पेश
रती है.

लैंसडाउन : यह स्थल पहाड़ की ऊंची
टी पर ब्रिटिश शासन में अंगरेजों का
ाया हुआ है. यहां अभी भी अंगरेजों के
ने बंगले दर्शनीय हैं. ब्रिटिश शासकों ने
ां के प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित हो कर
अपनी छावनी बनाया था. आजकल यहां
ढ़वाल राइफल्स' की छावनी है जहां
वाल के वीर स्वतंत्रता सेनानी 'चंद्रसिंह
गढ़वाली' की आदमकद मूर्ति स्थापित की
गई है.

गढ़वाल राइफल्स के सिपाही अपनी कसम परेड के दौरान इस मूर्ति के सामने कसम लेते हैं. गढ़वाल में इसे 'कालोडांडा' के नाम से जाना जाता है. घने बांझ, बुरांस, चीड़, देवदार के पेड़ों से घिरा लैंसडाउन शहरी कोलाहल से दूर व प्रदूषणरहित है.

यहां ठहरने के लिए पर्यटक आवास गृह, सार्वजनिक निर्माण विभाग के बंगले व छोटेमोटे होटल तथा अतिथिगृह हैं.

सैलानी लैंसडाउन में जिस भी होटल या रेस्तरां में ठहरें उन से ताजा व अपनी इच्छानुसार भोजन बनाने को कहें. अधिक भीड़ के कारण ये लोग कई बार बासी व बेकार भोजन सैलानियों को परोस देते हैं और दाम भी मनमाने वसूलते हैं. किसी गाइड के चक्कर में भी न पड़ें. यहां पर हर कोई आप को हर चीज के महत्त्व के बारे में विस्तार से बता देगा.

सतपुली : कोटद्वारपौड़ी मोटरमार्ग पर बसा एक खूबसूरत व्यापारिक केंद्र है. खाना खाने के बाद पौड़ी व कोटद्वार को जाने वाली सभी बसें लाइन में पहाड़ी सड़कों पर जाते हुए बहुत खूबसूरत लगती हैं. इस मार्ग पर पड़ने वाला ज्वाल्पा का प्राचीन मंदिर दर्शनीय है.

ी बेहद खूबसूरत पहाड़ी पर्यटन स्थल है जहां
भर जाया जा सकता है.



खिर्सू : पौड़ी से 19 किलोमीटर की दूरी पर स्थित खिर्सू पर्यटन का अद्भुत केंद्र है. बांझ, बुरांस और देवदार के जंगल और सेब के बाग यहां की नैसर्गिक सुंदरता में चार चांद लगाते हैं. हिमालय के हिमशिखर यहां से साफ और एकदम पास दिखाई देते हैं. कोटद्वार से खिर्सू तक का बस सफर बड़ा ही आनंददायक है. समुद्रतल से इस की ऊंचाई 1,700 मीटर है. मौसमानुसार कपड़े जरूर ले जाएं. यहां ठहरने के लिए पर्यटक आवास गृह उपलब्ध हैं.

श्रीनगर : अलकनंदा नदी के तट पर बसा खूबसूरत शहर श्रीनगर कभी गढ़वाल के राजाओं की राजधानी था. यह स्थान जिला मुख्यालय पौड़ी से 29 किलोमीटर की दूरी पर बसा है.

अदवानी : शहरी शोरशराबे से दूर यह इस इलाके का सब से सुरम्य स्थान है. चारों ओर हरियाली है. यह स्थान पौड़ी से 14 किलोमीटर दूर है.

डांडा नागराजा : यह पौड़ी से लगभग 28 किलोमीटर की दूरी पर बसा है. यह रमणीक स्थल वट, पीपल और घने चीड़ के पेड़ों से आच्छादित है. बैसाखी पर यहां एक परंपरागत भव्य मेले का आयोजन होता है. यहां से 14 किलोमीटर की दूरी पर अलकनंदा व भागीरथी का संगम स्थल भी है.

धारी देवी : यह स्थल बदरीनाथश्रीनगर मार्ग पर अलकनंदा नदी के किनारे स्थित है. यहां 14वीं सदी का राजेश्वरी देवी का मंदिर व प्राचीन खंडहर देखने लायक है. गढ़वाल स्थापत्य कला के अनूठे नमूने यहां देखने को मिलते हैं.

चीला : यह राजाजी राष्ट्रीय उद्यान का ही एक हिस्सा है. वन्यजीवन को देखने के लिए यहां हाथी उपलब्ध रहते हैं. यह हरिद्वार से केवल 9 किलोमीटर की दूरी पर है.

लक्ष्मण झूला : गंगा नदी पर ऋषिकेश के नजदीक यह एक दर्शनीय स्थल है. स्वर्गाश्रम, गीता भवन व परमार्थ निकेतन देखने के लिए लाखों लोग इस पुल से हो कर गंगा पार करते हैं. यहां ठहरने के लिए धर्मशालाएं व अनेक आश्रम हैं.

नीलकंठ : लक्ष्मण झूला हो कर ही नीलकंठ के लिए जाते हैं. जाने के लिए टैक्सी की सुविधा है. यहां से गंगा का प्रवाह अत्यंत मनोहारी लगता है. यहां ठहरने के लिए धर्मशालाएं हैं. पर्यटकों का यहां तांता लगा रहता है.



बिनसर : पौड़ी से बिनसर की दूरी 118 किलोमीटर है. समुद्रतल से इस स्थान की ऊंचाई 2,480 मीटर है. बांझ, बुरांस, चीड़, देवदार के घने जंगलों के बीच बसा यह एक रमणीक स्थल है.

दूधातोली : इस स्थल की समुद्रतल से ऊंचाई लगभग 3 हजार मीटर है. यह पूरा क्षेत्र प्राकृतिक नजारों के लिए जाना जाता है. बांझ के वृक्षों से हराभरा यह स्थान कमाल का स्वास्थ्यवर्धक है. उत्तरांचल की प्रस्तावित राजधानी गैरसैण इसी नयनाभिराम क्षेत्र के अंतर्गत आती है. यह स्थल बिनसर से 11 किलोमीटर दूर है.

–हरीश भंडारी

फूलों की घाटी

वैसे तो प्रकृति ने धरती पर चारों तरफ अपने अनुपम सौंदर्य की छटा बिखेरी



चारों तरफ अनुपम सौंदर्य की छटा बिखेरती फूलों की घाटी में खिले फूलों की खूबसूरती और सुगंध मन को ताजगी से भर देती है.

न प्रकृति प्रेमियों के लिए फूलों की किसी अजूबे से कम नहीं है. उत्तरांचल मोली जिले में बदरीनाथ से मात्र 42 मीटर की दूरी पर पुष्पावती नदी के र फूलों की घाटी स्थित है.

कई किस्म के रंगबिरंगे फूलों से भरी की घाटी में एक ओर ऊंचेनीचे पहाड़ हैं परी तरफ तंग और गहरी खाइयां, चीड़ वदार के घने जंगलों के बीच से होती हुई ढ़ी पगडंडियों वाले पहाड़ी रास्तों पर का रोमांच ही कुछ और है.

रास्ते में पड़ने वाले गांव, सीढ़ीनुमा लिहान और इन खेतों में काम करती महिलाएं भी यहां आने वाले सैलानियों ासा आकर्षित करती हैं.

समुद्रतल से 12 हजार फुट की ऊंचाई पर फूलों की घाटी जाने के लिए ऋषिकेश से ठ होते हुए गोविंद घाट पहुंचने के बाद ा रास्ता पैदल तय करना पड़ता है जो 17 किलोमीटर तक का है.

खड़ी चढ़ाई होने के बावजूद सैलानी इस ास्ते पर पैदल ही चलते हैं. लेकिन ऊपर बढ़ते जाते हैं थकान की रेखाएं चेहरे पर साफ दिखाई देने लगती हैं.

इस घाटी की खोज 1931 में एक मशहूर ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रैंक स्मिथ ने की थी. ट्रैकिंग के दौरान हिमालय की ऊंचीऊंची पहाड़ियों पर शुद्ध आबोहवा के साथ कई तरह के रंगबिरंगे फूल खिले दिखाई दिए. यहां के अद्‌भुत सौंदर्य से वह इतना प्रभावित हुआ कि इस जगह को उस ने 'फूलों की घाटी' नाम दे डाला.

ब्रिटेन पहुंच कर स्माइथ ने 'फूलों की घाटी' पर एक पुस्तक लिखी जिस में उस ने यहां की खूबसूरती का अद्वितीय वर्णन किया. प्रकाशन के बाद यह पुस्तक 'फूलों की घाटी' के नाम से पूरे विश्व भर के प्रकृतिप्रेमियों में आकर्षण का केंद्र बन गई.

इस घाटी की पर्वत शृंखलाओं से कई छोटीछोटी जलधाराएं निकलती हैं जो आगे जा कर पुष्पावती नदी में मिल जाती हैं. इन्हीं में से एक जलधारा का नाम पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की याद में 'प्रियदर्शनी जलधारा' रखा गया है. इस जलधारा के आसपास कई किस्म के रंगबिरंगे फूल और ब्रह्मकमल खिलते हैं.

घाटी की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए इसे 1982 में राष्ट्रीय उद्यान का दरजा दिया गया.

इस के बाद से ही इस राष्ट्रीय उद्यान का निगम द्वारा रखरखाव किया जा रहा है. यहां पर्यटकों के रुकने की कोई व्यवस्था नहीं है इसीलिए संध्या होते ही पर्यटकों को वापस घांघरिया पहुंचना पड़ता है जहां रहनेखाने की अच्छी व्यवस्था है.

अंगरेजी के 'U' आकार में फैली फूलों की घाटी जुलाईअगस्त माह में अपने पूरे यौवन पर होती है.

घांघरिया से तकरीबन 6 किलोमीटर की दूरी पर हेमकुंड है.

हेमकुंड जाते समय रास्ते में खिले फूलों की खूबसूरती और सुगंध मन को ताजगी का एहसास कराती है.

-पूनम



विश्वप्रसिद्ध आधुनिक पर्यटन स्थल बन चुके नैनीताल में हर साल देशविदेश से लाखों पर्यटक आते हैं.

नैनीताल

झीलों का लुभावना शहर है नैनीताल. 'लेक सिटी' के नाम से प्रसिद्ध उत्तरांचल के इस पहाड़ी पर्यटन स्थल की प्राकृतिक खूबसूरती और इंद्रधनुषी रंगों की छटा का मिलाजुला सौंदर्य सैलानियों को मदहोश कर देने वाला है. नैनीताल एक ओर झीलों से घिरा हुआ है तो दूसरी ओर छोटीबड़ी पर्वत शृंखलाओं और हरीभरी वादियों से भी घिरा है.

समुद्रतल से 1,938 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस शहर से जिस ओर भी नजर घुमाएं, दूरदूर तक फैली पर्वत शृंखलाओं के बीच से उगता हुआ सूर्य सिंदूरी रंग के गोले सा दिखाई देता है. ऊंचीनीची पहाड़ियों के बीच बहती हुई झील के स्वच्छ जल पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें अनुपम दृश्य प्रस्तुत करती हैं. देख कर लगता है मानो चित्रकार ने अपनी तूलिका से कैनवास पर खूबसूरत इंद्रधनुषी रंग बिखेर दिए हों.

नैनी झील : शहर के बीच में होने के कारण यह झील नैनीताल का प्रमुख आकर्षण है. झील के एक ओर तल्लीताल है तो दूसरी ओर मल्लीताल. इस झील में नौका विहार का भरपूर आनंद लिया जा सकता है.

नैना पीक : यह नैनीताल की सब से ऊंची चोटी है. इसे चाइना पीक भी कहते हैं. 2,610 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस चोटी पर पहुंचने के लिए बर्फ से ढकी 6 किलोमीटर की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है. इस चोटी से हिमालय की चोटियों का अद्भुत नजारा देखा जा सकता है. घोड़े की सवारी और ट्रेकिंग कर के भी यहां तक पहुंचा जा सकता है.

भवाली : चीड़ के पेड़ों से घिरा हुआ भवाली प्रकृति प्रेमियों के लिए शांत और रमणीय सैरगाह है. सेब और प्लम के बागों के कारण इस को 'फलों की मंडी' भी कहते हैं. प्राकृति



ुरती के लिए प्रसिद्ध इस स्थान की हवा शुद्ध और ताजगी से भरपूर है. टी.बी. गियों के लिए यहां किंग एडवर्ड के नाम पर ारियम का निर्माण भी किया गया है.

नौकुचियाताल : नैनीताल से 26 मीटर दूर स्थित नौकुचियाताल अपने नाम ार्थक करता है. इस के 9 कोने हैं ए इसे नौकुचिया- कहते हैं.

खुरपाताल : शहर ाल 10 किलोमीटर ूरी पर यह एक ्रय और मनमोहक ़क स्थल है. झील चोंबीच यह एक ा टापू के रूप में आ है.

सात ताल : यह 7 का सुंदर समूह ़ और देवदार के पेड़ों से घिरा सात ताल नैनीताल से 22 किलोमीटर दूर है.

रामनगर : यह स्थान कलकल करती बहती कोसी नदी के किनारे पर स्थित है. नेशनल पार्क का मुख्यालय होने की वजह से यह स्थल पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है.

भीमताल : अब भीमताल को भी सैलानियों की सैरगाह के रूप में विकसित और व्यवस्थित किया गया है. पहाड़ों की गोद में बसी यह प्राकृतिक झील अपनेआप में अनेक आकर्षणों को समेटे हुए है. यही वजह है कि साल भर यहां पर सैलानियों का तांता लगा रहता है.

यहां आ कर पालदार नौकाओं में नौकायन करने का अपना अलग ही मजा है. झील के बीच में बने हुए टापू पर स्थित रेस्तरां पर्यटकों को खासतौर से आकर्षित करता है. पांडवों के एक भाई भीम और उस की पत्नी हिडिंबा की कथा के आधार पर ही इस ताल का नाम भीमताल पड़ा. यहां अब रहने के होटल भी बनने लगे हैं.

रामगढ़ : ऊंचीनीची पर्वत शृंखलाओं से घिरे रामगढ़ को कुमाऊं की फल वाटिका भी कहा जाता है. नैनीताल से 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रामगढ़ में सेब, खुबानी, आड़ू और प्लम के वृक्ष हैं. यहां के फल अपने स्वाद और गुणवत्ता के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं.

नैनीताल का राजभवन : ब्रिटिश स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना.



नैनीताल : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल मार्ग : यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन 35 किलोमीटर दूर काठगोदाम है.

सड़क मार्ग : यहां के लिए दिल्ली, लखनऊ, देहरादून, चंडीगढ़, हल्द्वानी व काठगोदाम सहित कई मुख्य शहरों से बसों की अच्छी सुविधा है. पर्यटक कंडक्टेड टूर भी ले सकते हैं.

कहां ठहरें : नैनीताल में खाने व ठहरने हेतु अच्छी व्यवस्था है. प्रमुख होटलों में 'मानसरोवर', फोन-235581; 'नैनी स्ट्रीट', फोन-235105, 'प्रताप रीजेंसी', फोन-235865; 'शेरवानी हिलटाप', फोन-226300; 'टूरिस्ट रेस्ट हाउस माउंट व्यू', फोन-235400; 'शेवरान फेयर हैवन्स', फोन-236057 आदि हैं. इन के अलावा धर्मशालाएं, लौज, सरकारी गेस्ट हाउस की भी अच्छी सुविधा है.

कब जाएं : अप्रैल से जून तक का समय यहां आने के लिए अनुकूल है. वैसे सर्दियों में भी पर्यटक यहां आते हैं. यहां के लिए गरम कपड़े आवश्यक हैं. यहां का मौसम पलपल बदलता रहता है. अधिक जानकारी के लिए पर्यटन कार्यालय, माल रोड, नैनीताल, फोन-235335 से संपर्क कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 05942

ट्रैकिंग : नैनीताल में समयसमय पर ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए यहां के यूथ होस्टल एसोसिएशन द्वारा ट्रैकिंग का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है. इस में भाग ले कर किलबरी, पंगोट, हरियलटा, रातीघाट आदि स्थानों की ट्रैकिंग का मजा लिया जा सकता है.

–पूनम कोठारी

अल्मोड़ा

अल्मोड़ा कुमाऊं का प्राचीन शहर है जो कुमाउंनी इतिहास व संस्कृति का केंद्र रहा है. यहां का अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य, स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु व नयनों को अपार सुख प्रदान करने वाला हिमालय का विहंगम दृश्य हमेशा ही देशीविदेशी सैलानियों को आकर्षित करता रहा है.

कभी कुमाऊं की राजधानी रहे अल्मोड़ा को 1563 में बसाने का श्रेय राजा बालो कल्याण चंद को जाता है. अल्मोड़ा पर 9वीं शताब्दी में कत्यूरी वंश के शासकों का शासन था. 16वीं शताब्दी के मध्य तक इस पर चंदवंशीय राजाओं ने अधिकार कर लिया. 1760 से यह नेपाली गोरखाओं के अधीन रहा. 1815 में गोरखाओं से अल्मोड़ा का शासन अंगरेजों के हाथ में आ गया.

इस दौर में बने कई किले व महल आज भी इस शहर के समृद्धशाली अतीत व वैभव को संजोए हैं. नगर के पूर्वी छोर पर 'खगमरा' नाम का किला है जिस का निर्माण कत्यूरी राजाओं ने कराया था. कल्याण चंद द्वारा बनवाए गए 'मल्ला महल' में अब जिला मुख्यालय है.

यह शहर आज भी अपनी परंपरागत पहचान को सुरक्षित रखे हुए है. पटालियों से ढकी मकानों की छतें व गलियां इस बात की गवाह हैं. पटालों के फर्श वाला 2 किलोमीटर लंबा मुख्य बाजार अल्मोड़ा का प्रमुख आकर्षण है.

कभी आलमनगर के नाम से जाना जाने वाला अल्मोड़ा के आसपास ऐसे कई ऐतिहासिक, धार्मिक व प्राकृतिक स्थल हैं जो पर्यटकों के आकर्षण का विशेष केंद्र हैं.

दर्शनीय स्थल

राजकीय संग्रहालय : बस स्टैंड के पास ही गोविंद वल्लभ पंत राजकीय संग्रहालय है. मध्य हिमालय से जुड़ा इतिहास, पुरातत्त्व व संस्कृति से संबंधित ऐतिहासिक वस्तुओं का यह अनूठा संग्रह है. खुदाई में मिली सैकड़ों साल पुरानी मूर्तियां, बरतन तथा स्थानीय लोक कलाओं के नमूने सैलानी यहां आ कर देख सकते हैं. संग्रहालय राजकीय अवकाश के दिन बंद रहता है.

डियर पार्क : अल्मोड़ा से 3 किलोमीट

दूरी पर डियर पार्क एन.टी.डी. नाम से भी जाता है. शाम के समय यहां खासी रौनक है. पर्यटकों के साथ स्थानीय लोग भी के कोलाहल से दूर इस पार्क के शांत व रम वातावरण में समय व्यतीत करना पसंद हैं.

ब्राइटन एंड कार्नर : इस स्थान से सूर्योदय र्यास्त का अत्यंत मनोहारी दृश्य नजर आता ास ही में विवेकानंद पुस्तकालय है जहां ीय अध्यात्म व चिंतन पर काफी साहित्य को मिल सकता है.

कालीमट : अल्मोड़ा से 4.5 किलोमीटर दूरी पर कालीमट पिकनिक के लिहाज से सूरत जगह है. यहां से शहर का विहंगम दिखाई पड़ता है तथा हिमालय की सभी ट्यां साफ नजर आती हैं.

कसारदेवी : कालीमट से केवल 1 ोमीटर की दूरी पर दूसरी शताब्दी में निर्मित रदेवी का प्राचीन मंदिर पहाड़ी की चोटी पर है. यहां से सूर्योदय की छटा देखने लायक है. यहां स्वामी विवेकानंद ने अपनी हिमालय के समय एकांत साधना की थी. कसारदेवी टिश शासन के दौरान बने बंगले, काटेज व त मनोरम 'कसार जंगल रिसोर्ट' आदि आज लानियों के लिए इस सुरम्य पर्यटन स्थल में

ो ढका अल्मोड़ा शहर : यहां का प्राकृतिक व स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु हमेशा से नियों को आकर्षित करती रही है.

ठहरने की पसंदीदा जगह हैं.

मारतोला : खूबसूरत बागबगीचों से घिरा यह पिकनिक स्थल अल्मोड़ा से 10 किलोमीटर की दूरी पर है. यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत हो कर कई विदेशी यहां बस गए हैं.

कोसी : कोसी के प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत हो कर पर्यटक यहां के शांत मनोरम वातावरण में रचबस जाना चाहते हैं. यहां केंद्र सरकार का गोविंद वल्लभ पंत पर्यावरण अनुसंधान संस्थान है. यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए पर्यटक आवास गृह भी हैं.

कटारमल : अल्मोड़ा से 17 किलोमीटर की दूरी पर कटारमल में 800 साल पुराना सूर्य मंदिर आज जर्जर हालत में है. यह उड़ीसा में कोणार्क के बाद देश का दूसरा महत्त्वपूर्ण सूर्य मंदिर है. यहां से 1 किलोमीटर की दूरी पर बिकुट वन एक दर्शनीय स्थल है.

बिनसर : बागेश्वर मार्ग पर अल्मोड़ा से 30 किलोमीटर की दूरी पर बिनसर में एक बहुत पुराना मंदिर है. समुद्रतल से 2,412 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्थान अपनी नैसर्गिक सुंदरता के लिए मशहूर है. यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए कुमाऊं मंडल विकास निगम का गेस्ट हाउस है. हर साल सैकड़ों पर्यटक बिनसर पहुंच कर प्रकृति की सुंदर छवि का आनंद लेते हैं.

जागेश्वर : अल्मोड़ा से 34 किलोमीटर दूर उत्तरपूर्व में गंगा नदी के किनारे बसा 'जागेश्वर धाम' 12वीं से 17वीं सदी के मध्य निर्मित मंदिरों का समूह है. जागेश्वर का मंदिर देश भर में फैले



अल्मोड़ा : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल मार्ग : अल्मोड़ा का निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम है.

सड़क मार्ग : अल्मोड़ा उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि राज्यों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

कहां ठहरें : यहां ठहरने की अच्छी सुविधाएं हैं. 'कसार जंगल रिसोर्ट,' फोन-251127; 'कोणार्क', फोन-231217; 'होली डे होम', फोन-230250; 'एंबेसडर', फोन-230118; 'शिखर', फोन-230253 आदि प्रमुख होटल हैं. इन के अलावा सरकारी विश्राम गृह, गेस्ट हाउस, डाक बंगला, सर्किट हाउस में भी ठहरने की अच्छी व्यवस्था है.

कब जाएं : यहां बरसात को छोड़ कभी भी आजा सकते हैं. साल के 12 महीनों में 9 महीने यहां विशेष रौनक रहती है. यहां के लिए गरम कपड़े साथ ले जाने आवश्यक हैं. पर्यटन कार्यालय, अल्मोड़ा, फोन-230180 से विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 05962

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है. पाषाण शैली के इन भव्य देवालयों का निर्माण कत्यूर व चंदवंशीय राजाओं ने कराया था. देवदार के जंगल के मध्य जागेश्वर में पुरातात्त्विक महत्त्व के 164 मंदिर हैं. मंदिरों की नक्काशी, द्वार, सजावट और स्थापत्य कला देखने लायक है.

रानीखेत

'पहाड़ों की रानी' कहे जाने वाले रानीखेत की सुंदरता अपने नाम के अनुसार ही अनुपम है. समुद्री सतह से 1,830 मीटर की ऊंचाई पर स्थित रानीखेत उत्तरांचल का प्रमुख पर्यटन स्थल है. इस का विस्तार दक्षिणपूर्व में चौबटिया से ले कर उत्तरी ढाल पर बसे सदर बाजार तथा पश्चिम में गनियाद्योली और पूर्व में कालिका इस्टेट तक है.

रानीखेत के बारे में कहा जाता है कि 12वीं सदी में कत्यूर वंश के शासक सुधारदेव की रानी पद्मिनी का यह अध्ययन व विश्राम क्षेत्र था, इसीलिए इसे 'रानीक्षेत्र' कहा जाता था. वह इस स्थान के सौंदर्य से इतना अधिक प्रभावित थीं कि बाद में यहां अपना स्थायी निवास बना लिया. खेतों के बीच घिरे होने से यह स्थान तब से 'रानीखेत' कहा जाने लगा.

1869 में अंगरेजों ने यहां छावनी क्षेत्र का निर्माण किया. ब्रिटिश शासन के बाद इस का छावनी परिषद के तहत सुनियोजित ढंग से विकास किया गया. इस कारण प्रकृति के साथ किसी प्रकार की मानवीय छेड़छाड़ यहां नजर नहीं आती. रानीखेत में कुमाऊं रेजीमेंट का मुख्यालय भी है. भारत के प्रथम परमवीर चक्र विजेता सोमनाथ शर्मा इसी रेजीमेंट के जवान थे जिन की स्मृति में इस नगरी में एक क्रीड़ा मैदान का निर्माण कराया गया है.

रानीखेत अपने प्राकृतिक सौंदर्य और प्रदूषण रहित वातावरण के कारण दुनिया भर में जाना जाता है. जो भी पर्यटक रानीखेत आते हैं वे यहां की नैसर्गिक सुंदरता से अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाते.

दर्शनीय स्थल

गोल्फ ग्राउंड : अल्मोड़ा मार्ग पर रानीखेत से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह गोल्फ ग्राउंड एशिया का ऊंचाई पर स्थित सब से बड़ा गोल्फ मैदान है. इस मैदान में पहाड़ों की गुलाबी ठंड को महसूस करते हुए चीड़ की खुशबू से भीगी हवाओं का लुत्फ उठाया जा सकता है. 6 हजार फुट की ऊंचाई पर हरी घास का यह दिलकश मैदान फिल्मों की शूटिंग के लिए मशहूर है. यहां से हिमालय की पर्वत शृंखलाओं का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है.

चौबटिया : यह स्थान अपने सुंद

बागबगीचों के लिए मशहूर है जो रानीखेत से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. गरमियों में फलों के शौकीनों को यह स्थान बेहद लुभाता है. यहां उत्तरांचल सरकार का उद्यान व फल अनुसंधान केंद्र भी है. 7,400 फुट की ऊंचाई पर स्थित चौबटिया सैरसपाटे व पिकनिक के लिए अच्छी जगह है.

शीतलाखेत : बागबगीचे व औषधीय पौधों के सघन वन से घिरे शीतलाखेत को 'पर्यटक ग्राम' के रूप में विकसित किया गया है. यहां ऊंचाई पर खूबसूरत नजारों से भरे दृश्य पर्यटकों को खूब लुभाते हैं. पास में ही



ानीखेत से 5 किलोमीटर की दूरी पर विशाल ोल्फ का मैदान दर्शनीय है.

ाकृतिक जलस्रोत हैं जिन के ऊंचाई से गिरते रने मन को मोह लेते हैं. रानीखेत व अल्मोड़ा े यहां के लिए नियमित बस सेवाएं हैं. र्यटकों के लिए यहां कुमाऊं मंडल विकास नगम का गेस्ट हाउस व एडवेंचर टूरिज्म के ौकीनों के लिए खुले मैदान में टैंटों में रुकने ी व्यवस्था है.

द्वाराहाट : 6 हजार फुट की ऊंचाई पर ाषाणयुगीन भव्य मंदिरों के समूह से घिरा ाराहाट पुरातात्त्विक महत्त्व का स्थान है. ाराहाट की स्थापना के साथ ही यहां के मंदिरों का इतिहास भी जुड़ा है. कहा जाता है कि कार्तिकेयपुर और जोशीमठ के बाद कत्यूरों ने द्वाराहाट में राजधानी बना कर इसे द्वारिका का रूप देना चाहा था.

दूनागिरी: द्वाराहाट से 14 किलोमीटर की दूरी पर दूनागिरी में एक प्राचीन मंदिर है.

मानीला : समुद्रतल से 2,250 मीटर की ऊंचाई पर स्थित मानीला को प्रकृति प्रेमी पर्यटकों का स्वर्ग भी कहा जाता है. यहां पहुंच कर ऐसा लगता है कि पर्वतराज हिमालय अपनी बांहें फैला कर जैसे सैलानियों को बुला रहा हो. यह स्थान पशुवाही (मछलियों के शिकार) के लिए भी जाना जाता है.

मुख्य बाजार : खड़ी बाजार यहां का प्रमुख बाजार है. यह बाजार उत्तरी ढाल पर इस प्रकार बसा है कि इस के सब से नीचे के मकानों की समुद्रतल से ऊंचाई 5 हजार फुट है तथा दूसरे किनारे पर यह ऊंचाई 6 हजार फुट तक पहुंच गई है. अंगरेजों ने इस बाजार का नाम तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर लार्ड मेयो के नाम पर 'मेयो स्ट्रीट' रखा था किंतु अब यह खड़ी बाजार के नाम से जाना जाता है. इस मार्ग के दोनों ओर दुकानें हैं. ताजे रसीले फल, रिंगाल (केन) से बनी सजावटी वस्तुएं, लकड़ी की कलाकृतियां, ऊनी, सूती शालें आदि यहां से खरीदी जा सकती हैं. बैंक बिल्डिंग में मोनाल

रानीखेत : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल मार्ग : यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम है जो रानीखेत से 84 किलोमीटर की दूरी पर है.

सड़क मार्ग : रानीखेत दिल्ली, लखनऊ, देहरादून, बरेली, नैनीताल, हल्द्वानी सहित देश के कई प्रमुख नगरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है. काठगोदाम व हल्द्वानी से सवारी टैक्सी उपलब्ध है.

कहां ठहरें : यहां ठहरने की अच्छी व्यवस्था है. 'मून', फोन-220258; 'ऐवरेस्ट', फोन-220402; 'अलका', फोन-220269; 'मेघदूत', फोन-220475; 'शेवरान रोज माउंट', फोन-221391 आदि यहां के प्रमुख होटलों में हैं. इन के अलावा सरकारी विश्रामगृह, पर्यटक आवासगृह, तथा लौज भी उपलब्ध हैं.

कब जाएं : यहां घूमने के लिए सब से उत्तम अप्रैल से जून तक के महीने हैं. वैसे सर्दी के मौसम को छोड़ बाकी किसी भी मौसम में यहां आजा सकते हैं. गरमियों में हलके ऊनी कपड़ों की जरूरत पड़ती है. पर्यटन ब्यूरो रानीखेत फोन-220227 से विस्तृत जानकारी हासिल कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 05966

उलन्स तथा नरसिंह ग्राउंड के पास शाल फैक्टरी में स्वेटर, शाल, कंबल आदि की काफी वैरायटी उपलब्ध है. –मोहन सिंह रावत

कौसानी

हिमालय की पिंगनाथ पहाड़ियों में बसा कौसानी प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर उत्तरांचल के कुमाऊं मंडल का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है. समुद्रतल से 1,890 मीटर की ऊंचाई पर बसा कौसानी खूबसूरती और प्राकृतिक सौंदर्यता में बेजोड़ है.

कौसानी को भारत का स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है. यहां से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है जो अत्यंत मनोहारी लगता है. चौखंबा, नीलकंठ, नंदाघुंटी, त्रिशूल, मीराघुंटी, देवीदर्शन, नंदादेवी, नंदकोट और पंचाचूली की चोटियों पर पड़ती उगते सूरज की किरणें इन चोटियों को मनमोहक सौंदर्य प्रदान करती हैं.

कौसानी में साल भर पर्यटकों का तांता लगा रहता है. हिंदी के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत की जन्मस्थली भी यही है. यही नहीं वर्ष 1929 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी अपने प्रवास के दौरान यहां 12 दिन बिताए थे. सरला बेन द्वारा कौसानी में ही कस्तूरबा गांधी आश्रम की स्थापना की गई थी, जोकि दर्शनीय है. कवि सुमित्रानंदन पंत की याद में यहां एक संग्रहालय भी बनाया गया है.

कौसानी का मौसम वर्ष भर अच्छा रहता है तथा जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है. वैसे

हिमालय की पिंगनाथ पहाड़ियों में बसा कौसानी प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है.



सानी घूमने का सब से सुंदर मौसम मार्च से और सितंबर से नवंबर का है. गरमियों में का अधिकतम तापमान 26 डिगरी तथा र्दियों में 15 डिगरी सेल्सियस के आसपास ा है.

कौसानी सड़क मार्ग से देश के लगभग ी प्रमुख शहरों से जुड़ा है. दिल्ली से कौसानी लिए उत्तरांचल परिवहन निगम की बसें नंद विहार बस टर्मिनल रोजाना चलाई जाती हैं. र प्रदेश परिवहन के थ ही राजस्थान व याणा रोडवेज की बसें बराबर चलती हैं.

कौसानी का कटतम रेलवे स्टेशन ठगोदाम है जिस की 155 किलोमीटर है. र का नजदीकी हवाई डा 180 किलोमीटर पंतनगर है.

कौसानी जाते समय और देवदार के पेड़ों आच्छादित टेढ़ीमेढ़ी, ली सड़कों पर जब क पहाड़ों से गिरते तों और कलकल ी नदियों, बुरांस के से पटे जंगलों को देखते हुए गुजरते हैं तो उन का मन आनंदित हो उठता है.

दर्शनीय स्थल

पंत संग्रहालय : हिंदी साहित्य के स्तंभ सुमित्रानंदन पंत के पुश्तैनी मकान को ही संग्रहालय का रूप दिया गया है. यहां उन की दैनिक उपयोग की वस्तुओं और उन की पांडुलिपियों को रखा गया है. बस अड्डे से कुछ ही दूरी पर स्थित है यह संग्रहालय.

बैजनाथ : कौसानी से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बैजनाथ पुरातात्त्विक महत्त्व के मंदिरों की शृंखला है. 'कत्यूर घाटी' के नाम से मशहूर यह स्थान कौसानी से मात्र 15 किलोमीटर की दूरी पर है. समुद्रतल से 1,125 मीटर की ऊंचाई पर गोमती नदी के तट पर बने इन मंदिरों का निर्माण 12वीं व 13वीं शताब्दी में कत्यूर वंश के राजाओं द्वारा कराया गया था. मंदिर से नदी में उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं और यहीं पर एक बड़ा ताल भी है जिस में क्रीड़ारत मछलियां दर्शकों का मनमोह लेती हैं. हर्षवर्धन के समय में प्रसिद्ध चीनी यात्री

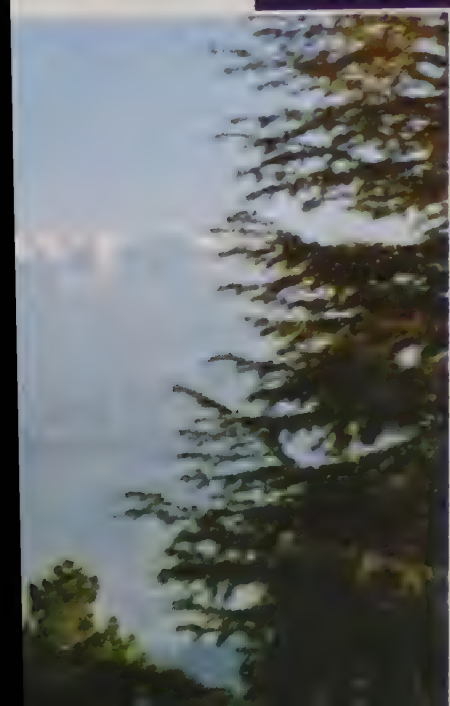
कौसानी : महत्त्वपूर्ण जानकारी

सड़क मार्ग : दिल्ली, बरेली, मुरादाबाद, रामपुर आदि नगरों के अलावा 142 किलोमीटर दूर काठगोदाम व हलद्वानी से सरकारी व स्थानीय बसों व टैक्सी सेवाओं के द्वारा भी कौसानी आजा सकते हैं. इन के अलावा निजी टुअर आपरेटर्स की अच्छी सेवाएं यहां के लिए उपलब्ध रहती हैं.

कहां ठहरें : यहां ठहरने के लिए है. छोटेबड़े होटल उपलब्ध हैं. प्रमुख होटलों में 'सुमन रायल रिसोर्ट', फोन-258328; 'सागर', फोन-245018; 'सन एंड स्नो इन', फोन-245010 के अलावा अन्य होटल 'हिमालयन', फोन-245039; 'पाइन व्यू', फोन-245051; 'प्रशांत', फोन-245037; 'उत्तराखंड', फोन-245012; 'शेवरान माउंटेन विला', फोन-258016 आदि हैं. इन के अलावा सरकारी विश्रामगृह में भी ठहरने की अच्छी व्यवस्था है.

कब जाएं : यहां घूमने का सब से अच्छा मौसम अप्रैल से जून तक का है. सर्दियों में भारी ऊनी कपड़े साथ ले जाने आवश्यक हैं.

एस.टी.डी. कोड : 05964



ह्वेनसांग यहां आया था जिस का वर्णन इतिहास में लिपिबद्ध है.

बागेश्वर : गोमती और सरयू नदी के तट पर बसे बागेश्वर की समुद्रतल से ऊंचाई 960 मीटर है. कौसानी से इस की दूरी 39 किलोमीटर है. बागेश्वर पिंडारी, कफनी तथा सुंदरडुंगा ग्लेशियर पर ट्रैकिंग के लिए जाने वालों का कैंप है. यहां हर साल जनवरी माह में उत्तरायणी पर मेले का आयोजन किया जाता है.

पिंडारी ग्लेशियर : यह स्थल ट्रैकिंग की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है. यहां चारों तरफ दूरदूर



बैजनाथ पुरातात्विक महत्त्व के मंदिरों की शृंखला है.

तक बर्फ ही बर्फ दिखाई देती है. कौसानी से पिंडारी ग्लेशियर की दूरी लगभग 125 किलोमीटर है. यहां पहले ट्रैकर्स को बड़ी कठिनाई होती थी लेकिन अब उत्तरांचल पर्यटन विभाग ने यहां गेस्ट हाउस तथा कई बंगले बनाए हैं, जहां रहने व खानेपीने की पूरी व्यवस्था है.

कफनी ग्लेशियर : इस ग्लेशियर की समुद्रतल से ऊंचाई 3,800 मीटर है. अत्यधिक ऊंचाई पर होने के कारण पर्यटक यहां से ट्रैकिंग के दौरान हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाओं का मनोहारी दृश्य देख सकते हैं.

सुंदरडुंगा ग्लेशियर : खाती गांव ट्रैकिंग के दौरान आखिरी पड़ाव है, जहां से एक रास्ता पिंडारी व कफनी तथा दूसरा सुंदरडुंगा ग्लेशियर को जाता है. ट्रैकिंग के लिए यह अति सुंदर स्थल है.

–हरीश

पिथौरागढ़

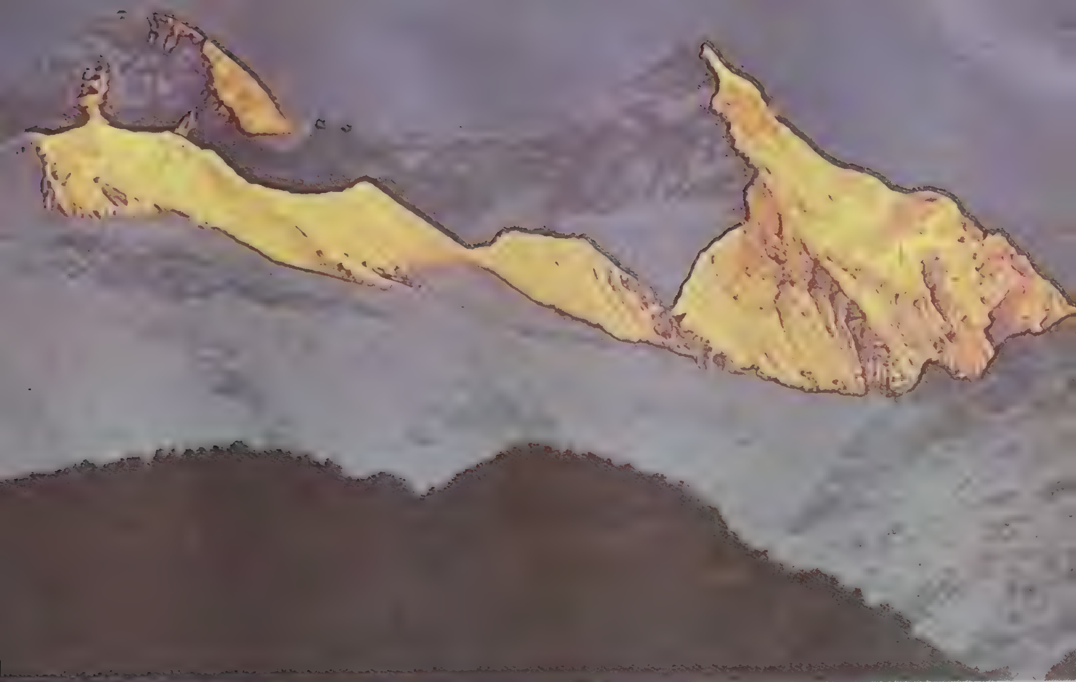
उत्तरांचल राज्य का पिथौरागढ़ जनपद अंतर्राष्ट्रीय सीमा की वजह से अपना विशेष महत्त्व रखता है. इस के उत्तर में चीन और पूर्व में नेपाल राज्य की सीमाएं हैं. यही कारण है कि इसे व्यापार केंद्र के रूप में भी देखा जा रहा है. अल्मोड़ा जिले से अलग कर 1962 में पिथौरागढ़ को जिला बनाया गया. यह कुमाऊं पर्वत शृंखला की 5 किलोमीटर लंबी और 2 किलोमीटर चौड़ी बेडौल घाटी में स्थित है, जिसे रंगीली सोर घाटी भी कहा जाता है.

नैनीताल की तराई को छूता पिथौरागढ़ हिमालय के जंगलों में रहने वाली जनजातियों के तीजत्योहारों, मसलन देवीधुरा, बीज, चौदा, दरमावेली और कनारछिपलाकोट आदि से बारहों मास रंगीन बना रहता है.

बर्फ से ढकी नंदा देवी (7,817 मीटर), हरदयोल (6,565 मीटर), बंबाधुरा (6,355 मीटर), नंदाघाट (6,861 मीटर) और पंचचूली (6,904 मीटर) की ऊंचीऊंची चोटियां पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं.

दर्शनीय स्थल

चंडाक : शहर से 7 किलोमीटर दूर 2 हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस पहाड़ी से हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां त्रिशूल, नंदादेवी, पंचचूली और नेपाल की माउंट एप्पी चोटियां अपने मनोहारी दृश्यों से पर्यटकों को रोमांच से भर देती हैं. कैलाश मानसरोवर के दर्शन के लिए दर्शनार्थी यहां से हो कर गुजरते हैं.



कोड़ी से हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों
नजदीक से देखने का मजा ही कुछ और है.

थलकेदार : पिथौरागढ़ से 6 किलोमीटर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर मनोहारी दृश्यों ला स्थान है.

चंपावत : पिथौरागढ़ से 76 किलोमीटर 1,615 मीटर की ऊंचाई पर स्थित चंपावत चीनकाल में चंद्र राजाओं की राजधानी रहा अब चंपावत पिथौरागढ़ की एक तहसील है स का कार्यालय एक किले में है.

देवीधुरा : लोहाघाट से 45 किलोमीटर दूर त देवीधुरा 2,500 मीटर की ऊंचाई पर है. बराही देवी के मंदिर में रक्षाबंधन के दिन ाल मेला लगता है.

चौकोड़ी : पिथौरागढ़ से 112 किलोमीटर दूरी पर चौकोड़ी अंगरेजों द्वारा बनाए गए के बागान के लिए प्रसिद्ध है. पहाड़ों के छाया कोहरा और पक्षियों की चहचहाहट ी को और भी रोमांचकारी बना देती है. कोड़ी से आप देख सकते हैं, बर्फ से ढकी ल, नंदादेवी, पंचचूली, नंदाकोट और खंबा की चित्ताकर्षक पहाड़ियां. यहां दय और सूर्यास्त का नजारा मनमोहक होता कुमाऊं मंडल की यात्रा पर जाने वालों को अवश्य जाना चाहिए.

धरमगढ़ : चौकोड़ी से 9 किलोमीटर दूर स्थित धरमगढ़ से हिमालय की पर्वत शृंखलाएं देखने योग्य हैं. सड़क मार्ग से भी सैलानी यहां तक पहुंच सकते हैं.

गंगोली हाट : पिथौरागढ़ से 77 किलोमीटर दूर स्थित गंगोली हाट में एक बहुत पुराना काली मंदिर है जहां नवरात्रों के दौरान मेला लगता है.

पाताल भुवनेश्वर : पिथौरागढ़ से 147 किलोमीटर और गंगोत्तरी हाट से 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ये गुफाएं सैलानियों के आकर्षण का केंद्र हैं. यहां धरती के अंदर दूर तक फैली प्राकृतिक गुफाएं हैं. यहां की एक संकरी गुफा में प्रवेश कर 84 सीढ़ियां उतरने के बाद विशाल सुरंग द्वारा गुफाओं में पहुंचा जा सकता है. इसे देखने के लिए प्रकाश की उत्तम व्यवस्था है.

बेरीनाग : पिथौरागढ़ से 102 किलोमीटर दूर बेरीनाग 1,720 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यहां से हिमालय पर्वत शृंखलाओं का दृश्य देखते ही बनता है.

श्यामला ताल : पिथौरागढ़ से 132 किलोमीटर दूर स्थित इस झील का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है. इस झील के किनारे स्वामी विवेकानंद आश्रम में सैलानी आग्रह कर के रुक भी सकते हैं.

मुनस्यारी : पिथौरागढ़ से 154 किलोमीटर दूर मिलम ग्लेशियर के रास्ते में

पिथौरागढ़ : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल मार्ग : पिथौरागढ़ का निकटतम रेलवे स्टेशन 150 किलोमीटर दूर टनकपुर है जो देश के प्रमुख नगरों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है. टनकपुर से बस अथवा टैक्सी द्वारा पिथौरागढ़ पहुंचा जा सकता है.

सड़क मार्ग : पिथौरागढ़ दिल्ली, लखनऊ, देहरादून, नैनीताल सहित देश के कई बड़े शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है. इन शहरों से यहां के लिए अच्छी बस व टैक्सी सेवा है. प्राइवेट वाहन आसानी से यहां के लिए मिल जाते हैं.

कहां ठहरें : यहां खाने व ठहरने की अच्छी व्यवस्था है. 'अलंकार,' फोन-22475; 'राजा,' फोन-22224; 'ज्योति,' फोन-22311; 'त्रिशूल,' फोन-22545; 'सम्राट' फोन-22480 आदि प्रमुख होटल हैं. इन के अलावा सरकारी गेस्ट हाउस, धर्मशालाएं तथा लौज भी यहां उपलब्ध हैं.

कब जाएं : पर्यटन की दृष्टि से यहां घूमने के लिए अप्रैल से नवंबर के बीच का समय ज्यादा उपयुक्त रहता है. अधिक जानकारी के लिए पर्यटन ब्यूरो, पिथौरागढ़ फोन-22575 से संपर्क कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 05964

मुनस्यारी पड़ता है. समुद्रतल से 7 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित मुनस्यारी से पंचचूली पर्वत शृंखला और गोरी नदी के दृश्य देखते ही बनते हैं. मिलम, नामिद और रालम हिमनद के पर्यटकों के लिए यह स्थान आधार शिविर है. अगस्त और सितंबर माह में यहां घूमने का अलग ही मजा है.

लोहाघाट : समुद्रतल से 1,706 मीटर की ऊंचाई पर स्थित लोहाघाट, पिथौरागढ़ से 62 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. टनकपुर के रास्ते में चंपावत जिला मुख्यालय से इस की दूरी 14 किलोमीटर है. लोहावती नदी के किनारे स्थित यह स्थान ऐतिहासिक व पुरातत्त्व विभाग के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है. 1841 में यहां घूमने पहुंचे बैरन ने कहा था, 'मुझे आश्चर्य है कि भारतवर्ष ने इसे अभी तक अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी नहीं बनाया.' बुरांस के फूलों की खुशबू से गरमियों के मौसम में यह पूरा इलाका सुगंधित हो उठता है.

गरमियों में यहां सूती और सर्दी में भारी ऊनी वस्त्र पहने जाते हैं. कुमाउंनी, हिंदी और अंगरेजी यहां बोली जाती है. स्थानीय यातायात के साधनों में जीप, टैक्सी यहां मुख्य रूप से सड़कों पर नजर आती हैं. यहां का सब से नजदीकी रेलवे स्टेशन टनकपुर है. यह 89 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है.

जौल जीबी : इस स्थान पर हर साल नवंबर माह में गोरी और काली नदियों के संगम पर विशाल मेले का आयोजन होता है जिस में नेपाल से भी लोग आते हैं. नेपाल सीमा से मात्र 16 किलोमीटर दूर धारचूला शहर की प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है. ठहरने के लिए यहां टूरिस्ट एवं पीडब्लूडी के रेस्ट हाउस हैं.

मिलम ग्लेशियर : पिथौरागढ़ से 208 किलोमीटर दूर स्थित इस ग्लेशियर में 54 किलोमीटर तक ट्रैकिंग की छूट मिलती है. इस रास्ते पर रेस्ट हाउस उपलब्ध हैं.

सावधानियां

जब भी आप यहां घूमने आएं, सावधानी से अपने हर सामान का खयाल रखें. अपने बच्चों को कहीं अकेले न जाने दें क्योंकि यह पहाड़ी और घाटियों से घिरा पर्यटन स्थल है, इसलिए आवश्यक है कि बच्चों के साथ बड़े भी सावधानी से घूमने जाएं. जहां तक लोगों पर भरोसे की बात है, दुकानदार हों या टैक्सी वाले, गाइड हों या कोई अजनबी, किसी पर भी भरोसा कर के आप जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएं. यहां हर कदम पर आप को ठगने, धोखा देने या चालाकी से बेवकूफ बनाने की कोशिश की जा सकती है.

–सुषमा

उत्तर प्रदेश

त्तर प्रदेश का इतिहास अत्यंत प्राचीन है. समयसमय पर इसे अलगअलग नामों से जाना जाता रहा है. वैदिक काल में इसे ब्रह्मर्षि या मध्य प्रदेश के नाम से जाना जाता था.

अनेक राजवंशों ने इस क्षेत्र पर राज्य किया. मुगल शासकों ने इस राज्य को दिल्ली तनत का हिस्सा बनाया.

1757 में अंगरेजों ने मुगलों से इस राज्य को छीन कर अपने अधीन कर लिया और गरा और अवध प्रांत को मिला कर यूनाइटेड प्राविंस नाम दिया. स्वतंत्रता प्राप्ति के द 1950 में इस का नाम उत्तर प्रदेश रखा गया है.

उत्तर प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से देश का सब से बड़ा राज्य है तथा क्षेत्रफल की ट से इस का चौथा स्थान है.

2,40,928 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला उत्तर प्रदेश हालांकि कृषि आधारित श है लेकिन यहां स्थित उद्योगधंधों के कारण औद्योगिक दृष्टि से भी इस का विशेष त्व है.

उत्तर प्रदेश के अनेक शहर जैसे लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा अपनी हासिक पृष्ठभूमि व इमारतों के कारण इतिहासकारों और पर्यटकों के लिए आकर्षण केंद्र रहे हैं. आगरा का ताजमहल, जिसे प्रेम का प्रतीक कहा जाता है, अपनी भव्यता वजह से देशी व विदेशी पर्यटकों का आकर्षण रहा है.

लखनऊ

पने के लिहाज से उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ बहुत ही साफसुथरी और ासिक जगह है. नवाबी हुकूमत और जों के शासनकाल में बनी इमारतें कला का बेजोड़ नमूना हैं. 1775 से 1856 लखनऊ अवध राज्य की राजधानी था. ी काल में अवध की अदब और तहजीब विकास हुआ. लखनऊ की रंगीनियों और शौकत के किस्से भी खूब चटखारे ले कर और सुनाए जाते हैं.

लखनऊ का इतिहास बहुत पुराना है. के साथसाथ इस का नाम और पहचान भी रही है. पहले इस का नाम लक्ष्मणपुरी था नखनपुरी और बाद में लखनऊ हो गया.

जब देश आजाद हुआ तो लखनऊ को प्रदेश की राजधानी होने का दरजा मिला. लखनऊ और आज के लखनऊ दोनों के बहुत फासला हो गया है. इस के बाद भी इस ने अपनी पुरानी नजाकत और नफासत को बहुत संभाल कर रखा है. आज लखनऊ मेट्रो सिटी के रूप में आगे बढ़ रहा है. यह शहर अब सियासी तेजी और फैशन के बदलते अंदाज के लिए खूब जानापहचाना जाता है. लखनऊ की शाम का जादू 'शामेअवध' के नाम से आज भी बरकरार है.

दर्शनीय स्थल

बड़ा इमामबाड़ा (भूलभुलैया) : यह लखनऊ की सब से मशहूर इमारत है. इसीलिए यहां जो घूमने आता है वह सब से पहले इसे देखना चाहता है. चारबाग रेलवे स्टेशन से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर बना इमामबाड़ा वास्तुकला का अद्भुत नमूना है. 1784 में इस को नवाब आसिफुद्दौला ने बनवाया था. इस इमारत का पहला अजूबा 49.4 मीटर लंबा और 16.2 मीटर चौड़ा एक हाल है.

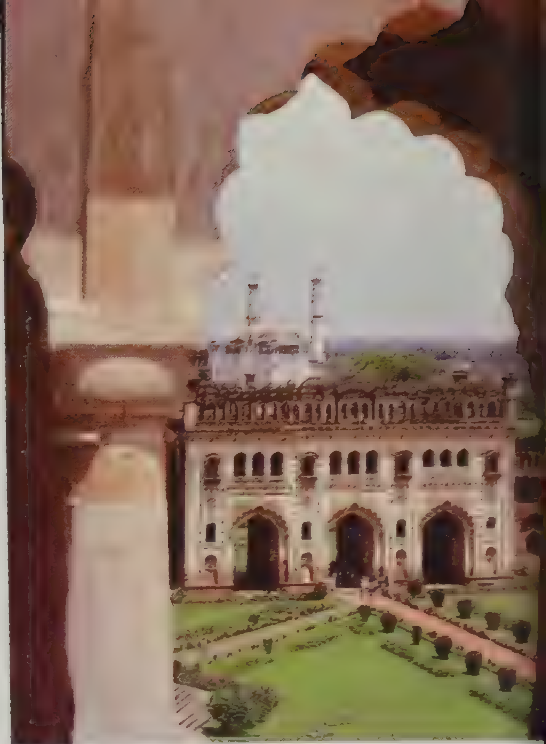
इस में किसी प्रकार का कोई खंभा नहीं है.

इस इमारत का दूसरा अजूबा 409 गलियारे हैं जो एक जैसे दिखते हैं और समान लंबाई के हैं.

छोटा इमामबाड़ा : बड़े इमामबाड़े से 1 किलोमीटर आगे छोटा इमामबाड़ा बना हुआ है. मुगलस्थापत्य कला के इस बेजोड़ नमूने का निर्माण अवध के तीसरे नवाब मोहम्मद अली शाह ने 1840 में कराया था.

रूमी दरवाजा : नवाब आसिफुद्दौला ने बड़े इमामबाड़े के साथ ही रूमी दरवाजे का निर्माण करवाया था. इस दरवाजे की ऊंचाई 60 फुट है जिस में कहीं भी लकड़ी और लोहे का इस्तेमाल नहीं हुआ है.

रेजीडेंसी : इस का निर्माण अवध के नवाब आसिफुद्दौला ने 1780 में शुरू कराया था. 20 साल में यह बन कर तैयार हुआ था. यह इमारत हजरतगंज बाजार से 3 किलोमीटर दूर है. 1857 की लड़ाई में अंगरेजों ने इस पर अपना कब्जा कर के इस को अपने रहने की जगह बना लिया था. इस कारण इस का नाम रेजीडेंसी पड़ गया. इस की दीवारों पर आज भी आजादी की लड़ाई के निशान मौजूद हैं.



वास्तुकला का अद्भुत नमूना बड़ा इमामबाड़ा देखे बिना लखनऊ का पर्यटन अधूरा ही रहता है.

लखनऊ : महत्त्वपूर्ण जानकारियां

वायु मार्ग : देश के प्रमुख नगरों से लखनऊ के लिए सरकारी और निजी दोनों तरह की एअरलाइंस की सुविधा है.

रेल मार्ग : लखनऊ के लिए देश के सभी प्रमुख शहरों से रेलगाड़ियां आती हैं. रेल द्वारा आसानी से लखनऊ पहुंचा जा सकता है.

सड़क मार्ग : दिल्ली, जयपुर, भोपाल सहित देश के प्रमुख शहरों से यहां आने के लिए बस सेवाएं भी हैं. लखनऊ में चारबाग और कैसरबाग में बस अड्डे हैं.

कहां ठहरें : लखनऊ में हर किस्म के होटल हैं जो सस्ते और महंगे दोनों दरजों की सेवाएं देते हैं. प्रमुख होटलों में 'होटल ताज', फोन-2393939; 'क्लार्क अवध', फोन-2216500-01; 'होटल पार्क इन', फोन-2282201; 'होटल मेरा मन', फोन-2638181-84; 'होटल दीप', फोन-2636441-47; 'होटल गोमती', फोन-2212664; 'होटल जेमिनी', फोन-2272008; 'मोहन होटल', फोन-2635798; 'शिवगढ़ रिसोर्ट', फोन-3099274; 'होटल आरिफ', फोन-2211313-14; 'आनंदी वाटर पार्क', फोन-2818540. इस के अलावा गेस्ट हाउस और धर्मशाला भी हैं. इन में छेदीलाल, शीतल, भोलानाथ और गंगा प्रसाद खास हैं.

कब जाएं : आमतौर पर लखनऊ का मौसम हमेशा अच्छा रहता है. सितंबर से मार्च के बीच का समय सब से अच्छा रहता है.

एस.टी.डी. कोड : 0522

शहीद स्मारक : रेजीडेंसी के करीब ही ोमती नदी के किनारे पर यह स्मारक स्थित है. 857 में शहीद हुए वीरों की याद में इस को नवाया गया है. यहां नौका विहार का मजा भी लया जा सकता है.

लखनऊ को बागों और पार्कों का शहर ी कहा जाता है. यहां पर कई अच्छे पार्क बने ए हैं. सब से अच्छा बोटेनिकल गार्डन पार्क है. हां पर गुलाब सहित तमाम दूसरे पौधों की कई किस्में देखने को मिल जाती हैं. इस के अलावा ाथी पार्क, गौतम बुद्ध पार्क, नदिया किनारे ार्क, पिकनिक स्पाट, लोहिया पार्क और ा. अंबेडकर पार्क भी घूमने के लिहाज से च्छी जगहें हैं.

इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक नगर इलाहाबाद गंगा और यमुना नदी के किनारे पर बसा आ है. देश को 3 प्रधानमंत्री देने वाले इस हर से गांधीनेहरू परिवार का करीबी रिश्ता ा है.

इलाहाबाद एक प्राचीन शहर है. इस का क्र मशहूर चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा तांत में भी मिलता है. इसे प्रयाग के नाम से ाना जाता था.

यह शहर अकबर के शासन काल में तब काश में आया जब उस का बेटा सलीम हांगीर) अकबर के खिलाफ विद्रोह कर के ां आ बसा. यह शहर शाह लम और क्लाइव के मध्य अगस्त, 1765 को हुई ध के लिए भी जाना जाता स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान शेखर आजाद यहीं ीद हुए थे.

उत्तर प्रदेश के गअलग जिलों से ही नहीं क देश के अन्य हिस्सों भी छात्र पढ़ने के वास्ते हाबाद आते हैं. यहां पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अलावा मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालिज, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ रूरल टेक्नोलाजी और राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के नामी संस्थान हैं.

दर्शनीय स्थल

अकबर का किला : इलाहाबाद में कई ऐतिहासिक इमारतें भी हैं. इन में से कुछ का निर्माण मुगल काल में, तो कुछ का ब्रिटिश शासनकाल में हुआ. संगम तट पर बना अकबर का किला ऐतिहासिक इमारत है.

खुसरो बाग : यह बाग इलाहाबाद रेलवे स्टेशन से आधा किलोमीटर की दूरी पर बड़ेबड़े पत्थरों की चारदीवारी से घिरा मुगल काल की अद्भुत कला का नमूना है. लकड़ी के विशाल दरवाजे वाला खुसरो बाग जहांगीर के पुत्र खुसरो ने बनवाया था.

आजाद पार्क : रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस पार्क को अलफ्रेड पार्क के नाम से भी जाना जाता है. फूलों से सजा यह पार्क देखने लायक है. पार्क में लगी मखमली घास पर बैठना आरामदायक लगता है. इस पार्क का ऐतिहासिक महत्त्व है. आजादी की लड़ाई के नायक शहीद चंद्रशेखर आजाद को जब ब्रिटिश सेना ने घेर लिया तो उन्होंने इसी पार्क में अपने को गोली मार ली थी. यहां उन का स्मारक बना हुआ है.

आनंद भवन : इलाहाबाद की बहुत



ाबाद यूनिवर्सिटी का कालिज शिक्षा के क्षेत्र लग पहचान रखता है.

इलाहाबाद : महत्त्वपूर्ण जानकारी

कैसे पहुंचें : इलाहाबाद देश के प्रमुख नगरों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है. दिल्ली सहित सभी सीमावर्ती राज्यों से उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की बसों के अलावा प्राइवेट बसों व टैक्सियों से भी पहुंचा जा सकता है. यह शहर राष्ट्रीय राजमार्ग 2 एवं 27 पर स्थित है. अतः यहां आसानी से आयाजाया जा सकता है.

कहां ठहरें : यहां अच्छे होटल व धर्मशालाएं हैं. प्रमुख होटलों में 'एन.सी. कांटीनेंटल', फोन-2652058; 'यात्रिक', फोन-2614092; 'इलाहाबाद रीजेंसी', फोन-2601519; 'हर्ष', फोन-2622197; 'सूर्या', फोन-2402841; 'संतोष पैलेस', फोन-2654774; 'त्रिवेणी', फोन-2656326; 'प्रयाग', फोन-2656329; 'होटल कान्हाश्याम' के अतिरिक्त पर्यटक आवास गृह, 35 महात्मा गांधी मार्ग से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

कब जाएं : इलाहाबाद मौसम की दृष्टि से विविधता वाला शहर है. यहां गरमी एवं सर्दी दोनों ही खूब पड़ती है. दिसंबरजनवरी में जाएं तो गरम कपड़ों से लैस हो कर जाएं. माघ मेला भी इसी समय प्रतिवर्ष लगता है. मईजून में भीषण गरमी पड़ती है इन महीनों में न ही जाएं तो बेहतर होगा क्योंकि घूमने का मजा किरकिरा हो सकता है.

एस.टी.डी. कोड : **0532**

जानीमानी इमारत है आनंद भवन. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का कभी यह पैतृक आवास था. इसे अब एक संग्रहालय का रूप दे दिया गया है. इस में एक भव्य तारामंडल बना हुआ है.

मिंटो पार्क : यमुना के किनारे जहां लार्ड मिंटो ने 1857 के गदर की समाप्ति के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त होने और महारानी विक्टोरिया के राज्य की घोषणा की थी वहीं इस घटना की याद में एक स्तंभ और बाग का निर्माण किया गया था. अब यह पार्क मालवीय के नाम से जाना जाता है.

हिंदी साहित्य पुस्तकालय : इस पुस्तकालय की स्थापना पुरुषोत्तम दास टंडन ने की थी. अब यहां एक सुंदर सभागार व राजर्षि मंडप है जहां समयसमय पर सम्मेलन हुआ करता है. रेलवे स्टेशन से इस की दूरी मात्र 2 किलोमीटर है.

इलाहाबाद आने वाले ज्यादातर लोग संगम तट पर स्नान करने के लिए आते हैं. इस स्नान को धर्म की मान्यता मिलने के कारण पंडेपुजारियों की यहां पर चांदी रहती है. यहां हर 12 साल पर पूर्णकुंभ और 6 साल पर अर्धकुंभ का आयोजन होता है. धार्मिक अंधविश्वास का यह मेला साधुसंतों और पंडों की कमाई का जरिया है.

वाराणसी

वाराणसी शहर गंगा नदी के किनारे पर बसा है. इस शहर के बारे में मार्क ट्वेन ने कहा था कि बनारस इतिहास, परंपराओं और मिथकों से भी पुराना है. वाराणसी में गंगा

गंगा नदी के किनारे बना रामनगर किला काशी नरेश का पुश्तैनी निवास स्थान है जो पर्यटकों के आकर्षण का स्थल है.



वाराणसी : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल मार्ग : वाराणसी शहर देश के प्रमुख शहरों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

बस मार्ग : यहां पहुंचने के लिए उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की अच्छी बस सेवा मुख शहरों से हर समय उपलब्ध रहती है.

वायुसेवा : वाराणसी के लिए दिल्ली, मुंबई, लखनऊ तथा काठमांडू से इंडियन अरलाइंस की सीधी उड़ानें उपलब्ध हैं. मुंबई, दिल्ली और लखनऊ से सहारा अरलाइंस की सेवा भी उपलब्ध है. निकटतम हवाई अड्डा बाबतपुर है जो यहां से 2 किलोमीटर दूर स्थित है.

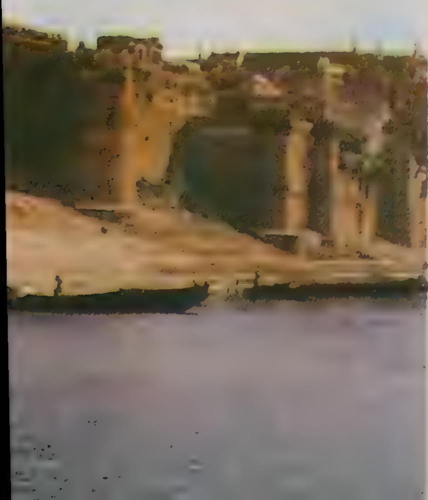
कहां ठहरें : वाराणसी शहर में पर्यटकों के ठहरने हेतु कई उत्तम व मध्यम दर्जे हे होटल उपलब्ध हैं. प्रमुख होटलों में 'द क्लार्क', फोन-2348501; 'ताज गैंगेज', फोन-2345100; 'वाराणसी अशोक', फोन-2346020; 'डायमंड', फोन-310696; 'गैंगेज व्यू', फोन-2313218; 'टैंपल आन गैंगेज', फोन-2368640; दीवान', फोन-2343856; 'डी पैरिस', 'पल्लवी इंटरनेशनल', 'हिंदुस्तान टरनेशनल', 'इंडिया', 'मालती' आदि हैं.

कब जाएं : यहां का मौसम विविधता भरा है. गरमियों में अधिक गरमी एवं सर्दियों अधिक सर्दी पड़ती है. यहां पर वैसे तो कभी भी जाया जा सकता है परंतु सब से अच्छा सम सितंबर से मार्च तक है. गरमियों में न ही जाएं तो बेहतर है.

विस्तृत जानकारी पर्यटक सूचना केंद्र कैंट एवं रेलवे स्टेशन से प्राप्त की जा कती है.

एस.टी.डी. कोड : 0542

के किनारे पर इतने घाट बने हुए हैं कि को 'घाटों का शहर' भी कहा जाता है. के समय सूर्य की किरणें जब नदी के पर पड़ती हैं तो इन घाटों की शोभा देखते नती है. वाराणसी की सुबह बहुत मशहूर सीलिए उत्तर प्रदेश में 'शाम-ए-अवध' ाथसाथ 'सुबहे बनारस' भी मशहूर है.



अर्द्धचंद्राकार गंगा के किनारे लगभग 80 घाट बने हुए हैं.

यह शहर वरुणा और अस्सी नदियों के बीच बसा हुआ है. इसलिए इस को 'वाराणसेय' कहा जाता था जो बाद में वाराणसी हो गया. अस्सी और वरुणा नदियां तो अब नहीं दिखतीं लेकिन इन की यादें अब भी यहां रहने वालों के जेहन में बसी हुई हैं.

वाराणसी भी कला, संस्कृति और शिक्षा का केंद्र है. संगीत इस शहर को विरासत की तरह मिला हुआ है. शास्त्रीय संगीत के कई बड़े कलाकार यहीं के रहने वाले हैं. काशी हिंदू विश्वविद्यालय और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए यहां विदेशों से भी छात्र आते हैं.

वाराणसी में तैयार होने वाली साड़ियों को बनारसी साड़ी के नाम से ही जाना जाता है. वाराणसी के पास बसे भदोही शहर का कालीन उद्योग भी बहुत मशहूर है. धार्मिक खासियत वाले वाराणसी शहर में पंडेपुजारियों की अराजकता भी



वाराणसी के घाट : सुबह के समय इन घाटों की शोभा देखते ही बनती है.

बहुत है. यह लोग यहां आने वाले सभी पर्यटकों को धार्मिक अनुष्ठान में फंसाने की कोशिश करते हैं. इन से सावधान रहना चाहिए.

दर्शनीय स्थल

काशी हिंदू विश्वविद्यालय : पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में प्रत्येक विषय की उच्च स्तरीय पढ़ाई होती है. यह एशिया का सब से अधिक आवासीय विश्वविद्यालय है. यहां का मेडिकल कालिज भी चिकित्सा के लिए है. भारत कला भवन इस विश्वविद्यालय की शोभा है.

काशी विश्वनाथ मंदिर : दशाश्वमेध घाट के पास यह मंदिर बनवाया गया है. यहां तक पहुंचने के लिए संकरी गलियों से हो कर गुजरना पड़ता है. कहा जाता है कि 17वीं शताब्दी में मुगल बादशाह औरंगजेब ने इस को नष्ट करा दिया था. 1717 में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने इस को फिर से बनवाया था. 1889 में महाराजा रणजीत सिंह ने 820 किलोग्राम सोने की परत मंदिर के ऊपरी गुंबद में लगवाई थी. इस मंदिर में गंदगी बहुत रहती है. संकरी गलियों का लाभ उठा कर चोरउचक्के लोगों का सामान उठा लेते हैं. घूमने आए लोगों को इस बात से सावधान रहना चाहिए.

भारत माता मंदिर : उत्कृष्ट कला का एक नमूना यह मंदिर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के परिसर में बना हुआ है जिसे राष्ट्रभक्त बाबू शिव प्रसाद गुप्त ने बनवाया था. इस मंदिर में संगमरमर से तराश कर अनेकता में एकता के प्रतीक अखंड भारत का मानचित्र बनाया गया है. पर्यटक इस को जरूर देखते हैं.

राम नगर किला : काशी हिंदू विश्वविद्यालय से 2 किलोमीटर दूर गंगा नदी के उस पार स्थित रामनगर किला काशी नरेश का पुश्तैनी निवास है.

सारनाथ : वाराणसी से 10 किलोमीटर दूर बसा हुआ सारनाथ सम्राट अशोक के स्तूपों वाला शहर है. बुद्ध द्वारा यहां सब से पहले अपने धर्म का उपदेश दिए जाने के कारण यह बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए विशेष महत्त्व रखता है. इसी स्तूप पर बने शेरों को भारत सरकार के राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न के रूप में लिया गया है.

झांसी

आजादी की पहली लड़ाई में झांसी राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र था. यही एकमात्र ऐसी रियासत थी जिस ने अंगरेजों की विलय नीति का घोर विरोध किया था. यहां की रानी लक्ष्मीबाई ने अंगरेजों के खिलाफ कांटे की लड़ाई लड़ी. झांसी पर अंगरेजों का कब्जा होते ही वह कालपी होते हुए ग्वालियर चली गई और 17 जून, 1858 को अंगरेजों के साथ लड़ते हुए युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुई.

'बुंदेले हरबोलों के मुंह हम ने सुनी
थी, खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी
रानी थी', झांसी शहर को आजादी की
ा रानी लक्ष्मीबाई के नाम से जाना जाता
र प्रदेश का बच्चाबच्चा झांसी वाली रानी
कविता को जानतासमझता है.

झांसी शहर 20.7 किलोमीटर क्षेत्र में
हुआ है. ग्वालियर हवाई अड्डा यहां से
लोमीटर दूर है. यह शहर मुंबईदिल्ली
पर पड़ता है.

यहां के लिए खजुराहो, ग्वालियर,
र, महोबा, देवगढ़, ओरछा, लखनऊ,



किले में रखी कड़क बिजली तोप आज
रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का बखान
जर आती है.

, दतिया, शिवपुरी, फतेहपुर, चित्रकूट
बलपुर से बस सेवा भी उपलब्ध है.

ीय स्थल

कला : रानी लक्ष्मीबाई का बंगरा की
ों पर बना यह किला 1610 में राजा
जूदेव द्वारा बनवाया गया था. यह
आज भी शान से खड़ा है और अपनी
के किस्से सुनाता दिखता है. 18वीं
में झांसी और उस के किले पर मराठों
धकार हो गया था. मराठों के अंतिम
ांगाधर राव थे जिन की मृत्यु 1853 में
हो गई थी. इस के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने शासन की बागडोर संभाल ली थी.

झांसी का किला अपनी अद्भुत वास्तुशिल्प के लिए देखने लायक है. इस किले में अष्टधातु की बनी 'कडक बिजली' और 'भवानी शंकर' नामक 2 तोपें आज भी रखी हुई हैं. ये तोपें महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता का आज भी बखान करती नजर आती हैं.

रानी महल : पहले इस इमारत को बाई साहब की हवेली के नाम से जाना जाता था. यह महल शहर के बीच में बना हुआ है. इस का निर्माण रघुनाथ राव और महारानी लक्ष्मीबाई के समय पर हुआ था. इसी वजह से इस को बाद में रानी महल कहा जाने लगा. महल में रंगबिरंगी चित्रकारी देखने को मिलती है. इसे देख कर पहले की शिल्पकला के बारे में पता चलता है.

किले में बड़ीबड़ी दालानें बनी हैं. इन में पत्थर की कारीगरी की गई है. दीवारों पर बनी मेहराबों में भी प्राचीन कला का नमूना देखने को मिलता है. इतना पुराना होने के बाद भी आज यह महल पहले जैसा नया दिखता है. इस किले का आजादी की लड़ाई से पुराना रिश्ता है. इसी महल में रह कर महारानी लक्ष्मीबाई ने अंगरेजों के खिलाफ लोहा लेने की योजना बनाई थी. अब इस रानी महल में पुरातात्त्विक विभाग का संग्रहालय है जिस में बुंदेलखंड के चांदपुर और दुधई से जमा की गई प्राचीन मूर्तियां रखी गई हैं.

–शैलेंद्र सिंह

आगरा

इतिहास ने आगरा को अमूल्य उपहारों से सजाने और महिमा मंडित करने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ी है. इसी के चलते आज इस पुरातन शहर का वर्तमान इतना घिनौना है कि अगर पर्यटक के लिए यहां के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों को देखने की मजबूरी न हो तो शायद ही कोई पर्यटक यहां अपना रुख करने की हिम्मत जुटा पाए.

आगरा का यह घिनौना रूप उस पर भीषण गंदगी, यातायात की कुव्यवस्था, पर्यटकों की तरहतरह से लूटखसोट और उन के शोषण में देखी जा सकती है. पर्यटकों के शोषण का सब से गंदा रूप तो यह है कि यहां केवल टैक्सी वाले, हाकर, दुकानदार, पर्यटक गाइड, होटल वाले ही नहीं बल्कि सरकारी कर्मचारी, पुलिस, सुरक्षाकर्मी आदि भी उन की जेबों पर डाका डालते हैं.

दर्शनीय स्थल

ताजमहल : अद्‌भुत शिल्प सौंदर्य का सरताज 'ताजमहल' सदियों से कवियों की प्रेरणा, इतिहासकारों की जिज्ञासा और सैलानियों के दिलों को गुदगुदाने वाले विस्मयकारी आकर्षण का प्रतीक रहा है. शायद ही ऐसा कोई पर्यटन प्रेमी हो जिस का मन 'ताजमहल' देखने के नाम पर आनंदविभोर न होने लगता हो. विदेशी सैलानियों के लिए तो ताजमहल देखे बिना केवल भारत ही नहीं बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा ही अधूरी मानी जाती है.

पर्यटक जब ताजमहल के बाहरी परकोटे को पार कर मुख्य इमारत में प्रवेश करता है तो अपने सामने शिल्प सौंदर्य के इस अद्‌भुत कारनामे को देख कर तरोताजा हो उठता है.

ताजमहल के मुख्य दरवाजे और इमारत के बीच में खासा फासला है किंतु दरवाजे से ताजमहल का पूरा फ्रेम नजर आता है. अतः यहीं खड़े हो कर प्रेम की इस बोलती इमारत को देर तक देखना अकसर पर्यटकों को बहुत अच्छा लगता है. यहां से यही सोच कर आगे बढ़ना पड़ता है कि आखिर कब तक खड़े रहा जाए. आगे बढ़ते हुए दर्शक एक बात खासतौर से देख सकते हैं कि वे जैसेजैसे ताजमहल की ओर बढ़ते हैं वैसेवैसे ताजमहल उन्हें अपनी ओर बढ़ता सा नजर आता है.

विशाल बगीचे के बीच चलता हुआ दर्शक एक चबूतरे पर पहुंच जाता है. पानी के

आगरा : महत्त्वपूर्ण जानकारी

रेल सेवा : आगरा दिल्लीचेन्नई रेल मार्ग पर स्थित होने के कारण देश के सभी प्रमुख नगरों से सीधी रेल सेवा द्वारा जुड़ा है.

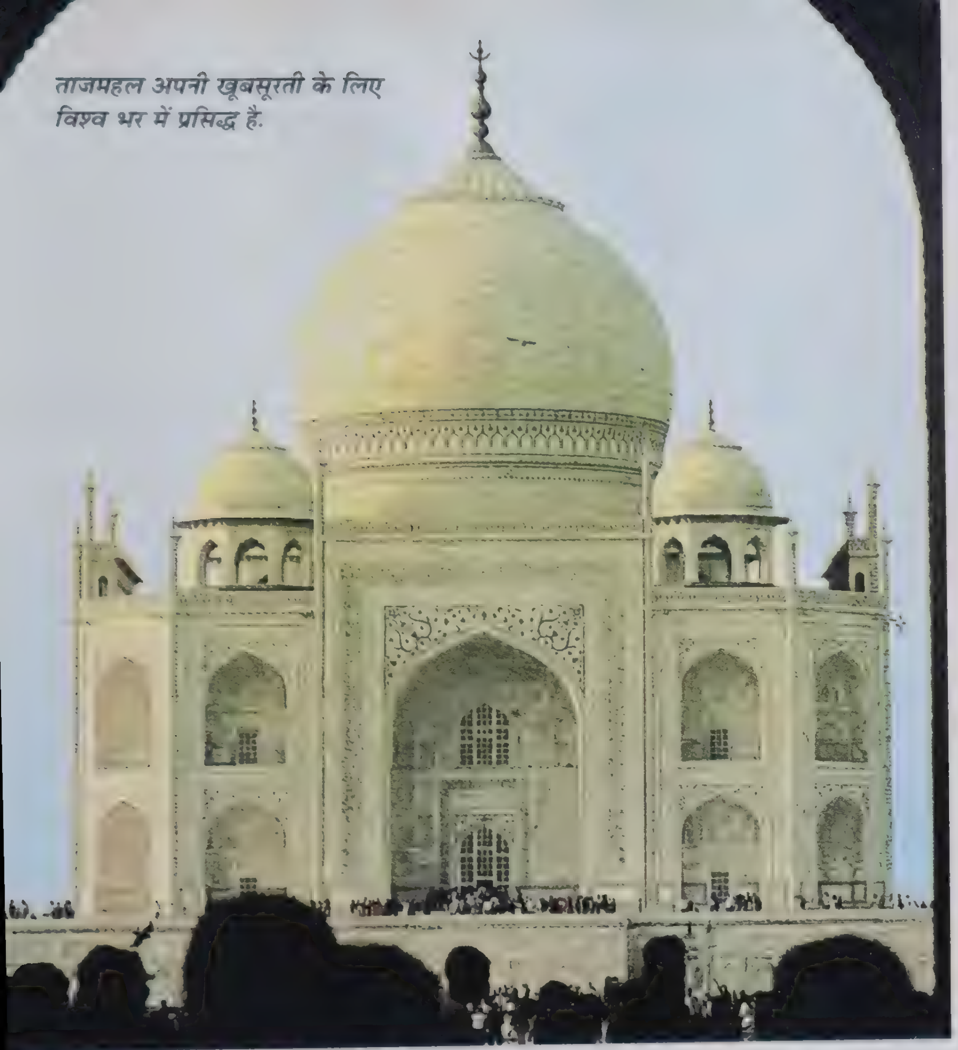
बस सेवा : राष्ट्रीय राजमार्ग 2, 3 तथा 11 पर स्थित होने के कारण आगरा देश के लगभग सभी नगरों से सीधे जुड़ा है. विभिन्न पर्यटन स्थलों जैसे जयपुर, दिल्ली, खजुराहो, वाराणसी, लखनऊ, नैनीताल आदि से भी यहां के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है.

वायु सेवा : यहां के लिए देश के कई शहरों से सीधी विमान सेवा उपलब्ध है.

कहां ठहरें : यहां ठहरने के लिए 'होटल शेरेटन', 'ताज व्यू', 'क्लार्कशीराज', 'ट्राईडेंड', 'अतिथि', सनराइज', 'अमर' आदि होटलों के अलावा 'प्रताप चंद्र जैन', 'अग्रवाल पंचायती धर्मशाला', 'यूथ होस्टल', 'रेलवे विश्राम गृह', 'पी.डब्लू.डी. गेस्ट हाउस' आदि में भी पर्यटक ठहर सकते हैं.

कब जाएं : आगरा किसी भी मौसम में जाया जा सकता है परंतु सब से अच्छा सितंबर से अप्रैल के मध्य का समय है.

एस.टी.डी. कोड : 0562



ताजमहल अपनी खूबसूरती के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है.

क चारों ओर बने इस चबूतरे को तब जिस रण से बनवाया गया हो लेकिन आज इस प्रयोग खासतौर पर फोटो खिंचवाने के ी किया जाता है.

एक सफेद संगमरमर का विशालकाय ा है जिस पर ताजमहल की मुख्य स्थित है. इस चबूतरे पर खड़े हो कर हल के श्वेत पत्थरों पर रंगीन ारी को देखा जा सकता है. ताजमहल दीवारों पर कहीं उभरी हुई और कहीं पच्चीकारी को देख कर दर्शकों को गी उन कारीगरों की याद जरूर आती होंने इन पत्थरों पर अपनी कला की ाप छोड़ी है. मुख्य इमारत के इस द्वार ान की आयतें इतनी कलाकारी के त्कीर्ण हैं कि देखने वाले दांतों तले दबा जाते हैं.

ालकिला : ताजमहल से 3 किलोमीटर की दूरी पर लाल पत्थरों से बना यह किला ताज से 50 साल पहले ही अस्तित्व में आ चुका था. 3 परकोटों और खाइयों से घिरा यह विशाल किला मुगलिया सल्तनत की बुलंदियों की दास्तान खुद-ब-खुद बयान कर देता है.

लालकिले का निर्माण मुगल बादशाह अकबर ने सन 1565 में शुरू करवाया था किंतु इस का निर्माण एक बार में न हो कर किश्तों में हुआ.

लालकिले में कई भव्य इमारतें हैं जिन में दीवानेआम, दीवानेखास, रंगमहल, नूरजहां महल, शीशमहल, जहांगीर महल आदि खासतौर पर देखने योग्य हैं.

दीवानेआम और उस के सामने का दालान भी कम आकर्षित नहीं करता है. दीवानेखास से निकल कर दीवानेआम के विशालकाय गलियारे और मैदान में आ कर उस समय के आम दरबार लगने के दृश्य को मन में तरोताजा किया जा



सिकंदरा में अकबर का मकबरा जो राजपूताना व फारसी शैली का अद्भुत नमूना है.

सकता है. इसी तरह शीशमहल और उस के निकट के हमाम, मुगल काल की बेगमों के वैभव और रोमांस से भरे जीवन की झलक दिखा कर मन को गुदगुदा देते हैं.

एतमादुद्दौला : यमुना नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित एतमादुद्दौला का मकबरा भी कम दर्शनीय नहीं है. सफेद पत्थर की भव्य कारीगरी को अपने में समेटे यह इमारत ताजमहल की प्रेरणा भी रही थी. किंतु यह दुर्भाग्य ही है कि इतनी भव्य इमारत की आगरा में लगातार उपेक्षा हो रही है. अधिकांश पर्यटक इस भव्य इमारत को बिना देखे ही आगरा से चले जाते हैं.

रामबाग, आरामबाग : आगरा में मुगलकाल की यह सब से पहली निशानी है. इसे बाबर ने यहां की प्रचंड लू और गरमी से बचने के लिए बनवाया था जो बाद में रामबाग के नाम से जाना जाने लगा.

सिकंदरा : आगरा में यमुना के किनारों से दूर छिटकी हुई भी कुछ इमारतें हैं जिन्हें देखे बिना आगरा का पर्यटन अधूरा ही लगता है. इन इमारतों में एक है मुगल सम्राट अकबर का मकबरा सिकंदरा, जिस का निर्माण राजपूताना व फारसी शैली में हुआ है.

फतेहपुरसीकरी

पर्यटन में थोड़ी भी रुचि रखने वाले किसी भी पर्यटक का मन आगरा या मथुरा घूमने के बाद फतेहपुरसीकरी घूमने के लिए कुलांचें न मारने लगे, ऐसा संभव ही नहीं है.

फतेहपुरसीकरी आगरा से लगभग 39 किलोमीटर पश्चिम में राजस्थान की सीमा से सटा एक पर्यटन कसबा है जिस का निर्माण 1564 में मुगल बादशाह अकबर ने अपनी राजधानी के रूप में शुरू कराया था. बाद में अकबर 1585 तक यहां से राजधानी के रूप में विशाल भारत का शासन भी चलाता रहा किंतु पानी की बेहद कमी तथा अन्य सामरिक कठिनाइयों की वजह से उसे इस शहर को छोड़ कर अपनी राजधानी आगरा ले जाने को विवश होना पड़ा.

दर्शनीय स्थल

फतेहपुरसीकरी पूरी तरह एक किलाबंद नगर है जिस में लगभग 90-95 दर्शनीय स्थल हैं किंतु इन में से जो स्थल विशेष रूप से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं वे निम्न हैं :

शेख सलीम चिश्ती की दरगाह : फतेहपुरसीकरी के विशाल किले की यह सब से भव्य इमारत है जो सफेद पत्थर पर बारीक नक्काशी कर के बनाई गई है. दरगाह की जालियां खासतौर पर दर्शनीय हैं जो पत्थर की होने पर भी अंदर से देखने पर कपड़े की लगती हैं.

बुलंद दरवाजा : बुलंद दरवाजा बादशाह अकबर के शासनकाल की बुलंदियों का प्रतीक है. इसे अकबर ने अपनी गुजरात विजय के उपलक्ष्य में बनवाया था. यह 176 फुट ऊंचा षटकोणीय बुलंद दरवाजा ऊंचाई में एशिया में अपना कोई सानी नहीं रखता है. यह दरवाजा लाल पत्थर से बना है किंतु इस पर सफेद और काले पत्थरों की सुंदर नक्काशियां भी हैं. रोम के सेंट पीटर्स चर्च के दरवाजे के बाद यह दुनिया का सब से विशाल दरवाजा है.

बादशाही दरवाजा : पूर्वी दिशा के बादशाही दरवाजे से निकल कर फतेहपुर सीकरी के महलों वाले हिस्से में प्रवेश किया जा सकता है. इस दरवाजे को 'बादशाही दरवाज इसलिए कहते हैं क्योंकि मसजिद और दरगाह जहां सामान्य लोग बुलंद दरवाजे से आतेजाते वहीं बादशाह अकबर और उस के परिवार लोग इसी दरवाजे से अपने महलों की अ आतेजाते थे.

जोधाबाई महल : बादशाही दरवाजे से कर आप जोधाबाई महल पहुंच सकते हैं. कभी अकबर का रनिवास था, जहां उस की बे

बादशाह के साथ किलोल किया करती थीं.

जोधाबाई महल बीच में दोमंजिला है जबकि इस के किनारों पर एकमंजिले कई कमरे हैं जो शायद कभी अलगअलग रानियों द्वारा बादशाह से मिलने के समय या आराम और शृंगार करने के लिए प्रयुक्त होते होंगे.

पंचमहल : जोधाबाई महल से निकल कर सामने ही सुनहरा मकान और पंचमहल है. यह फतेहपुरसीकरी किले की सब से ऊंची इमारत है. कहते हैं कि शाम के वक्त बादशाह यहां अपनी बेगमों के साथ हवाखोरी करता था.

पंचमहल 176 भव्य नक्काशीदार खंबों पर खड़ा है. हर खंबे की नक्काशी अलग किस्म की है. सब से नीचे की मंजिल पर 84 और सब से ऊपर की मंजिल पर 4 खंबे हैं.

दीवानेखास : फतेहपुरसीकरी के इस दीवानेखास की विशेषता यह है कि यह बाहर से देखने पर पूरी तरह एकमंजिला लगता है जबकि अंदर से दोमंजिला है. दीवानेखास में अंदर आने पर इस महल के बीचोंबीच नक्काशीदार एक विशाल खंबे को देख कर थोड़ी देर चक्कर में पड़ जाएंगे कि आखिर इस प्रकार के दीवानेखास के निर्माण के पीछे क्या परिकल्पना रही होगी. वस्तुतः यह तभी पता चलेगा जब आप बगल में बनी सीढ़ियों से चढ़ कर पहली मंजिल में पहुंचेंगे.

पहली मंजिल के बीचोंबीच बने स्थान पर कभी बादशाह बैठा करता था और खंबे के रास्तों से जुड़ी दीवार से सटी परिधि पर बादशाह के नवरत्न बैठ कर उस से खास विचारविमर्श करते थे.

तुर्की सुल्ताना का महल : दीवानेखास के सामने एक बड़ा सा दालान है जहां एक तालाब और उस के पीछे अकबर की बेगम तुर्की सुल्ताना का महल है. महल के कमरे छोटे हैं किंतु उन में बहुत सुंदर नक्काशी है और इन कमरों को घेरे हुए उतना ही सुंदर नक्काशीदार बरामदा है.



फतेहपुर सीकरी में बना अनूप तालाब : सरोवर के बीचोंबीच एक बड़ा चबूतरा बना है.

अनूप तालाब : इस सरोवर के बीचोंबीच एक बड़ा चबूतरा है. कहते हैं कि कभी इसी पर बैठ कर महान संगीतज्ञ तानसेन अपने इतिहास प्रसिद्ध रागों को बादशाह को सुनाया करता था.

हिरन मीनार : संगिनी बुर्ज से थोड़ा और आगे चलने पर हिरन मीनार को देखा जा सकता है. हिरन मीनार की दीवारों पर बड़ेबड़े सींगनुमा नुकीले पत्थर लगे हैं. शायद इसीलिए इस का नाम हिरन मीनार पड़ा था. कुछ इतिहासकार मानते हैं कि यहां जंगल से घेर कर हिरन लाए जाते थे तथा इस बुर्ज के ऊपर चढ़ कर मुगल बेगमें उन हिरनों का शिकार किया करती थीं.

वेद त्रिपाठी

पंजाब

भारत के उत्तरपश्चिम में स्थित पंजाब हालांकि एक छोटा राज्य है लेकिन यहां संपन्नता देश के अन्य राज्यों की तुलना में काफी अधिक है. इसीलिए पंजाब को खुशहाल प्रदेश भी कहा जाता है. 5 नदियां (सतलुज, ब्यास, रावी, चेनाब और झेलम) यहां बहती हैं इसीलिए इस राज्य का नाम पंजाब रखा गया.

पंजाब एक कृषि प्रधान राज्य है. हालांकि पर्यटन की दृष्टि से इस का कोई खास महत्त्व नहीं है, लेकिन अपनी अलग संस्कृति और जिंदादिली के साथसाथ खानपान के कारण पंजाब भारत ही नहीं विदेशों में भी काफी चर्चित है.

पंजाब के लोग त्योहारों को बहुत ही उत्साह के साथ मनाते हैं. इन अवसरों पर लोकगीतों व पंजाबी नृत्यों का आयोजन किया जाता है. कई दिनों तक पूरा माहौल स्वरलहरियों से गूंजा रहता है.

पंजाब स्वतंत्रता संग्राम का मूक गवाह रहा है. अमृतसर का जलियांवाला बाग एक ऐतिहासिक स्थल है. यही वह स्थान है जहां जनरल डायर ने अनेक बेगुनाहों को गोलियों से भून दिया था और महिलाओं ने अपनी आबरू की रक्षा हेतु कुएं में कूद कर अपने प्राणों की आहुति दी थी.

चंडीगढ़ पंजाब और हरियाणा की संयुक्त राजधानी है इसलिए यह नगर अपनी विशेष अहमियत रखता है. इस नगर को प्रसिद्ध आर्किटेक्ट ली कारबूजिए ने डिजाइन किया था. यह नगर अपने अनेक आकर्षणों के कारण पर्यटकों को लुभाता है.

अमृतसर

अमृतसर भारत का सीमांत जिला तथा सिख धर्मावलंबियों का पवित्र धार्मिक शहर है. इसी शहर में स्थित स्वर्ण मंदिर पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. यहीं से सिख धर्म की गतिविधियों का संचालन होने से अमृतसर को सिखों की संसद भी कहा जाता है.

भारत के उत्तरपश्चिम में स्थित करीब 425 वर्ष पुराना अमृतसर कला, स्थापत्य, संस्कृति और इतिहास की जीतीजागती मिसाल है.

अमृतसर शहर के निर्माण हेतु यह जमीन मुगल बादशाह अकबर ने दान में दी थी तथा शहर का शिलान्यास लाहौर के 'हजरत मियां मीर' ने किया था. बाद में शहर बसाने की सारी जिम्मेदारी सिखों के चौथे गुरु 'गुरु रामदास' को सौंपी गई थी.

कहा जाता है गुरु रामदास तो अपने जीवनकाल में अमृतसर शहर को बसा नहीं पाए लेकिन बाद में उन के पुत्र तथा 5वें गुरु अर्जुन देव ने ही इस नगर को बसाने का काम पूरा करवाया था. पूरी दुनिया में प्रसिद्ध अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के निर्माण का श्रेय भी गुरु अर्जुन देव को ही दिया जाता है.

दर्शनीय स्थल

स्वर्ण मंदिर : विश्व वास्तु की अनमोल धरोहरों में से एक अमृतसर का गोल्डन टैंपल नगर के मध्य भाग में स्थित है. गुंबदों और नक्काशीदार जालियों से अलंकृत इस मंदिर की

गुंबदों तथा दीवारों पर सोने की परतें जड़ी होने की वजह से ही इसे स्वर्ण मंदिर कहा जाता है. कहा जाता है कि मंदिर को स्वर्ण मंडित करवाने का यह कार्य सिख शासक महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में संपन्न हुआ था. मंदिर के बीचोंबीच स्थित है अमृत-सर यानी अमृत का तालाब. बैशाखी के दिन देश भर से लाखों लोग स्वर्ण मंदिर पहुंचते हैं. नगर के बीच स्थित होने के कारण इस मंदिर को 'दरबार साहिब' के नाम से भी पुकारा जाता है.

संग्रहालय : स्वर्ण मंदिर के अंदर स्थित है सेंट्रल सिख म्यूजियम. इस संग्रहालय में पंथ से संबंधित विभूतियों के चित्र और सिख इतिहास से ताल्लुक रखने वाली तमाम वस्तुओं को करीने से रखा गया है. यहां 'सिख अजायब घर' में संगृहीत चित्रों में युद्ध कौशल और सिखों के बलिदान की गाथा का चित्रण है.

जलियांवाला बाग : अमृतसर पहुंचने के बाद पर्यटकों में सर्वाधिक जिज्ञासा जलियांवाला बाग को देखने की होती है. 'जलियांवाला बाग' आज भी अंगरेजी हुकूमत के उस काले अध्याय का मूक गवाह है जब 13 अप्रैल, 1919 में बैसाखी के दिन इस बाग में एकत्रित हुए हजारों निहत्थे देशभक्तों को जनरल डायर ने गोलियों से भून डाला था.

इस विस्मित कर देने वाले और लोमहर्षक नरसंहार में करीब 2,500 स्त्री, पुरुष और बच्चे मारे गए थे. कुछ लोग स्वयं को बचाने के लिए बाग के कुएं में जिंदा दफन हो गए थे. आजकल जलियांवाला बाग को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में ख्याति प्राप्त है. पर्यटक यहां पहुंच कर मौत के कुएं व दीवारों पर अंकित गोलियों के निशानों को देख कर बरबस ही श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं.

कुछ अन्य दर्शनीय स्थल

* अमृतसर में दुर्ग्याना मंदिर भी दर्शनीय स्थल है. स्वर्ण मंदिर के समकक्ष प्राचीन दुर्ग्याना मंदिर भी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है.

* स्वर्ण मंदिर के आंतरिक भाग में स्थित है सिखों का पवित्र 'अकाल तख्त.' यहीं से पंथ और सिखों के धार्मिक हुक्मनामे व फतवे जारी किए जाते हैं. इस तख्त का निर्माण सिखों के छठे गुरु हरगोविंद सिंह ने ई. 1606-45 के बीच करवाया था.

* अमृतसर कालांतर से ऐतिहासिक उथलपुथल का केंद्रबिंदु रहा है. सिख धर्म की धार्मिक राजधानी का दर्जा हासिल करने वाले अमृतसर में कई अन्य स्थल भी दर्शनीय हैं. इन



पंजाब का पारंपरिक नृत्य 'गिद्दा' करती युवतियां : ढोलताशे के साथ पंजाबी गीतसंगीत सब के मन में जोश भर देता है.

अमृतसर : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : देश के कई शहरों से अमृतसर के लिए सीधी वायु सेवाएं हैं. यहां का निकटतम हवाई अड्डा राजासांसी है.

रेल मार्ग : यहां के लिए अच्छी रेल सेवाएं हैं.

सड़क मार्ग : यहां के लिए देश के कई प्रमुख शहरों से सीधी एवं नियमित बस सेवाएं हैं.

कहां ठहरें : यहां ठहरने व खानेपीने की अच्छी व्यवस्था है. छोटेबड़े होटल भी हैं. प्रमुख होटलों में 'मोहन इंटरनेशनल', फोन-2227801; 'एस्टोरिया', फोन-266046; 'रिट्ज', फोन-2226606; 'अमृतसर इंटरनेशनल होटल', फोन-2555991 आदि हैं. इन के अलावा पर्याप्त धर्मशालाएं भी हैं. प्रमुख धर्मशालाओं में गुरु रामदास सराय, सीता मंदिर सराय हैं.

कब जाएं : अमृतसर वर्ष भर कभी भी आयाजाया जा सकता है. फिर भी अप्रैल में बैसाखी के पर्व में यहां आ कर खूब आनंद लिया जा सकता है.

एस.टी.डी. कोड : 0183

में अटल सराय, गुरुद्वारा शहीदां के अलावा आधुनिक परिवेश 'कंपनी बाग' का नाम उल्लेखनीय है.

* कालांतर में तांगों और इक्कों का रूप बेशक आधुनिक वाहनों ने ले लिया हो लेकिन लोग अमृतसर पहुंच कर अमृतसरी कुल्चों, पापड़बड़ियों का स्वाद चखने तथा तांगे की सवारी का लुत्फ उठाने जरूर जाते हैं.

चंडीगढ़

इंडो फ्रांस शिल्प का बेहतरीन नमूना होने के अलावा हरियाणा और पंजाब की राजधानी का रुतबा रखने वाला चंडीगढ़ शहर देश के उन सुव्यवस्थित शहरों में से एक है जहां की हरियाली और चौड़ी सड़कें उन लोगों की धारणा को सहज ही झूठा साबित करती हैं जो चंडीगढ़ को पत्थरों का शहर मानते हैं.

चंडीगढ़ की परिकल्पना का श्रेय कल्पनाशील नेता पं. जवाहर लाल नेहरू को जाता है क्योंकि बंटवारे के बाद लाहौर के पाकिस्तान में चले जाने का गम पं. नेहरू व देशवासी तभी भूल पाए थे जब 1953 में चंडीगढ़ की आधारशिला रखी गई थी. चंडीगढ़ शहर का नाम यहां से 13 किलोमीटर दूर स्थित प्रसिद्ध चंडीदेवी के मंदिर के नाम पर रखा गया था. चंडीगढ़ देश के उन गिनेचुने शहरों में से एक है जहां पूरे वर्ष ही पर्यटकों का तांता लगा रहता है. बागों और उत्सवों के शहर चंडीगढ़ और इस के आसपास के क्षेत्रों के मनोहारी और रमणीक स्थल भी चंडीगढ़ को गौरव प्रदान करते हैं.

दर्शनीय स्थल

सुखना झील : सुबह और शाम की सैर और नौका विहार के लिए प्रसिद्ध तथा 15 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैली सुखना झील पूरे भारत में प्रसिद्ध है. शिवालिक की पर्वतीय शृंखलाओं से घिरी सुखना झील के प्रति लोगों के लगाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि झील की सफाई हेतु यहां सुखना श्रमदान की मुहिम के मौके पर सभी तबके के लोग इस श्रमदान में स्वेच्छा से हिस्सा लेते हैं. सुखना पर सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य तथा मछलियों की कुलांचों के साथसाथ प्रवासी पक्षियों के झुंड व कई रंगों और आकारों वाली बत्तखें यहां ऐसी नयनाभिराम झांकी प्रस्तुत करती हैं जिन्हें देख कर पर्यटक बागबाग हो जाते हैं. झील पर प्रतिवर्ष रोइंग क्लब के नौकायन मुकाबले भी दर्शनीय होते हैं.

राक गार्डन : करीब 25 एकड़ में फैला चंडीगढ़ का राक गार्डन पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान कायम कर चुका है. बेकार और नकारा चीजों से निर्मित यहां की बेशुमार

तियां, टेढ़ीमेढ़ी घुमावदार पगडंडियां, म झरने, पहाड़ और भूलभुलैया संरचना पहुंचने वाले पर्यटकों को किसी तिलस्मी लोक में आ पहुंचने का एहसास कराती हैं.

1974 में निर्मित महान वास्तुशिल्पी चंद सैनी की कृति राक गार्डन में बने बुतों हलधर किसानों, सैनिकों व सभी जंतुओं, पशुपक्षियों की शृंखलाएं तथा कार खाइयां कला के बेजोड़ नमूने हैं, जिन्हें क्राकरी, खाली बोतलों, टूटे बिजली के न व टूटी चूड़ियों, बेकार ग्लेजिंग टाइलों नाया गया है. राक गार्डन के तीनों चरण हाल सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक कों के लिए खुले रहते हैं तथा चंडीगढ़ के



ढ़ स्थित बेशुमार बेकार की चीजों से बने गार्डन में बना कृत्रिम महल : पर्यटक यहां मौजमस्ती करते हैं.

बस अड्डे से हर 5 मिनट के बाद यू. की बसों द्वारा आराम से पहुंचा जा है.

रोज गार्डन : खूबसूरत गुलाबों की 2 से ज्यादा किस्मों से अलंकृत यह रोज चंडीगढ़ के सेक्टर 16 में मध्य मार्ग पर है. इस का नाम भारत के दिवंगत राष्ट्रपति किर हुसैन के नाम पर होने के कारण इसे रोज गार्डन के नाम से भी जाना जाता है. विभिन्न किस्मों का जितना बड़ा अकूत है वैसा अन्यत्र कहीं भी नहीं है.

करीब 35 एकड़ भूभाग पर खुले और हवादार माहौल में रचे गए रोज गार्डन के तानेबाने में यहां लगा 100 फुट ऊंचा फौआरा पर्यटकों तथा पर्यावरण प्रेमी फोटोग्राफरों को भी अपनी ओर आकर्षित करने की पूरी सामर्थ्य रखता है.

फरवरी माह के अंतिम 3 दिन यहां आयोजित होने वाला गुलाबोत्सव तो पूरे देश में अपनी तरह का भव्य समारोह होता है जिस में देशदुनिया के गुलाब प्रेमी एकत्र होते हैं. यहां प्रत्येक मौसम में सैलानियों की भीड़ देखी जा सकती है.

पंजाबहरियाणा हाईकोर्ट : हरियाणापंजाब की राजधानी की भांति ही यहां पंजाबहरियाणा हाईकोर्ट की संयुक्त इमारत भी देखने योग्य है. संयुक्त पंजाब के दौरान 1951-55 में निर्मित हाईकोर्ट, पास ही में स्थित पंजाब-हरियाणा राज्य सचिवालय, विधानसभा भवन व एमएलए होस्टल के बीच बनी भव्य और सुंदरतम इमारतों में से एक है. चंडीगढ़ के सेक्टर 1 में स्थित हाईकोर्ट भवन को देखने के इच्छुक पर्यटक देश के किसी भी कोने से बड़ी आसानी से यहां पहुंच सकते हैं.

केंद्रीय संग्रहालय : विभिन्न दौरों की राजशाही और उस के वैभव को जीवंत रूप से देखने के लिए यहां के सेक्टर-10 में बना संग्रहालय कला के प्रत्येक पक्ष को उजागर करने वाली राष्ट्रीय धरोहर है. यहां चंदेल राजाओं के हजारों वर्ष पुराने मूर्ति शिल्प के

साथसाथ, कांगड़ा, किशनगढ़, मुगलकालीन तथा राजस्थान के भित्तिचित्र वैभव को बड़े ही करीने से सहेज कर रखा गया है, संग्रहालय के अन्य भाग में कलाकृतियों तथा नजदीक की आर्ट गैलरी में तैलचित्रों को देख कर चकित होना लाजिमी है. संग्रहालय से कुछ ही दूरी पर पंजाब इंजीनियरिंग कालिज तथा चिकित्सा संस्थान पीजीआई की भव्य इमारत है. साथ ही बने गांधी संग्रहालय में पहुंचने के बाद तो पर्यटक रोमांचक हुए बिना रह ही नहीं सकते.

बोगनवेलिया गार्डन : लटकती लताओं और घनेरी झाड़ियों से लदे बोगनवेलिया गार्डन की सब से बड़ी विशेषता तो यह है कि यहां आने के बाद बारहों माह वसंत के नजारे आसानी से देखे जा सकते हैं. झाड़ीनुमा बोगनवेलिया में सुर्ख लाल, गुलाबी, सफेद और पीले रंगों के गुच्छे सभी का मन मोह लेते हैं. सुबह से ले कर शाम तक आभा लुटाता यह गार्डन सेक्टर-3 में स्थित है. इस का कुल रकबा करीब 20 एकड़ जमीन पर सिमटा हुआ है.

लेजरवेली : केंद्रीय बस अड्डे से 7 किलोमीटर दूर स्थित लेजरवेली वह मनोरम स्थल है जिसे बनाने में दिवंगत कृषि व वनस्पति वैज्ञानिक डा. एम.एस. रंधावा ने विशेष भूमिका निभाई थी. यहां का सौम्य और शांत सौंदर्य एकांतपसंद प्रेमियों को विशेष सुकून प्रदान करता है. सुबह की सैर के लिए मुफीद सैरगाह होने के साथ इस का प्रयोग बड़ेबड़े सांस्कृतिक आयोजनों तथा क्राफ्ट व हस्तशिल्प मेलों के आयोजनों के लिए भी किया जाता है.

पंजाब विश्वविद्यालय : पंजाब विश्वविद्यालय का अपना प्राचीन इतिहास होने के साथसाथ आधुनिक परिवेश में भी विशेष महत्त्व है. 1947 में भारतपाक विभाजन के बाद लाहौर से चंडीगढ़ शिफ्ट हुए इस विश्वविद्यालय का आलीशान भवन व मनोरम परिसर देखने के योग्य है, जिस में दुनिया के प्रत्येक देशों से आए विद्यार्थियों को देख कर एक नई अनुभूति होती है. सेक्टर-14 में एक विशाल भूखंड पर बना पंजाब विश्वविद्यालय देशविदेश में भी अपनी ऊंची साख के लिए चर्चित होने के अलावा छात्रावास, संकाय भवन, लाइब्रेरी व कलादीर्घा के लिए भी प्रसिद्ध है.

मोरनी हिल्स : चंडीगढ़ से 40 किलोमीटर दूर हैं मोरनी की रमणीक पहाड़ियां. हरियाणा के पंचकूला क्षेत्र में 3,500 फुट की ऊंचाई पर

चंडीगढ़ : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : चंडीगढ़ का हवाई अड्डा सिटी सेंटर से 11 किलोमीटर दूर है. यहां के लिए कई प्रमुख नगरों से सीधी वायु सेवाएं उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग : चंडीगढ़ के लिए देश के प्रमुख नगरों से अच्छी रेल सेवाएं हैं.

सड़क मार्ग : पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगमों की बसों द्वारा चंडीगढ़ इन राज्यों में मुख्य शहरों से जुड़ा हुआ है. यहां के लिए लग्जरी, डीलक्स, सेमी डीलक्स या साधारण कोच बसें उपलब्ध रहती हैं.

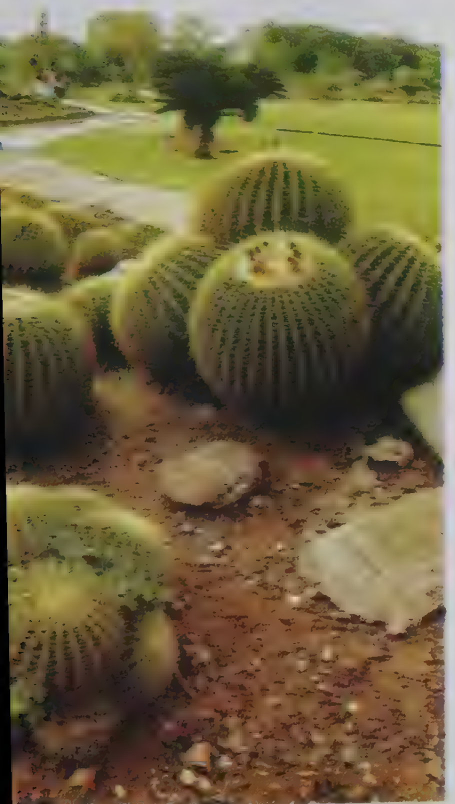
कहां ठहरें : यहां के होटल खातिरदारी के लिए प्रसिद्ध हैं. 'चंडीगढ़ यात्री निवास' फोन-2706038; 'होटल अमर', फोन-2703608; 'होटल माउंट व्यू', फोन-2740544; 'होटल क्लासिक', फोन-2703358; 'प्रेसीडेंट', फोन-2771731; 'यूटी गेस्ट हाउस', फोन-2740981; 'माया पैलेस', फोन-2600547; 'मेट्रो', फोन-2604337; 'पंकज', फोन-2709891; 'जीके इंटरनेशनल', फोन-2660737; 'शुभवती', फोन-2774402; 'सूद', फोन-2700223 आदि होटलों में ठहर सकते हैं.

कब जाएं : वैसे तो चंडीगढ़ कभी भी जाया जा सकता है फिर भी मार्च से मई तथा सितंबर से नवंबर तक का मौसम यहां के लिए सब से ज्यादा अनुकूल रहता है. टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर, बस अड्डा सेक्टर 17, चंडीगढ़ फोन-2704614 से संपर्क कर विस्तृत जानकारी हासिल कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 0172

त मोरनी को हरियाणा का शिमला भी कहा
ा है. 14 भोजों (ढाणियां) में बंटी मोरनी के
क भोज में रचीबसी खुशियों व पहाड़ियों के
य जीवन को यहां काफी नजदीक से देखा
सकता है, दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में
नी ही ऐसा हिल स्टेशन है जहां मात्र 6-7
में बस द्वारा सुगमता से पहुंचा जा सकता है.
नांतर में गोरखा शासकों की रियासत रही
नी में प्राचीन किला व टिक्कर ताल देखने
क़ाबिल हैं.

समस्त मोरनी हिल्स का 80 प्रतिशत



ढ़ से सटे शहर पंचकूला का सब से बड़ा
स गार्डन दर्शनीय है.

वनों के लिए आरक्षित होने के कारण यहां
तावरण में वन्य जीवों को थोड़ी सी प्रतीक्षा
द काफी करीब से देखा जा सकता है. यहां
हारर हाउस, मंकी मैज, टिक्कर ताल
रिवर ट्रेक, तोमर युगीन समलौठा देवी
तथा हर्बल गार्डन व मोरनी फोर्ट खास
य स्थल हैं. रात्रि का समय यहां सब से
ंकक नजारा पेश करता है, क्योंकि 3,500
ी ऊंचाई से जगमगाते शहर चंडीगढ़ को
देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो पर्यटक किसी दूसरे नभमंडल का दीदार कर रहे हैं.

कैक्टस गार्डन (पंचकूला) : चंडीगढ़ से बिलकुल सटा हुआ एक शहर है पंचकूला. हरियाणा के सब से आधुनिक शहर पंचकूला की बुनियाद 1971 में रखी गई थी. यहां सेक्टर 5 में कुल 6 एकड़ में बना एशिया का सब से बड़ा कैक्टस एवं सेक्यूलैंट पार्क काफी बड़ा और दर्शनीय है. पार्क में करीब 2,500 प्रजाति के कैक्टस फुटबाल और घड़े के आकारों के होने के कारण काफी रोचक लगते हैं. दुनिया भर के विशाल कैक्टस संग्रह को यहां मात्र 5 रुपए की टिकट खरीद कर सुगमता से देखा जा सकता है. इस के अलावा यहां का बोनसाई गार्डन, सेक्टर-6 का जिमखाना क्लब, ताऊ देवीलाल स्टेडियम व गोल्फ कोर्स मैदान भी पर्यटकों में उत्साह पैदा करते हैं.

छत्तबीड़ अभ्यारण्य : छत्तबीड़ वन्य प्राणी उद्यान को महेंद्र चौधरी जूलाजीकल पार्क के नाम से भी जाना जाता है. चंडीगढ़ से 17 किलोमीटर की दूरी पर घग्घर नदी के किनारे छत्तबीड नामक स्थान (पटियाला) पर 25 एकड़ क्षेत्र में बने इस वन्य प्राणी उद्यान में कदम रखते ही पगपग पर रोमांच से साक्षात्कार होता है. यहां खुले वातावरण में रखे गए तमाम तरह के वन्य जीवों को प्रवेश शुल्क दे कर देखा जा सकता है. टाइगर सफारी, हिरण सफारी और लायन सफारी को करीब से देखना काफी रोमांचक लगता है. लायन सफारी में घूमने के लिए यहां बंद गाड़ियों की भी व्यवस्था है.

कला ग्राम : यह नार्थ जोन कल्चर सेंटर का एक खूबसूरत पड़ाव है. चंडीगढ़ के रेलवे स्टेशन के समीप 15 एकड़ जमीन पर बने इस कला ग्राम को 1995 में लोकार्पित किया गया था. यहां मुक्ताकाश मंच पर प्रायः हर रोज आयोजित होने वाले लोकनृत्य समारोह चंडीगढ़ जैसे पत्थरों के शहर में नई जान फूंकते हैं.

यहां, ओपन एअर थिएटर, कलादीर्घा तथा ठेठ ग्रामीण अंदाज वाले रेस्तरां पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है. यहां बना सभी प्रकार के पत्थरों से 200 से ज्यादा बनी मूर्तियों का खुला पार्क भी दर्शनीय है. पूरे देश के स्कल्पचर आर्ट के कलाकारों द्वारा तराशी गई मूर्तियों को देख कर कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता.

पुरुषोत्तम सैलानी

बिहार

बिहार एक ऐसा प्रदेश है जो अनेक आकर्षणों के कारण भारत के मानचित्र पर अपनी अलग पहचान रखता है. चंद्रगुप्त और अशोक के समय में मगध और इस की राजधानी पाटलिपुत्र का विश्व भर में नाम था. समय के साथ बिहार ने अनेक उतारचढ़ाव देखे. मध्यकाल में बिहार राजनीतिक विघटन का शिकार हुआ. मुगलों ने भी बिहार पर अपना आधिपत्य जमाया और यहां की प्राचीन संस्कृति को नष्ट किया.

आज का बिहार 94,163 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है. कृषि प्रधान प्रदेश होने के कारण यहां के लोगों का जीविकोपार्जन का मुख्य साधन खेती ही है. अतः एक बड़ा वर्ग गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करने को विवश है.

जब तक झारखंड बिहार से अलग नहीं हुआ था तब तक यहां खनिज संपदा की कोई कमी नहीं थी क्योंकि यहां कोयला, अनेक धातुएं व खनिज जमीन के अंदर भरे पड़े थे. लेकिन झारखंड बनने पर खनिज संपदा से लबरेज इलाका झारखंड में चला गया. इस तरह बिहार की आर्थिक संपन्नता को काफी नुकसान पहुंचा है. अनेक उद्योगधंधे भी माफियाओं के कारण बंद हो गए.

पर्यटन व ऐतिहासिक दृष्टि से बिहार का आकर्षण आज भी कायम है. यहां के ऐतिहासिक स्थलों को देखने के लिए देशविदेश से अनेक पर्यटक हर वर्ष आते हैं.

पटना

बिहार की राजधानी पटना शहर अपने 2,500 सालों के इतिहास में कई बार नाम बदल चुका है. कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, अजीमाबाद नाम के बाद इस का नाम पटना पड़ा. यह विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक है तथा गंगा, सोन और पुनपुन नदियों के संगम पर बसा है.

दर्शनीय स्थल

पटना म्यूजियम : पटना जंक्शन से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस म्यूजियम की स्थापना 1917 में की गई थी. म्यूजियम में पुरातत्त्व से संबंधित 57 हजार वस्तुएं हैं.

गोलघर : बिहार में 1770 में पड़े भीषण अकाल के बाद 20 जनवरी, 1784 में इस का निर्माण शुरू हुआ था और 20 जुलाई, 1786 को बन कर तैयार हुआ था.

29 मीटर ऊंचा गोलघर एक अर्द्ध गोलाकार इमारत है जिस की दीवारें आधार में 3.6 मीटर चौड़ी हैं. इतिहासकारों का मत है कि भारत ही नहीं पूरे विश्व में गोलघर के अलावा ऐसी कोई इमारत नहीं है जिसे भूतल से 2 फुट की ऊंचाई से ही गुंबद का रूप दिया गया हो.

कुम्हरार : पटना जंक्शन से 5 किलोमीटर पूरब बाईपास रोड पर स्थित कुम्हरार एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है. यहां मौर्यकालीन सभा भवन के अवशेष के बीच आकर्षक पार्क बनाया गया है.

श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र : बिहार का यह पहला विज्ञान संग्रहालय है.

जालान संग्रहालय : पटना का यह संग्रहालय 1954 में विधिवत अस्तित्व में आया था. यह अद्भुत व पुरानी कलाकृतियों के लिए मशहूर है.

अगम कुआं : पटना सिटी के गुलजा बाग स्टेशन से 1 किलोमीटर दूर ऐतिहासि अगम कुआं है. यह वही अगम कुआं है ज सम्राट अशोक ने अपने 99 भाइयों को मारा थ

खुदाबख्श पब्लिक लाइब्रेरी : यह लाइब्रे पटना के मुख्यमार्ग अशोक राजपथ पर स्थित



न घर : इस का निर्माण सैनिकों के लिए
ाज रखने के उद्देश्य से किया गया था.

रेखाचित्र और डेढ़ लाख किताबें मौजूद हैं.

तारामंडल : पटना के बेली रोड पर स्थित तारामंडल का निर्माण 1992 में हुआ था. यह एशिया का सब से बड़ा तारामंडल है.

संजय गांधी जैविक उद्यान : पटना के बेली रोड पर ही संजय गांधी जैविक उद्यान है. कई जानवरों और औषधीय पौधों के लिए मशहूर इस जैविक उद्यान का मछलीघर, सांपघर और झील काफी आकर्षक हैं.

शहीद स्मारक : पुराना सचिवालय व विधान सभा भवन के सामने स्थित 7 शहीदों का स्मारक भारत की आजादी के संघर्ष की कहानी कहता प्रतीत होता है. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान आजादी के ये दीवाने सचिवालय भवन पर तिरंगा लहराने की जिद के साथ आगे बढ़े थे लेकिन अंगरेजों की गोलियों के शिकार हो गए.

ाबख्श ने अपने पिता मोहम्मद बख्श से ासत में मिली पांडुलिपियों और पुस्तकों को 91 में सार्वजनिक लाइब्रेरी का रूप दिया. 69 में भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय महत्त्व संस्थान घोषित किया. इस लाइब्रेरी में 20 र पांडुलिपियों, 2 हजार से अधिक

पटना : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : पटना देश के कई प्रमुख शहरों से वायु र्ग से जुड़ा है. सरकारी व निजी एअरलाइंस की सुविधा ां आनेजाने के लिए उपलब्ध रहती है.

रेल मार्ग : पटना के लिए देश के सभी प्रमुख ारों से सीधी रेल सेवाएं हैं. यहां जाने के लिए समय ते आरक्षण करवा लेना ठीक रहता है.

सड़क मार्ग : सड़क मार्ग से पटना आसपास के रों व राज्यों से जुड़ा हुआ है.

कहां ठहरें : यहां ठहरने के लिए सस्ते व महंगे नों तरह के होटल उपलब्ध हैं. 'मौर्या', लोक, ाट, चाणक्य, राजस्थान, प्रेसीडेंट आदि प्रमुख टल हैं. इन के अलावा सरकारी व प्राइवेट गेस्ट स भी उपलब्ध हैं.

कब जाएं : यहां घूमने के लिए सितंबर से अप्रैल का मौसम बड़ा सुहावना रहता है.

एस.टी.डी. कोड : 0612.

नालंदा

राजगीर से 11 किलोमीटर उत्तर की ओर बड़गांव के पास नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर मिले थे. 5वीं शताब्दी में इस महान शिक्षा केंद्र की स्थापना एक बौद्ध बिहार के रूप में हुई थी जो बाद में शिक्षा के केंद्र के रूप में 12वीं शताब्दी तक फलताफूलता रहा था. नालंदा विश्वविद्यालय का खंडहर ही बताता है कि यहां कभी बुलंद इमारतें थीं. पटना से 85 किलोमीटर पूर्वदक्षिण में स्थित इस विश्वविद्यालय में कभी 2 हजार शिक्षक और 10 हजार विद्यार्थी थे.

इस की स्थापना गुप्त वंश के राजा कुमार गुप्त (प्रथम) महेंद्रादित्य (415-455) ने की थी जो चंद्रगुप्त



नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर ही बताते हैं कि यहां कभी बुलंद इमारतें थीं.

द्वितीय की पहली पत्नी ध्रुव देवी की संतान था. चीनी यात्री ह्वेनसांग यहां शिक्षक और विद्यार्थी के रूप में 12 सालों तक रहा था.

273-236 ई. पूर्व सम्राट अशोक ने यहां एक बिहार बनवाया था. राजा हर्षवर्द्धन ने यहां 26 मीटर ऊंची बुद्ध की तांबे की मूर्ति लगवाई थी और गुप्तवंश का कुमार गुप्त ललित कलाओं के महाविद्यालय का खर्च उठाता था. इस के उत्खनन में अनेक स्तूप, सजी हुई चित्र पट्टिकाएं, बड़ा भाषण कक्ष, छात्रावास, भोजनालय, शौचालय, बुद्ध की मूर्तियां मिली थीं.

नालंदा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की योग्यता विश्व स्तर की थी. यहां लंका, चीन, तिब्बत, कोरिया, मंगोलिया, बंगाल, दक्षिण भारत सहित कई देशों से छात्र शिक्षा पाने आते थे. यहां के पुस्तकालय काफी समृद्ध थे जिन्हें 12वीं सदी में तुर्कों के हमले ने बुरी तरह तहसनहस कर दिया और एक विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय और भरापूरा नगर खंडहर में बदल गया.

दर्शनीय स्थल

ह्वेनसांग स्मारक : चीनी यात्री ह्वेनसांग की अस्थियां और खोपड़ी इस संग्रहालय में रखी गई हैं. यह सारी चीजें पहले पटना संग्रहालय में थीं, जिन्हें 2004 में नालंदा लाया गया.

खंडहर : नालंदा विश्वविद्यालय का खंडहर 14 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है. खुदाई में मिले एक ताम्रपत्र के लेख से पता चलता है कि यहां सुमात्रा के राजा के निवेदन पर पाल नरेश ने महाविहार के रखरखाव के लिए 5 गांव दिए थे. खंडहर क्षेत्र मुख्य भ्रमण स्थल है जो पूरी तरह से लाल ईंटों से बना हुआ है.

गांधी संग्रहालय : पुरानी पांडुलिपियों और बुद्ध और बौद्धों से जुड़ी कई दुर्लभ मूर्तियों को गांधी संग्रहालय में रखा गया है जिस की स्थापना 1971 में की गई थी.

राजगीर

पाटलिपुत्र से पहले का मगध महाजनपद का यह नगर प्राचीन काल में राजगृह, गिरिव्रज जरासंध की राजधानी के नाम से जाना जाता था. नालंदा से 19 किलोमीटर दक्षिण में बसा राजगीर अतीत में हिंदू, बौद्ध व जैन धर्मों का मशहूर स्थल रहा है. हरवंश के शासक बिंबिसार (544 ई.पूर्व-492 ई.पूर्व) ने मगध को विशाल साम्राज्य का रूप दे कर 5 गिरि यानी पहाड़ों से घिरे गिरिव्रज (राजगृह) को अपनी राजधानी बनाया था.

दर्शनीय स्थल

● राजगीर की एक ओर पहाड़ी की चोटी पर जापानी बौद्धों ने एक विशाल स्तूप बनाया है. वहां आनेजाने के लिए हवाई रज्जु मार्ग (रोपवे) बनाया गया है. 12,200 फुट लंबे रोपवे में 114 कुरसियां लगी हैं.

● बिंबिसार की जेल पर्यटकों को खासी लुभाती है. राजगीर के मुख्य मार्ग पर दक्षिण की ओर मनियार मठ से करीब 1 किलोमीटर दूर पत्थरों की दीवारों से घिरी 200 फुट लंबी और चौड़ी जेल है. अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबिसार को इसी जगह कैद कर रखा था.

● स्वर्ण भंडार गुफा वर्षों से सैलानियों के बीच आकर्षण का केंद्र है. कहा जाता है कि इस गुफा के पत्थरों के पीछे बिंबिसार ने सोने का विशाल भंडार बना रखा था.

● जरासंध का अखाड़ा भी सैलानियों को लुभाता है. इसी अखाड़े में कुश्ती लड़ते हुए जरासंध का अंत हुआ था. इस के अलावा वेणुवन, मनियार मठ, करंद सरोवर, गिद्धकूट पहाड़, जीवक आम्रवन, मखदूम कुंड, सप्तधारा, सप्तर्णी गुफा राजगीर के अन्य दर्शनीय स्थल हैं.

झारखंड

बिहार से अलग हो कर 1 नवंबर, 2000 को झारखंड अस्तित्व में आया. उड़ीसा, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार की सीमाओं से सटा हुआ झारखंड ,114 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है. झारखंड में 18 जिले हैं.

औद्योगिक दृष्टि से झारखंड अत्यंत संपन्न है क्योंकि यहां कोयला, अभ्रक, लोहा कई अन्य खनिजों के भंडार हैं. बोकारो इस्पात कारखाना भी झारखंड में स्थित है.

पर्यटन की दृष्टि से भी झारखंड का महत्त्व अब बढ़ रहा है. झारखंड पर्यटन ालय द्वारा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए नएनए पर्यटन स्थल विकसित किए रहे हैं.

रांची

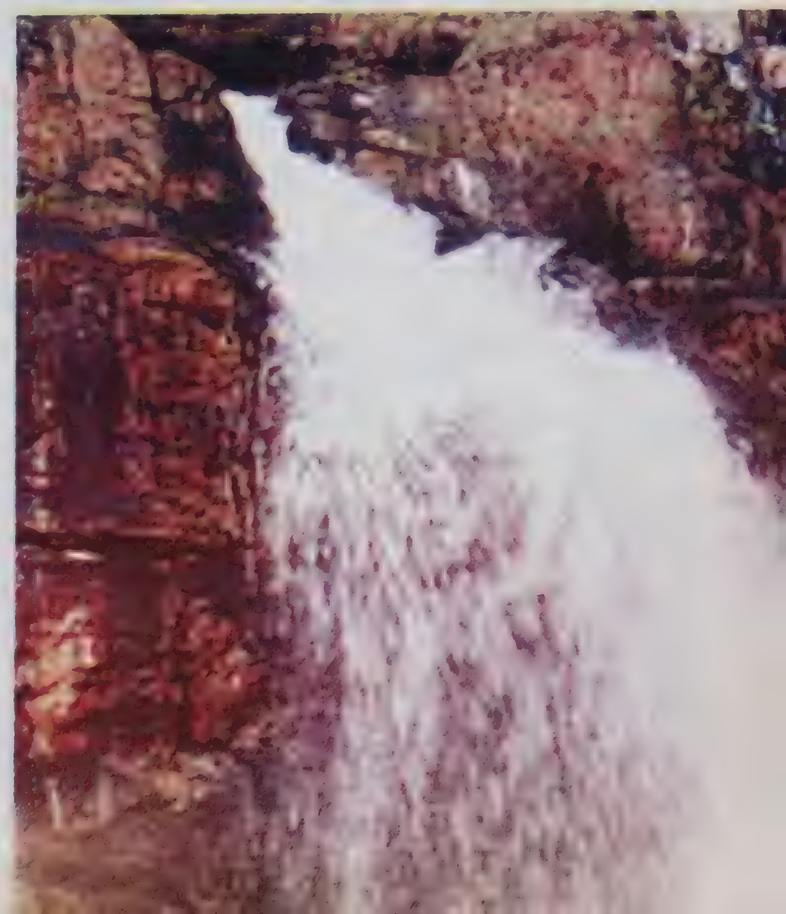
ाकृतिक सौंदर्य और संपदाओं से भरपूर झारखंड की राजधानी रांची हमेशा से टकों को लुभाती रही है. समुद्रतल से 2,140 की ऊंचाई पर स्थित रांची पहाड़ियों और ों की वजह से आकर्षक पर्यटन स्थल है. ा नागपुर पठार के बीच बसे इस मनोरम र का मौसम हमेशा वना रहता है.

र्नीय स्थल

टैगोर हिल : रांची से 4 ोमीटर दूर मोहरावादी ी अपनी कुदरती सुंदरता ाए मशहूर है. टैगोर हिल ाम से मशहूर इस पहाड़ी कवि रवींद्र नाथ टैगोर के भाई ज्योतिंद्र नाथ टैगोर में आए और यहां की हवा से काफी प्रभावित थे. उन्होंने मोराबादी खरीद कर उस पर बनाया, तभी से यह स्थल टैगोर हिल के जाना जाता है.

गौतम धारा (जोन्हा प्रपात) : कांची नदी पर बना यह जल प्रपात सैलानियों के मन को सुकून देता है. इस प्रपात के आसपास का नजारा बड़ा मनोहारी है.

रांची हिल : शहर से सटी इस पहाड़ी की ऊंचाई से सैलानी पूरे शहर का विहंगम दृश्य



फाल : झारखंड राज्य से ऊंचा जलप्रपात है.

देख सकते हैं. इस के पास ही एक झील भी है जो सैलानियों का मन मोह लेती है.

हुंडरू फाल : रांची से 40 किलोमीटर दूर स्थित इस प्रपात में स्वर्ण रेखा नदी को 320 फुट की ऊंचाई से गिरते देखा जा सकता है, जो बहुत मनोहारी छटा पेश करती है. यह झारखंड राज्य का सब से ऊंचा जल प्रपात है. दशम घाट पर कांची नदी 144 फुट की ऊंचाई से गिरती है जो रांची से 34 किलोमीटर की दूरी पर है.

मैथन बांध : यह दामोदर घाटी का सब से बड़ा जलाशय है. जलाशय के बीचोंबीच स्थित रेस्ट हाउस से डैम का खूबसूरत नजारा देखा जा सकता है. इसी के नजदीक हिरण पार्क और वर्ड सैंचुरी भी स्थित है.

काके डैम : कुदरती खूबसूरती से मशहूर यह बांध रांची मार्ग से 4 किलोमीटर की दूरी पर है. यह स्थानीय लोगों के बीच एक उम्दा पिकनिक स्पाट के रूप में मशहूर है. यहां से गोंडा पहाड़ी की सुंदरता का नजारा लिया जा सकता है.

रौक गार्डन : यहां आ कर सैलानियों को पुरानी और नई वास्तुशिल्प और कला का अद्भुत तालमेल देखने को मिलता है. रौक गार्डन के निकट कांके डैम के जल प्रपात की कलकल ध्वनि माहौल को संगीतमय बना देती है.

इस के अलावा बुंडू का विशाल भव्य सूर्य मंदिर, चिल्ड्रेन पार्क, नक्षत्र वन, हिरणी प्रपात, पंचघाघ, जैविक उद्यान, वार सिमेट्री आदि रांची के प्रमुख पर्यटन स्थल हैं.

जमशेदपुर

झारखंड की इस्पात नगरी (स्टील सिटी) के नाम से मशहूर जमशेदपुर स्वर्ण रेखा और खरकोई नदी के संगम पर बसा है. 1907 में सर जमशेदजी नौरोजी टाटा ने इस नगर की नींव रखी थी. इसे देश का सब से पहला सुनियोजित ढंग से विकसित औद्योगिक नगरी होने का गौरव हासिल है. रांची से 209 किलोमीटर दूर स्थित टाटा स्टील कारखाना सैलानियों को लुभाता रहा है.

दर्शनीय स्थल

जुबली पार्क : फौआरों से सजा यह पार्क लगभग 225 एकड़ भूमि पर बना हुआ है. इसे टाटा स्टील ने शहरवासियों को उपहार के रूप में भेंट किया है. टाटा स्टील के गोल्डन जुबली (50 साल) पूरा होने पर यह पार्क बनाया गया था.

डिमना लेक : जमशेदपुर से 13 किलोमीटर की दूरी पर डिमना लेक डालमा पहाड़ी की तलहटी में स्थित है. इस में वाटर स्पोर्ट्स बोटिंग की सुविधा पर्यटकों को खासा लुभाती है.

चिड़ियाघर : इसे पिकनिक स्पौट के साथसाथ कुदरती शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित किया गया है. यहां शेर, बाघ, चीता, हिरण, सांभर, घड़ियाल, सांप आदि जानवरों के अलावा कई प्रजातियों के पौधों और फूलों को भी देखा जा सकता है.

इस्पात नगरी के नाम से मशहूर जमशेदपुर का टाटा स्टील कारखाना देखने लायक है



हजारी बाग

समुद्रतल से 2,019 फुट की ऊंचाई पर बसा हजारीबाग हजार उद्यानों के शहर के रूप में मशहूर है. रांची से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हजारीबाग जंगलों पहाड़ों से घिरा है जो एक कुदरती हेल्थ रिसोर्ट के रूप में भी जाना जाता है. यहां पूरे साल मौसम सुहावना रहता है.

दर्शनीय स्थल

कनहरी हिल : यह पहाड़ी 3 छोटीछोटी झीलों से घिरा हुआ है. यहां एक विशाल वाच टावर बना हुआ है जहां से समूचे शहर की

रम छटा देखने का आनंद उठाया जा सकता ह हजारीबाग से 3 किलोमीटर की दूरी पर त है.

सूरज कुंड : शहर से 72 किलोमीटर की पर यह स्थान गरम पानी के कारण पर्यटकों आकर्षित करता है. हर साल मकर संक्रांति मौके पर यहां मेला लगता है.

हजारी झील : यह झील सैलानियों के वाटा स्पोर्ट्स के लिए आकर्षण का केंद्र यह एक कुदरती पिकनिक स्थल है. पटना



ीबाग मार्ग से 16 किलोमीटर की दूरी पर प्राणी उद्यान स्थित है. हरेभरे घने जंगलों मखमली घासों के मैदानों से पटा यह जंगली जानवरों से भरपूर है. उद्यान में टावर बने हुए हैं जहां से उद्यान की ुदरती और जानवरों को आजाद घूमते जा सकता है.

इस के अलावा तिलैया डैम, कोणार डैम, ा मंदिर, बोकारो जल प्रपात हजारीबाग ाहूर पर्यटन स्थल हैं.

नेतरहाट

ोटा नागपुर की रानी' के नाम से मशहूर नेतरहाट समुद्रतल से 3,700 फुट की पर बसा हुआ है. रांची से 144 मीटर की दूरी पर स्थित नेतरहाट को ड की मसूरी भी कहा जाता है. यहां कदमकदम पर कुदरती सौंदर्य बिखरा हुआ है. यहां का सूर्योदय देखने देशविदेश से सैलानी आते हैं. घने जंगल, ऊंचे पहाड़, घुमावदार सड़कें, झरने, ठंडी हवाएं नेतरहाट को दिलकश बनाती हैं.

दर्शनीय स्थल

सनराइज प्वाइंट : उगते सूरज का मनोहारी नजारा देखने के लिए नेतरहाट का यह प्वाइंट बेहद मशहूर है. हरियाली से घिरे घाटियों और घने पेड़ों के झुरमुट से उगते सूरज का दृश्य फिल्म की तरह प्रतीत होता है.

मंगोलिया प्वाइंट : नेतरहाट से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस जगह से डूबते सूरज की लालिमा सैलानियों के दिलोदिमाग पर भरपूर असर छोड़ती है.

व्यू प्वाइंट : गंगोत्री और लोअर गंगोत्री झरना जहां अपनी मनोरम सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है वहीं व्यू प्वाइंट से कोयन नदी की कलकलछलछल का विहंगम नजारा देखा जा सकता है.

चाईबासा

चाईबासा में विश्वप्रसिद्ध सरांडा जंगल है. यह एशिया का सब से बड़ा साल के पेड़ों का जंगल है जिसे झारखंड का गौरव माना जाता है. 700 पहाड़ों की भूमि के नाम से मशहूर सरांडा का जंगल उड़ने वाली छिपकलियों की वजह से पर्यटकों और वन विज्ञान के छात्रों को लुभाता रहा है. इस जंगल में जानवरों, पक्षियों और सांपों की भरमार है.

दर्शनीय स्थल

टायबो प्रपात : यह जल प्रपात कोयल और कारो नदी के संगम स्थल मनोहरपुर में स्थित है. इस प्रपात के आसपास हाथियों का बड़ा जमावड़ा रहता है जो इसे काफी आकर्षक बनाता है.

किरीबुरू : यह सरांडा जंगल का मनोहारी स्थल है जहां एक हिल स्टेशन सा नजारा रहता है. सेल के गेस्ट हाउस से किरीबुरू पहाड़ियों के मनोरम दृश्यों को देखने का आनंद उठाया जा सकता है.

–बीरेंद्र बरियार ज्योति

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल अपनी अलग संस्कृति एवं सभ्यता के कारण भारत के राज्यों में अपनी विशेष अहमियत रखता है. इस के उत्तर में विशाल हिमालय व दक्षिण में बंगाल की खाड़ी है.

88,752 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला पश्चिम बंगाल अनेक शासकीय परिवर्तनों का मूक गवाह रहा है. मुगलों ने भी पश्चिम बंगाल पर काफी समय शासन किया. फिर अंगरेजों ने 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद पश्चिम बंगाल में अपने पैर जमाए और ईस्ट इंडिया कंपनी की नींव रखी. ईस्ट इंडिया कंपनी की आड़ में अंगरेजों ने धीरेधीरे इसे अपनी कर्मस्थली बना कर पूरे हिंदुस्तान पर कब्जा जमाना शुरू कर दिया.

पश्चिम बंगाल जूट उद्योग के कारण व्यापारियों के आकर्षण का केंद्र रहा है. एक समय था जब यहां जूट व अनेक अन्य कंपनियां थीं लेकिन धीरेधीरे यहां के उद्योगों पर ग्रहण सा लग गया. आज ज्यादातर कंपनियां बंद हो चुकी हैं.

साहित्य के क्षेत्र में पश्चिम बंगाल का नाम बहुत ही शिद्दत के साथ लिया जाता है. इस ने देश को अनेक महान साहित्यकार दिए हैं जो आज जीवित नहीं हैं लेकिन उन के द्वारा रचा गया साहित्य हमेशा साहित्य प्रेमियों को आकर्षित करता रहेगा.

स्वतंत्रता आंदोलन में पश्चिम बंगाल ने विशेष भूमिका निभाई है. सुभाष चंद्र बोस जैसे महान क्रांतिकारी भी पश्चिम बंगाल में ही जन्मे थे.

पर्यटन की दृष्टि से भी पश्चिम बंगाल का अपना अलग महत्त्व है. कोलकाता में अनेक पर्यटन स्थल हैं जहां पर्यटक साल भर आते रहते हैं.

कोलकाता

हुगली (गंगा) नदी के किनारे पर बसा कोलकाता अपनेआप में एक बड़ा पर्यटन स्थल है. लगभग 325 साल पहले जोब चार्नक द्वारा बसाई इस महानगरी का इतिहास भले ही ज्यादा बड़ा न हो लेकिन उन्हें जानेदेखे बिना बंगाल तो क्या भारत का इतिहास पूरा नहीं होता.

आज कोलकाता देश का सब से अधिक जनसंख्या वाला महानगर, उद्योग व व्यापार का बड़ा केंद्र तथा देश का प्रमुख बंदरगाह है. 1885 से 1912 तक कोलकाता ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी रहा था.

दर्शनीय स्थल

हावड़ा ब्रिज : यह कोलकाता का प्रवेशद्वार है. हावड़ा ब्रिज की खास बात यह है कि यह बिना खंभे का झूलता हुआ पुल है. भारत का अनोखा ब्रिज यही है. आरपार के मात्र 2 खंभों पर खड़े इस ब्रिज में लाखों नटबोल्ट लगे हैं. लगभग डेढ़ सौ साल से यह ब्रिज इसी तरह खड़ा है और अब तक अरबोंखरबों टन वजन झेल चुका है.

विक्टोरिया मेमोरियल : रेड रोड औ क्वींस वे को जोड़ने वाली सड़क पर स्थि विक्टोरिया मेमोरियल कोलकाता को ए अलग पहचान देता है. रानी विक्टोरिया के इ स्मृतिस्थल के साथ ब्रतानिया शासकों की या जुड़ी हैं. महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के बा उन की याद में वायसराय ने इसे बनवाने व योजना तैयार की और इस मेमोरियल व स्थापना के लिए 1906 में प्रिंस आफ वेल्स इस की नींव डाली थी. 15 साल तक इस निर्माण कार्य चला. हजारों की संख्या में मज

अथक मेहनत के बाद इस का निर्माण कार्य हुआ तो आम लोगों के लिए प्रवेश वर्जित 1921 में इसे आम लोगों के लिए खोला

बिड़ला तारामंडल : विक्टोरिया मेमोरियल ास ही स्थित इस तारामंडल की 22 मीटर कार छत पर अंतरिक्ष के ग्रह व नक्षत्र ाई देते हैं. यहां अलगअलग समय पर हिंदी, जी और बंगला में ग्रहनक्षत्रों के बारे में या जाता है. यहां हजारों साल बाद विभिन्न क्षत्रों की दशा क्या होगी इसे विशेष शो में ाया जाता है.



ाता का पूर्वी मेट्रोपोलिटन बाईपास पर इंस सिटी हर आयु वर्ग के दर्शकों के बीच ण का केंद्र है.

भारतीय संग्रहालय : जवाहरलाल नेहरू स्थित इस संग्रहालय की गिनती एशिया त बड़े संग्रहालय के रूप में होती है. यहां लककाल के प्राणियों के जीवाश्म हैं. के 20 फुट लंबे दांत और न्यूजीलैंड के चीन पक्षी का कंकाल भी यहां देखा जा है.

अलीपुर चिड़ियाघर : देश के सब से बड़े ड़ियाघर में बच्चों के लिए एक अलग से घर है. इस के अलावा चिड़ियाघर के पास ही एक मछलीघर भी है जहां विभिन्न प्रजातियों की मछलियां हैं.

राष्ट्रीय पुस्तकालय : अलीपुर चिड़ियाघर के सामने ही राष्ट्रीय पुस्तकालय है. यहां अलगअलग भाषा के लिए अलग से भवन हैं. यहां ऐतिहासिक महत्त्व की अनेक दुर्लभ पुस्तकें देखी जा सकती हैं.

बोटेनिकल गार्डन : गंगा के उस पार 213 एकड़ क्षेत्र में फैले इस उद्यान में 1,400 प्रजातियों के कुल 12 हजार पेड़पौधे हैं. उद्यान को 25 हिस्सों में बांटा गया है. विभिन्न हिस्सों में एकएक प्रकार के पेड़पौधे लगाए गए हैं. पाम हाउस में 110 प्रकार के ताड़ और नारियल की प्रजातियां हैं. इस उद्यान में प्राकृतिक संतुलन के उद्देश्य से 24 जलाशय बनाए गए थे जो भूमिगत रूप से आपस में जुड़े हुए हैं.

फोर्ट विलियम : 1696 में बने इस किले के साथ शहर का जन्म हुआ. यहां के गांव कोलकाता से इस का नाम अंगरेजों ने अपनी बोली की सुविधा के मुताबिक कैलकाटा या कलकत्ता कर दिया था. जहां फोर्ट विलियम है वहां काफी दूर तक मछुआरों की बस्ती हुआ करती थी. 310 साल पुरानी यह इमारत पर्यटकों में आकर्षण का खास केंद्र रहा है.

शहीद मीनार : तुर्की, मिस्र और सीरियायी

कोलकाता : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : यहां के लिए राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें उपलब्ध हैं. नेताजी सुभाष चंद्र बोस एअरपोर्ट यहां का मुख्य हवाई अड्डा है जो देश के सभी प्रमुख नगरों से वायुमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

अधिक जानकारी के लिए 'इंडियन एअरलाइंस' फोन-22110730, 22110810; 'सहारा इंडिया सदन' फोन-22829364 व 'जेट एअरवेज' फोन-22292227 से संपर्क कर सकते हैं.

रेल मार्ग : हावड़ा व सियालदह यहां के प्रमुख रेलवे स्टेशन हैं. ये दोनों रेलवे स्टेशन देश के सभी प्रमुख नगरों से रेल मार्ग से जुड़े हुए हैं. कोलकाता में घूमने के लिए भूमिगत मेट्रो रेल की यात्रा का लुत्फ उठाया जा सकता है. दमदम और टालीगंज से कोलकाता शहर भ्रमण करने के लिए अच्छी मेट्रो रेल सेवा है.

सड़क मार्ग : बनारस, पटना, हजारीबाग, गुवाहाटी, दार्जिलिंग, सिलीगुड़ी, गंगटोक, काठमांडू, भुवनेश्वर आदि नगरों से यहां के लिए टूरिस्ट बस सेवाएं उपलब्ध हैं. आसपास के स्थानों से यहां बंगला राज्य परिवहन की बसें मिल जाती हैं. पश्चिम बंगाल राज्य परिवहन निगम कार्यालय, फोन-22483030 से सड़क मार्ग संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

जल मार्ग : कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर की समुद्री यात्रा का आनंद भारतीय शिपिंग कारपोरेशन द्वारा चलाए जा रहे समुद्री जहाज से लिया जा सकता है.

कहां ठहरें : कोलकाता में उत्तम व मध्यम दोनों तरह के होटल हैं जहां पर्यटक अपनी सुविधानुसार ठहर सकते हैं. 'ताज बंगाल', फोन-22233939; 'ओबेराय ग्रांड', फोन-22492323; 'एअरपोर्ट अशोक', फोन-25119111; 'द पार्क', फोन-22497336; 'गोल्डन पार्क', फोन-22883939; 'हिंदुस्तान इंटरनेशनल', फोन-22472394; 'ग्रेट ईस्टर्न', फोन-22482311 आदि प्रमुख होटल हैं.

कब जाएं : यहां साल भर कभी भी आयाजाया जा सकता है. अधिक जानकारी के लिए भारत सरकार का क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय एंबेसी, 4 शेक्सपियर सरणी, पश्चिम बंगाल टूरिस्ट ब्यूरो, फोन-22825813 से संपर्क कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 033.

वास्तुशिल्प का मिलाजुला स्वरूप है शहीद मीनार. इस इमारत की स्थापना 1828 में हुई थी. 1814 में नेपाल युद्ध में विजयी बने सर डेविड आक्टरलोनी के नाम पर यह मीनार बनी जिस का नाम बाद में शहीद मीनार रख दिया गया.

शांतिनिकेतन

सब जानते हैं कि बंगाल की संस्कृति में कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर की एक अमिट छाप है. अगर शांतिनिकेतन की बात की जाए तो रवींद्रनाथ को छोड़ कर इस भूमि की कल्पना ही नहीं की जा सकती. कहते हैं शांतिनिकेतन की हवा में संगीत, नृत्य, नाटक और साहित्य रचाबसा है.

1862 में नौका यात्रा के दौरान देवेंद्रनाथ ठाकुर पहली बार यहां आए थे और यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित हो कर उन्होंने अपने लिए यहीं एक छोटा सा घर बना लिया. प्रकृति के बीच अपने इस घरौंदे का नाम उन्होंने 'शांतिनिकेतन' रखा था.

देवेंद्रनाथ के पुत्र रवींद्रनाथ भी यहां की आबोहवा से बहुत प्रभावित हुए. उन की साहित्यसाधना में यहां के प्राकृतिक सौंदर्य

उत्प्रेरक का काम किया. इस के बाद 22 दिसंबर, 1901 में उन्होंने शांतिनिकेतन में एक विद्यालय की स्थापना की. जिस का नाम उन्होंने 'ब्रह्मचर्य' रखा. बाद में इस का नाम 'विश्वभारती' रखा गया.

दीघा

पश्चिम बंगाल की खाड़ी में बसे दीघा पर्यटन स्थल को लांग ड्राइव या पिकनिक स्थल के रूप में लिया जाता है. मेदिनीपुर के दीघा समुद्रतट पर सागर की लहरों के साथ अठखेलियां करने और सुनहरे बीच पर घूमने की इच्छा पूरी हो सकती है. दीघा का मूल नाम बारीकूल है. यहां का सूर्योदय और सूर्यास्त मनमोहक होता है.

यात्रा की सुविधा : कोलकाता के एस्प्लानेड और उल्टाडांगा से दीघा के लिए सीधी बस जाती है. समय 4 घंटे का लगता है. अभी कुछ दिन पहले हावड़ा से दीघा के लिए ट्रेन सेवा भी शुरू हुई है. ट्रेन से 2 घंटे में यहां पहुंचा जा सकता है.

दीघा के विस्तृत साफसुथरे समुद्रतट पर दूरदूर तक पैदल चला जा सकता है. यहां घुड़सवारी और घोड़ागाड़ी की भी सवारी की जा सकती है और सागर के किनारेकिनारे से उड़ीसा की सीमा में भी प्रवेश किया जा सकता है.

दीघा के सागरतट पर नहाने व तैरने की सुविधा उपलब्ध है. सैलानी चाहें तो घंटों नहानेतैरने का मजा ले सकते हैं. ज्वार का पानी जब चढ़ता है तो समुद्र में नहीं रहना ही बेहतर है. इस दौरान पर्यटक यहां के 'झाऊवन' की सैर कर सकते हैं.

न्यू दीघा : यह दीघा का नया पर्यटन स्थल है. यहां एक पार्क है, साथ में झील भी. इस झील में बोटिंग का मजा लिया जा सकता है. सैलानी चाहें तो यहां होटल की बुकिंग करा सकते हैं.

शंकरपुर : दीघा से लगभग 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान फिशिंग प्रोजेक्ट के रूप में अधिक जाना जाता है. हाल ही में इसे भी बीच रिसोर्ट के रूप में विकसित किया गया है. सर्दी के मौसम में कोलकाता से पिकनिक मनाने के लिए लोग यहां आते हैं.

चंदनेश्वर : दीघा से 8 किलोमीटर की दूरी पर चंदनेश्वर भी एक पर्यटन स्थल है. यह अध्यात्मवादियों के लिए अच्छा पर्यटन स्थल है. चंदनेश्वर में एक पुराना मंदिर भी है.

पर्यटन का समय : नवंबर से मार्च तक दीघा जाने का समय बेहद अनुकूल है. लेकिन पर्यटक यहां साल भर आते रहते हैं. पिछले साल सुनामी के बाद समुद्र में उठी ऊंचीऊंची लहरों को देखने के लिए बहुत सारे पर्यटक दीघा में जमा हुए थे. कोलकाता से 187 किलोमीटर की दूरी पर दीघा का समुद्रतट एक आसान और अपेक्षाकृत कम खर्चीला पर्यटन स्थल है.

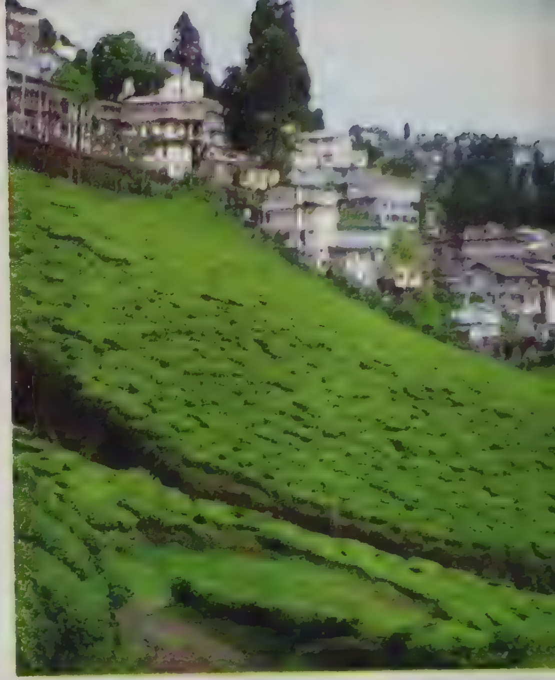
दीघा समुद्रतट पर सागर की लहरों के साथ अठखेलियां करने की इच्छा पूरी हो सकती है.



दार्जिलिंग

कंचनजंघा की गोद में बसा दार्जिलिंग भारत के सब से खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है. पर्यटन के शौकीन यहां एक बार जरूर आते हैं. यहां की खिलौना गाड़ी कई हिंदी फिल्मों का हिस्सा बन चुकी है. यह ट्रेन यहां के प्रमुख आकर्षणों में है. चाहें तो सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग तक का सफर इस ट्रेन में बैठ कर वादियों की खूबसूरती को आंखों में बसाते हुए सैरसपाटे का मजा दोगुना कर सकते हैं.

1881 में यहां पहली बार ट्वाय ट्रेन चलाई गई और तब इसे विश्व का सब से रोमांटिक रेल रोड नाम दिया गया. यह रेल लाइन 7,407 फुट की ऊंचाई तक जाती है. इस ट्रेन से सफर करते हुए कंचनजंघा की चमकती चोटी को देखा जा सकता है. 100 सालों से अधिक का इतिहास अपने में समेटे यह ट्रेन आज भी इसी रूप में पटरी पर दौड़ रही है जैसे अपने शुरुआती दिनों में दौड़ा करती थी.



कंचनजंघा की गोद में बसे दार्जिलिंग की खूबसूरत वादियों में सैरसपाटे का मजा ही कुछ और है.

दर्शनीय स्थल

टाइगर हिल्स : यह दार्जिलिंग का सब से बड़ा आकर्षण का केंद्र है. शहर से 11 किलोमीटर दूर यह वह स्थान है जहां से सूर्योदय देखने के लिए पर्यटक खासतौर से आते हैं. यहां

दार्जिलिंग : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : बागडोगरा यहां का नजदीकी हवाई अड्डा है जो दिल्ली, कोलकाता, गुवाहाटी से जुड़ा हुआ है. बागडोगरा के लिए इन शहरों से वायु सेवाएं उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग : न्यूजलपाईगुड़ी यहां का निकटतम स्टेशन है.

सड़क मार्ग : यहां का निकटतम बस अड्डा सिलीगुड़ी है. सिलीगुड़ी से टैक्सी, बस, जीप आदि से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है. यहां के लिए पर्यटन विभाग कई सस्ते टूर पैकेज आयोजित करता है.

कहां ठहरें : यहां सस्ते और महंगे दोनों तरह के होटल व गेस्ट हाउसों के अलावा सरकारी टूरिस्ट लौज भी उपलब्ध हैं. 'सेवन सेवंटीज', फोन-254717; 'सांग्रिला', फोन-254149; 'नीलकमल', फोन-254837 आदि प्रमुख होटल हैं.

कब जाएं : यहां भ्रमण का उपयुक्त समय मई से जून तथा सितंबर से नवंबर मध्य तक है. हलके ऊनी कपड़े यहां के लिए सुविधाजनक रहते हैं. पश्चिम बंगाल पर्यटन विकास निगम लि., नेताजी इनडोर स्टेडियम (वेस्ट ब्लाक) कोलकाता, पश्चिम बंगाल पर्यटन नेहरू रोड, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) फोन-254056 से पर्यटन संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं.

एस.टी.डी. कोड : 0354.



कंचनजंघा की चोटियां बहुत ही खूबसूरत जर आती हैं.

प्राकृतिक ऐतिहासिक संग्रहालय : इस ग्रहालय में 4,300 प्रकार के जीवजंतुओं के मूने देखे जा सकते हैं. यहां हिमालय और गाल में पाए जाने वाले प्राणियों के नमूने हैं.

सेंचल लेक : टाइगर हिल के करीब 160 फुट की ऊंचाई पर यह एक बहुत ही बसूरत झील है.

हैप्पी वैली एस्टेट : यहां बागानों से चुन र आई चाय पत्तियों की छंटाई से ले कर उन्हें खाने और उन की अलगअलग वेराइटी छांटने काम अत्याधुनिक मशीनों से होता है. एस्टेट अधिकारी की अनुमति से यहां यह सब देखा सकता है.

मानभक्ता : विश्व की तीसरी सब से ऊंची टी कंचनजंघा को यहां से भी देखा जा कता है.

चिड़ियाघर : शहर से 2 किलोमीटर की पर स्थित इस जैविक उद्यान में बहुत सारे भ पशुपक्षी रखे गए हैं. यह भारत का मात्र चिड़ियाघर है जहां साइबेरियाई बाघ हैं. के अलावा लाल पांडा, स्नो लेपर्ड, ग्रेट र्ड, स्नो याक यहां के मुख्य आकर्षण हैं.

बोटेनिकल गार्डन : इस उद्यान की गिनती या के जानेमाने वानस्पतिक उद्यानों में की ी है. यहां हिमालयन क्षेत्र के बहुत सारे पेड़पौधे, जड़ीबूटियों और आर्किड के फूल हैं.

हिमालय पर्वतारोहण संस्थान व संग्रहालय : यहां पर्वतारोहण में इस्तेमाल किए गए पुराने से ले कर आधुनिक साधनों और औजारों का बढ़िया संग्रह है. एवरेस्ट विजेता शेरपा तेनजिंग द्वारा पर्वतारोहण में इस्तेमाल किए गए औजार भी यहीं रखे गए हैं.

रोप वे : भारत का यह पहला रोप वे है. इस रोप वे से नार्थ प्वाइंट, जोकि 7 हजार फुट ऊंचा है, से सिंगला बाजार, जिस की ऊंचाई मात्र 800 फुट है, तक की सैर की जा सकती है.

जलदापाड़ा अभयारण्य : यह पर्यटन स्थल गैंडों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है. यहां अक्तूबर से मई तक घूमना अच्छा रहता है. इस समय नई घास पैदा होने से अभयारण्य के जानवरों का आना बढ़ जाता है. अभयारण्य में घूमने के लिए होलोंग से हाथी सफारी ली जा सकती है.

मिरिक : सिलीगुड़ी और बागडोगरा एअरपोर्ट से यह स्थान 55 किलोमीटर की दूरी पर है. यह भी हिल स्टेशन के तौर पर जाना जाता है. यहां चारों ओर चाय बागान, संतरे व इलायची के बगीचे भरे पड़े हैं.

सिंगला : यह खूबसूरत पिकनिक स्थल रंगीत नदी के किनारे पर है. यद्यपि समुद्रतल से इस की ऊंचाई बहुत अधिक नहीं है पर यहां की आबोहवा पर्यटकों को सुकून देती है.

-साधना शाह

पूर्वोत्तर राज्य

प्रकृति ने पूर्वोत्तर राज्यों को जो हुस्न बख्शा है वह अपनेआप में बेमिसाल है. यहां के हरेभरे मैदान, पर्वत शृंखलाएं, घने जंगल पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं. यहां के लोग सरल स्वभाव के होते हैं. वे आज भी अपनी परंपराओं और संस्कृति को कायम रखे हुए हैं.

सिक्किम, असम, अरुणाचल, नागालैंड, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर व मिजोरम यानी 8 राज्यों से मिल कर बना यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से विशेष अहमियत रखता है. भारत के दूरदूर के राज्यों से पर्यटक यहां आ कर सुकून महसूस करते हैं. यहां आ कर ऐसा प्रतीत होता है कि हम किसी दूसरी दुनिया में आ गए हैं. हर राज्य का अपना अलग नृत्य व संगीत होता है. विशेष अवसरों पर यहां नृत्य का आयोजन होता है, जिन्हें देख कर पर्यटक प्रफुल्लित हुए बगैर नहीं रहते.

सिक्किम

सिक्किम की राजधानी गंगटोक अपनेआप में ऐसी सुंदर जगह है जहां एक बार जाएं तो वापस आने का दिल ही नहीं चाहेगा. लामाओं के हाथों में घूमता हुआ चक्र, रहस्यमय कोहरे में हवा के साथ फड़फड़ाते पताके, वादियों में बर्फ की दूरदूर तक फैली झक सफेद चादर, पैगोड़ा से छतों वाले घरों की कतार, सड़कों पर भोली मुसकान लिए पहाड़ी ज्वैलरी और मसाले बेचते लोगों को देख कर किसी का भी दिल मचल जाए. यहां के बाजारों में विदेशी सामानों की भरमार देख कर खरीदारों की बाछें खिल जाती हैं.

सिक्किम आने के लिए भारतीय पर्यटकों को परमिट की जरूरत नहीं पड़ती. हां, विदेशी सैलानियों को सभी भारतीय दूतावासों से 15 दिन के लिए सहज ही परमिट मिल जाता है. सिक्किम पर्यटन कार्यालय के अलावा रांगपो शहर के पर्यटन अधिकारी से सिक्किम में प्रवेश के बाद 15 दिन का परमिट पाया जा सकता है.

गंगटोक

दार्जिलिंग से गंगटोक पहुंचना आसान है इसलिए आमतौर पर दार्जिलिंग जाने वाला पर्यटक गंगटोक भी चला जाता है. गंगटोक लौफ्टी हिल के नाम से जाना जाता है. बताया जाता है कि गंगटोक मोनेस्ट्री बनाने के लिए 1716 में पहाड़ को काट कर समतल भूमि बनाया गया था. इस के बाद यहां धीरेधीरे लोग बसने लगे और यह पूरी तरह से एक शहर में तब्दील होता चला गया. यहां के आर्किड के फूल पर्यटकों के लिए विशेष माने रखते हैं. वैसे तो पूरे सिक्किम में आर्किड के फूलों की भरमार देखने को मिल जाएगी लेकिन खास गंगटोक में एक



आर्किड के फूलों सा सुंदर गंगटोक नगर अपनी विशिष्ट परंपरा व संस्कृति के लिए जाना जाता है.

केड सेंचुरी भी है. इस के अलावा यहां ल्ड लाइफ सेंचुरी, फ्लोरा, त्सोमगो लेक, ग, योकसुम जैसे दर्शनीय स्थल हैं.

असम

असम को पूर्वोत्तर राज्यों का गेटवे कहा जाता है. प्राचीन इतिहास के अनुसार इस नाम प्राग्ज्योतिषपुर था. थाईलैंड के अहोम ति द्वारा इस क्षेत्र पर कब्जा जमा कर अपना कायम करने के बाद से इसे असम या नाम के नाम से जाना गया. इसलिए यहां थाई कृति का असर देखने को मिलता है. असम सब से बड़ा आकर्षण हरेभरे जंगल, चाय ान और विभिन्न प्रकार का वन्य जीवन है.

असम की 40 फीसदी आबादी बाहर से कर बसी मानी जाती है. मुगल आक्रमण को के अहोम साम्राज्य ने बखूबी झेला था कन 1824 से चाय बागान के बहाने असम में रजों के प्रवेश के बाद से इस साम्राज्य का शुरू हुआ.

गुवाहाटी

असम की राजधानी गुवाहाटी ब्रह्मपुत्र के किनारे स्थित है. देश के महानगरों से यह शहर हर तरह के यातायात से जुड़ा हुआ है. इस खूबसूरत शहर में पत्थरों के बने रास्ते, घाट तथा अनेक तरह की कलाकृतियां स्थापत्य कला का अनूठा नजारा पेश करती हैं. गुवाहाटी में आज भी सुपारी के पेड़ और पान की बेल बहुतायत में पाई जाती है. इसीलिए तो इस का नाम गुवाहाटी पड़ा है.

दर्शनीय स्थल

कामाख्या मंदिर : यह मंदिर गुवाहाटी से उत्तरपश्चिम में शहर से 8 किलोमीटर दूर पहाड़ पर स्थित है. यह मंदिर बहुत पुराना है इसलिए यहां धर्म की दुकानदारी भी खूब चलती है.

मदन कामदेव : यह शहर से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. इसे एक रहस्य माना जाता है. इस अद्भुत खंडहर के इतिहास की बहुत ही कम जानकारी है. इसे असम का खुजराहो कहा जाता है.

गुवाहाटी से बाइहाटा : चारियाली 35 किलोमीटर दूर है. यहां से 5 किलोमीटर की दूरी पर मदन कामदेव सरकारी निजी बसें बाइहाटा-चारियाली के लिए हर 15 मिनट पर हैं. वैसे ट्रैवेल एजेंसियों की मदद से भी जाया जा सकता है.

यहां अक्तूबर से मई तक के बीच आना सब से अच्छा समय है.

हाजों : ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर स्थित हाजों गुवाहाटी से 32 किलोमीटर दूर है. यहां बहुत से मंदिर हैं.

माजुली : विश्व का सब से बड़ा नदी द्वीप

...म के चाय बागान विश्वप्रसिद्ध हैं. इन की ...सूरती देखते ही बनती है.



गुवाहाटी : महत्त्वपूर्ण जानकारी

वायु मार्ग : यहां इंडियन एअरलाइंस और जेट एयरवेज के जहाज द्वारा जा सकते हैं.

रेल मार्ग : दिल्ली से राजधानी एक्सप्रेस, नार्थ ईस्ट एक्सप्रेस, ब्रह्मपुत्र मेल आदि से गुवाहाटी पहुंचा जा सकता है.

सड़क मार्ग : यह सड़क मार्ग से पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों से जुड़ा हुआ है.

कहां ठहरें : गुवाहाटी में ठहरने के लिए बहुत सारे टूरिस्ट लौज और होटल हैं. 'होटल डायनेस्टी' फोन-2522112; 'होटल ब्रह्मपुत्र अशोक', फोन-2602281-85; 'होटल विकास इंटरनेशनल', फोन-2600338; 'होटल राजदूत', फोन-2542659; 'प्रशांति टूरिस्ट लौज', फोन-2544475.

है. यह स्थान वैष्य व मठों के लिए मशहूर है.

चिड़ियाघर : पहाड़ी पशुपक्षियों को देखने के लिए यह चिड़ियाघर उपयुक्त स्थान है. रेलवे स्टेशन से इस स्थान की दूरी 5 किलोमीटर है.

निमतिघाट : यह जोरहाट से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर है. यह स्थान प्रवासी पक्षियों के लिए जाना जाता है.

एंगलिंग : यहां मछली के शिकार के साथ नदी में बोट रेसिंग, रिवर राफ्टिंग फेस्टिबल के जरिए एडवेंचर का मजा लिया जा सकता है.

असम के बिहू नृत्य, माजुलीपर्व, हाथी पर्व, ब्रह्मपुत्र तट पर्व, टी फेस्टिवल, रंगोलीउत्सव, डेहिंग पटकी पर्व काफी मशहूर हैं, जिन में देशविदेश से पर्यटक बड़ी संख्या में भाग लेते हैं.

त्रिपुरा

भारत के अंतिम छोर पर बसा यह राज्य अपनेआप में बहुत सारे रहस्यों को समेटे हुए है.

भारत के इस छोटे से राज्य में कम से कम 19 आदिवासी जातियों का निवास है.

अप्रैल यानी बैशाख के महीने के 7वें दिन यहां गरिया पूजा का आयोजन होता है. इस त्योहार के मौके पर गरिया नृत्य होता है.

अगरतला

त्रिपुरा राज्य की राजधानी अगरतला एक छोटा सा शहर है जो देश के अन्य शहरों से सड़क, रेल व वायुमार्ग से जुड़ा हुआ है. अगरतला का मौसम सुहावना होता है. पर्यटन की दृष्टि से यहां सितंबर से मार्च का समय उपयुक्त है.

दर्शनीय स्थल

उज्जयंत महल : अगरतला शहर के बीच में बना यह महल वर्तमान में विधानसभा भवन

झील के बीच में बने नीर महल में मुगल वास्तुकला का सुंदर प्रतिरूप देखा जा सकता है.



महल का निर्माण महाराजा राधाकिशोर
रवाया था. यह महल सातमंजिला है और
 बीच में 3 गुंबद बने हुए हैं. यह महल
सलिम वास्तुशिल्प का अद्भुत नमूना है.
के अंदर बने बाग व फौआरे मुगल गार्डन
ाद को ताजा करते हैं.

कुंजबन महल (बैजायंत महल) : इस
में अब त्रिपुरा के राज्यपाल का सरकारी
 है. इसे महाराज वीरेंद्र किशोर माणिक्य
र ने 1917 में बनवाया था.

सिपाही जल वन्य जीव अभयारण्य : यह
ीव अभयारण्य लगभग साढ़े 18 वर्ग
मीटर के दायरे में फैला है और अगरतला से
कलोमीटर की दूरी पर है. यहां 150 तरह के
ों के अलावा खास तरह के बंदर भी देखने
मलते हैं.

नीर महल : झील के बीचोंबीच बना यह
1930 में महाराजा वीर विक्रम किशोर
क्य ने बनवाया था.

मेघालय

ृति की विविधताओं के राज्य मेघालय को
ादलों का देश भी कहा जाता है. इस प्रदेश
र घाटियां हैं, आकर्षक झरने और हरेभरे
, यानी यहां वह सभी कुछ देखने को है
क सैलानी पर्यटन के दौरान देखना चाहता
ालय में अनन्नास, संतरा, केला, काजू,
आदि का उत्पादन होता है. इस राज्य के
नक वातावरण को देख कर इसे पूर्व का
लैंड कहा जाता है. 7 जिलों में बंटे
य में लोग मेहमानों का सत्कार करना
की बात समझते हैं.

शिलांग

लय की राजधानी शिलांग है. खासी की
ाड़ियों में 5 हजार फुट की ऊंचाई पर
होने के कारण शिलांग गरमियों में भी
ठंडा रहता है. शायद यही वजह थी जो
ों ने चेरापूंजी को छोड़ कर शिलांग को
मुख्यालय बनाया था. यही नहीं अंगरेजों
4 में शिलांग को असम की भी राजधानी
या था.

यह शहर पहाड़ियों पर ऊंचीनीची जगह में बसा हुआ है जिस कारण यहां घूमने का मुख्य साधन टैक्सियां ही हैं.

दर्शनीय स्थल

वाड्र्स लेक : **शहर के बीचोंबीच स्थित यह झील वैसे तो कृत्रिम है पर है बहुत खूबसूरत. जिस का निर्माण हाज किंगसन ने करवाया था. झील के आसपास हरियाली फैली हुई है. पानी इतना साफ है कि पानी के अंदर की मछलियां दिखाई देती हैं. अवकाश के दिन स्थानीय लोग यहां आ कर पिकनिक मनाते हैं.**

हैदरी पार्क : **हैदरी बेगम के नाम पर बना यह पार्क सदर अस्पताल के नजदीक है. इसी पार्क से कुछ दूरी पर राज्य संग्रहालय है.**

स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी : **पढ़ने के शौकीनों के लिए यह उपयुक्त स्थान है. यहां मेघालय और आसपास के इलाकों की ऐतिहासिकता की झलक मिलती है. पौप और रौक का मिलाजुला रूप भी सैलानी यहां देख सकते हैं.**

शिलांग पीक : **यह शहर से 10 किलोमीटर की दूरी पर है. 1,960 मीटर की ऊंचाई वाला यह पीक खूबसूरत पर्यटन स्थल है. यहां से शिलांग का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है. शाम के समय यहां से पूरा शिलांग क्रिसमस के पेड़ की तरह रोशनी से झिलमिलाता नजर आता है.**

ईगल फाल्स : **यह जलप्रपात शिलांग के करीब ही है. इस प्रपात को देख कर लगता है जैसे कोई बड़ी चील अपना पंख पसारे उड़ रही है. पर्यटक इसे ईगल फाल्स के नाम से जानते हैं. इस के अलावा हैप्पीवैली के नजदीक स्वीटफाल्स, विशप, ऐलीफैंटा फाल्स पर भी सैलानियों की भीड़ लगी रहती है.**

उभीयम झील : **शिलांग गुवाहाटी मार्ग पर 16 किलोमीटर दूर यह कृत्रिम झील शिलांग की सब से बड़ी झील है जो स्थानीय लोगों में पिकनिक मनाने के लिए मशहूर है.**

अरुणाचल प्रदेश

पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में अरुणाचल प्रदेश क्षेत्रफल के मामले में सब से बड़ा राज्य है. इस का सामरिक महत्त्व भी है क्योंकि इस से सटी चीनम्यांमार व भूटान राज्यों की अंतर्राष्ट्रीय

सीमा है. 5 नदियों वाले इस प्रदेश की नैसर्गिक खूबसूरती देखते ही बनती है. जगहजगह हरियाली लिए जंगल, पहाड़ों की गोद से निकली शोर मचाती नदियां, खिलखिलाते पहाड़ों का समूह, बर्फ से ढकी पहाड़ों की चोटियां मिल कर इस तरह की अनोखी छटा बिखेरती है कि पर्यटक इन्हें देखे बिना रह ही नहीं सकता.

अरुणाचल की जनजातीय सभ्यता और संपदा को सुरक्षित रखने के लिए इस राज्य में अन्य हिस्सों से आने वालों पर नियंत्रण रखा जाता है. यहां भारत के नागरिकों को भी आने के लिए इनर परमिट लेना पड़ता है. यहां आर्किड की विभिन्न प्रजातियों के पेड़ और फूल देखने को मिलेंगे. इस सेंटर की सैर अपनेआप में अद्भुत अनुभव होता है. यह आर्किडोरियम कहलाता है. यह राज्य का सब से बड़ा आर्किड फूलों का प्रदर्शन केंद्र है.

ईटानगर

अरुणाचल की राजधानी ईटानगर में 14वीं सदी का ऐतिहासिक ईटा फोर्ट है. बताया जाता है कि इस किले को 80 लाख ईंटों से बनाया गया था. इस का प्राचीन नाम मायापुरी है जिस का अस्तित्व उ.पू. 14वीं 15वीं सदी में था.

गेकर सिंधी (गंगा लोक) ईटानगर का सब से बड़ा आकर्षण है. तावांग, जसवंतगढ़, जिरो, पासीघाट इस के मुख्य दर्शनीय स्थल हैं.

मिजोरम

मिजोरम भारत का अपेक्षाकृत एक नया राज्य है. 29 फरवरी, 1987 को इस 23वें राज्य की स्थापना हुई.

त्रिपुरा की तरह मिजोरम को भी भारत का एक छोर कहा जा सकता है. म्यांमार और बंगलादेश के बीचोंबीच स्थित है मिजोरम. 1972 में इसे असम से अलग कर केंद्र शासित राज्य बनाया गया था, जो बाद में पूर्ण राज्य बन गया.

मिजोरम के निवासियों को मिजो कहते हैं, जिस का अर्थ होता है पहाड़ी आदमी.

मिजोरम की राजधानी आइजोल है. यह समुद्रतल से लगभग 4 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है. तामदिल, वानत्वांग जल प्रपात, चपशिवाहर आइजोल के दर्शनीय स्थल हैं.

नागालैंड

नागालैंड मुख्य रूप से जनजातियों का प्रदेश है और हर जनजाति के अपनेअपने नियम हैं. 19वीं सदी में अंगरेजों ने इसे अपने अधीन कर लिया था. 1957 में यह संघशासित क्षेत्र बना और 1961 में इसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिला. इस प्रदेश की राजधानी कोहिमा है पर दीमापुर इस राज्य का प्रवेशद्वार है.

कोहिमा से 15 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण में जाप्फू पीक है जिस की ऊंचाई 3,048 मीटर है. जाप्फू पर्वत शृंखलाओं में रोडोडेंड्रोन के सब से ऊंचे पेड़ पाए जाते हैं, जिन्हें गिनीज बुक में स्थान प्राप्त हैं.

मणिपुर

मणिपुर का 67 फीसदी हिस्सा खूबसूरत फूलों, वनस्पतियों और जंगलों से अटा पड़ा है. यहां पाइन के जंगल हैं, जो 900 से ले कर 2,700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित हैं. यहां दुर्लभ किस्म के पेड़पौधे और पशुपक्षी पाए जाते हैं. यहां पाया जाने वाला सिरोई लिलि बहुत ही खूबसूरत है. इस के अलावा क्लाउडेड लेपर्ड, हौर्नबिल, स्पाटेड लिनशांग, बारबैक्ड कबूतर जैसे कई अलग तरह के पशुपक्षी भी हैं जो मणिपुर में देखे जा सकते हैं.

यहां पहाड़ों की ऊंचाई में भारी असमानता है इसलिए यहां की आबोहवा एक जैसी नहीं है. अलगअलग जगहों पर मौसम का मिजाज भी अलग ही देखा जाता है. मणिपुर में लगभग 500 प्रकार के आर्किड के पौधे पाए जाते हैं. रंगबिरंगे आर्किड के फूल यहां की फिजा की शोभा में चार चांद लगाते हैं. आमतौर पर मणिपुरी घरों में आर्किड के गुलदस्ते सजाए जाते हैं.

मणिपुर पर्वत्योहारों का राज्य है. यहां का सर्वधर्म समभाव देखने में बेजोड़ है. हिंदुओं के त्योहारों के साथ ईद रमजान और क्रिसमस भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है.

मणिपुर की राजधानी इंफाल है.

–साधना शाह

बच्चों के मुख से

ा 5 वर्षीय पुत्र कृतिक बहुत बातूनी है. एक दिन में चर्चा चल रही थी कि ई लोगों को उपनाम के रण घर में कुछ और नाम से ाया जाता है. जैसे मुझे घर पिंकी कहते हैं और कृतिक कन्नू.

यह सुन कर कृतिक चानक बीच में बोल पड़ा, ां, पापा को भी नानाजी वर साहब इसीलिए कहते न क्योंकि पापा हमारी पीकिताबों के कवर ाते हैं.''

उस के मुंह से यह बात कर हमारा हंसहंस कर हाल हो गया. दरअसल, रे यहां मारवाड़ में दामाद कुंवर साहब कहने की रा है. –वंदना व्यास

*

त बहुत पुरानी है. एक बार मेरी सहेली मेरे घर . मैं ने अपने दोनों बच्चों बरफी लेने पास की वाई की दुकान पर भेजा. के घर आने पर मैं ने देखा लिफाफे में केवल बरफी 2 ही पीस हैं.

मैं ने पूछा, "10 रुपए में ी ही बरफी लाए हो?" इस मेरी 6 वर्षीय बेटी संध्या ा, "अपने हिस्से की हम रास्ते में ही खा कर आए इतना सुनते ही हम दोनों हंसीं. --निर्मल कांता गुप्ता

मेरे पति को फिल्म देखना पसंद नहीं है. एक बार मेरे व बच्चों के आग्रह पर वे बड़ी मुश्किल से फिल्म देखने गए. टिकट ले कर जब हम सिनेमाहाल के अंदर पहुंचे तो वहां इक्केदुक्के लोग ही नजर आए, हाल लगभग खाली था. गुस्से में मेरे पति गुजराती में एक मुहावरा बोल गए, 'आहियां तो कारो कागड़ो भी नथी.' इस का मतलब यह है कि 'यहां तो काला कौआ तक नहीं आया है', अर्थात कोई भी नहीं आया है.

इतना सुनते ही मेरी 5 वर्षीय बेटी ने बड़े भोलेपन से पूछा, "क्या यहां काले कौवे भी फिल्म देखने आते हैं." उस की यह बात सुन कर मैं मुंह छुपा कर हंसने लगी और मेरे पति भी मुसकराए बिना न रह सके.

–लीला चौहान

*

मेरे 3 वर्षीय पुत्र टाम ने बैठना, चलना, बोलना आदि काफी देर से शुरू किया है. पर अब जब बोलता है तो काफी मजेदार बातें करता है.

हमारे यहां टैलकम पाउडर का 400 ग्राम वाला बड़ा डब्बा आता है. बच्चों की आदत है कि नहाने के बाद बदन पर पाउडर लगा कर ही कपड़े पहनते हैं. उस दिन पाउडर समाप्त हो गया था तो मैं ने काम वाली को भेज कर पड़ोस की दुकान से पाउडर मंगा लिया. वहां बड़ा डब्बा न मिलने के कारण वह 100 ग्राम वाला छोटा डब्बा ले आई.

उस के आने पर टाम ने पूछा, "दीदी, का लाई है?" मैं ने कहा, "देखो, दीदी तुम्हारे लिए पाउडर लाई है."

इस पर उस ने पुराने और नए दोनों डब्बों को देख कर कहा, "दीदी, पाउडर नहीं लाई है, पाउडर का बच्चा लाई है." उस का छोटे डब्बे को पाउडर का बच्चा कहना सुन कर हम सब हंसे बिना न रह सके.

–पापिया हालदार ●

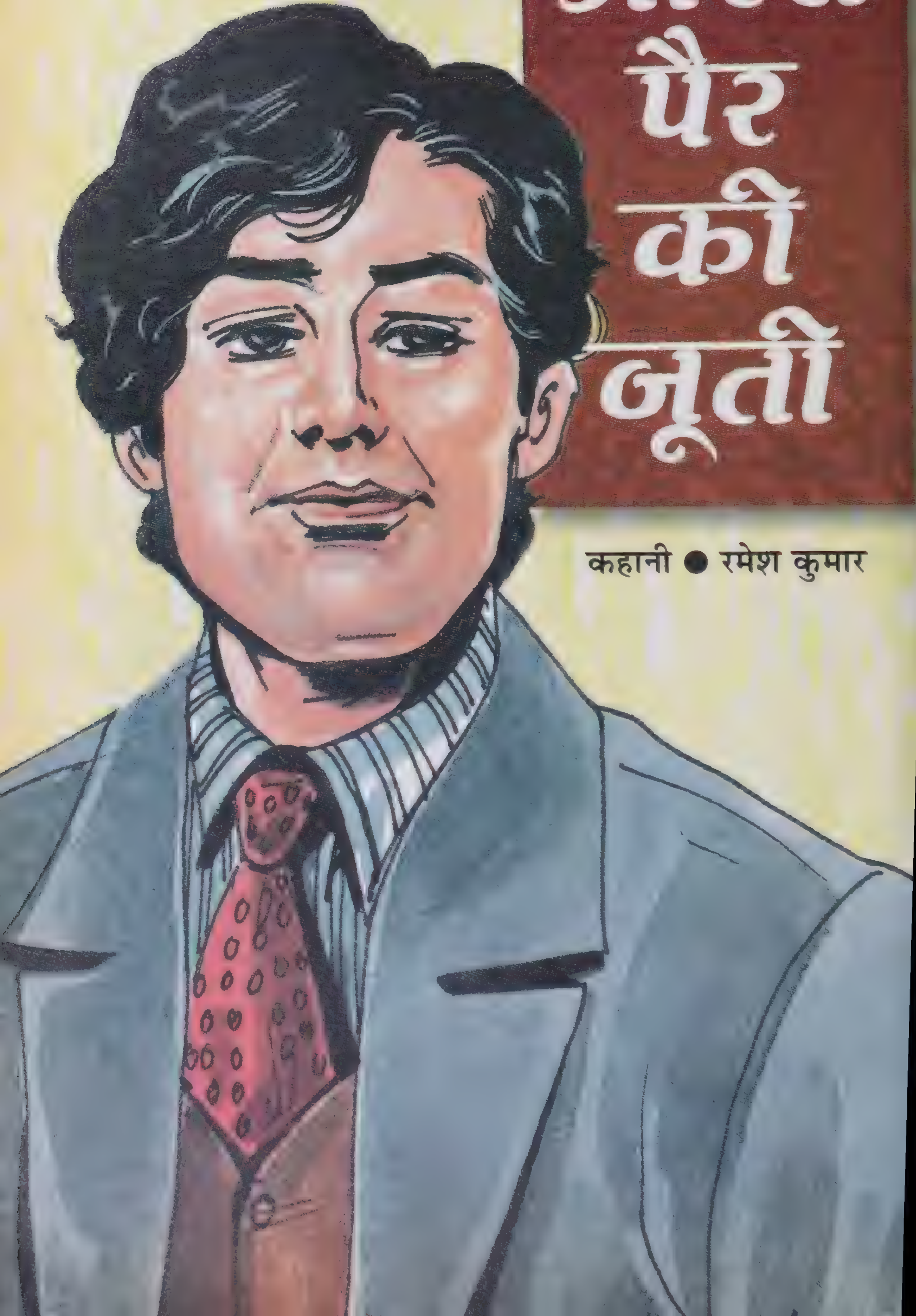
आप भी लिखिए

इस स्तंभ में अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित अनुभवों पर 100 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पता है:

सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

औरत पैर की जूती

कहानी ● रमेश कुमार



अपने चैंबर में बैठ कर मेज पर रखी फाइलों को निबटा रहा था. उसी समय नरेश एक रौबदार मूंछ व्यक्ति के साथ कमरे में घुसा. लंबा और घुंघराले बालों वाले उस व्यक्ति म्र कोई 40 साल के आसपास की ही थी. चेहरे से परेशान उस व्यक्ति परिचय नरेश ने कराया, "यह शजी हैं, गुजराती होटल के मैनेजर. क मकानमालिक ने इन का सारा न घर से निकाल कर सड़क के रे रखवा दिया है. बेचारे, बहुत त में हैं. सर, इन की मदद कर दें."

"इन्होंने मकान का भाड़ा नहीं दिया ?"

"अजी, किराया तो मैं पहली तारीख ाम को एडवांस में ही दे देता हूं, अपुन ादमी है. किसी का उधार नहीं रखते."

"तो फिर उस की बहन या लड़की ड़ा होगा ?"

"सर, इस उम्र में किसी की बहन या ी को क्यों छेड़ेंगे." कैलाश बोला, पिछले 10 सालों से उस का ़दार हूं, अब मकानमालिक को है कि कहीं मैं उस का मकान न नूं. इसलिए पिछले एक साल से डरा कि मकान खाली करो, वरना निकाल कर बाहर फेंक दूंगा."

"अब उस ने सामान बाहर फेंक कर अपनी धमकी पूरी कर दी," मैं बोला.

"जी, आप ने बिलकुल ठीक सोचा. अपुन मर्द आदमी है. चाहे तो मकान मालिक का सिर फोड़ सकता है, पर नरेश ने समझाया कि ऐसा बिलकुल नहीं करना. अब नरेश ही आप के पास मुझे ले कर आया है," कैलाश ने उत्तर दिया.

नरेश मेरे पास पिछले 5 महीनों से वकालत का काम सीख रहा था. नरेश और कैलाश आपस में अच्छे मित्र थे. मैं ने नरेश को आदेश दिया कि वह कैलाश को साथ ले कर थाने जाए और पहले वहां कैलाश की रिपोर्ट दर्ज करा कर उस रिपोर्ट की कापी मेरे पास ले कर लौटे.

उन दोनों के जाने के बाद मैं ने कैलाश के इलाके के थाने में गणपतराव थानेदार को फोन कर के आग्रह किया कि वह कैलाश की रिपोर्ट लिखवा लें और कैलाश का मकानमालिक के साथ कोई उचित समझौता करवा दें.



गणपतराव मेरा कोर्ट का साथी है. अतः गणपतराव और मुझ में अकसर बातचीत होती रहती थी.

मेरी छोटी सी सहायता के चलते कैलाश का अपने मकानमालिक से सम्मानजनक समझौता हो गया. कैलाश को एक साल की मोहलत मिल गई. कैलाश को उम्मीद थी कि इस एक साल के भीतर ही वह अपने प्लाट पर खुद का मकान बनवा लेगा.

फीस के रूप में कैलाश ने मुझे 5 हजार रुपए की एक गड्डी पेश की. मैं ने इसे लेने से इनकार कर दिया क्योंकि मेरा जमीर इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था.

कैलाश आचारव्यवहार से अच्छा इनसान था लेकिन औरत के प्रति उस के पिछड़े विचार वकील साहब को कभी अच्छे नहीं लगे. आखिर हालात कुछ ऐसे बदले कि कैलाश को भी मानना पड़ा कि औरत का स्थान पैरों पर नहीं दिल में है.

पर इस व्यवहार से कैलाश इतना प्रभावित हुआ कि वह मेरा मित्र बन गया. वह खुद भी बहुत मिलनसार था और उस के दोस्तों की शहर में कमी न थी.

उस ने मेरे छोटेमोटे कई काम किए थे. अच्छा भुगतान करने वाले कुछ मुवक्किल भी मुझे दिलाए थे. अतः उस के प्रति स्नेह और सम्मान का भाव मेरे मन में पैदा होना स्वाभाविक था.

कैलाश की यह एक बात मुझे बहुत चुभती थी कि वह हर बात छिड़ने पर कहता था, 'अपुन मर्द आदमी है. किसी का उधार नहीं रखता.' शायद इस तरह का संवाद बोलना उस का तकिया कलाम बन चुका था.

उस का यह तकियाकलाम सुनतेसुनते मैं अब तंग आ चुका था. अतः एक दिन जब कैलाश ने यही संवाद दोहराया तो मैं मुसकराते हुए बोला, ''क्या तुम भाभीजी के सामने भी इसी तरह का संवाद बोल कर अपनी मर्दानगी दिखाते रहते हो? वह बरदाश्त कर लेती हैं क्या तुम्हारी हेकड़ी?''

बस, फिर क्या था. कैलाश चालू हो गया, बोला, ''अरे, तुम्हारी भाभी क्या कर लेगी? अपुन मर्द आदमी है. घर पर पूरा पैसा देता है, किसी भी तरह की कमी नहीं छोड़ता,'' और जोर से होहो कर हंसते हुए बोला, ''औरत को ताज चाहिए न तख्त... झापड़ चाहिए सख्त. पैर की जूती होती है, औरत.''

मुझे कैलाश की बात पर बहुत हंसी आ रही थी और गुस्सा भी. मैं ने पूछा, ''तुम औरत के बारे में इतने पिछड़े विचार आज के आधुनिक जमाने में रखते हो. आजकल तो औरतें आदमी को उंगली पर नचा रही हैं. तुम इतना सबकुछ पत्नी को सुनाने के बाद घर में शांति से खाना खा लेते हो?''

''वकील साहब, मेरी होटल की नौकरी है. रात को 1 बजे घर पहुंचता हूं तो वह मुझे ताजी रोटी बना कर खिलाती है. मैं बीवी को सिर पर नहीं चढ़ाता. पैर की जूती है वह,'' कैलाश बहुत ही अभिमान के साथ बोला.

मेरी आंखें आश्चर्य से फटी जा रही थीं. मुझे लगता था कि मेरी पढ़ाई और मेरा अनुभव बेकार है. मेरी वकालत पर कैलाश के अभिमान से आंच आने लगी थी. मेरी खुद की हिम्मत ऐसी नहीं थी कि मैं अपनी पत्नी या किसी दूसरी औरत के बारे में इतना खुला वक्तव्य दे सकूं.

यदि वह अपनी पत्नी से ऐसी बा

ो क्या इस के घर में झगड़ा नहीं होगा. क्या इस की पत्नी ऐसी बातें श्त कर लेती होगी? आखिर मैं संयम रोक नहीं सका. उस से पूछ ठा, "तब तो तुम्हारे घर में रोज ही झगड़ा होता होगा?"

"झगड़ा... " कैलाश अपनी आंखें कर के बोला, "बिलकुल नहीं तुम्हारी भाभी की हिम्मत नहीं होती झगड़ा करने की. अपुन मर्द आदमी रतों का क्या, पैरों की जूतियां होती हारी भाभी को भी मैं ऐसे ही रखता से पैर की जूती."

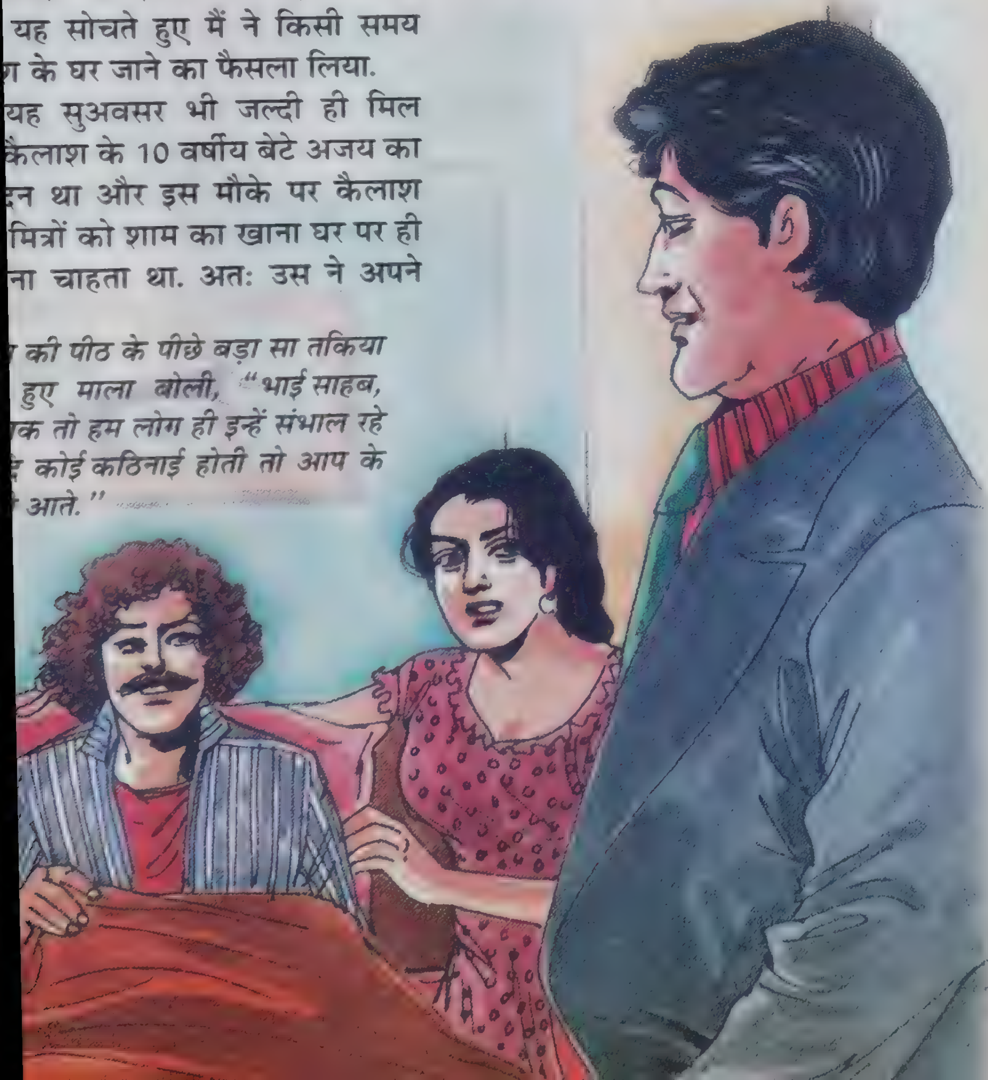
मेरे मन में उस समय कई तरह के उठ रहे थे. यदि कैलाश के दावे में दंभ क नहीं है तो जरूर उस की पत्नी कोई धारण औरत होगी. यदि ऐसा नहीं है लाश के दावे का परीक्षण करना यह सोचते हुए मैं ने किसी समय श के घर जाने का फैसला लिया.

यह सुअवसर भी जल्दी ही मिल कैलाश के 10 वर्षीय बेटे अजय का दिन था और इस मौके पर कैलाश मित्रों को शाम का खाना घर पर ही ना चाहता था. अतः उस ने अपने खासखास मित्रों को दावत पर बुलाया. मैं भी अपने जूनियर नरेश के साथ दावत में पहुंच गया.

कैलाश के घर का एकएक सामान करीने से लगा हुआ था. ड्राइंग रूम, बेड रूम, किचन और यहां तक कि टायलेट भी बहुत साफसुथरे थे. पता चला कि यह सब उस की पत्नी माला का कमाल था. मैं और नरेश तो कैलाश के छोटे भाई गोपाल के साथ उस का घर देख रहे थे.

इस के बाद हम घर के पीछे बने मैदान में गए. वहां एक शानदार शामियाना लगा हुआ था. वहीं कैलाश और उस की पत्नी माला आने वाले मेहमानों का स्वागत करते मिले.

मैं ने माला को देखा. वह 34-35 साल की उम्र में भी बहुत सुंदर लग रही थी. मैरून रंग की साड़ी और मैच करता



की पीठ के पीछे बड़ा सा तकिया हुए माला बोली, "भाई साहब, क तो हम लोग ही इन्हें संभाल रहे कोई कठिनाई होती तो आप के आते."

ब्लाउज, गले में लाल रंग के मोतियों की माला, गोल चेहरा और शालीन व्यक्तित्व.

कैलाश ने परिचय कराया, ''यह मेरी धर्मपत्नी माला देवी हैं.''

मैं ने तुरंत दोनों हाथ जोड़ कर माला को नमस्कार किया.

कैलाश ने माला से कहा, ''ये वकील साहब राजेंद्र कुमारजी हैं.''

''अच्छा...अच्छा...समझ गई,'' माला ने तुरंत कहा और मुझे हाथ के इशारे से आगे मेजकुरसी दिखाते हुए बोली, ''आइए, भाई साहब, आप तो हमारे खास मेहमान हैं.''

माला के साथ आगे बढ़ते हुए मैं ने पूछा, ''लगता है कि आप मुझे जानती हैं?''

''देखा तो आज ही है, पर नाम से परिचित हूं क्योंकि इन की जबान पर हमेशा आप का ही नाम रहता है.''

माला ने मुझे एक सोफे पर बैठने का इशारा किया और 1-2 मिनट के लिए इजाजत ले कर चली गई. जब वह वापस लौटी तो उसके हाथ की ट्रे में संतरे का



जूस 2 गिलासों में मौजूद था. उस के आग्रह पर मैं ने और नरेश ने जूस का एकएक गिलास थाम लिया. फिर वह बहुत ही कोमल लहजे में हम से इजाजत ले कर कैलाश के पास चली गई.

मैं और नरेश आपस में बातचीत करते रहे. पता चला कि माला ने हिंदी साहित्य में एम.ए. किया है. घर में कैलाश के 2 बच्चे, (एक लड़का व एक लड़की) कैलाश की विधवा बहन तथा एक कुंवारा छोटा भाई मिल कर रहते हैं.

शामियाना थोड़ी ही देर में खचाखच भर गया तो कैलाश मेरे पास आया और केक की टेबल पर चलने का आग्रह किया. कैलाश का बेटा, पत्नी माला और निकट संबंधी भी केक की टेबल पर पहुंचे. 'तुम जियो हजारों साल, साल के दिन हों कई हजार' गाने की ध्वनि के साथ कैलाश के बेटे ने केक काटा. तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मेहमानों ने उसे बधाई दी. उपहार दिए. फोटोग्राफर फोटो लेने लगे. इस के साथ ही भोजन का कार्यक्रम शुरू हो गया.

कैलाश ने पहली प्लेट मुझे पकड़ाई मैं प्लेट में खाना डालने लगा. तभी कैलाश को निकट संबंधियों की सेवा में जाना पड़ा कुछ देर बाद कैलाश की पत्नी माला मे पास आई. मैं ने उस से आग्रह किया कि व भी साथ में खाना ले ले. वह मुसकराते हु बोली, ''सारे मेहमानों के बाद इन के सा ही खाना लूंगी. आप के साथ सलाद लेती हूं,'' और इतना कह कर उस ने ए गाजर का टुकड़ा उठा लिया.

मैं ने भी उसी मुसकराहट के सा उत्तर दिया, ''हांहां, आप अपने पति साथ ही खाना, मेरे साथ सलाद लेने लिए आप का बहुतबहुत धन्यवाद. लग है कि उम्र के इस मोड़ पर भी आप अ पति को बहुत चाहती हैं?''

''बढ़ती उम्र के साथ तो पतिप

ोच प्यार भी बढ़ना चाहिए न?''
बोली.

''आप दिल से कह रही हैं या नयत कुछ और है?''

''भाई साहब, आप के मन में कोई हो तो साफसाफ बताइए न, यां क्यों बूझ रहे हैं? हमारा जीवन ली किताब है.''

थोड़ा संकोच के साथ बोला, ाशजी मेरे परम मित्र हैं पर जब वह ाति के बारे में कहते हैं कि वह तो ी जूती होती है, तब मुझे बहुत बुरा है. वह कहते हैं कि मैं अपनी पत्नी ी पैर की जूती समझता हूं. आप ए, अपने बारे में इतना जान कर कैसा महसूस कर रही हैं?''

''आप का प्रश्न कोई अनोखा नहीं तरह के प्रश्न अकसर लोग मुझ से रहते हैं. शुरू में यह सुन कर मुझे भी तकलीफ हुई थी पर अब तो आदत ड़ गई है. मैं ने इन को समझाया भी सी गंदी बातें मत किया करो लेकिन धरते नहीं. अब तो मैं ने इन्हें इन के पर छोड़ दिया है. वक्त ही इन्हें ा. यदि मैं लोगों के उकसाने पर तो शायद इन से मेरा तलाक हो पर मैं ने बहुत ही गंभीरता से सारी प्रतियों पर विचार किया है.''

'अच्छा.''

'हां, इन से झगड़ा कर के अपने घर वशांति भंग करने के बजाय मैं बात में गई कि यह ऐसे संवाद आखिर ोलते हैं?''

'कुछ मिला?''

'हां, इन के बूढ़े पिता, जिन का र्गवास हो चुका है, अपने जातिगत ातनपंथी संस्कारों से पीड़ित थे. जवानी क्या, बुढ़ापे तक वह शराब ान करते रहे. वह अपनी बीवी यानी स की पिटाई भी किया करते थे.



शिकवा

उन की उल्फत में रुसवा हुए
क्या थे हम और क्या हो गए,
जिंदगी जब संभलने लगी
हादसे कुछ यहां हो गए,
उन के शिकवे गिले ऐ 'शमीम'
सुन के हम पशेमां हो गए.

–देवेंद्र सचदेवा 'शमीम'

''अपनी मां को मार खाते देख कर इन्हें गुस्सा बहुत आता था. पर इन्होंने कभी मुझे मारा नहीं. ये शराब भी नहीं पीते. फिर भी अपने पिता की तरह खुद को बड़ा मर्द समझते हैं. बड़ीबड़ी मूंछें पिता की तरह ही रखी हुई हैं. कहते हैं कि मूंछें रखना हमारी खानदानी परंपरा है. अपने पिता की तरह बारबार दोहराते हैं, 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी.'

''डींग हांकते हुए कहते हैं कि औरत तो मर्द के पैर की जूती होती है. अगर मैं इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लूं तो हम दोनों एक पल भी साथ नहीं रह सकते. इन में यही एक कमी है. इसलिए मैं ने इन को अधिक से अधिक प्यार दे कर हिंसक नहीं बनने दिया. पर इन के तकियाकलाम और नारी जाति के बारे में ऐसे संवादों पर रोक नहीं लगा पाई.''

मेरी प्लेट का खाना खत्म हो चुका था. जूठी प्लेट एक बड़ी प्लास्टिक की

टोकरी में डालते हुए मैं बोला, ''भाभीजी, यदि आप जैसी समझदार महिलाओं की संख्या समाज में बढ़ जाए तो व्यर्थ के घरेलू झगड़े कम हो जाएं. कैलाश को तो वक्त ही ठीक करेगा.''

''अच्छा, मैं चलता हूं,'' कहते हुए मैं ने उन से इजाजत ली.

इस के बाद कैलाश से कई मुलाकातें हुईं, वह अपनी पत्नी को ले कर मेरे घर भी आया. मेरी पत्नी को भी माला का स्वभाव अच्छा लगा.

जून माह के बाद मुझे कैलाश कई दिनों तक नहीं मिला. अपना मकान बनवाने के कारण नरेश भी 2 महीने की छुट्टी पर था. छुट्टी के बाद नरेश काम पर आया तो मैं ने उस से पूछा, ''कैलाश की कोई खैरखबर है? पिछले 3 महीनों से वह दिखाई नहीं दिया.''

''सर, वह तो महाराजा यशवंतराव अस्पताल में भरती है.''

''आश्चर्य की बात है. मुझे किसी ने खबर नहीं दी. तुम्हारा भी कोई फोन इस संबंध में नहीं आया?''

''सर, मुझे खुद परसों पता लगा है.''

मैं शाम को अस्पताल में पहुंच कर कैलाश के बारे में पूछतेपूछते उस के वार्ड तक जा पहुंचा. वार्ड में अभी मैं कैलाश का बेड ढूंढ़ ही रहा था कि मुझे माला ने देख लिया और बोली. ''आइए, भाई साहब.''

माला मुझे आवाज न देती तो शायद मैं उसे पहचान भी नहीं पाता. वह सूख कर कांटा हो गई थी. उस के गोरे गाल किशमिश की तरह पिचक गए थे.

मैं ने आश्चर्य से पूछा, ''अरे, तुम इतनी बीमार कैसे हो गईं? मैं ने तो सुना था कि कैलाशजी बीमार हैं.''

''आप ने ठीक सुना था, भाई साहब, मैं नहीं आप के भाई बीमार हैं. देखिए, वह पड़े हैं पलंग पर, लेकिन अब पहले से बहुत ठीक हैं.''

मुझे देख कर कैलाश पलंग पर ही उठ बैठा. मैं स्टूल खींच कर उस के पास बैठ गया.

''क्या हो गया था, कैलाश? तुम ने या माला ने तो कोई सूचना भी नहीं भेजी. क्या तुम लोगों के लिए मैं इतना गैर हो गया,'' कैलाश को कमजोर हालत में देख कर मैं ने शिकायत की.

कैलाश की पीठ के पीछे बड़ा सा तकिया लगाते हुए माला बोली, ''भाई साहब, अभी तक तो हम लोग ही इन्हें संभाल रहे थे. यदि कोई कठिनाई आती तो आप के पास ही आते.

''इन्हें पीलिया हो गया था. इन का न तो कोई खाने का समय है और न ही सोने का. लिवर पर तो असर पड़ना ही था. पीलिया का इलाज चल रहा था कि इन्हें टायफाइड हो गया. अब इन्हें आवश्यक रूप से बिस्तर पर आराम करना पड़ रहा है,'' यह कहते हुए माला को हंसी आ गई.

मुझे लग रहा था कि मेरे पहुंचने से इन दोनों को बहुत राहत मिली थी. अतः माला के उदास चेहरे पर भी बहुत दिनों बाद हंसी की रेखा फूटी होगी.

कैलाश भी मुसकाराया और बोला, ''वकील साहब, यह मेरी सेवा करतेकरते खुद बीमार हो गई है. इस ने मुझे मरने से बचा लिया है. बहन और रिश्तेदार तो आतेजाते रहते थे पर माला मुझे छोड़ कर एक पल के लिए भी घर नहीं गई.''

''अरे, आप कम बोलो ना? डाक्ट ने ज्यादा बोलने के लिए मना किया है, माला ने कैलाश को रोका.

कैलाश रुका नहीं, बोलता रह ''मैं बुखार में चीखताचिल्लाता था. मा पर अपना गुस्सा उतारता था. पर य औरत ठंडे पानी की पट्टियां मेरे सिर अ बदन पर रखते हुए हर समय मुझे बच मान कर दिलासा देती रहती थी. मैं का यह कर्ज इस जीवन में उतार न

पाऊंगा,'' इतना बतातेबताते कैलाश की आंखों में आंसू आ गए थे.

वह एक पल को रुक कर बोला, ''यह कब जागती थी और कब सोती थी, मुझे नहीं पता. लेकिन जब भी रात में मेरी आंख खुलती थी तो यह मेरी सेवा करते मिलती. मेरे कारण देखो इस का शरीर कितना कमजोर हो गया है.''

''यह ठीक हो गए. अब घर जाने पर मैं भी अपनेआप ठीक हो जाऊंगी,'' माला बोली.

मैं अपने साथ कुछ फल लाया था. उस में से एक संतरा निकाल कर छीला और फांके कैलाश को दी. माला को भी दिया. इस के बाद हम लोग गपशप करने लगे. जब माहौल पूरी तरह से प्रसन्नता का हो गया तो मैं ने कैलाश से चुटकी लेते हुए कहा, ''कैलाश, तुम तो कहते थे, औरत पैर की जूती होती है. माला भी इसी दरजे में आती है. अब तुम माला को महान कह रहे हो. तुम्हारी यह राय सचमुच बदल गई है या सिर्फ अस्पताल तक सीमित है.''

''आप, वकील साहब सुधरेंगे नहीं, यहां अस्पताल में भी अपनी वकालत दिखा कर रहेंगे.''

''क्या मतलब?'' मैं चौंका.

''मतलब यह है कि आप मेरे गुनाहों को सब के सामने कबूलने के लिए कहेंगे?''

''मेरी ओर से कोई जोरजबरदस्ती नहीं है. मुजरिम भी तुम खुद हो और यह अदालत भी तुम्हारी है, जो मर्जी में आए फ़ैसला लिख लो.''

''अगर ऐसी बात है तो वकील साहब मेरा फैसला भी सुन लो. मैं अपने दंभ और झूठे घमंड के कारण औरत को पैर की जूती कहता था. अब जमाना बदल गया है. कई मामलों में औरत आदमी से आगे निकल गई है. उसे सलाम करना होगा. उस का स्थान पैरों पर नहीं दिल और माथे पर है.'' ●

इन्हें भी आजमाइए

● *कपड़ों पर लगे सब्जी के धब्बों को हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं और अंगूठे से कुछ देर मलें, फिर कपड़े धोएं. धब्बे हट जाएंगे.*

● *हर हफ्ते कमरे में रखे पौधों को खुली हवा व धूप में जरूर रखें. अन्यथा वह पौधे जल्द ही खराब हो जाएंगे.*

● *आयली स्किन पर फेसमास्क के तौर पर एगवाइट में लेमन जूस की कुछ बूंदें मिक्स करें और आधे घंटे तक लगाएं. फिर कुनकुने पानी से चेहरे को साफ करें.*



● *खीर में खसखस पीस कर मिलाने से स्वाद बढ़ जाता है.*

● *प्लेन चावल उबालते समय यदि उस में एक टुकड़ा दालचीनी व बड़ी इलायची डाली जाए तो उन में सुगंध आने लगती है.*

● *ड्राई व नारमल स्किन पर बौडीलोशन के तौर पर गुलाबजल, ग्लिसरीन और नीबू के रस को मिक्स कर के लगाएं. त्वचा निखर उठेगी.*

● *कटिंग बोर्ड पर प्याज, लहसुन व मछली को काटने के बाद आ रही दुर्गंध को दूर करने के लिए नीबू के 2 टुकड़े कर उसे बोर्ड पर मलें या फिर बेकिंग सोडा और पानी के पेस्ट से साफ करें.*

● *भटूरे या नान को सौफ्ट और स्वादिष्ट बनाने के लिए थोड़ा सा सोडा और पानी मिलाएं.*

अंतर्दाह

अपनी उम्र से लगभग दोगुनी उम्र के रंजीत चौधरी से शादी करना अलका की मजबूरी थी लेकिन वह ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहती थी जिस से उस के मानसम्मान को ठेस पहुंचे, पर क्या वह अपनी भावनाओं पर अंकुश रख सकी.



कहानी ● कृतिका गुप्ता

अलका यानी श्रीमती रंजीत चौधरी से मेरा परिचय सिर्फ एक साल पुराना है, पर उन के प्रति मैं जो अपनापन महसूस करता हूं, वह इस परिचय को पुराना कर देता है. आज अलकाजी जा रही हैं. उन के पति रंजीत चौधरी नौकरी से रिटायर हो गए हैं इसलिए अब वह सपरिवार अपने शहर इलाहाबाद वापस जा रहे हैं.



मैं उदास हूं, उन से आखिरी बार मिलना चाहता हूं पर हिम्मत नहीं जुटा पा रहा हूं. उन्हें जाते हुए देखना मेरे लिए कठिन होगा फिर भी मिलना तो है ही. यही सोच कर मेरे कदम उन के घर की ओर उठ गए.

मैं जितने कदम आगे को बढ़ाता था मेरा अतीत मुझे उतना ही पीछे ले जाता था. आखिर मेरे सामने वह दिन आ ही गया जब मैं पहली बार चौधरी साहब के घर गया था. वैसे मेरा श्रीमती चौधरी से सीधे कोई परिचय नहीं था, मेरा परिचय तो उन के घर रह कर पढ़ने वाले उन के भतीजे प्रभात से था.

मैं स्कूल में अध्यापक था, अतः प्रभात ने मुझे अपनी चाची के बच्चों को पढ़ाने के काम में लगा दिया था. इसी सिलसिले में मैं उन के घर पहली बार गया था. दरवाजा प्रभात के चाचा यानी चौधरी साहब ने खोला था.

सामान्य कद, गोरा रंग, उम्र कोई 55 साल, सिर पर बचे आधे बाल जोकि सफेद थे और आंखें ऐसी मानो मन के भीतर जा कर आप का एक्सरे उतार रही हों. प्रभात से अकसर उस की चाची की जो तारीफ मैं ने सुनी थी उस से अंदाजा लगाया था कि उस की चाची बहुत प्यारी और ममतामयी महिला होंगी.

चौधरी साहब ने प्रभात के साथसाथ अपने बच्चों गौरवसौरभ को भी बुलाया, साथ में आई एक बहुत ही खूबसूरत महिला.

प्रभात ने बताया कि यह उस की चाची हैं. मैं चौंक पड़ा. मैं ने उन्हें ध्यान से देखा. लंबा कद, गोरा रंग, छरहरा बदन, आकर्षक चेहरे पर स्मित मुसकान और उम्र रही होगी कोई 30-32 साल. अगर प्रभात मुझे पहले न बताता तो मैं उन्हें चौधरी साहब की बेटी ही समझता.

पहली बार उन्हें देख कर उन के प्रति एक अजीब सी दया और सहानुभूति का भाव मेरे मन में उमड़ आया था. और उमड़ भी क्यों न आता, 30 साल की खूबसूरत महिला को 55 साल के आदमी की पत्नी के रूप में देखना, इस के अलावा और क्या भाव ला सकता था.

मुझे उन के बच्चों को पढ़ाने का काम मिल गया. मैं हर दोपहर, स्कूल के बाद उन्हें पढ़ाने के लिए जाने लगा था. उस समय चौधरी साहब आफिस गए होते थे और प्रभात कालिज.

बच्चों को पढ़ाते समय वह अकसर मेरे लिए चायनाश्ता दे जाया करती थीं. पहली बार मैं ने मना किया तो वह बोली थीं, 'कालिज से सीधे यहां पढ़ाने आ जाते हो, भूख तो लग ही आती होगी. थोड़ा खा लोगे तो तुम्हारा भी मन पढ़ाने में ठीक से लगने लगेगा.'

मैं ने फिर कभी उन का चायनाश्ते के लिए प्रतिवाद नहीं किया था.

श्रीमती चौधरी बहुत ही स्नेही और लोकप्रिय महिला थीं. मुझे उन के घर अकसर उन की कोई न कोई पड़ोसिन बैठी मिलती थी, कभी किसी व्यंजन की रेसिपी लिखती तो कभी कोई नया व्यंजन चखती.

एक बार उन्होंने मुझ से कहा था, 'तुम मुझे बारबार श्रीमती चौधरी कह कर यह न याद दिलाया करो कि मैं रंजीत चौधरी की पत्नी हूं. तुम मुझे अलका कह कर बुला सकते हो.' तब से मैं उन्हें अलकाजी ही कहने लगा था.

एक रोज मैं ने उन से पूछा, 'अलकाजी, आप की शादी आप से दोगुने उम्र के इनसान से क्यों हुई?' मेरे इस सवाल के जवाब में उन्होंने जो कुछ कहा उसे सुन कर मैं झेंप सा गया था. वह बोली थीं, 'यह शर्मिंदा होने की बात नहीं है, जो सच है वह सच है. मैं एक छोटे से गांव की रहने वाली हूं. मैं तब बहुत छोटी थी, जब मेरे मांबाप गुजर गए थे. मेरे चाचाचाची ने मुझे पालापोसा था. उन्होंने ही मेरी शादी चौधरी साहब से तय की थी. उन्होंने यह तो देखा कि लड़का अच्छी नौकरी में है, अच्छा घर है पर यह नहीं देखा कि वह मुझ से उम्र में कितना बड़ा है और तब मैं इतनी समझ भी नहीं रखती थी कि इस का विरोध कर सकूं.

'तुम यह भी कह सकते हो कि मुझ में विरोध कर सकने की हिम्मत ही नहीं थी. अपनी किस्मत समझ कर मैं ने इसे स्वीकार कर लिया था. फिर जब मेरे जीवन में गौरवसौरभ आ गए तो लगा कि मुझे फिर से जीने का मकसद मिल गया है और अब तो इतना समय बीत गया है कि मुझे लोगों की घूरती निगाहों, पीठपीछे की



अनुपम, अलका के पास गया और उन का चेहरा अपने हाथों में ले कर माथा चूम लिया.

नाफूसी, इस सब की आदत हो गई है.

'हां, बुरा तब लगता है जब लोग मेरे र प्रभात के रिश्ते पर उंगलियां उठाते तुम्हीं कहो, अनुपम, क्या मैं इतनी गिरी लगती हूं कि अपने रिश्ते के बेटे के थ...छी, मुझे तो सोच कर भी शरम ती है. फिर लोग कहते हुए क्यों नहीं झकते? तो क्या उन का चरित्र मुझ से गयाबीता नहीं है? प्रभात को मैं ने ा अपना बड़ा बेटा, गौरवसौरभ का ा भाई समझ कर ही स्नेह दिया है.'

इतना कहते हुए उन की आंखों में नक आई दो बूंदों को मैं ने देख लिया जिसे वह जल्दी से छिपा गई थीं. मैं नता था कि उन के महल्ले में श्रीमती धरी और प्रभात को ले कर तरहतरह बातें कही जाती थीं. कोई कहता कि उन का रिश्ता चाचीभतीजे से बढ़ कर है, कोई कहता, प्रभात उन का प्रेमी है. जितने मुंह उतनी बातें होती थीं.

लोग मुझ से भी पूछते थे, 'तुम से श्रीमती चौधरी कैसा व्यवहार करती हैं?' मैं झुंझला जाता था. कभी तो इतना गुस्सा आता था कि जी करता एकएक को पीट डालूं. पर कभीकभी मैं खुद इन्हीं बातों को सोचने के लिए मजबूर हो जाता था.

श्रीमती चौधरी, प्रभात को बहुत महत्त्व देती थीं. हर एक बात पर उस की राय लेती थीं, कभीकभी तो चौधरी साहब की बात को भी काट कर वह प्रभात की ही बात मानती थीं.

कभीकभी मैं सोचने लगता कि यह कैसा रिश्ता है उन दोनों का? पर फिर मुझे लगता कि अगर अलका चौधरी 30 साल

की न हो कर 50 साल की होतीं और प्रभात से ऐसा ही बरताव करतीं तो शायद सब उन्हें ममतामयी मां कहते. पर आज वह किसी और ही संबोधन से जानी जाती थीं.

आज मेरे सारे सवालों के जवाब मिल गए थे. मैं ने अलकाजी से कहा, 'मैं आज तक आप को सिर्फ पसंद करता था, पर अब मैं आप का आदर भी करने लगा हूं. जो आप ने किया वह करना सच में सब के बस की बात नहीं है.'

उस दिन मैं ने एक नई अलका को जाना था, जो अकारण ही मुझे बहुत अच्छी लगने लगी थीं. मैं उन के आकर्षण में खोने लगा था, जिसे मैं चाह कर भी रोक नहीं पा रहा था. मैं जानता था कि वह शादीशुदा हैं और 2 बच्चों की मां हैं, पर इस से मेरी भावनाओं के आवेगों में कोई कमी नहीं आ रही थी. वह मुझ से उम्र में 4-5 साल बड़ी थीं फिर भी मैं अपनेआप को उन के बहुत करीब पाता था.

वह भी मेरा बहुत खयाल रखती थीं. कभीकभी तो मुझे लगता था कि वह भी मुझे पसंद करती हैं. फिर अपनी ही सोच पर मुझे हंसी आ जाती और मैं इस विचार को अपने मन से परे धकेल देता.

वक्त अपनी गति से बीत रहा था.



शरद ऋतु के बाद अचानक ही कड़ाके की ठंड पड़ने लगी थी. मैं बैठा बच्चों को पढ़ा रहा था. उस दिन चौधरीजी भी घर पर ही थे. अलकाजी मुझे नाश्ता देने आईं तो मैं ने पाया कि उन के बालों से पानी टपक रहा था, वह शायद नहा कर आई थीं. भरी ठंड में शाम ढले उन का नहाना मुझे विचलित कर गया. मैं कुछ सोचता उस से पहले ही मेरे कानों में चौधरीजी की आवाज पड़ी, 'इतनी ठंड में नहाई क्यों?'

अलकाजी ने जवाब दिया, 'जो आग बुझा नहीं सकते उसे भड़काते ही क्यों हैं? इस जलन को पानी से न बुझाऊं तो क्या करूं?'

चौधरीजी ने क्या जवाब दिया मैं सुन नहीं पाया, शायद उन्होंने टेलीविजन चला दिया था. अगले दिन जब मैं उन के घर पहुंचा तो गौरवसौरभ पड़ोस के घर खेलने गए हुए थे. वह मुझ से बोलीं, 'तुम बैठो, मैं तुम्हारे लिए चाय लाती हूं.'

वह जाने को मुड़ीं तो मैं ने उन का हाथ पकड़ लिया और कहा, 'आप बैठो जरा.'

फिर मैं ने उन्हें बिठा कर पानी का गिलास थमाया, जिसे वह एक ही सांस में पी गईं. मैं ने उन से पूछा, 'आप ठीक तो हैं, अलकाजी? आप की आंखें इतनी लाल क्यों हैं? और यह आप के चेहरे पर चोट का निशान कैसा है?'

मेरी बात सुनते ही वह फफक कर रो पड़ीं. मैं इस के लिए तैयार नहीं था. समझ नहीं पाया कि क्या करूं, उन्हें रोने दूं या चुप कराऊं? फिर कुछ पल रो लेने के बाद उन की आंखों से बरसाती बादल खुद ही तितरबितर हो गए. वह कुछ संयत हो कर बोलीं, 'परेशान कर दिया न तुम्हें?'

'कैसी बातें कर रही हैं?' मैं ने कहा, 'आप बताएं, आप परेशान क्यों हैं?' वह बुझे स्वर में बोलीं, 'तुम नहीं समझ पाओगे, अनुपम?' मैं ने थोड़ा रुक कर कहा, 'अलकाजी मैं ने कल आप की

पत्नी चिंता

जिस शख्स की पत्नी
घर से भाग जाती है,
उसे जिंदगी भर
नींद नहीं आती है,
भयाक्रांत हो वह,
उद्वेलित हो उठता है,
कुंठाग्रस्त हो वह
हंसना भूल जाता है,
उसे तो हर वक्त
एक ही चिंता सताए...
कहीं पत्नी लौट कर
वापस न आ जाए!

–महेंद्र कुमार वर्मा



ौर चौधरीजी की सारी बातें सुन ली थीं.'

अलकाजी ने मुझे चौंक कर ऐसे देखा ानो मैं ने उन्हें चोरी करते रंगेहाथों पकड़ ़या हो. वह एक बार फिर सिसक उठीं.

मैं ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, ़लकाजी, परेशान या दुखी होने की ़रूरत नहीं. आप मुझ पर भरोसा कर ़कती हैं. अगर चाहें तो मुझ से बात कर ़कती हैं, इस से आप का मन हलका हो ़एगा. पर आप ने बताया नहीं, यह ़ट...क्या आप को किसी ने मारा है?'

अलकाजी ने व्यंग्य से होंठ टेढ़े ़रते हुए कहा, 'चौधरी साहब को लगता ़कि पड़ोस में रहने वाले श्रीवास्तवजी से ़ कुछ...'

उन की बात सुन मैं ने सिहर कर ़ा, 'वह ऐसा कैसे सोच सकते हैं?'

'वह कुछ भी सोच सकते हैं अनुपम. ़सी 56 साल के पुरुष की पत्नी अगर ़ान हो तो वह उस के बारे में कुछ भी ़च सकता है.' श्रीवास्तवजी तो फिर भी ़क हैं, वह तो दूध वाले तक के लिए ़ पर शक करते हैं.'

अलकाजी की बातें सुन कर मैं चौधरीजी के प्रति घृणा से भर उठा, 'आप उन्हें समझाती क्यों नहीं?' वह झुंझला कर बोलीं, 'क्या समझाऊं और कब तक समझाऊं? हमारी शादी को 9 साल हो गए हैं. 2 बच्चे हैं हमारे, फिर भी वह मुझ पर शक करते हैं. मैं ही क्यों बारबार अपनी पवित्रता का सुबूत दूं, क्यों मैं ही अग्निपरीक्षा से गुजरूं? क्या मेरा कोई आत्मसम्मान नहीं है?'

उन की बातों ने मुझे झकझोर डाला था. मैं अब तक यही समझता था कि वह एक सुखी गृहस्थी की मालकिन हैं पर आज जब मैं ने उन की हंसती हुई दुनिया का रोता हुआ सच देखा तो जाना कि वह कितनी अकेली और परेशान हैं.

देखतेदेखते एक साल बीत गया. गौरवसौरभ की परीक्षाएं हो चुकी थीं और अब उन्हें मेरी जरूरत न थी. फिर भी मैं किसी न किसी बहाने अलकाजी से मिलने चला ही जाता था. जब कभी प्रभात से मुलाकात होती तो वह कहता, 'आप को चाचीजी पूछ रही थीं.'

बस, इतनी सी बात का सूत्र पकड़ कर मैं उन के घर पहुंच जाता. पर मन में

कहीं एक डर भी था कि कहीं मेरा अधिक आनाजाना अलकाजी के लिए किसी परेशानी का कारण न बन जाए.

फिर एक दिन मुझे प्रभात मिला. उस ने मुझे बताया कि हम सब यह शहर छोड़ कर हमेशाहमेशा के लिए अपने शहर इलाहाबाद जा रहे हैं. मैं चौंक पड़ा, यह खबर मेरे लिए बहुत ही अप्रत्याशित और तकलीफदेह थी.

अतीत की पगडंडियों पर चलतेचलते मैं अलकाजी के दरवाजे तक पहुंच चुका था. हिम्मत कर मैं ने दरवाजा खटखटाया, दरवाजा अलकाजी ने ही खोला. मुझे देख कर उन की आंखों में एक अनोखी सी खुशी तैर गई थी जिसे छिपाती हुई वह बोलीं, ''अनुपम, आओआओ? मिल गई फुरसत आने की?''

मैं ने मुसकराते हुए कहा, ''यह शिकायत किसलिए? शिकायत तो मुझे करनी चाहिए थी कि आप जा रही हैं मुझे छोड़ कर...मेरा मतलब हमारा शहर छोड़ कर?'' अंदर घुसते ही मैं ने देखा, बैठक का सारा सामान खाली हो चुका था, सिर्फ दीवान पड़ा था. मैं ने बैठते हुए कहा, 'सामान से खाली घर कैसा लगता है न?'

ठीक वैसा ही जैसा भावनाओं और संवेदनाओं से खाली मन लगता है,'' अलकाजी ने अर्थ भरे नयनों से देखते हुए कहा. बात की गंभीरता को कम करने के लिए मैं ने पूछा, ''सब लोग कहां हैं?''

''प्रभात, बच्चों को ले कर आज ही गया है. थोड़ी पैकिंग बाकी है, जिसे पूरा कर के मैं और चौधरीजी भी कल निकल जाएंगे,'' अलकाजी ने बताया. फिर कुछ रुक कर अपने पैर के अंगूठे से फर्श कुरेदती हुई बोलीं, ''अच्छा हुआ अनुपम, जो तुम आज आ गए. बहुत इच्छा थी आखिरी बार तुम से मिलने की.''

मैं ने उत्सुक हो कर पूछा, ''क्यों, कोई खास काम था क्या मुझ से?''

''काम...काम तो कुछ नहीं था, पर कुछ है जो तुम्हें बताना शेष रह गया था. न बताऊंगी तो जीवन भर मन ही मन उन्हीं बातों से घुटती रहूंगी.

''तुम जानना चाहते हो कि मैं यहां से क्यों जा रही हूं? डरती हूं कि जिस आग को अब तक अपने मन में दबा कर रखा था वह मुझे ही न जला डाले. अनुपम, मैं यह तो जानती हूं कि तुम मुझ से प्यार करते हो पर शायद तुम नहीं जानते कि मैं भी तुम से प्यार करने लगी हूं.''

उन की यह बात सुन कर मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा था. अपने प्यार की स्वीकृति मिलते ही मेरा मन अचानक उन्हें अपनी बांहों में लेने को मचल उठा. मैं ने तरल निगाहों से उन की ओर देखा, अलका के होंठ खामोश थे पर उन में उठता कंपन बता रहा था कि वे प्रतीक्षित हैं.

मैं अपनी जगह से उठ कर उन की ओर बढ़ा ही था कि उन्होंने कहा, ''अब तक तो चौधरीजी को शक ही था पर डरती हूं कि मेरे मन में फूट आई तुम्हारे प्यार की कोंपल, उन का शक यकीन में न बदल दे, इसीलिए यहां से पलायन कर रही हूं क्योंकि यहां रहते हुए मैं खुद को तुम से मिलने से रोक नहीं पाऊंगी. और अगर ऐसा हुआ तो मेरी अब तक की सारी तपस्या और आत्मसम्मान मिट्टी में मिल जाएगा. तुम्हें यह सब बताना जरूरी भी था क्योंकि इस अनकहे प्यार का अंतर्दाह अब मुझ से और सहन नहीं हो रहा था.''

इतना कह कर वह चुप हो मेरी ओर देखने लगीं. उन की बातें सुन कर मैं उन के पास गया और उन का चेहरा अपने हाथों में ले कर माथा चूम कर बोला, ''आप का आत्मसम्मान और प्यार दोनों ही मेरे लिए सहेजने और पूजा करने के योग्य हैं. आप से दूर होना मुझे भी अच्छा नहीं लग रहा है, पर शायद यही सही है. यह अंतर्दाह हमारी नियति है.'' ●

जीवन की मुस्कान

एक बार हमारे किराए के मकान में चोरी हो गई. सा हमारे जीवन में पहली र हुआ था. घबराहट के ारण हम ने तुरंत मकान दलने का निश्चय किया.

विभिन्न कालोनियों में कान देख रहे थे लेकिन ोई उचित मकान नहीं मिल ा था.

एक दिन हमें रास्ते में क सज्जन मिले जिन के थ हम पहले किराए के कान में एकसाथ रह चुके उन्होंने अब 2 कमरे का कान खरीद लिया था. जब होंने हमारी परेशानी सुनी, तुरंत हमारे साथ हो लिए र कहा कि आप अभी रा सामान खाली कर के यहां आ जाइए.

तकलीफ पाते हुए भी ने उस मकान को महत्त्व ा. इस प्रकार मुसीबत के ों में उन के द्वारा दी गई ाह जिंदगी में नई आशा संचार कर गई.

–प्रमिला अरोड़ा

पिछले दिनों मेरी भतीजी रीटा व दामाद परवीन अपने परिवार सहित सगाई समारोह में शामिल हो कर सहारनपुर से जयपुर कार से वापस जा रहे थे. समारोह में जाने के कारण उन के बैग में सोने के व अन्य गहने तथा रुपए थे. लंबे सफर में थकान होने पर जयपुर पहुंचने से 1 घंटा पहले शाहपुर हाइवे पर उन्होंने एक रेस्टोरेंट में चाय पी. चाय पीते समय बैग, जो हाथ में था, वह टेबल पर भूल गए व जयपुर पहुंच गए.

घर पहुंचने पर जब बैग नहीं मिला तो सब के होश गुम हो गए. बैग में लगभग 75 हजार रुपए का सामान था. उस समय रीटा ने हिम्मत की और वापस शाहपुरा चलने के लिए कहा. रात 12.30 का समय था, सब थक चुके थे.

सुबह सबको ड्यूटी पर व स्कूल जाना था अतः हिम्मत नहीं हो रही थी, परंतु रीटा ने जिद की और रात 1 बजे जयपुर से शाहपुरा के लिए रवाना हुए. शाहपुरा पहुंचने पर रेस्टोरेंट पर अन्य कोई व्यक्ति बैठा हुआ था. हम ने काउंटर पर पहुंच कर अपनी बात कही तो उस ने आदर से हमें बिठाया और अपने भाई को उठाने चला गया क्योंकि पहले काउंटर पर वह ही बैठा था. बड़े भाई ने हम से पूछा कि बैग में क्याक्या है. तसल्ली होने पर उस ने अलमारी से बैग निकाल कर हमें दिया व बिठा कर सब को चाय पिलाई व चाय के पैसे भी नहीं लिए.

जब कुछ इनाम देना चाहा तो उस ने कहा कि इन पैसों से कबूतरों को दाना डालें. हम सब का मन उस व्यक्ति के प्रति आदर व श्रद्धा से झुक गया. हमें लगा कि दुनिया में भले मानस अब भी हैं. इस के पश्चात हम जब भी दिल्ली कार से जाते हैं तो वहां रुक कर चाय अवश्य पीते हैं.

–इंदु पाटनी

आप भी लिखिए

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित अनुभवों पर 100 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पता है

सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



कबूतरों का घर

कहानी ● माया

चांद की धुंधली रोशनी में सभी एकदूसरे की सांसें महसूस करने की कोशिश कर रहे थे. उन्हें तो यह भरोसा भी नहीं हो रहा था कि वे जीवित बचे हैं. पर ऊपर नीला आकाश देख कर और पैरों के नीचे जमीन का एहसास कर उन्हें लगा था कि वह बाढ़ के प्रकोप से बच गए. बाढ़ में कौन बह कर कहां गया, कौन बचा, किसी को कुछ पता नहीं था. इन बचने वालों में कुछ ऐसे भी थे जिन के अपने देखते ही देखते उन के सामने जल में समाधि ले चुके थे और बचे लोग अब विवश थे हर दुख झेलने के लिए.

"जाने और कितना बरसेगा बादल?" किसी ने दुख से कहा था.

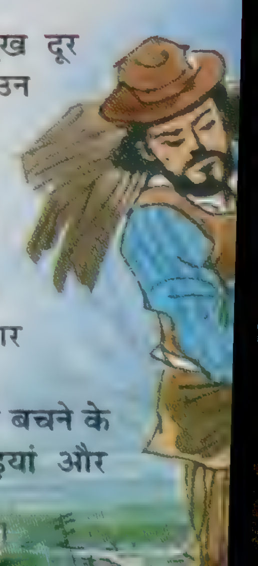
"यह कहो कि जाने कब पानी उतरेगा और हम वापस घर लौटेंगे," यह दूसरी आवाज सब को सांत्वना दे रही थी.

"घर भी बचा होगा कि नहीं, कौन जाने," तीसरे ने कहा था.

इस समय उस टापू पर जितने भी लोग थे वे सभी अपने बच जाने को किसी चमत्कार से कम नहीं मान रहे थे और सभी आपस में एकदूसरे के साथ नई पहचान बनाने की चेष्टा कर रहे थे. अपना भय और दुख दूर करने के लिए यह उन सभी के लिए जरूरी भी था.

चांद बादलों के साथ लुकाछिपी खेल रहा था जिस से वहां गहन अंधकार छा जाता था.

तानी ने ठंड से बचने के लिए थोड़ी लकड़ियां और





यां शाम को ही जमा कर ली थीं. उस ोचा आग जल जाए तो रोशनी हो गी और ठंड भी कम लगेगी. अतः उस अपने साथ बैठे हुए एक बुजुर्ग से स के लिए पूछा तो वह जेब टटोलता बोला, ''है तो, पर गीली हो गई है.''

तानी ने अफसोस जाहिर करने के लंबी सांस भर ली और कुछ सोचता इधरउधर देखने लगा. उस वृद्ध ने स निकाल कर उस की ओर विवशता खा और बोला, ''कच्चा घर था न ा. घुटनों तक पानी भर गया तो भागे बेटे को कहा, जल्दी चल, पर वह....''

तानी एक पत्थर उठा कर उस बुजुर्ग ास आ गया था. वृद्ध ने एक आह भर कर कहना शुरू किया, ''मुझे बेटे ने कहा कि आप चलो, मैं भी आता हूं. सामान उठाने लगा था, जाने कहां होगा, होगा भी कि बह गया होगा.''

इतनी देर में तानी ने आग जलाने का काम कर दिया था और अब लकड़ियों से धुआं निकलने लगा था.

''लकड़ियां गीली हैं, देर से जलेंगी,'' तानी ने कहा.

कृष्णा थोड़ी दूर पर बैठा निर्विकार भाव से यह सब देख रहा था. अंधेरे में उसे बस परछाइयां दिख रही थीं और किसी



बाढ़ से हुई तबाही ने जूही और कृष्णा की जिंदगी को बेसहारा बना दिया था. न कोई अपना, न कोई जीविकोपार्जन का साधन. दोनों की यही बेबसी उन्हें धीरेधीरे एकदूसरे के करीब ला रही थी...

भी आहट को महसूस किया जा सकता था. लेकिन उस के उदास मन में किसी तरह की कोई आहट नहीं थी.

अपनी आंखों के सामने उस ने मातापिता और बहन को जलमग्न होते देखा था पर जाने कैसे वह अकेला बच कर इस किनारे आ लगा था. पर अपने बचने की उसे कोई खुशी नहीं थी क्योंकि बारबार उसे यह बात सता रही थी कि अब इस भरे संसार में वह अकेला है और अकेला वह कैसे रहेगा.

लकड़ियों के ढेर से उठते धुएं के बीच आग की लपट उठती दिखाई दी. कृष्णा ने उधर देखा, एक युवती वहां बैठी अपने आंचल से उस अलाव को हवा दे रही थी. हर बार जब आग की लपट उठती तो उस युवती का चेहरा उसे दिखाई दे जाता था क्योंकि युवती के नाक की लौंग चमक उठती थी.

कृष्णास्वामी ने एक बार जो उस युवती को देखा तो न चाहते हुए भी उधर देखने से खुद को रोक नहीं पाया था. अनायास ही उस के मन में आया कि शायद किसी अच्छे घर की बेटी है. पता नहीं इस का कौनकौन बचा होगा. उस युवती के अथक प्रयास से अचानक धुएं को भेद कर अब आग की मोटीमोटी लपटें खूब ऊंची उठने लगीं और उन लपटों से निकली रोशनी किसी हद तक अंधेरे को भेदने में सक्षम हो गई थी. भीड़ में खुशी की लहर दौड़ गई.

कृष्णा के पास बैठे व्यक्ति ने कहा, "मौत के पास आने के अनेक बहाने होते हैं. लेकिन उसे रोकने का एक भी बहाना इनसान के पास नहीं होता. जवान बेटेबहू थे हमारे, देखते ही देखते तेज धार में दोनों ही बह गए," कृष्णा उस अधेड़ व्यक्ति की आपबीती सुन कर द्रवित हो उठा था. आंच और तेज हो गई थी.

"थोड़े आलू होते तो इसी अलाव में भुन जाते. बच्चों के पेट में कुछ पड़ जाता," एक कमजोर सी महिला ने कहा, उन्हें भी भूख की ललक उठी थी. इस उम्र में भूखा रहा भी तो नहीं जाता है.

आग जब अच्छी तरह से जलने लगी तो वह युवती उस जगह से उठ कर कुछ दूरी पर जा बैठी थी. कृष्णा भी थोड़ी दूरी बना कर वहीं जा कर बैठ गया. कुछ पलों की खामोशी के बाद वह बोला, "आप ने बहुत अच्छी तरह अलाव जला दिया है वरना अंधेरे में सब घबरा रहे थे."

"जी," युवती ने धीरे से जवाब में कहा.



रे, इनसान हूं तो दूसरों की सेवा करना तो हमारा फर्ज है," कृष्णा जूही से ना.

"मैं कृष्णास्वामी, डाक्टरी पढ़ रहा रा पूरा परिवार बाढ़ में बह गया और मैं क्यों अकेला बच गया," कुछ देर मोश रहने के बाद कृष्णा ने फिर युवती छा, "आप के साथ में कौन है?"

"कोई नहीं, सब समाप्त हो गए," इतना कहने के साथ वह हुलस कर ड़ी.

"धीरज रखिए, सब का दुख यहां जैसा ही है," और उस के साथ वह आप को भी सांत्वना दे रहा था.

अलाव की रोशनी अब धीमी पड़ गई थी. अपनों से बिछड़े सैकड़ों लोग अब वहां एक नया परिवार बना रहे थे. एक अनोखा भाईचारा, सौहार्द और त्याग की मिसाल स्थापित कर रहे थे.

अगले दिन दोपहर तक एक हेलीकाप्टर ऊपर मंडराने लगा तो सब खड़े हो कर हाथ हिलाने लगे. बहुत जल्दी खाने के पैकेट उस टीले पर हेलीकाप्टर से गिरना शुरू हो गए. जिस के हाथ जो लग रहा था वह उठा रहा था. उस समय सब एकदूसरे को भूल गए थे पर हेलीकाप्टर के जाते ही सब एकदूसरे को देखने लगे.

अफरातफरी में कुछ लोग पैकेट पाने से चूक गए थे तो कुछ के हाथ में एक की जगह 2 पैकेट थे. जब सब ने

अपना खाना खोला तो जिन्हें पैकेट नहीं मिला था उन्हें भी जा कर दिया.

कृष्णा उस युवती के नजदीक जा कर बैठ गया. अपना पैकेट खोलते हुए बोला, ''आप को पैकेट मिला या नहीं?''

''मिला है,'' वह धीरे से बोली.

कृष्णा ने आलूपूरी का कौर बनाते हुए कहा, ''मुझे पता है कि आप का मन खाने को नहीं होगा पर यहां कब तक रहना पड़े कौन जाने?'' और इसी के साथ उस ने पहला निवाला उस युवती की ओर बढ़ा दिया.

युवती की आंखें छलछला आईं. धीरे से बोली, ''उस दिन मेरी बरात आने वाली थी. सब शादी में शरीक होने के लिए आए हुए थे. फिर देखते ही देखते घर पानी से भर गया...''

युवती की बातें सुन कर कृष्णा का हाथ रुक गया. अपना पैकेट समेटते हुए बोला, ''कुछ पता चला कि वे लोग कैसे हैं?''

युवती ने कठिनाई से अपने आंसू पोंछे और बोली, ''कोई नहीं बचा है. बचे भी होंगे तो जाने कौन तरफ हों. पता नहीं मैं कैसे पानी के बहाव के साथ बहती हुई इस टीले के पास पहुंच गई.''

कृष्णा ने गहरी सांस भरी और बोला, ''मेरे साथ भी तो यही हुआ है. जाने कैसे अब अकेला रहूंगा इतनी बड़ी दुनिया में. एकदम अकेला... '' इतना कह कर वह भी रोंआसा हो उठा.

दोनों के दर्द की गली में कुछ देर खामोशी पसरी रही. अचानक युवती ने कहा, ''आप खा लीजिए.''

युवती ने अपना पैकेट भी खोला और पहला निवाला बनाते हुए बोली, ''मेरा नाम जूही सरकार है.''

कृष्णा आंसू पोंछ कर हंस दिया. दोनों भोजन करने लगे. सैकड़ों की भीड़ अपना धर्म, जाति भूल कर एक दूसरे को

पहली सीढ़ी

राजनीति, सिनेमा, नृत्य, साहित्य, व्यवसाय में सफल नए लोग

"अभिनय के क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का जज्बा"

–चंचला



खूबसूरत बहू, अबू हसन, विद्या, एक संसदीय समिति की उठक-बैठक, तुम सम पुरुष न मो सम नारी, अग्नि और बरखा, एक कुंआरा शादी-शुदा और तीसरा मचान जैसे नाटकों में चंचला चटर्जी ने अपने अभिनय की जो छाप छोड़ी है, दर्शक उस को कभी भूल नहीं सकते हैं. अभिनय के अलावा चंचला ने स्टेज मैनेजर, निर्देशक, वेशभूषा मैनेजर के रूप में भी अपनी प्रतिभा का जलवा दिखाया है. कान्वेंट स्कूल में पढ़ी चंचला अंग्रेजी, बंगाली, अवधी और हिंदी भाषाओं में अपने भावों को दिखा सकती है. बी.एससी. तक पढ़ी चंचला कत्थक डांस भी जानती है. चंचला को डांसिंग, एंकरिंग और किताबें पढ़ने का शौक है. चंचला के गुरु और लखनऊ रंगमंच के पितामह डा. अनिल रस्तोगी कहते हैं कि चंचला में अभिनय के गुण मौजूद हैं. हम लोगों का मानना है कि निश्चित रूप से चंचला अभिनय के क्षेत्र में कुछ कर दिखाएगी. ●

ढ़ते जा रहे थे और थसाथ खा भी रहे थे.

खातेखाते जूही ली, ''कृष्णा, जिस ह मुसीबत में हम एक जाते हैं वैसे ही बाकी मय क्यों नहीं एक हो र रह पाते हैं?''

कृष्णा ने गहरी सांस और बोला, ''यही तो सान की विडंबना है.''

सेना के जवान 2 न बाद आ कर जब उन्हें क्षित स्थानों पर ले कर चले तो कृष्णा जूही की ओर बहुत ही अपनत्व भरी रों से देखा. वह भी कृष्णा से मिलने के पास आ गई और फिर जाते हुए ली, ''शायद हम फिर मिलें.''

त होने से पहले सब उस स्थान पर च गए जहां हजारों लोग छोटेछोटे ओं में पहले से ही पहुंचे हुए थे. उस ने मैदान में जहांजहां भी नजर जाती थी, रोतेबिलखते लोग अपनों से बिछुड़ने दुख में डूबे दिखाई देते थे. धीरेधीरे ड़ एक के बाद एक कर उन तंबुओं में पानी ने बहा कर कृष्णा और जूही एक टापू पर फेंका था लेकिन कारी व्यवस्था ने दोनों को 2 गअलग तंबुओं में फेंक दिया.

मीलों दायरे में बसे उस तंबुओं के में किसी को पता नहीं कि कौन कहां ाया है. सब एकदूसरे को अजनबी की देखते लेकिन सभी की तकलीफ को ने के लिए सब तैयार रहते.

सरकारी सहायता के नाम पर वहां कुछ हो रहा था और मिल रहा था वह बड़ी भीड़ के लिए पर्याप्त नहीं था. स्वयंसेवी संस्थाएं भी मदद करने के में जुटी थीं.

वहां रहने वाले पीड़ितों के जीवन



सजा

यूं तो मिलना न हुआ
हमारा तुम से
पलकों में आ कर ख्वाब
थोड़े तो सजा देते
हम ने मना किया था
सरेआम मिलने से
ख्वाबों में भी न आए,
इतनी न सजा देते.

–परमजीत कौर 'मोना'

में अभाव केवल खानेकपड़े का ही नहीं बल्कि अपनों के साथ का अभाव भी था. उन्हें देख कर लगता था, सब सांसें ले रहे हैं, बस.

उस शरणार्थी कैंप में महामारी से बचाव के लिए दवाइयों के बांटे जाने का काम शुरू हो गया था. कृष्णा ने आग्रह कर के इस काम में सहायता करने का प्रस्ताव रखा तो सब ने मान लिया क्योंकि वह मेडिकल का छात्र था और दवाइयों के बारे में कुछकुछ जानता था. दवाइयां ले कर वह कैंपकैंप घूमने लगा. दूसरे दिन कृष्णा जिस हिस्से में दवा देने पहुंचा वहां जूही को देख कर प्रसन्नता से खिल उठा. जूही कुछ बच्चों को मैदान में बैठा कर पढ़ा रही थी. गीली जमीन को उस ने ब्लैकबोर्ड बना लिया था. पहले शब्द लिखती थी फिर बच्चों को उस के बारे में समझाती थी. कृष्णा को देखा तो वह भी खुश हो कर खड़ी हो गई.

''इधर कैसे आना हुआ?''

''अरे इनसान हूं तो दूसरों की सेवा करना भी तो हमारा धर्म है. ऐसे समय में मेहमान बन कर क्यों बैठे रहें,'' यह कहते हुए कृष्णा ने जूही को अपना बैग दिखाया, ''यह देखो, सेवा करने का अवसर हाथ लगा तो घूम रहा हूं,'' फिर जूही की ओर देख कर बोला, ''आप ने

भी अच्छा काम खोज लिया है.''

कृष्णा की बातें सुन कर जूही हंस दी. फिर कहने लगी, ''ये बच्चे स्कूल जाते थे. मुसीबत की मार से बचे हैं. सोचा कि घर वापस जाने तक बहुत कुछ भूल जाएंगे. मेरा भी मन नहीं लगता था तो इन्हें ले कर पढ़नेपढ़ाने बैठ गई. किताबकापी के लिए संस्था वालों से कहा है.''

दोनों ने एकदूसरे की इस भावना का स्वागत करते हुए कहा, ''आखिर हम कुछ कर पाने में समर्थ हैं तो क्यों हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहें?''

अब धीरेधीरे दोनों रोज मिलने लगे. जैसेजैसे समय बीत रहा था बहुत सारे लोग बीमार हो रहे थे. दोनों मिल कर उन की देखभाल करने लगे और उन का आशीर्वाद लेने लगे.

कृष्णा भावुक हो कर बोला, ''जूही, इन की सेवा कर के लगता है कि हम ने अपने मातापिता पा लिए हैं.''

एकसाथ रह कर दूसरों की सेवा करते करते दोनों इतने करीब आ गए कि उन्हें लगा कि अब एकदूसरे का साथ उन के लिए बेहद जरूरी है और वह हर पल साथ रहना चाहते हैं. जिन बुजुर्गों की वे सेवा करते थे उन की जुबान पर भी यह आशीर्वाद आने लगा



था, ''जुगजुग जिओ बच्चों, तुम दोनों की जोड़ी हमेशा बनी रहे.''

एक दिन कृष्णा ने साहस कर के जूही से पूछ ही लिया, ''जूही, अगर बिना बराती के मैं अकेला दूल्हा बन कर आऊं तो तुम मुझे अपना लोगी?''

जूही का दिल धड़क उठा. वह भी तो इस घड़ी की प्रतीक्षा कर रही थी. नजरें झुका कर बोली, ''अकेले क्यों आओगे, यहां कितने अपने हैं जो बराती बन जाएंगे.''

कृष्णा की आंखें खुशी से चमक उठीं. अपने विवाह का कार्यक्रम तय करते हुए उस ने अगले दिन कहा, ''पता नहीं जूही, अपने घरों में हमारा कब जाना हो पाए. तबतक इसी तंबू में हमें घर बसाना पड़ेगा.''

जूही ने प्यार से कृष्णा को देखा और बोली, ''तुम ने कभी कबूतरों को अपने लिए घोसला बनाते देखा है?''

कृष्णा ने उस के इस सवाल पर अपनी अज्ञानता जाहिर की तो वह हंस कर बताने लगी, ''कृष्णा, कबूतर केवल अंडा देने के लिए घोसला बनाते हैं, वरना तो खुद किसी दरवाजे, खिड़की या झरोखे की पतली सी मुंडेर पर रात को बसेरा लेते हैं. हमारे पास तो एक पूरा तंबू है.''

कृष्णा ने मुसकरा कर उस के गाल पर पहली बार हल्की सी चिकोटी भरी. उन दोनों के घूमने से पहले ही कुछ आवाजों ने उन्हें घेर लिया था.

''कबूतरों के इन घरों में बरातियों की कमी नहीं है. तुम तो बस दावत की तैयारी कर लो, बराती हाजिर हो जाएंगे.''

उन दोनों को एक अलग सुख की अनुभूति होने लगी. लगा, मातापिता, भाईबहन, सब की प्रसन्नता के फूल जैसे इन लोगों के लिए आशीर्वाद में झड़ रहे हैं. ●

धारावाहिक उपन्यास

मंजिल

● माया प्रधान



गतांक से आगे...

सुहास जब से हनीमून से आया था एक बार भी अपनी दुकान पर नहीं गया. फोन पर अपने कर्मचारी से बातें कर लेता और आवश्यक निर्देश भी देता रहता. पुरवा के प्यार में मदहोश बस वहीं उस के आसपास मंडराता रहता.

पुरवा टोकती, "तुम दुकान पर क्यों नहीं जाते हो. मुझे भी अंधमहाविद्यालय जाना है."

पूर्व कथा

पुरवा का पर्स चोर से वापस लाने में सुहास मदद करता है. इस तरह दोनों की जानपहचान होती है और मुलाकातें बढ़ कर प्यार में बदल जाती हैं. सुहास पुरवा को अपने घर ले जाता है. वह अपनी मां रजनीबाला और बहन श्वेता से उसे मिलवाता है. रजनीबाला को पुरवा अच्छी लगती है. उधर पुरवा सुहास को अपने पिता से मिलवाने अपने घर ले आती है तो उस के पिता सहाय साहब सुहास की काम के प्रति लगन देख कर खुश होते हैं.

सुहास की बहन श्वेता को देखने लड़के वाले आते हैं. इंजीनियर लड़के गौरव से श्वेता का विवाह तय हो जाता है. मिठाई के डब्बे के साथ बहन की सगाई का निमंत्रण ले कर सुहास सहाय साहब के घर जाता है. घर पर बीमार सहाय साहब का हालचाल पूछने उन के मित्र आए होते हैं. सहाय साहब सुहास की तारीफ करते हुए सब को बताते हैं कि वह उस के लिए मोटरपार्ट्स की दुकान खुलवा रहे हैं. सुहास अपनी तारीफ सुन कर खुश होता है.

श्वेता की सगाई पर आए सहाय साहब के परिवार से मकरंद वर्मा परिवार के सभी सदस्य उत्साहपूर्वक मिलते हैं. दोनों परिवारवाले सुहास और पुरवा के रिश्ते से खुश थे.

समय तेजी से गुजरता रहा. सुहास व्यापार शुरू कर देता है, लेकिन कई बार काम के लिए बंध कर बैठना उस के लिए मुश्किल हो जाता क्योंकि किसी भी जगह जम कर रह पाना उस के स्वभाव में नहीं था.

अंततः श्वेता के विवाह का दिन आ जाता है. उस दिन पुरवा का सजाधजा रूप देख कर सुहास दीवाना हो जाता है. पुरवा से शीघ्र विवाह करने के लिए सुहास दुकान पर मन लगा कर काम करने लगता है. यह सब देख सहाय साहब खुश थे. आखिरकार वह एक दिन वर्मा साहब के घर पुरवा का रिश्ता ले कर पहुंच जाते हैं. सभी की मौजूदगी और खुशी से पुरवासुहास का रिश्ता पक्का हो जाता है और शीघ्र ही धूमधाम से विवाह हो जाता है.

सुहागसेज पर दोनों हजारों सपने संजोते हैं और हनीमून पर ऊटी जाते हैं. वापस आने पर घर में सब उन का स्वागत करते हैं. इधर श्वेता से बात करने पर पुरवा को पता चलता है कि बड़े परिवार के कारण वह ससुराल में नाखुश है. उधर अपनी व्यवहारकुशलता से पुरवा ससुराल में जल्द ही सब से घुलमिल जाती है. अब आगे...

"पुरवा, दुकान और विद्यालय तो अपनी जगह पर स्थिर हैं, कहीं भाग नहीं जाएंगे पर यह सुनहरे दिन फिर कभी लौट कर नहीं आएंगे," सुहास उसे बांहों में भर कर उत्तर देता.

पुरवा को लगता कि सुहास ठीक ही कह रहा है, यह नयानया उत्साह फीका पड़ने से पहले ही इन पलों को जी भर कर जी लेना चाहिए. उसे सुहास के प्यार पर गर्व होने लगता.

एक शाम सागर और बेला आ धमके और आते ही बेला सुहास के कमरे में पहुंच गई. सुहास उस समय शीशे के सामने संवरती हुई पुरवा के बालों में बड़े प्यार से ब्रश फेर रहा था.

"वाह देवरजी वाह, यहां अचानक न आती तो आप का यह अनोखा प्यार कैसे देख पाती," बेला ने अंदर आते हुए कहा.

सुहास लजा कर हंस दिया और बोला, "आइए भाभी, आज हम आप के घर ही आने वाले थे."

"आप ने याद किया और हम हाजिर हो गए," बेला ने मुसकरा कर कहा. पुरवा ने भी हंसने का प्रयास किया पर उस के चेहरे पर हल्का सा तनाव साफ दिखाई दे रहा था. बेला का यों निसंकोच उस के निजी कमरे में घुस आना उसे अच्छा नहीं लगा था. बेला ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया और दोनों से ही हनीमून को ले कर चुहल करती रही.

सागर ड्राइंगरूम में ही बैठे थे अतः ब को वहीं जाना पड़ा. चाय के बीच चानक सागर ने कहा, "सुहास, थोड़ा मय निकाल पाओगे क्या?"

"क्यों भाई साहब, कोई खास ात?" सुहास ने पूछा.

"वह मेरे ताऊजी का छोटा बेटा है न रुण, उसे कैंसर अस्पताल ले जाना है," ागर ने उदासी से कहा.

"अरे, उसे कैंसर ?" सुहास आश्चर्य बोला.

"है या नहीं, यही सही से मालूम नहीं ड़ रहा है. डाक्टर हते हैं कि ठीक से ता चल जाए तो अभी लाज संभव है. अभी उस की दशा देख र डाक्टरों को कैंसर शक है," बेला ने बुझे स्वर में कहा.

"मैं जरूर चलूंगा ाई साहब. आप तना जल्दी हो सके हें ले चलिए," सुहास बहुत आतुरता से कहा.

पुरवा ने देखा कि हास कैसे दूसरों के ख में व्याकुल हो उठता है. कुछ अच्छा ा और कुछ उदास भी हो गई. इतनी देर वह इस माहौल में अपनेआप को रिचित सा अनुभव कर रही थी. सागर व ा के साथ सुहास घर से जो गया तो को ही वापस लौटा. पुरवा को उस य उस का जाना बुरा नहीं लगा था, पर सारा दिन उस की प्रतीक्षा में बीत तो उस के मन में विचित्र सी खिन्नता गई. क्या सुहास समाजसेवा के आगे ी सारी जिम्मेदारियां भूल जाता है?

कहां तो उस के प्यार में डूब कर वह अपनी दुकान पर जाना भी भूल गया था, कहां सारा दिन उस की याद भी नहीं आई. सुहास ने अपनी थकान जाहिर करते हुए उसे देखा और बोला, "बहुत देर हो गई न. अंकल का दुख देखा नहीं जा रहा था. सागर भैया के साथ मैं बराबर बना रहा तो उन सब को भी बहुत तसल्ली थी."

पुरवा चुपचाप उस के उतारे कपड़े



"मैं वापस नहीं जाऊंगी मम्मी, अब की बार मुझे वापस भेजने की जिद मत करना," श्वेता रोते हुए मां से बोली.

तह करती रही और सुहास अपने वहां होने के महत्त्व पर भाषण देता रहा.

रात में सोने से पहले पुरवा ने कहा, "सुहास, तुम्हें कुछ समय अपने व्यापार को भी देना चाहिए. कोई भी काम नौकरों के भरोसे ठीक से नहीं होता है."

"मुझे पता है पुरु. कल मैं दुकान पर भी जाऊंगा. अभी तो बस, हमारे प्यार की घड़ी को याद करने दो," और इसी के साथ सुहास ने पुरवा को अपनी बांहों में खींच लिया.

एक दोपहर श्वेता अचानक ही

अपना सूटकेस उठाए घर आ गई. रजनीबाला उसे देख कर खिल उठीं.

"अरे श्वेता, अचानक..."

"हां," श्वेता के चेहरे पर खीज भरी हुई थी. वह कुछ कहना चाह रही पर बिना कुछ कहे ही वह अपने पहले के कमरे में घुस गई. पुरवा मेज पर खाना लगा रही थी. श्वेता को विचित्र स्थिति में कमरे की तरफ जाते देखा तो पीछेपीछे हो ली और हंसते हुए बोली, "यह क्या ननद रानी, सूटकेस तो कोई भी नौकर अंदर रख देता, तुम तो हमें देखे बिना ही अंदर भाग आईं."

श्वेता बनावटी हंसी के साथ बोली, "नहीं भाभी, किसी के ऊपर गुस्सा चढ़ा हुआ था, सो इधरउधर कहीं ध्यान ही नहीं दिया."

"अच्छा," पुरवा ने प्यार से उस की ठुड्डी उठाई, "कहीं यह गुस्सा हमारे ननदोईजी पर तो नहीं है?"

श्वेता हंस दी, तभी मां रजनी वहां आ गईं. पुरवा ने हंस कर कहा, "कल से मम्मी तुम्हें बहुत याद कर रही थीं. चाहत तुम्हें खींच ही लाई."

पुरवा ने मां के सामने प्यार की चादर डाल स्थिति को सहज बना दिया था.

उस दिन बहुत कहने पर सुहास अपनी दुकान पर गया था. पुरवा ने उसे फोन किया और कहा, "सुहास, डाइनिंग टेबल पर खाना लग गया है और इत्तेफाक से श्वेता भी आई है. तुम भी आ जाओ."

सुहास के आसपास उस समय कोई नहीं था इसलिए परिहास करता हुआ बोला, "आखिर तुम भी हर पल मुझे देखे बिना रह नहीं सकतीं न?"

सुहास को पा कर पुरवा खुश थी लेकिन सुहास की समाजसेवा की आदत और घर कुछ कमा कर न देना, यह बात पुरवा को खटक रही थी. क्या पुरवा का सुहास के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण सही था?

श्वेता खाना खाते समय भी बहुत अनमनी रही. पुरवा ने मलाई कोफ्ते का डोंगा उस की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "श्वेता, मुझे बहुत अच्छा खाना बनाना तो नहीं आता पर कोशिश की है, यह मलाई कोफ्ता बनाने की. जरा चख कर बताना कि अभी और क्या कमी है इस में."

श्वेता उस की इस बात पर शायद चिढ़ गई थी. एक कोफ्ता निकाल कर बोली, "बस यही तो कमी है मुझ में भाभी कि तुम्हारी तरह मैं लच्छेदार बातें नहीं कर पाती. तभी तो वहां मुझ में सभी मीनमेख निकालते रहते हैं."

सब ने एकसाथ श्वेता को देखा था. सुहास को शायद बुरा लगा था, झट से बोला, "श्वेता, वहां का गुस्सा तुम क्या पुरवा पर निकाल रही हो?"

पुरवा ने हाथ से उसे रोका और बोली, "कहने दो सुहास, अपनों से ही मन का दुख कहा जाता है."

"बस, यही तो..." श्वेता चिढ़ कर उठ गई, "हर समय बहुत अच्छे बने रहने का स्वांग, न मुझ से होता है न पसंद है."

श्वेता दनदनाती हुई कमरे में चली गई. रजनी ने क्रोध से पुकारा, "श्वेता यह क्या, खाने पर से ऐसे ही उठ कर जाते हैं?"

बुरा तो पुरवा को भी लगा था पर उसे श्वेता के बचकाने स्वभाव के बारे में थोड़ाबहुत पहले से ही अंदाजा था.

"असल में हम लोगों के लाड़प्यार ने ही इसे बिगाड़ दिया. इकलौती बेटी जो है, इसीलिए इस की हर बात हम दोनों तुरंत

न लेते थे," मां रजनी ने पुरवा को जैसे फाई दी. उन की आंखों में वेदना भी थी र ममता भी. बोलीं, "लगता है इस का दद्दी स्वभाव ससुराल में भी इस के ड़े आ रहा है."

पुरवा और सुहास चुपचाप खाना ाते रहे. मां ने एक प्लेट में कुछ चीजें ोसीं और प्लेट ले कर श्वेता को मनाने ल दीं. सुहास धीरे से बोला, "अब भी तो गाड़ ही रही हो मां. ससुराल में कोई खाना कर यों पीछे थोड़े ही भागता होगा."

"जानती हूं रे, पर मां का दिल नता नहीं. जब तक वह नहीं खाएगी, झ से भी नहीं खाया जाएगा."

शाम को अचानक गौरव आ गया. खुश हो गईं और बोलीं, "हम लोग हें ही याद कर रहे थे बेटा. श्वेता तो च्ची है, अभी तक नासमझ. आई है तब तुम्हें फोन भी नहीं किया."

"वह तो रूठती ही रहती है मम्मीजी, मना लूंगा उसे," उस ने हंस कर कहा.

रवा चाय की तैयारी करने लगी. गौरव ता के कमरे में था. रजनी ने पुरवा से हा, "कितना अच्छा लड़का ढूंढ़ा है पर देखो नादानियां दिखाती रहती है."

"कुछ दिन में समझदार हो जाएगी, र नादानी नहीं करेगी," पुरवा ने जैसे को सांत्वना देने के लिए हंस कर कहा.

"तुम भी तो नई हो, पर कितनी झदार हो," मां ने कहा तो पुरवा गद्‌गद उठी. केतली में चाय का पानी डालते वह बोली, "कभी ऐसी भूलचूक हो मम्मीजी तो कान पकड़ लीजिएगा."

पुरवा फिर से यदाकदा अंध विद्यालय जाने लगी थी. मां ने भी आज्ञा ी थी कि यह तो समाज कल्याण का है, बंद मत करो. बहुत दिनों से पुरवा स यात्रा नहीं की थी. उस दिन अपने रूट वाली बस में बैठी तो पुरानी यादों ो गई. यादों की तंद्रा तो तब टूटी जब कानों में यह सुनाई पड़ा, "ए मिस्टर, आप ठीक से खड़े नहीं हो सकते?"

आवाज सुन कर पुरवा चौंक उठी. दरवाजे के पास की भीड़ में चेहरे दिखाई नहीं दे रहे थे, पर आवाज तो पहचानी हुई थी. पुरवा सोच में पड़ गई कि वह सुहास बस में क्या कर रहा है. इस समय तो उसे अपनी दुकान में होना चाहिए था.

बड़ी कठिनाई से जगह बनाती हुई पुरवा आगे बढ़ी तो देखा कि सुहास बेला के साथ बस के दरवाजे पर खड़ा है और एक नवयुवक से उलझ रहा है. शायद उस ने बेला के साथ कुछ शरारत की होगी.

कौफी बढ़ाती है कार्यक्षमता को

बेरी के पौधे के बीज से बनी कौफी पर वैज्ञानिक एक शताब्दी से अध्ययन करते आ रहे हैं. वैसे इस तथ्य से सभी सहमत हैं कि गर्भवती महिलाओं को कौफी का सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए. लेकिन इस के फायदे भी कम नहीं हैं.

- 1 कप कौफी दमे के तीव्र प्रभाव को कम करने में सहायक है.
- 2 कप कौफी एकाग्रता को बनाए रखने में सहायक होती है.
- भोजन के बाद इस का सेवन झपकी को काफी हद तक दूर कर देता है और मूड अच्छा बनाता है.
- कार्यालयों में रात की शिफ्ट में काम करने वालों को कौफी का सेवन दिन के समय काम करने वाले उन के सहयोगियों के समान कार्य निष्पादन करने के योग्य बनाता है.
- 1 कप कौफी का प्रभाव 5 से 7 घंटे तक रहता है.

एकदम निकट पहुंच कर पुरवा ने आवाज दी तो सुहास चौंक पड़ा, "अरे, तुम."

"हां," पुरवा ने अधिक बात नहीं की, बस रुकी तो तीनों ही उतर गए. सुहास की गोद में बेला का बच्चा था. सफाई देता सा वह झट से बोला, "मैं दुकान के लिए निकलने ही वाला था कि सागर भैया का फोन आ गया. उन्हें जरूरी मीटिंग में जाना था और इसे आज डाक्टर के पास चेकअप के लिए ले जाना था."

पुरवा सोचने लगी कि अभी थोड़ी देर पहले ही तो वह सुहास को घर पर



छोड़ कर आई थी. तब वह दुकान के कुछ काम के सिलसिले में किसी से मिलने जाने वाला था. इतनी जल्दी वह बेला को ले कर डाक्टर के पास भी चल दिया, उस ने लगभग 45 मिनट ही तो बस की प्रतीक्षा की थी, बसें भरी हुई आ रही थीं इसीलिए उस ने दो बसें छोड़ दी थीं. शायद सुहास दो बसें बदलता हुआ आया है तभी यहां दोनों की टक्कर हो गई.

जाने क्यों पुरवा के मन में कुछ चुभ सा रहा था. लाख मन को समझाया कि सुहास की इस सहायता करने वाली भावना के कारण ही तो वह स्वयं सुहास के जीवन में आई है, पर मन इसे सोच कर भी संतुष्ट नहीं हो पा रहा था. एक पत्नी का अधिकार निरंतर पुरवा के मन को भरमा रहा था, पर ऊपर से वह संयत बनी हुई खुद भी साथ चलने का आग्रह करने लगी थी. इस पर सुहास ने कहा, "तुम बहुत दिनों बाद अंध विद्यालय जा रही हो, वहीं जाओ, मैं इस बच्चे को दिखा कर और भाभी को बस में बैठा कर सीधा अपने काम पर चला जाऊंगा."

सुहास जैसेजैसे अपने काम की देखभाल करने लगा था पुरवा उतनी ही खुश रहने लगी थी. मां व पापा भी खुश हो कर कहते, "बहू के आने से सुहास का काम में भी मन लगने लगा है."

पुरवा एक अच्छी पत्नी की तरह सुहास का पूरा ध्यान रखती और घर की पूरी व्यवस्था संभालने के साथ मां व पापा का भी ध्यान रखती. कभी अपने मम्मीपापा के पास जाती तो उत्साह से भरी रहती. सहाय साहब भी यह जान कर संतुष्ट होते कि सुहास अब व्यापार की तरफ ध्यान देने लगा है.

एक दोपहर हाथ में अटैची उठाए हुए श्वेता फिर आ धमकी. रजनीबाला ने चौंक कर देखा और बोलीं, "कैसी हो श्वेता, सब ठीक तो है न?"

मां के मुख से यह शब्द निकलते ही वेता उन के गले लग कर रोने लगी और ोली, "मैं वापस नहीं जाऊंगी मम्मी, अब ी मुझे वापस भेजने की जिद मत करना."

तब तक पुरवा भी वहां आ गई थी ौर श्वेता को मां के गले से अलग करती ई बोली, "चलो, अपने कमरे में चलो वेता, सब ठीक हो जाएगा."

उस समय किसी ने श्वेता से कोई श्न नहीं किया. पुरवा भी समझ चुकी थी क जब श्वेता क्रोध में होती है तब उस से ुछ भी कहनासुनना व्यर्थ होता है.

पुरवा तुरंत उस के लिए ठंडा जूस ना कर ले आई और बहुत प्यार से उस के ांसू पोंछती रही. मां बहुत परेशान थीं पर स समय कुछ भी पूछना उन्हें भी उचित हीं लग रहा था, अतः उस दिन श्वेता से कसी ने कोई प्रश्न नहीं पूछा और न ही वेता के ससुराल से कोई फोन आया.

पुरवा ने एकांत में सुहास से कहा, गौरव का कोई फोन नहीं आया, कहीं न से तो लड़ कर नहीं आई है श्वेता?"

सुहास उस दिन बहुत थका हुआ था. पने व्यापार के सिलसिले में उस ने ाफी भागदौड़ की थी. पुरवा की बात हंस कर बोला, "तुम चिंता मत करो, ह लड़की बचपन से ही थोड़ी नकचढ़ी कुछ दिनों में फिर शांत हो कर गौरव दोस्ती कर लेगी."

2 दिन बीत गए थे. गौरव नहीं या था और न ही उस का कोई फोन या तो रजनीबाला को चिंता होने ी. वह श्वेता से पूछतीं, "ऐसी क्या त है जो न तू खुद फोन करती है और गौरव का फोन आता है."

श्वेता नाश्ता करते हुए कहने लगी, म्मा, यह बताओ कि क्या अब मैं यहां नहीं सकती हूं?"

"यह तेरा घर है, तुझे रहने के लिए न मना कर रहा है," रजनीबाला बोलीं, किन इस तरह से तेरा रूठ कर आना और उन लोगों की तरफ से भी सन्नाटा खिंचे रहना, यह परेशान तो करता ही है न."

"तुम सब को परेशान होने की जरूरत नहीं है. हम पतिपत्नी आपस में ही निबट लेंगे," श्वेता ने निश्चिंतता से कहा.

"पर बिना आपस में मिले और बात किए कैसे निबट लोगी?" यह स्वर पापा का था जो बहुत देर से चुपचाप नाश्ता कर रहे थे. वह फिर बोले, "ठीक है, आज मैं गौरव को फोन कर के घर पर बुलाता हूं."

श्वेता शांत रही. सब को लगा कि शायद यही ठीक है.

शाम को 6 बजे गौरव आया तो श्वेता को छोड़ कर सभी अंदर ही अंदर यह सोच कर बहुत भयभीत थे कि पता नहीं श्वेता क्या गलती कर के आई है. गौरव के मन में क्या होगा, यह सब जानने की उत्सुकता भी थी और भय भी था पर ऊपर से सब शांत थे और गौरव का स्वागत करते हुए निरंतर हंसने का प्रयास कर रहे थे. पापा ने तुरंत कहा, "आओ बेटा गौरव, आओ. मैं ने सोचा कि आज सब एकसाथ ही रात्रिभोज पर गपशप करते हैं."

गौरव भी हंस दिया और बोला, "अच्छा है पापाजी, एकसाथ मिल कर बैठने से बड़ी से बड़ी परेशानियां और समस्याएं हल हो जाती हैं."

कुछ देर ड्राइंगरूम में इधरउधर की गपशप चलती रही. नौकर ट्राली में चाय ले कर आ गया था और पुरवा सब को चाय बना कर दे रही थी. पापा ने चाय पकड़ते हुए गौरव से कहा, "श्वेता हमारी इकलौती बेटी है, इसी से थोड़ी जिद्दी हो गई है. गौरव बेटा, उस की नादान बातों का बुरा मत माना करो."

यद्यपि श्वेता ने क्रोध से पापा की ओर देखा था. फिर भी वह बेटी की नादानियों की सफाई सी देते रहे. तब गौरव ने कहा, "पापाजी, मैं सब समझता हूं, मैं

इसे बहुत प्यार भी करता हूं, पर इस के लिए मैं अपने बूढ़े मातापिता और भाईबंधु के परिवार को नहीं छोड़ सकता."

गौरव की बात सुन कर सभी अचानक चौंक पड़े थे. चाय बनाती पुरवा भी ठिठक गई थी, गौरव ने आगे कहा, "आप श्वेता से ही पूछिए कि इस ने मेरे साथ रहने की क्या शर्त रखी है."

गौरव के शब्दों में अथाह दुख था. वह बोला, "यह चाहती है कि मैं अपना अलग घर ले कर रहूं. एक ही शहर में पिता की उतनी बड़ी कोठी छोड़ कर मैं एक किराए का मकान लूं."

श्वेता सिर झुकाए बैठी थी. मां ने कहा, "यह गलत है श्वेता, तुम्हें ऐसी बातें शोभा नहीं देती हैं."

"लेकिन मैं उस भीड़ के साथ नहीं रह सकती, सब अपनीअपनी चलाते हैं, वहां मेरा अपना कुछ भी नहीं है."

"अपने ससुराल वालों को भीड़ कहते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए श्वेता. वे सब तुम्हारे सुखदुख के साथी हैं. अकेले की जिंदगी भी कोई जिंदगी है," पापा ने क्रोध से कहा.

मां की आंखों में भी अपार दुख छा गया था. बोलीं, "ऐसा सोचना ही गलत है बेटा. अगर इसी तरह पुरवा भी सोचने लगे तो तुम्हें या हम सब को कैसा लगेगा."

मां की बात पर श्वेता और भी भड़क उठी, "भाभी, कैसे यह सब सोच सकती हैं. सुहास भैया कमाते ही क्या हैं जो वह अलग रहने की बात करेंगी."

श्वेता की बात पर अचानक ही वहां खामोशी छा गई थी. गौरव भी हैरान था और सुहास लज्जित हो उठा था. मां व पापा अपना क्रोध दबाने का प्रयास कर रहे थे. पुरवा वहां रुकी नहीं और सिर झुका कर अपने कमरे में चली गई.

–क्रमशः

आते देखा

न कभी तुम्हें नजरें उठाते देखा
न कभी नजरें झुकाते देखा,
देखा भी कभी तो
तुम्हें ख्वाबों में आते देखा.

न कभी तुम्हें लबलबाते देखा
न कभी खिलखिलाते देखा,
देखा भी कभी तो
लाल आंखें दिखाते देखा.

न कभी तुम्हें जुल्फ लहराते देखा
न कभी चुनरी फहराते देखा,
देखा भी कभी तो
तुम्हें कपड़ों में
गरिमा को दर्शाते देखा.

–बृज मोहन शर्मा



हमारी बेड़ियां

हमारे यहां एक लड़का काम करता है. उस को मेशा इस बात का अफसोस हता है कि उस ने कभी पने पिता की सूरत तक हीं देखी. जब वह अपनी मां ी कोख में था तभी उस के ता का देहांत हो गया था.

उन के यहां रिवाज है क मृत्यु के बाद उस व्यक्ति ी सारी चीजें, कपड़े यहां क कि तसवीर को भी जला या जाता है.

कहा जाता है कि यक्ति की मृत्यु के बाद यदि स की कुछ भी चीज यहां ह जाए तो उस व्यक्ति को क्ति नहीं मिलती. उस के ता की भी सारी चीजों को तो दान कर दिया गया या र जला दिया गया. उन की सवीर को भी जला दिया या. इस तरह एक धविश्वास के चलते वह ड़का अपने पिता की सूरत खने से वंचित रह गया.

–बिंदिया अग्रवाल

हमारे यहां राजस्थान में जयपुर और आसपास के जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में एक परंपरा है कि जब किसी भी परिवार में नवजात शिशु पैदा होता है तो शिशु के जन्म के 15 दिन या एक माह के अंदर शिशु की मां को आबादी के नजदीक वाले कुआं (कूप) पर परिवार की समस्त महिलाएं ले जा कर कुआं पूजन कराती हैं.

यह कार्यक्रम बाजेगाजे के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है. मुझे भी मेरे मित्र के आग्रह पर उन के गांव में इस कार्यक्रम में जाने का मौका मिला.

समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा था लेकिन आबादी के पास वाले कुएं में, जहां पूजन होना था, पानी नहीं था.

पानी न होने के कारण नवजात शिशु की दादी और पड़दादी द्वारा वहां पूजन नहीं करवा कर आबादी से दूर सिंचित क्षेत्र के कुएं पर पूजन करने को कहा, जिस में पानी भरा था.

इस का आधुनिक शिक्षित युवा महिलाओं ने विरोध करते हुए दादी व पड़दादी को समझाया कि कमजोरी की हालत में इतनी दूर पैदल जाना जच्चा के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है लेकिन दादी और पड़दादी के दबाव में शिशु की मां को आबादी से दूर जाना पड़ा.

शिशु की मां कमजोरी के कारण ज्यादा पैदल चल नहीं सकी तथा रास्ते में बेहोश हो कर गिर पड़ी जिस के कारण उसे बच्चे सहित कसबे के एक अस्पताल में ले जाना पड़ा. सारा उत्सव बेकार हो गया.

मुझे इन परंपराओं के प्रति बहुत ग्लानि हुई कि 21वीं सदी में भी हमारी बेड़ियां बदस्तूर बनी हुई हैं.

–जगदीशप्रसाद पालड़ी 'शर्मा' ●

आप भी लिखिए

इस स्तंभ में अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित अनुभवों पर 100 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पता है:

सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

कहानी ● अबरार मोहसिन

प्यारे मियां 13 वर्ष के थे. वह मेरे साथ ही नवीं कक्षा में पढ़ते थे. पढ़ते तो क्या थे, बस, हर समय खेलकूद में ही उन का मन लगा रहता. जब अध्यापक पढ़ाते तो वह खिड़की से बाहर मैदान में झांकते रहते, जहां लड़के फुटबाल, कबड्डी या गुल्लीडंडा खेलते होते.

अपनी इन हरकतों पर वह रोज ही पिटते थे, स्कूल में और घर पर भी. उन के पिता बड़े कठोर आदमी थे. खेलकूद के नाम से उन्हें नफरत थी. उन के सामने खेल का नाम लेना भी पाप था. वह चाहते थे कि प्यारे मियां बस दिनरात पढ़ते ही रहें. अगर वह कभी खेलने चले जाते तो बहुत मार पड़ती थी. यही कारण था कि प्यारे मियां स्कूल में जी भर कर खेलना चाहते थे. अंत में वही हुआ जो होना था. वह परीक्षा में उत्तीर्ण न हो पाए. पिता ने जी भर कर उन्हें मारा.

प्यारे मियां हर खेल में सब से आगे थे. स्वास्थ्य बड़ा अच्छा था. उन का शरीर भी बलिष्ठ था. एक दिन उन की मां उन्हें पीर साहब के पास ले गईं. पीर साहब नगर

करामात

सरिता, बीस साल पहले, अप्रैल (प्रथम) 1986



ाहर एक खानकाह में रहते थे. नगर
लोग उन के चमत्कारों की कहानियां
सुन कर उन के पास जाया करते थे.
ई किसी रोग का इलाज कराने जाता,
ई संतान के लिए और कोई मुकदमा
ने के लिए. पीर साहब किसी को
ीज देते, किसी को फूंक मार कर
ी पिलाते. पीर साहब का खलीफा हर
वाले से 11 रुपए ले लेता था.

प्यारे मियां की मां को भी पीरों पर
विश्वास था. उन का कहना था कि
में इतनी शक्ति होती है कि वह
कुछ कर सकते हैं. जिसे जो चाहे दे दें
जिसे चाहें बरबाद कर दें.



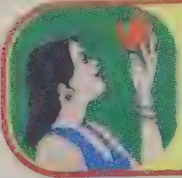
मां ने पीर
ब से हाथ जोड़
कहा, "इस का
ई में मन नहीं लगता.
कुछ कीजिए."

पीर साहब ने आंखें
कीं. कुछ बुदबुदाए,
बोले, "मुर्गे के खून
क तावीज लिखा जाएगा. काले रंग
एक मुर्गा लाओ. 40 दिन लड़के को
अपना फूंका हुआ पानी पिलाएंगे."

अगले दिन प्यारे मियां के गले में
ज पड़ गया.

प्यारे मियां रोज पीर साहब का दम
हुआ पानी पी रहे थे.

मां खुश थीं कि अब वह खेलकूद
धिक ध्यान नहीं देते थे. कक्षा में
ाप बैठे रहते. घर जाते तो कमरे में
र पड़ जाते. वह कुछ थकेथके से
थे. उन्हें हलकाहलका बुखार रहने



आप क़ा स्वास्थ्य

सामान्य समस्याएं

मैं 18 वर्षीय छात्रा हूं. मेरे बाल बहुत झड़ रहे हैं और बालों का रंग भी भूरा हो गया है. बालों में जूं भी हैं. इस का समाधान बताएं. –हरियाली साहनी, दुर्ग

आप के बालों की समस्या का संबंध सीधे तौर पर जूं का होना तथा बालों की सफाई न होना लगता है. अधिक जुओं के कारण बालों में अकसर संक्रमण भी हो जाता है जिस के कारण बाल झड़ सकते हैं. बालों के भूरे हो जाने की वजह कुपोषण भी हो सकता है. ऐसा लगता है आप बालों में तेल बिलकुल भी नहीं लगातीं जिस से बाल रूखे तथा भूरे हो गए हैं. यह अत्यावश्यक है कि आप बालों की सफाई पर समुचित ध्यान दें. कुछ समय तक प्रतिदिन किसी अच्छे शैंपू से सिर धोएं तथा भलीभांति नहाएं. जुएं गंदगी में ही पनपती हैं. 1 प्रतिशत परमैथ्रिन घंटा भर तक बालों में लगा कर रखें तत्पश्चात शैंपू से बालों को धोएं. 'मैडिकर' का शैंपू तथा तेल दोनों ही बाजार में उपलब्ध हैं, उसे लगा सकती हैं. यदि बालों में खुजली बहुत है तो कोई एन्टी एलर्जिक दवा डाक्टर की सलाह से खा सकती हैं. यदि बालों में जीवाणुओं के कारण संक्रमण भी है तो उस का उपचार भी करना पड़ेगा. अपनी कंघी बिल्कुल अलग रखें ताकि घर के अन्य सदस्यों तक लीख या जूं न पहुंचें. बालों की सफाई के अतिरिक्त शरीर एवं कपड़ों की स्वच्छता भी आवश्यक है. कपड़ों को गरम पानी में भिगो कर धूप में सुखाएं. यदि घर के अन्य सदस्यों को भी ऐसी ही समस्या है तो उन्हें भी उपर्युक्त तरीका अपनाना होगा. यह भी आवश्यक है कि बालों को सही पोषण मिले अतः संतुलित भोजन लें.

मैं 35 वर्षीय शादीशुदा महिला हूं. मेरा 9 वर्षीय एक बेटा और $1\frac{1}{2}$ वर्ष की बेटी है. शादी से पहले मेरे बाल काफी घने और चमकदार थे लेकिन अब बाल काफी झड़ते हैं तथा बेजान हैं, यहां तक कि सिर के बीचोंबीच गंजापन नजर आने लगा है. कृपया कोई उपाय बताएं ताकि बाल झड़ने बंद हो जाएं. –सीमा राठौर, राजस्थान

आप के बालों का रूखा एवं बेजान होने का कारण उन्हें उचित पोषण न मिलना हो सकता है. बच्चों के जन्म के पश्चात क्या आप ने अपने शरीर की समुचित देखभाल की ? क्या आप संतुलित भोजन लेती हैं ? क्या आप के भोजन में निर्धारित प्रोटीन की मात्रा है ? शारीरिक कमजोरी से भी बाल झड़ सकते हैं. यों तो 50-60 बालों का प्रतिदिन गिरना नार्मल माना जाता है परंतु यदि इस से अधिक

लगा था और खांसी भी.

मैं ने उन की मां को समझाया, "पीर साहब और तावीज के चक्कर में न पड़ें. प्यारे मियां का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है. उन्हें डाक्टर को दिखाएं."

मां ने तुरंत कहा, "बेटा, हमारा पीर साहब पर विश्वास है. तुम ने देखी नहीं उन की करामात. प्यारे से खेलकूद सब छुड़वा दिया. वही प्यारे को ठीक भी कर देंगे."

मैं ने फिर कहा, "प्यारे मियां का खेलकूद में इतना ध्यान देना कोई गंभीर बात नहीं थी. अगर उन्हें खेलकूद से इतनी सख्ती से न रोका जाता तो वह भी केवल इतना ही खेलते जितना और सब लड़के. अधिक प्रतिबंध लगाने का प्रभाव उलटा ही हुआ. जितना उन्हें खेल से रोका गया वह

झड़ते हैं तो किसी चर्मरोग विशेषज्ञ से
ाह लें. हो सकता है आप के बालों में
ी हो जिस के कारण भी बाल झड़ सकते
बालों की जड़ों में रात में गरम तेल लगा
मालिश करें. किसी अच्छे शैंपू से सिर
ं. कहीं ऐसा तो नहीं कि आप बालों में
सी प्रकार की डाई लगाती हों. डाई से भी
झड़ सकते हैं और गंजापन भी हो सकता
बालों में बादाम का तेल, आलिव आयल
सकती हैं. संतुलित भोजन अवश्य लें.
तन में दूध, दही, प्रोटीन, फल, सब्जियों
मात्रा बढ़ा दें, अवश्य लाभ होगा.

**मैं 22 वर्षीय अविवाहित युवती हूं.
समस्या है कि मेरे सिर में रूसी बहुत
त्वचा भी तैलीय है. पिछले कुछ महीनों
मेरे चेहरे पर बारीक से दाने निकल
ते हैं. इन बारीक दानों में थोड़ी पस भी
ी है. पूरे चेहरे पर खुजली होती है तथा
ा लाल हो जाती है. कोई उपचार
एं.**
–मधु शर्मा, अमृतसर

आप के पत्र से लगता है कि आप के
े पर मुंहासे हैं जिन्हें मेडिकल भाषा में
नी' कहते हैं. इन का उपचार आप को
ी समय तक करना पड़ सकता है. चेहरे
'सेबेशस' ग्रंथियों में संक्रमण के कारण
सर युवा स्त्री पुरुषों में ऐसा हो जाता है.
अधिक धूप में घूमने से, अल्ट्रावायलेट किरणों से तथा तरहतरह के कैमिकलयुक्त साबुन आदि के प्रयोग से भी चेहरे पर मुंहासे होने की आशंका रहती है. जैसा कि आप ने स्वयं ही लिखा है कि आप के सिर में रूसी है जिस के कारण भी ऐसा हो सकता है. रूसी हटाने के लिए किसी अच्छे शैंपू का प्रयोग करें जैसे कि निजोराल शैंपू. इस से अवश्य ही मुंहासों में कमी आएगी. यह भी आवश्यक है कि आप अपने चेहरे को साफ एवं शुष्क रखें. मुंह पर एरिथ्रोमाइसिन या कलैंडामाइसिन लोशन डाक्टर की सलाह से लगा सकती हैं. इस के अतिरिक्त विटामिन ए युक्त खाद्य पदार्थ खाएं. खुजली अधिक होने पर कोई एन्टी एलर्जिक ले सकती हैं. आजकल युवतियों में गोरेपन की क्रीम लगाने का भी जनून बढ़ रहा है जो कई बार एलर्जी का कारण बन जाती है. जहां तक हो सके मुंहासों से पस निकालने की कभी भी चेष्टा न करें. ऐसा करने से मुंह पर दाग पड़ने की संभावना रहती है. यदि मुंह बहुत लाल और तप्त हो जाता है तो लैक्टो कैलामिन लगाएं, चेहरे को ठंडक मिलेगी. आप चाहें तो किसी चर्म रोग विशेषज्ञ को भी दिखा सकती हैं. वह आप को देख कर सहीसही उपचार कर सकता है.

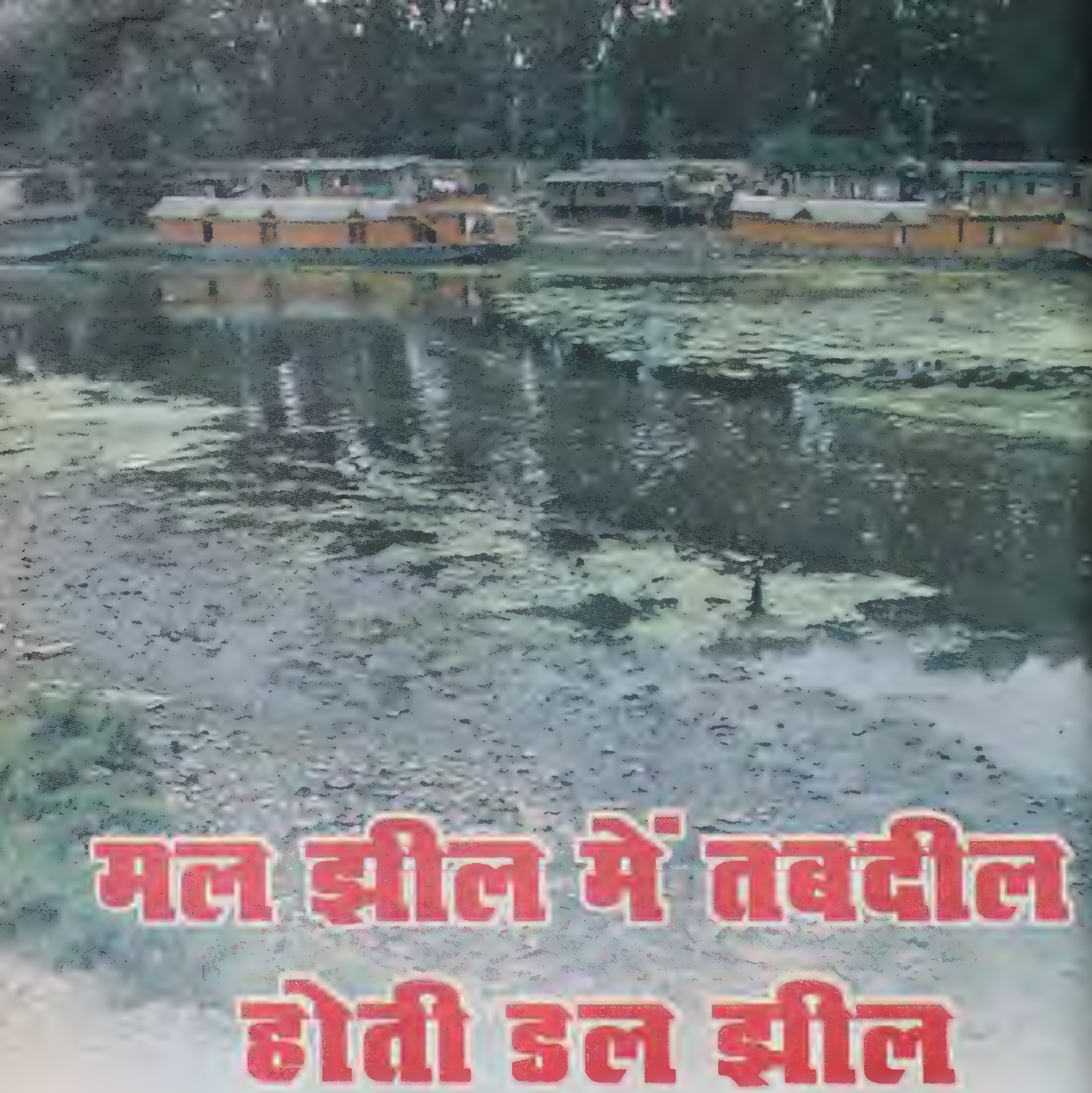
–डा. सोमा कौशिक ●

स स्तंभ में हमारे पाठकों के स्वास्थ्य संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं. ब्लड
शर से संबंधित अपने प्रश्न 30 अप्रैल, 2006 तक इस पते पर भेजें :
आप का स्वास्थ्य', सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली 110055.

ा ही खेल के दिवाने होते गए. दोष आप
है. और फिर पीर साहब का चक्कर.
देखतीं नहीं कि प्यारे मियां बीमार हैं?
कारण वह खेलकूद भी नहीं रहे हैं."

परंतु मां ने मेरी बात अनसुनी कर दी.
एक दिन प्यारे मियां को खांसी के
खून आया. उन्हें डाक्टर के पास ले
डाक्टर ने तपेदिक का रोग बताया.
उसी डाक्टर से पीर साहब भी अपना इलाज करा रहे थे. 40 दिन तक फूंका हुआ पानी पिला कर पीर साहब ने अपनी तपेदिक की बीमारी के कीड़े प्यारे मियां के शरीर में पहुंचा दिए थे. यह भी उन की करामात थी.

प्यारे मियां के मांबाप सिर पीट रहे थे. वे अपनेआप को और अपने अंधविश्वास को बारबार कोस रहे थे. ●



मल झील में तबदील होती डल झील

लेख ● खेमचंद अशेष

डल झील के मुख्य क्षेत्र को आप साफ और सुंदर ही देखेंगे और वहां व्यवसायी या सैलानी कूड़ा फैलाते भी नहीं मिलते. फिर भी यह एक तकलीफदेह सचाई है कि इस क्षेत्र में भी पानी के साथ काफी कूड़ाकचरा बह कर पहुंचता है और सफाईकर्मी लगातार उस कचरे को निकालते रहते हैं मगर उस का कहीं कोई अंत नहीं दिखाई देता.

झील से जो कचरा निकलता है वह 2 तरह का होता है. पहला, स्थानीय लोगों की दुकानों और मकानों से डाला जाने वाला हर तरह का कूड़ाकचरा जिस में रेस्तरांओं और नाइयों की दुकानों का कचरा भी शामिल होता है और प्लास्टिक से बनी चीजों का वह कचरा भी शामिल होता है जो व्यवसायी और पर्यटक झील में डाल जाते हैं. दूसरा कचरा कुदरती है जो पानी में पनपने वाली घनी घास के रूप में पूरी झील



(क)श्मीर के सौंदर्य को द्विगुणित करती डल (झ)ील की सुंदरता धीरेधीरे कम हो रही है. वजह झील में जमा होता बेहिसाब कचरा. क्या यह (प्र)शासन का निकम्मापन नहीं कि जिस झील (क)ो देखने दूरदूर से सैलानी आते हैं उस का (क)ोई रखरखाव नहीं?

होता है. इसे रोज हटाना पड़ता है.

कचरे का सब से गंदा रूप डलगेट पर (दे)खने को मिलता है जहां दुनिया भर के (पर्य)टक वाहनों से उतरतेचढ़ते हैं. चूंकि यहां (सै)लानी बैठते नहीं इसलिए इस जगह को (कू)ड़ के अंबार लगाने के लिए छोड़ दिया (गय)ा है. लोगों का कहना है कि कई सालों (से य)हां खुले में हर तरह की गंदगी के ढेर पड़े (हैं ज)बकि पर्यटक स्वागत केंद्र भी इसी के (पा)स है.

सुबह यदि आप डल झील से लगी (रिहा)यशी और कारोबारी बस्ती में घूमने निकलें तो यह देख कर आप को धक्का पहुंचेगा कि हर कोई दुकान या घर की सफाई कर के हर तरह का कचरा झील में डाल रहा है. डलगेट पर झील से जुड़ी आबादी के लिए तो यह आम बात है. फिर आप की नजर किसी को खोजेगी जो गंदगी डालने वालों को रोके मगर कोई रोकने वाला नहीं मिलेगा.

हां, डोंगियां ले कर इस कचरे को उठाने वाले कुछ सफाईकर्मी जरूर नजर आएंगे जो सिर्फ तैरने वाले कचरे को ही समेट कर उठा पाते हैं. दिन के किसी पहर में आप की नजर पानी में से घास या काई निकालने वाली तैरती मशीन पर भी पड़ सकती है लेकिन जो बेहिसाब भारी कचरा झील में डूब कर जमा हो रहा है, वह न जाने क्या गुल खिलाएगा.

वैसे डल झील में एक धीमा बहाव जरूर है जो झेलम नदी से जुड़ा है. बरसात के दिनों में इस झील का निचले तल का कुछ ठोस कचरा उस बहाव में जरूर चला जाता होगा और कुछ को खास उपायों से निकाला भी जाता है मगर इस से समस्या तो बनी ही रहती है.

क्या जरा से उपाय से ही इस समस्या का हल नहीं हो सकता? प्रशासन चाहे तो सिर्फ 1 दिन में समस्या निदान कर सकता है. ●

दंश





कहानी ● नारायणी

सोना भाभी वैसे तो कविता की भाभी थीं. कविता, जो स्कूल में मेरी सहपाठिनी थी और हमारे घर भी एक ही गली में थे. कविता के साथ मेरा दिनरात का उठनाबैठना ही नहीं उस घर से मेरा पारिवारिक संबंध भी रहा था. शिवेन भैया दोनों परिवारों में हम सब भाईबहनों में बड़े थे. जब सोना भाभी ब्याह कर आईं तो मुझे लगा ही नहीं कि वह मेरी अपनी सगी भाभी नहीं थीं.

सोना भाभी का नाम उषा था. उन का पुकारने का नाम भी सोना नहीं था, न हमारे घर बहू का नाम बदलने की कोई प्रथा ही थी पर चूंकि भाभी का रंग सोने जैसा था अतः हम सभी भाईबहन यों ही उन्हें सोना भाभी बुलाने लगे थे. बस, वह हमारे लिए उषा नहीं सोना भाभी ही बनी रहीं. सुंदर नाकनक्श, बड़ीबड़ी भावपूर्ण आंखें, मधुर गायन और सब से बढ़ कर उन का अपनत्व से भरा व्यवहार था. उन के हाथ का बना भोजन स्वाद से भरा होता था और उसे खिलाने की जो चिंता उन के चेहरे पर झलकती थी उसे देख कर हम उन की ओर बेहद आकृष्ट होते थे.

शिवेन भैया अभी इंजीनियरिंग पढ़ रहे थे कि उन्हें मातापिता ही नहीं दादादादी के अनुरोध से विवाह बंधन में बंधना पड़ा. पढ़ाई पूरी कर के वह दिल्ली चले गए फिर वहीं रहे. हम लोग भी अपनेअपने विवाह के बाद अलगअलग शहरों में रहने लगे. कभी किसी खास आयोजन पर मिलते तो सोना भाभी का प्यार हमें स्नेह से सराबोर कर देता. उन का स्नेहिक आतिथ्य हमें भावविभोर कर देता.

आखिरी बार जब सोना भाभी से मिलना हुआ उस समय उन्होंने सलवार सूट पहना हुआ था. वह मेरे सामने आने में झिझकीं. मैं

ड्राइंगरूम में बैठने वाली तो थी नहीं, भाग कर दूसरे कमरे में पहुंची तो वह साड़ी पहनने जा रही थीं.

मैं ने छूटते ही कहा, ''यह क्या भाभी, आज तो आप बड़ी सुंदर लग रही हो, खासकर इस सलवार सूट में.''

''नहीं,'' उन्होंने जोर देते हुए कहा.

मैं ने उन्हें शह दी, ''भाभी आप की कमसिन छरहरी काया पर यह सलवार सूट तो खूब फब रहा है.''

''नहीं, माया, मुझे संकोच लगता है. बस, 2 मिनट में.''

''पर क्यों? आजकल तो हर किसी ने सलवार सूट अपने पहनावे में शामिल कर लिया है. यहां तक कि उन बूढ़ी औरतों ने भी जिन्होंने पहले कभी सलवार सूट पहनने के बारे में सोचा तक नहीं था... सुविधाजनक होता है न भाभी, फिर रखरखाव में भी साड़ी से आसान है.''

''यह बात नहीं है, माया. मुझे कमर में दर्द रहता है तो सब ने कहा कि सलवार सूट पहना करूं ताकि उस से कमर अच्छी तरह ढंकी रहेगी तो वह हिस्सा गरम रहेगा.''

''हां, भाभी, सो तो है,'' मैं ने हामी भरी पर मन में सोचा कि सब की देखादेखी उन्हें भी शौक हुआ होगा तो कमर दर्द का एक बहाना गढ़ लिया है...

सोना भाभी ने इस हंसीमजाक के बीच अपनी जादुई उंगलियों से खूब स्वादिष्ठ भोजन बनाया. इस बीच कई बार मोबाइल फोन की घंटी बजी और भाभी मोबाइल से बात करती रहीं. कोई खास बात न थी. हां, शिवेन भैया आ गए थे. उन्होंने हंसीहंसी में कहा कि तुम्हारी भाभी को उठने में देर लगती थी, फोन बजता रहता था और कई बार तो बजतेबजते कट भी जाता था, इसी से इन के लिए मोबाइल लेना पड़ा.

उषा भाभी सोना सी रंगत के कारण सब के लिए सोना भाभी बन गई थीं. लेकिन उन की इस पीली रंगत की वजह क्या है यह बात सब ने मजाक में उड़ा दी. काश, इसे सब ने गंभीरता से लिया होता.

साल भर बाद ही सुना कि सोना भाभी नहीं रहीं. उन्हें कैंसर हो गया था. सोना भाभी के साथ जीवन की कई मधुर स्मृतियां जुड़ी हुई थीं इसलिए दुख भी बहुत हुआ. लगभग 5 सालों के बाद कविता से मिली तब भी हम दोनों की बातों में सोना भाभी ही केंद्रित थीं. बातों के बीच अचानक मुझे लगा कि कविता कुछ कहतेकहते चुप हो गई थी. मैं ने कविता से पूछ ही लिया, ''कविता, मुझे ऐसा लगता है कि तुम कुछ कहतेकहते चुप हो जाती हो...क्या बात है?''

''हां, माया, मैं अपने मन की बात तुम्हें बताना चाहती हूं पर कुछ सोच कर झिझकती भी हूं. बात यह है...

''एक दिन सोना भाभी से बातोंबातों में पता लगा कि उन्हें प्रायः रक्तस्राव होता रहता है. भाभी बताने लगीं कि पता नहीं मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है. 50 से 5 साल ऊपर की हो रही हूं...

''भाभी पहले से भी सुंदर, कोमल लग रही थीं. बालों में एक भी रजत तार नहीं था. वह भी बिना किसी डाई के. वह इतनी अच्छी लग रही थीं कि मेरे मुंह से निकल गया, 'भाभी, आप चिरयौवना हैं न इसीलिए. देखिए, आप का रंग पहले के मुकाबले और भी निखरानिखरा लग रहा है और चेहरा पहले से भी कोमल, सुंदर. आप बेकार में चिंता क्यों कर रही हैं.

''यही कथन, यही सोच मेरे मन में आज भी कांटा सा चुभता रहता है. क्यों नहीं उस समय उन पर जोर दिया था कि आप के

ाथ जो कुछ हो
हा है वह ठीक नहीं
आप डाक्टर से
रामर्श लें. क्यों
ठा परिहास कर
ठी थी?''

मुझे भी उन
कमर दर्द की
ाकायत याद
ाई. मैं ने भी तो
न की बातों को
भीरता से नहीं
लया था. मन में
ाच कर मैं खामोश हो गई.



बहार आने को है

अभी हाथों में गुलाब
खिलने को हैं
अभी आंखों में बहार आने को है
अभी सांसों में गंध घुलनी है
अभी यौवन पर
निखार आने को है
अभी होंठों पर ठहरे हैं कुछ अक्स
अभी मुख पर सिंगार आने को है.

–डा. शशिकांत कपूर

भाभी और भैया दोनों ही अस्पताल ाने से बहुत डरते थे या यों कहें कि तराते थे. शायद कुछ कटु अनुभव हों. ां बातबात में लाइन लगा कर खड़े ना, नर्सों की डांटडपट, बेरहमी से सूई ोड़ना, अटेंडेंट की तीखी उपहास करती नजर, डाक्टरों का शुष्क व्यवहार दि से बचना चाहते थे.

भाभी को सब से बढ़ कर डर था कैंसर बता दिया तो उस के ष्टदायक उपचार की पीड़ा को झेलना गा. उन्हें मीठी गोली में बहुत विश्वास वह होम्योपैथिक दवा ले रही थीं.

''माया, बहुत सी महिलाएं अपने दर्द बखान करने लगती हैं तो उन की बातों लड़ी टूटने में ही नहीं आती,'' कविता ी, ''उन के बयान के आगे तो अपने को हा भीषण दर्द भी बौना लगने लगता है. ा भाभी को भी मैं ने ऐसा ही समझ ा. उन से हंसी में कही बात आज भी मेरे को सालती है कि कहीं उन्होंने मेरे मुंह अपनी काया को स्वस्थ कहे जाने को ही तो नहीं मान लिया था और गर्भाशय अपने कैंसर के निदान में देर कर दी हो.

''माया, लगता यही है कि उन्होंने लिए अपने पर ध्यान नहीं दिया और इसे ही सच मान लिया कि रक्तस्राव होते रहना कोई अनहोनी बात नहीं है. सुनते हैं कि हारमोन वगैरह के इंजेक्शन से यौवन लौटाया जा रहा है पर भाभी के साथ ऐसा क्यों हुआ? मैं यहीं पर अपने को अपराधी मानती हूं, यह मैं किसी से बता न सकी पर तुम से बता रही हूं. भाभी मेरी बातों पर आंख मूंद कर विश्वास करती थीं. 3-4 महीने भी नहीं बीते थे जब रोग पूरे शरीर में फैल गया. सोने सी काया स्याह होने लगी. अस्पताल के चक्कर लगने लगे, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी.''

मुझे भी याद आने लगा जब मैं अंतिम बार उन से मिली थी. मैं ने भी उन्हें कहां गंभीरता से लिया था.

''माया, तुम कहानियां लिखती हो न,'' कविता बोली, ''मैं चाहती हूं कि सोना भाभी के कष्ट की, हमारे दुख की, मेरे अपने मन की पीड़ा तुम लिख दो ताकि जो भी महिला कहानी पढ़े, वह अपने पर ध्यान दे और ऐसा कुछ हो तो शीघ्र ही निदान करा ले.''

कविता बिलख रही थी. मेरी आंखें भी बरस रही थीं. उसे सांत्वना देने वाले शब्द मेरे पास नहीं थे. वह मेरी भी तो बहुत अपनी थी. कविता का अनुरोध नहीं टाल सकी हूं सो उस की व्यथाकथा लिख रही हूं. ●

पाठकों की समस्याएं

मैं 22 साल का विवाहित युवक 2 बच्चों का बाप हूं. मेरा घर झारखंड में है और मैं घर से दूर नौकरी करता हूं. 7-8 महीने में घर जाता हूं तो अपना सारा काम मुझे खुद करना पड़ता है, पत्नी नहीं करती. मैं बच्चों के लिए जो कुछ पैसे भेजता हूं उन्हें वह अपने भाई को दे देती है और अपने घर वालों को बताती भी नहीं कि पैसे मैं ने दिए हैं. बताइए क्या करूं?

हैरानी की बात है कि आप घर से इतनी दूर रह रहे हैं और महीनों बाद पत्नी व बच्चों से मिलने जाते हैं. क्यों नहीं आप अपने परिवार को साथ रखते हैं? आप लिखते हैं कि पत्नी बच्चों से ज्यादा प्यार करती है, शायद आप से कम, तो इस की भी वजह आप का उस से दूर रहना है. रही बात अपने भाई को पैसे देने व न बताने की, तो आप साथ रहेंगे तो इस आदत पर अंकुश भी लगेगा और सब समस्याएं अपने आप सुलझ जाएंगी.

मैं एक 33 वर्षीय विवाहित युवक हूं. ढाई वर्ष पहले जिस लड़की से मेरी शादी हुई उस की तमाम कमियां मुझ से छिपाई गई थीं. वैसे शादी से पहले ही 2 बार लड़की की सर्जरी हो चुकी है और उस की आवाज अस्पष्ट है. स्वभाव से वह घमंडी भी है.

मैं ने सोचा था कि निभा लूंगा. जो थोड़ीबहुत उस में कमियां हैं उसे प्रेममनुहार से ठीक कर लूंगा लेकिन उस ने इसे मेरी कमजोरी समझ कर इस का खूब लाभ उठाया. अपने झगड़ालू स्वभाव से अब वह मेरे बूढ़े मांबाप, जो केवल मुझ पर आश्रित हैं, को मुझ से दूर करना चाहती है और इस काम में उस के मायके वाले भी सहयोग देते हैं.

मैं एक सीधासादा इनसान हूं. ससुराल जाने पर वे लोग मुझ पर ताने कसते हैं, यों कहें कि प्रताड़ित करते हैं. अब आप ही बताएं मैं क्या करूं? कोशिश तो करता हूं कि परिवार न बिखरे पर मांबाप की उपेक्षा भी तो मैं सह नहीं सकता, क्या करूं?

आप की शादी धोखे से हुई, घमंडी पत्नी आप को मांबाप से अलग होने की बात भी कर रही है और हद तो यह है कि आप के ससुराल वाले भी आप को प्रताड़ित कर रहे हैं, ये सब महज आप की ढील देने के कारण ही हो रहा है. आप एक अच्छे शांतिप्रिय इनसान हैं. इस का ही पत्नी फायदा उठा रही है. आप जिस दिन उसे उस की हिमाकत के बारे में बता देंगे वह लाइन पर आ जाएगी.

आप पत्नी को स्पष्ट बता दें कि आप मांबाप के साथ ही रहेंगे और उस की कोई भी गलत बात आगे सहन नहीं करेंगे, फिर भी न माने तो तलाक की धमकी भी दे सकते हैं और अपने ससुराल वालों से भी कम से कम मिलिए और अपना वर्चस्व बना कर रखिए. आप की एक फटकार उसे ठीक कर देगी.

मैं 34 वर्षीय विवाहित, 2 बच्चों की मां हूं. अपनी सास व पति की तानाशाही से मैं व मेरे बच्चे बेहद परेशान हैं. 13 साल शादी को हो गए पर आज तक 'पति सुख' क्या होता है, नहीं समझ पाई. मैं अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकती. कभी कुछ कहा तो यह मेरी बेइज्जती करने से नहीं चूकते. बच्चे भी पापा से डरते हैं. ये अपनी मां के यहां जाते हैं तो वह इन्हें

तना भर देती हैं कि सारा गुस्सा मुझ पर तकलता है. फिर इन की मां गंवारों की तरह ड़ती हैं. भाई भी तिल का ताड़ बना कर न्हें भड़काता रहता है. आप ही कुछ सलाह कि इन परिस्थितियों में मैं क्या करूं, जंदगी नरक बन गई है.

इस तरह की समस्या उन्हीं घरों में यादा होती है जहां सास अधिक तानाशाह ोती है और बच्चे उस की जरूरत से ज्यादा ाज्ञाकारी हुआ करते हैं. यों आज्ञाकारी होना च्छी बात है पर हर बात में हां में हां मलाना शायद गलत भी हो.

ऐसे तानाशाह प्रवृत्ति के पति को आप पनी चतुराई से ही हैंडिल कर सकती हैं. ंकि आप का पति अपनी मां की ही सुनता तो क्यों न आप अपनी सास को शीशे में तारने की सोचें. उन वजहों पर गौर करें जिन आप की सास को गुस्सा आता है. ऐसे लात ही न पैदा होने दें.

आप वही करें जैसा आप की सास ाहती हैं. इस से आप के रिश्ते मजबूत होंगे ौर पति को भी पता चलेगा कि आप घर के ति कितनी समर्पित हैं. फिर उन को भी गुस्सा ीं आएगा. आप वैसे भी अलग रहती हैं अत: क ध्येय बना लीजिए कि अपना अहं भूल कर ति की बात मान लें, कुछ दिन बाद पति का भाव भी अच्छा हो जाएगा. यदि संभव हो तो सी वैवाहिक काउंसलर से भी मिल लें.

मैं 80 वर्षीय वृद्ध हूं. मेरे शरीर में कड़न रहती है पर लकवा नहीं है. रिता' में प्रकाशित हुआ था कि किसी ली से इस तरह की बीमारी ठीक हो ती है. कृपया उस गोली के बारे में डाक के साथ विस्तृत जानकारी दें.

इस आयु में शरीर में कई बीमारियां हो ी हैं जिन का निदान एक कुशल डाक्टर ही कर सकता है. बिना डाक्टर की सलाह के कभी कोई दवा न लें.

मैं एक 47 वर्षीय विवाहित, 2 बच्चों का पिता हूं. बच्चे क्रमश: 8वीं एवं 12वीं में पढ़ते हैं. जब कालिज में पढ़ता था तो एक लड़की से भावनात्मक संबंध हो गया था पर बात विवाह में बदली नहीं.

1984 में पंजाब में एक ऐसे परिवार में मेरा रिश्ता तय हुआ जो शहरी सभ्यता से दूर सीधेसादे लोग हैं. मैं ने शादी भी बिना दहेज के की है. हमारी जिंदगी अच्छी चल रही थी कि एक बार पत्नी और बच्चे मेरे कालिज की ग्रुप फोटो देख रहे थे, उस में वह लड़की भी थी. उस के बारे में बातोंबातों में मैं ने कुछ कह दिया, तब से मेरी बीवी मुझ पर यह सोच कर शक करती है कि मैं उसे छोड़ दूंगा और दूसरी औरत से शादी कर लूंगा.

उस का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिर रहा है, हर समय वह तनाव में रहती है. क्या करूं? आप की पत्रिका के इस कालम का पता लगा तो एहसास हुआ कि आप ही मुझे कुछ दिशा देंगी.

आप ने बातोंबातों में जरूर कुछ ऐसी बात कह दी जो आप की पत्नी आहत हो गई. वह एक सरल हृदय नारी है, इस बात को झेल नहीं पाई होंगी. अब आप पहले तो यह देखिए कि कैसे उस के अंदर विश्वास जगाते हैं, उस लड़की का भूल कर भी घर में जिक्र न करें और आप कह सकते हैं कि आप ने मजाक किया था. आप की पत्नी भावुकता की चरम पर हैं, उस को कैसे मनाना है, यह भी आप बखूबी जानते होंगे. कुछ दिन पत्नी से प्रेममनुहार ज्यादा करेंगे तो वह ठीक भी हो सकती हैं.

यदि बात तब भी न बने तो किसी मनोवैज्ञानिक को दिखा सकते हैं. -**कंचन** ●

ाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा अलग से उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें :

कंचन, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.



यात्रा के उत्साह में न भूलें फर्स्ट एड बाक्स को

लेख ● डा. मनीष जोशी

छुट्टियों में लाखों लोग यात्रा पर निकलते हैं. कुछ सैलानी पर्यटन के लिए जाते हैं तो कुछ प्रवासी अपने गांवशहर जाते हैं. यात्रा के लिए जरूरी सामान रखते समय हम यह तो जरूर सोचते हैं कि कहीं कुछ भूल तो नहीं रहे पर एक चीज है जिसे हम अपने सामान के साथ रखने को तवज्जो नहीं देते, यह है फर्स्ट एड बौक्स. इस की याद तब आती है जब रास्ते में अचानक ही इस की जरूरत महसूस होती है.

गौरतलब है कि देश में यात्रियों के लिए स्टेशनों पर छोटीमोटी घटना के लिए भी कोई संतोषजनक सुविधा उपलब्ध नहीं है. बड़े शहरों में तो कुछ हद तक सुविधाएं मिल जाती हैं लेकिन कसबाई स्टेशनों पर यह स्वास्थ्य सेवाएं ना के बराबर ही हैं. इसलिए यात्रा में एक अच्छी तरह से तैयार किया गया फर्स्ट एड बाक्स निहायत जरूरी हो जाता है.

यहां फर्स्ट एड बाक्स में आप जो भी स्वास्थ्य संबंधी दवाएं रख रहे हैं उस के बारे में आप को पूरी जानकारी भी होनी चाहिए. मसलन गौजपैड, आयोडीन व एल्कोहाल प्रैप पैड्स चोट लगे अंग की संक्रमण से रक्षा करते हैं. जबकि एंटीबायोटिक आइंटमेंट घाव





को भर कर चोट जल्दी ठीक करने में मदद करता है. इसी तरह ऐंटीडायरहिल्स तब बड़े काम आते हैं जब दूषित खानपान के सेवन से उल्टीदस्त होने लगते हैं.

यह भी ध्यान रखें कि यात्रा पर निकलने से पहले अपने डाक्टर से मिल कर यह तय कर लें कि ऐंटीडायरहिल्स कितनी मात्रा में कबकब खाना है. डायरिया की अवस्था में इलेक्ट्रोलाइट्स की महत्ता को कम कर के नहीं आंका जा सकता. यह मरीज को जल्दी स्वस्थ होने में मदद करता है.

दूसरी तरफ ऐंटीहिस्टामींस छींक, बहती नाक तथा गीली व खुजलाती आंखों की समस्या से निजात दिलाता है. यहां भी सावधानी की जरूरत है क्योंकि ऐंटीहिस्टामींस में सिडेटिव होते हैं जिन के सेवन से मरीज को नींद आती है. यदि आप गाड़ी चला रहे हैं तो इस का सेवन जोखिमपूर्ण हो सकता है. इसलिए अच्छा यही होगा कि आप डाक्टर से सलाह कर के ही इस का इस्तेमाल करें.

इन के अलावा फर्स्ट एड बौक्स का एक और जरूरी हिस्सा बुखार व दर्द के लिए असरदार दवाएं भी हैं. इस के लिए दवा ऐसी होनी चाहिए जो हलकेफुलके बुखार में आराम दे सके और जिस के साइड इफेक्ट भी न हों, खासतौर पर जो पाचनतंत्र को खराब न करे. आप के फर्स्ट एड बौक्स में क्रोसिन तो होनी ही चाहिए. बच्चे साथ में हैं तो उन के लिए क्रोसिन सिरप रखना न भूलें.

अब आप का फर्स्ट एड बौक्स तैयार है. इस के साथ अपनी पैकिंग पूरी कीजिए और उत्साह से निकल पड़िए यात्रा पर, आप की यात्रा मंगलमय हो. ●

जीवन सरिता...

हीन भावना से उबरें

लेख ● जे.के. डागर



आत्मविश्वास की कमी को ही हीनभावना कहते हैं. कुछ लोग ं ही खुद के गुणों को कमतर आंक र अपने अंदर हीनभावना पैदा कर ते हैं. ऐसे लोग मानते हैं कि हमारे स धन की कमी है, समय या समझ ी कमी है, हम एक अच्छा खिलाड़ी हीं बन सकते क्योंकि हमें किसी खास लब की सदस्यता नहीं मिली या ीक्षा में अंक कम आए तो हम मेधावी बुद्धिमान नहीं हैं.

सचाई यह है कि हर व्यक्ति में ोई न कोई असाधारण प्रतिभा होती हां, यह संभव है कि किसी के पास सा, बुद्धि, रूप और शक्तिशाली रीर न हो परंतु वह व्यक्ति बहुत ष्टाचारी, सच्चा, कर्तव्यनिष्ठ, ानदार आदि कुछ भी हो सकता है. भव है कि वह बहुत ही अनुशासनप्रिय विश्वसनीय भी हो सकता है. अतः ी और पूरा मूल्यांकन कर के ही प को अपने व्यक्तित्व के बारे में छ राय बनानी चाहिए.

यह भी संभव है कि अपने अंदर जांचपड़ताल करने पर भी आप को छ विशेष न मिले परंतु यह उचित ं कि स्वयं को शून्य मान लें. क्योंकि भी संभव है कि आप अपने अंदर उस गुण या प्रतिभा को न पहचान हों जो आप के व्यक्तित्व में ्यमान हो.

अतः किसी भी हाल में खुद को भावना से पीड़ित नहीं होने देना हए.

महिलाएं और लड़कियां आमतौर अपनी सूरत और रंगरूप को ले कर क चिंतित दिखती हैं. कुरूप मन से कुरूप तन अच्छा होता है. यह कतई जरूरी नहीं कि केवल अधिक सुंदर, धनवान और बलशाली व्यक्ति ही जीवन में सफल होते हैं बल्कि शक्ल से कुरूप इनसान भी जीवन में सफल होता है.

अमेरिका के अब्राहम लिंकन और भारत के लाल बहादुर शास्त्री गरीब थे, फिर भी उन के जीवन में सफलता की कमी न थी. दोनों अपनेअपने देशों में सर्वोच्च पद तक पहुंचे थे. महान लेखक ब्रायन लंगड़े थे, मलिक मुहम्मद जायसी काने थे, सूरदास और मिल्टन अंधे थे और आज के महान वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंस शारीरिक रूप से पूर्ण विकलांग हैं. और भी कई दूसरे लोग इस श्रेणी में आते हैं जिन की शारीरिक विकलांगता अथवा गरीबी उन के महान बनने में रुकावट न बन सकी, क्योंकि वे मानसिक रूप से अति सुलझे हुए, धनी और बलवान थे.

हर इनसान में कुछ बहुत अच्छी, कुछ अच्छी और कुछ कम अच्छी बातें हुआ करती हैं, पर इनसान को चाहिए कि वह अपनी कम अच्छी बातों को नियंत्रित कर इन्हें कम करे और अपनी अधिक अच्छी बातों को और विकसित कर अपना व्यक्तित्व निखारे न कि अपने व्यक्तित्व की कमियों के लिए स्वयं को दोष देता रहे.

अपनी कमियों को नियंत्रित कर इन्हें कम कर के अपनी अच्छाइयों के बल पर सफलता प्राप्त करने से ही इनसान का साहस और आत्मविश्वास बढ़ता है.

एक शायर ने कहा भी है :

"अपने गुणों को बढ़ा जो अवगुण करता कम.

कदम सफलता चूमती, न रहती आंखें नम..." ●

* भाजपा कार्यकर्ताओं ने मल्लिका शेरावत का पुतला जलाया *

भाजपा युवा मोरचा के कार्यकर्ताओं ने बालीवुड की गरम अदाकारा मल्लिका शेरावत पर भारतीय संस्कृति को दूषित करने का आरोप लगाते हुए न सिर्फ उस का पुतला जलाया बल्कि उस की फिल्मों के पोस्टर भी फाड़ डाले.

मल्लिका के खिलाफ यह आंदोलन इंदौर में उस समय शुरू हुआ जब वह एक स्टोर का उद्‌घाटन करने वहां गई थी. आंदोलनकारियों और सुरक्षाकर्मियों के बीच हुई झड़प देखते ही देखते मारपीट में तबदील हो गई जिस में कुछ लोग जख्मी भी हुए पर सुरक्षाकर्मियों के सहयोग से मल्लिका वहां से सही सलामत बच निकली.

मल्लिका, अभी भी समय है सुधर जाओ वरना इस से भी बड़ा झटका झेलना पड़ सकता है.



* जया बच्चन का 'ग्रीनिंग इंडिया विद नीम' *

सांसद जया बच्चन ने अब नीम फांउडेशन द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रम 'ग्रीनिंग इंडिया विद नीम' के जरिए किसानों को नीम के पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करने की योजना बनाई है.

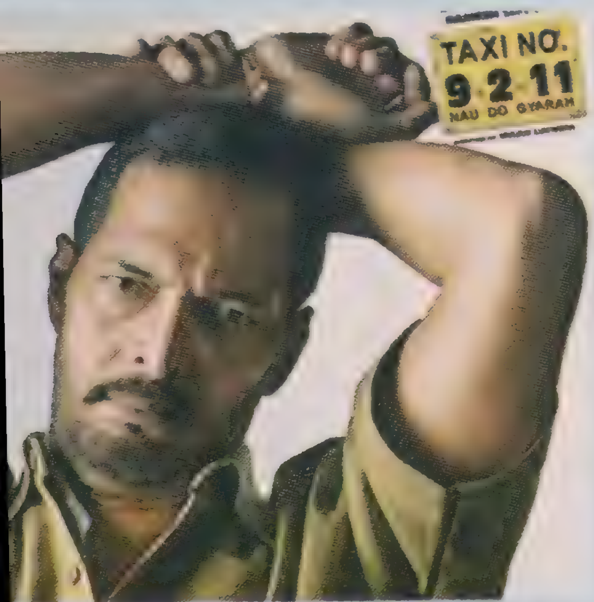
जया बच्चन अब रेडियो एवं टेलीविजन के जरिए नीम के पेड़ लगाने के लिए लोगों को प्रमोट करेंगी. नीम फाउंडेशन द्वारा 1 करोड़ नीम के पेड़ लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है.

* नाना पाटेकर की अकड़ *

स्टार कलाकारों की अकड़ और नाजनखरों पर अकसर बालीवुड में चर्चा होती रहती है और

रे फिल्म निर्माता उन्हें झेलते भी हैं, कन यहां चर्चा गुस्सैल नाना पाटेकर की ी सेट पर काम करते समय मोबाइल ने पर उसे तोड़ देते हैं. नाना पारिश्रमिक मामले में कोई भी रियायत नहीं बरतते समय के कुछ ज्यादा ही पाबंद हैं.

निर्माता रमेश सिप्पी की फिल्म सी न. 9211' के लिए जब निर्देशक न लुथरिया ने नाना को साइन के फोन किया तो उन्होंने आधे घंटे में निर्देशक को अपने पास आने के लिए . निर्देशक ने अपनी असमर्थता जताते



नाना से अगले दिन मिलने का समय तो उन्होंने साफ मना कर दिया.

बेचारा, निर्देशक नाना के पास आधे ाद गिरतापड़ता पहुंचा तो अगले आधे ाद वह कोई दूसरी फिल्म साइन कर थे. भाई नाना पाटेकर, यह बालीवुड ार आप निर्देशकों को ऐसे ही दौड़ाते वह दिन दूर नहीं जब निर्देशक आप खते ही जोरजोर से ना ना कह कर मुंह गे.

* ोज खान भवन निर्माण के धंधे में *

लीवुड के आधे से ज्यादा फिल्म टार अभिनय के अलावा किसी न किसी दूसरे बिजनेस से भी जुड़े हुए हैं. इस सूची में स्टाइलिश हीरो कम विलेन फिरोज खान ने भी अपना नाम दर्ज कराया है.

फिरोज खान बंगलौर में जल्द ही एक बहुत बड़े प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने जा रहे हैं. फिरोज के लिए यह धंधा नया नहीं है क्योंकि उन का छोटा भाई पहले से ही भवन निर्माण के धंधे से जुड़ा है. चलो, फिरोज खान अब पीने के अलावा कोई दूसरा काम तो करेंगे.

* एम.एफ. हुसैन सचिन पर फिदा *

एम.एफ. हुसैन कलाकार हैं और कलाकारों के प्रति उन के मन में जब तब प्रेम उमड़ता रहता है. पीछे माधुरी दीक्षित के प्रति उन का प्रेम इस कदर उमड़ा कि उन्होंने उस की ढेर सारी पेंटिंग बना डालीं. अब हुसैन साहब का प्रेम सचिन तेंदुलकर के प्रति उमड़ा है.

टेस्ट मैचों में सचिन ने 39 शतक बना कर क्रिकेट में एक नया विश्व कीर्तिमान बनाया है और इस से हुसैन साहब इतना खुश हो गए कि उन्होंने न सिर्फ सचिन के लिविंग रूम की दीवारों पर उस की बैटिंग के दौरान की कई आकृतियां बना डालीं बल्कि सचिन तेंदुलकर पर पेंटिंग की एक सीरीज भी तैयार कर रहे हैं.

जाहिर है, औरों की तरह अब हुसैन साहब ने भी सचिन के चित्रों की प्रदर्शनी लगा कर कुछ कमाने का मनसूबा बनाया है. लोकप्रियता को भुनाने की कला आखिर एक कलाकार ही तो जानता है. ●

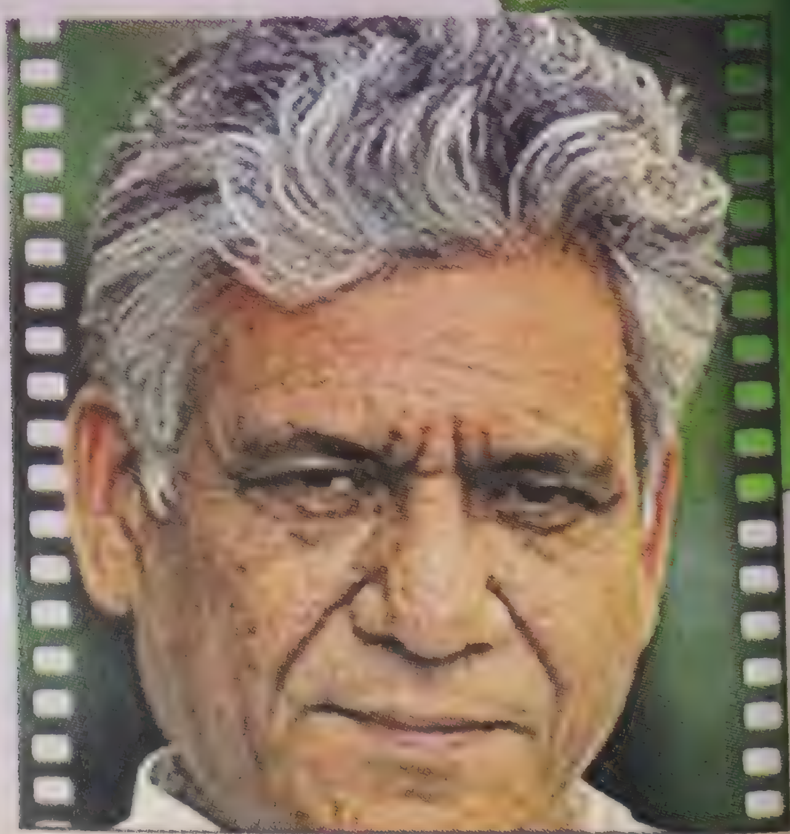
बेबाकी ओमपुरी की आदत है. उन्हें न राजनीतिबाजों की चिंता है और न ही फिल्मों में अंडरवर्ल्ड के बारे में बातचीत करने में वह कोई संकोच करते हैं. पिछले दिनों वह चंडीगढ़ अपनी पत्नी नीना सी. पुरी की पुस्तक पर चर्चा कराने के सिलसिले में आए थे. उस समय उन से खुल कर फिल्म और अंडरवर्ल्ड के रिश्तों पर बातचीत हुई थी. पेश हैं, बातचीत के मुख्य अंश :

फिल्मों में अंडरवर्ल्ड की क्या भूमिका है?

अंडरवर्ल्ड तो पूरे देश में अपने पैर फैला चुका है. दरअसल, यह देश के लिए सब से बड़ा खतरा है. शुरू में ऐसे लोग सिर्फ स्मगलिंग ही किया करते थे. धीरेधीरे उन्होंने बालीवुड की ओर पैर पसारे. जिस तरह से कंप्यूटर वायरस के शिकार हो कर जानकारी देने में असमर्थ हो जाते हैं वैसे ही फिल्मी दुनिया भी अपनी

''अंडरवर्ल्ड देश के लिए सब से बड़ा खतरा''

-ओमपुरी



किसी व्यक्ति के गुण, काबिलियत की चमक के आगे अच्छी शक्लसूरत भी फीकी नजर आती है. यह बात अभिनेता ओमपुरी पर हर तरह से लागू होती है. उन की अभिनय कुशलता का वाकई कोई सानी नहीं.

म्मेदारियों को भूल कर सिर्फ अंडरवर्ल्ड मुहताज होती जा रही है.

यह खतरा कहां तक हो सकता है?

अब अंडरवर्ल्ड राजनीतिबाजों की क बढ़ रहा है. वे इन की मदद से देश में हरण जैसे घिनौने काम कर रहे हैं. देश ाजनीतिक हत्याएं भी इसी गठजोड़ का जा हैं. पुलिस से भी ये लोग जुड़े हुए हैं.

क्या आप का राजनीति के प्रति आकर्षण है?

हर फिल्म स्टार राजनीतिबाज नहीं बन सकता. देश के कुछ स्टार ही राजनीति में चमके हैं और फिर हर किसी के बस का यह है भी नहीं कि वह नेता बने. फिल्मों में नेता का किरदार निभाने की बात अलग है, व्यावहारिक जीवन में इसे अपनाना बहुत मुश्किल है. मैं अभिनेता ही ठीक हूं.

अगर आप को कोई मौका मिले तो?

मैं ने पहले कांग्रेस के लिए प्रचार किया है. आगे भी मेरी जरूरत हुई तो इसी पार्टी का प्रचार करूंगा. नेता बना तो नंबर 2 के कामों से समझौता नहीं करूंगा. प्रधानमंत्री बन गया तो गलत नीतियों को रोक कर सुधार करूंगा.

आप कांग्रेस के ही समर्थक क्यों हैं?

क्योंकि मैं कांग्रेस की नीतियों को पसंद करता हूं. वामपंथी इसे दबाते रहते हैं. इस से यह दल भले ही कुछ समय के लिए परेशान हो, फिर भी इस में स्थिरता है.

आजकल स्टारडम चमकाने के लिए टी.वी. का सहारा लिया जा रहा है. आप?

मैं तो टी.वी. पर बहुत कुछ कर चुका हूं. वैसे मेरा दृढ़ विश्वास है कि प्रसिद्धि पाने के लिए व्यक्ति में गुण होने चाहिए. टी.वी. तो माध्यम है. गुणी व्यक्ति को माध्यम मिल ही जाते हैं. अब आप देखिए, टी.वी. पर सिगरेट के खिलाफ प्रचार किया जाता है. इस से लोग सिगरेट पीना तो बंद नहीं कर देते. सिगरेट बंद करवानी हो तो इसे बनाने वाली कंपनियां ही बंद करवानी चाहिए. फिल्मी दृश्यों पर धूम्रपान के दृश्यों को रोक देने से ही सरकार का धूम्रपान विरोधी



फिल्म 'किंग आफ बालीवुड' में ओमपुरी के हास्यपूर्ण किरदार को दर्शकों ने बहुत सराहा.

अभियान सफल नहीं हो सकता. सिगरेट के हर पैकेट पर लिखा होता है कि यह सेहत के लिए हानिकारक है. फिर भी पीने वाले उसे पैसे दे कर खरीदते हैं. आप अपनी पसंद या नापसंद लोगों पर थोप नहीं सकते.

आप पंजाब में जन्में, बालीवुड से आगे बढ़ कर कनेडियन, अमेरिकन और ब्रिटिश फिल्मों पर छाए, आप का पंजाबी फिल्मों के बारे में क्या खयाल है?

पंजाबी फिल्में कुछ समय पहले तक घिसीपिटी लीक पर बनती रही हैं. ऐसा लगता था कि दर्शकों को नया कुछ नहीं मिलेगा. गांवों में प्रेम त्रिकोण और मारामारी ही फिल्म की कहानी होती थी. ऐसा लगता था कि दर्शक विश्वास ही खो बैठेगा. मगर 'जी आया नूं' और 'माया वतनां दा' के अतिरिक्त 'देस हो या परदेस' जैसी अच्छी पंजाबी फिल्में बनीं तो लोगों की आस्था बदली. मैं ने खुद 3 पंजाबी फिल्मों 'लौंग दा लिश्कारा', 'चल परदेसी' और 'बागी' में काम किया. वे फिल्में खूब चलीं. भविष्य में भी अगर कोई अच्छी पंजाबी फिल्म मिली तो जरूर काम करूंगा.

आप किस फिल्म को अपनी श्रेष्ठ फिल्म मानते हैं?

ऐसी फिल्म जो आम आदमी के जीवन को उजागर करे, उस की मुझे अभी भी तलाश है. वैसे 'अर्द्ध सत्य' को मैं अबतक की अपनी सभी फिल्मों से अच्छी मानता हूं. इसी से मुझे पहचान मिली. अब ऐसी फिल्में नहीं बन रही हैं. वैसे 'आक्रोश' भी अच्छी फिल्म थी.

आप किसे अच्छी फिल्म मानते हैं?

जो फिल्म खूब बिके, दिलचस्प हो मगर समाज को कोई संदेश दे सके. दर्शक के मन पर गहरा असर छोड़ सके. अब 'रंग दे बसंती' को लीजिए. उस का अंत चाहे जैसा था परंतु उस ने नई पीढ़ी को जगाने की कोशिश तो की. पहले फिल्में समाज का प्रतिबिंब होती थीं, कलापूर्ण और सादगी भरी होती थीं. बिमल राय, व्ही शांताराम और गुरुदत्त की बनाई फिल्में इसीलिए सदाबहार हैं. अब तो समाज से जुड़ी फिल्म बनती ही कहां है.

आप डेविड धवन के साथ?

डेविड धवन मेरा क्लासमेट था. उसे भी 15 साल तक यह नहीं सूझा कि मैं कामेडी भी कर सकता हूं. प्रियदर्शन की फिल्म 'मालामाल वीकली' पर मेरी निगाहें लगी हैं.

आप की चर्चित विदेशी फिल्में?

बहुत मशहूर हुई फिल्में 'माई सन द फैनेटिक' और 'ईस्ट इज ईस्ट' हैं.

आजकल क्या कर रहे हैं?

आजकल तो अपनी पत्नी नीना पुरी के पहले कहानी संग्रह 'नाइन इन नाइन' की लोगों में पहचान बनाने की कोशिश कर रहा हूं. यह 9 औरतों की 9 कहानियों का संग्रह है. आजकल पहले नीना फिर ओम. कहिए, ठीक है न. ●

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम
★ साधारण ○ बेकार

★★ टैक्सी नं. 9 2 11

इस फिल्म का उद्देश्य तो कुछ नहीं है फिर भी थोड़ी बहुत दिलचस्प है. नाना पाटेकर के बढ़िया अभिनय के लिए फिल्म देखी जा सकती है. इस फिल्म के निर्माता रमेश सिप्पी आजकल थोड़ी हट कर फिल्में बना रहे हैं. उन की पिछली फिल्म 'ब्लफमास्टर' में ब्लफ करता अभिषेक बच्चन दर्शकों को कुछ अच्छा लगा था. इस बार उस ने 2 सिरफिरे करेक्टर्स को ले कर टैक्सी नं. 9211 बना डाली है.

कहानी राघव शास्त्री (नाना पाटेकर) और जय मित्तल (जौन अब्राहम) की है. राघव शास्त्री कुछ अलग शख्सियत है. 15 साल में 23 नौकरियां बदल चुका है. अब टैक्सी चलाता है. बीवी से कह रखा है कि श्योरेंस एजेंट का काम करता है. जय मित्तल करोड़पति बाप का बेटा है. पिता अपनी सारी वसीयत अपने मैनेजर के नाम कर मर जाता है. राघव शास्त्री और जय मित्तल आपस में टकराते हैं और एकदूसरे को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं. अंत में दोनों को होश आता है कि वे कर क्या रहे हैं. जय मित्तल के हाथ से 300 करोड़ की जायदाद निकली जा रही है तो राघव शास्त्री के हाथ से उस की बीवी व बच्चा. दोनों एकदूसरे के गले लग जाते हैं और जो एकदूसरे को नुकसान पहुंचा था उसे अनदेखा करते हैं.

फिल्म की कहानी की गति तेज है, सोचनेसमझने का मौका नहीं मिलता. नाना पाटेकर द्वारा बोले गए संवादों में



कामेडी का पुट झलकता है. मध्यांतर से पहले नाना पाटेकर जौन अब्राहम पर भारी पड़ा है तो मध्यातंर के बाद जौन अब्राहम नाना पाटेकर पर हावी रहा है.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक अच्छा है. समीरा रेड्डी ने एक बार कहा था कि इस फिल्म से उस का कैरियर चमक उठेगा. लेकिन ऐसा लगता नहीं है. उसे 21वीं सदी की नायिका तो दिखाया है जो क्लबों में नाच सकती है. हीरो के साथ इश्क फरमा सकती है, मगर तबतक जबतक उस के पास दौलत है. दौलत खत्म तो हीरोइन फुर्र... अपनी इस भूमिका को वह असरदायक नहीं बना सकी है. सोनाली.कुलकर्णी की गृहिणी की छोटी सी भूमिका है जो अपना असर छोड़ जाती है.

फिल्म का पार्श्व संगीत ठीक है. संगीत फिल्म की गति से मेल खाता नजर आता है. बप्पी लाहिड़ी का एक गाना 'यह है मुंबई नगरिया...' अच्छा बन पड़ा है. छायांकन अच्छा है.

★ हमको तुमसे प्यार है

दो दोस्त, एक गरीब दूसरा अमीर, अंधी नायिका, हीरो का उसे बचाना, उस की आंखों की रोशनी वापस लाना, फिर गायब हो जाना. हीरो के दोस्त का आना, उसी हीरोइन से प्यार करना, शादी की तैयारियां, पहले वाले हीरो का वापस लौटना, दोस्त के लिए अपने प्यार का बलिदान करना. अंत में हीरोइन को पहला प्यार हासिल होना - इस तरह की फिल्में 60-70 के दशक में खूब बनीं व चलीं. लेकिन अब जमाना बदल गया है. फिल्मों में भी नएनए प्रयोग हो रहे हैं. इसलिए आज के युवा दर्शकों को इस तरह की फिल्में शायद ही अच्छी लगे. और इस फिल्म को दर्शकों का प्यार मिल पाए.

फिल्म की कहानी दो दोस्तों रोहित (अर्जुन रामपाल) और राज (बौबी देओल) की है. नायिका दुर्गा (अमिषा पटेल) है. रोहित गरीब है और राज अमीर. कहानी इसी प्रेम के त्रिकोण के इर्दगिर्द बुनी गई है.

फिल्म में जो मेलोड्रामा रचा गया है वह काफी रोनेधोने वाला है. नायिका मध्यांतर से पहले तो अंधी दिखाई गई है मगर मध्यांतर के बाद जब उस की आंखें ठीक भी हो चुकी हैं, वह रोती ही रही है. इस तरह की रोनेधोने वाली फिल्म भला दर्शकों को क्या मनोरंजन दे पाएगी.

फिल्म का निर्देशन साधारण है. निर्देशक ने विदेशी लोकेशनों पर कुछ गीतों का फिल्मांकन खूबसूरती से किया है. फिल्म का गीतसंगीत भी अच्छा है. 3-4 गीत अच्छे बन पड़े हैं.



अभिनय की दृष्टि से बौबी देओल ने थोड़ाबहुत फिल्म को संभाला है. अर्जुन रामपाल और अमिषा पटेल हमेशा की तरह फ्लाप ही रहे हैं. फिल्म का छायांकन अच्छा है.

★ तीसरी आंख

'तीसरी आंख' पूरी तरह कमर्शियल फिल्म है जिस में सनी देओल का भरपूर एक्शन है. निर्देशक हैरी बावेजा ने कोई रिस्क न लेते हुए फिल्म में सभी फार्मूले भरने की कोशिश की है. फिल्म का विषय है लड़कियों की चोरीछिपे नंगी तसवीरें खींच कर उन की सीडी देशविदेश में बेच कर कमाई करना. हालांकि इसी विषय पर पिछले दिनों 'कलयुग' फिल्म प्रदर्शित हो चुकी है. स्क्रिप्ट की दृष्टि से 'तीसरी आंख', 'कलयुग' से अठारह ही है. इस फिल्म की स्क्रिप्ट मूल विषय की गहराई में न जा कर फार्मूलों में ही उलझ कर रह गई है.

फिल्म की कहानी अश्लील सीडियों का व्यापार करने वाले सरगना सुदामा पांडे (मुकेश ऋषि) के इर्दगिर्द घूमती है, जो अपना बिजनेस लंदन से चला रहा है. डीसीपी अर्जुन (सनी देओल) की प्रेमिका सपना (नेहा धूपिया) सुदामा के जाल में फंस जाती है और मारी जाती है. उस का खून होता एक गूंगी लड़की अमू (अमिषा पटेल) देख लेती है. गुंडे अमू के पीछे पड़ जाते हैं. अर्जुन अमू को बचाता है और जब उसे सारी असलियत पता चलती है तो वह सुदामा और उस के आदमियों पर कहर बन कर टूट पड़ता है.

फिल्म की गति काफी तेज रखी गई है. सनी देओल का एक्शन दिखाने के चक्कर में निर्देशक सबकुछ भूल गया लगता है. सनी के चाहने वालों को फिल्म अच्छी लग सकती है. उस ने कईकई गुंडों को धराशायी किया है. निर्देशक ने सनी के मुंह से जोशीले और ललकार वाले संवाद बुलवा कर दर्शकों से तालियां पिटवा ली हैं.

नेहा धूपिया अपनी पिछली कुछ फिल्मों में दर्शकों को काफी कुछ दिखा चुकी है. हैरी बावेजा ने इस फिल्म में उस की देह को बख्श दिया है. लेकिन फिल्म में देह दर्शन की कमी नहीं रखी गई है. विदेशी युवतियों को कपड़े उतार कर खंभे के सहारे डांस स्टेप्स करते दिखा कर यह कमी पूरी कर दी गई है.

अमिषा पटेल हाल ही में प्रदर्शित फिल्म 'हम को तुम से प्यार है' में अंधी लड़की की भूमिका में नजर आई थी. इस फिल्म में वह गूंगी लड़की की भूमिका में है. आगे न जाने उस की क्या गत होगी.

फिल्म का गीतसंगीत भी प्रभावित नहीं करता. छायांकन अच्छा है. छायाकार ने लंदन की खूबसूरत लोकेशनों को फिल्माया है. ●



गाने कैसेकैसे

आशा भोंसले को सुनना और सुनते चले जाना बहुत आम बात है, इसलिए कि वह एक ही गाने को अलगअलग पैकिंग करवा कर बारबार बाजार में लाती और बेचती हैं.

कारण, आशा की आवाज को सुनने वालों ने उन्हें अभी तक निराश नहीं किया है. इस बार आशा भोंसले ने आर डी बर्मन के गानों का 'आशा रिवील्स रियल आर डी' नाम से अलबम तैयार किया है. इस अलबम का एक गाना 'वन टू चाचाचा...' खूबसूरत वीडियो है जिस में आशा ने कुछकुछ ठुमके भी लगाए हैं.

शब्दों के अनुसार कुछ दृश्यों का मंचन भी जमा है. एकआध जगह मौज भी है, जैसे एक जगह जोड़े नाच रहे हैं, शब्द आते हैं 'थोड़ा नीचे' तो पुरुष महिला नर्तकी के स्कर्ट के नीचे हाथ लगाता, फिर शब्द जब 'थोड़ा ऊपर' गाया जाता है तो स्कर्ट को थोड़ा हाथ से ऊपर करते हुए दिखाया जाता है. बाकी सब ठीक है.

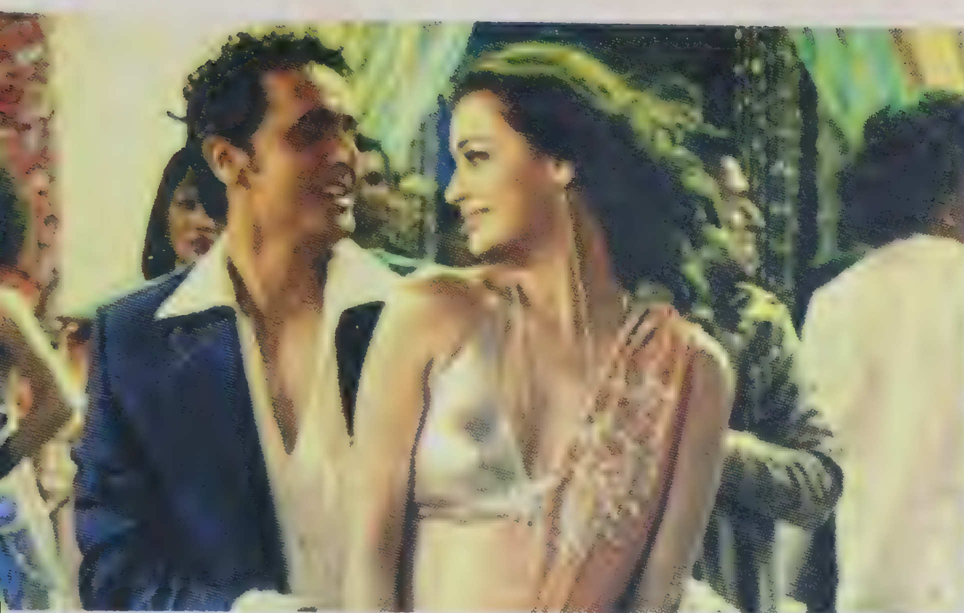
आशाजी, बस गाए जाओ. 'वन टू...थ्री फोर...टेन' चाचाचा....



मुंबइया सिनेमा जगत में अलका याज्ञनिक ने तब प्रवेश किया जब यहां मंगेशकर बहनों का बोलबाला था. फिल्म 'लावारिस' के गाने 'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है' से अपना फिल्मी गीतों का कैरियर शुरू करने वाली गायिका अलका याज्ञनिक ने उस के बाद से पीछे मुड़ कर नहीं देखा, लेकिन अब ऐसा लग रहा है कि अलका का जमाना काफी पीछे छूट गया है. अब उसे ठहरना होगा क्योंकि जिस श्रोता समाज के लिए वह गाने गाती थी वह अब रीमिक्स के नकली बाजार की चपेट में है और यहां आइटम गायिकाएं ही चल रही हैं क्योंकि मांग गले की, सुर की नहीं 'हिचकियों' की है इसलिए अलका याज्ञनिक जब यदाकदा किसी गाने के साथ सुनाई पड़ती है तो थोड़ी हैरानी जरूर होती है.



फिल्म 'सौतन' में एक गाना- 'मोहब्बत हो चुकी है...' को अलका के साथ सोनू निगम ने गाया है और जिसे सुरों में आनंदमिलिंद ने ढाला है. इस गाने को



के बाद यह जरूर कहना होगा कि
दमिलिंद आज भी उतना ही मधुर
त दे रहे हैं, जैसा वह पहले दिया
थे.

ऊलजलूल गानों की भीड़ में यह
सुनने पर सुकून देता है.

*

टी और बबली का एक गाना 'कजरा
' के इस कदर लोकप्रिय होने की
ना न कभी अमिताभ बच्चन ने की
ौर न उसे लिखने वाले गीतकार
र ने. अब इस गाने के
बड़ेबड़े अवार्ड लेते समय
र और अमिताभ के
पर वह खुशी देखने को
मलती जो अवार्ड मिलने
नी चाहिए. पर शोहरत
की हो उस की नकल तो
ई करना चाहेगा भले ही
जगहंसाई ही हो.

सोनू निगम और अलीशा
ने मिल कर 'कजरा रे'
हीं 'कजरा मोहब्बत
गा डाला, उस पर दिया
ऐश्वर्या राय की तरह कमर मटका कर भौंडी नकल की है. साथ में सोनू निगम ने एक अच्छेभले क्लासिक गाने पर फूहड़ डांस कर के गाने का सत्यानाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है तो दिया मिर्जा का चाकलेटी बदन भी कोई कमाल नहीं दिखा पाया.

इस एक और असफलता के बाद अब सोनू निगम को मेरी सलाह है कि वह एक किताब लिख डाले जिस का नाम हो, 'अभिनय के साथ मेरे प्रयोग.'

आरती जैन ●

सरिता की पसंद

लोकप्रिय व अच्छे गाने

गाना	फिल्म/वीडियो अलबम
● रंग दे बसंती...	शीर्षक गीत
● हूबहू...	रंग दे बसंती
● जानेमन...	आर्यन
● एक बार आजा...	अक्सर
● जिया धड़क...	कलयुग
● मैं ने सुना है...	टैक्सी नं. 9211
● डंक मारे...	चिंगारी
● ये दिल बोले...	फाइट क्लब
● ब्लफ मास्टर...	शीर्षक गीत

खेलों की खिलाड़ियों की

● जसदेव सिंह

गांगुलीचैपल विवाद ने बजाय समाप्त होने के इतना तूल पकड़ा कि जो लोग ड्रेसिंग रूम की बात बाहर लाने पर गांगुली को अनुशासन भंग करने का दोषी मानते थे, उन में से भी अब कितने ही यह कहने लगे हैं कि हर बात की सीमा होती है. इस मामले में चैपल ही नहीं पूर्व बोर्ड अध्यक्ष राजसिंह डूंगरपुर ने भी गांगुली के खेल पर ही टिप्पणी कर दी थी. चयन समिति के अध्यक्ष किरण मोरे भी खुल कर उस की आलोचना करने के बजाय यही कहते रहते थे कि गांगुली में अभी खेल बाकी है, पर टीम में उसे आदर के साथ कभी शामिल नहीं किया गया, केवल एक बार को छोड़ कर जब स्वयं बोर्ड अध्यक्ष शरद पवार के दखल देने पर उसे भारतपाक शृंखला में एक टैस्ट के लिए चुन लिया गया था.

मीडिया के कुछ स्वनामधन्य विशेषज्ञ भी पूर्व कप्तान पर टिप्पणी करने में पीछे नहीं रहे. कुछ लोग उसे पूर्व बोर्ड अध्यक्ष जगमोहन डालमिया का परिंदा बताते रहे. चयन समिति सहित सभी उस की कप्तानी और खिलाड़ी के रूप में सफलताओं को भूल गए. गांगुली की जगह कोई और होता तो शायद उस का हौसला भी साथ छोड़ देता और वह क्रिकेट से संन्यास ले लेता.



पूर्व कप्तान कपिलदेव ने भी कुछ ऐसा ही सुझाव दिया पर गांगुली की प्रशंसा करनी होगी कि वह डटे रहे और घरेलू प्रतियोगिता में बराबर खेलते हुए अपने खेल कौशल के झंडे गाड़ते रहे. लगता था कि यह मामला ठंडा हो रहा है कि तभी आस्ट्रेलियाई कोच ने लंदन के एक अखबार 'गार्जियन' को दिए गए अपने इंटरव्यू में शायद इस

हम से कि उन्होंने आखिर गांगुली को
ट टीमों से बाहर करवा ही दिया,
नेक अनर्गल बातें भी कह डालीं. एक
चैपल ने यह मान लिया कि गांगुली ने



उन्हें भारतीय टीम का कोच बनवाया
किंतु चैपल ने यह भी कह दिया कि
का अर्थ यह नहीं कि पिछले कोच
राइट की तरह गांगुली मुझे भी अपने
रों पर नचा लेगा.

चैपल ने कहा कि उन्होंने ही गांगुली
कप्तानी छोड़ने की सलाह दी थी और
था कि उन में अब नेतृत्व क्षमता नहीं
है. साथ ही इस पूर्व आस्ट्रेलियाई
ाड़ी ने इस इंटरव्यू में गांगुली पर यह
या आरोप भी लगा दिया कि कप्तानी
न की दिलचस्पी केवल पैसा कमाने
लए थी. चैपल ने अपने इस कथन से
वल गांगुली जैसे समर्पित खिलाड़ी
अपमान ही किया बल्कि कहना
ए कि उन की यह टिप्पणी पूरे
ीय क्रिकेट का अपमान थी.

गांगुली ने अपने सम्मान को इस
ठेस पहुंचाने के विरोध में मानहानि
ावा करने का विचार कर लिया
किंतु साथ ही उन्होंने बोर्ड अध्यक्ष शरद पवार को भी इस संबंध में पत्र भेज दिया. देश भर में चैपल के कथन पर गंभीर प्रतिक्रिया हुई.

ग्रेग चैपल इस तरह की छोटी बात करते हुए यह भूल गए कि उन्हें भारतीय बोर्ड ने पारिश्रमिक और कुछ अन्य सुविधाएं दे कर भारतीय क्रिकेट टीम को प्रशिक्षण देने के लिए अपनी सेवा में रखा है, खिलाड़ियों पर टिप्पणियां करने के लिए नहीं. उन्हें यह अधिकार नहीं कि वह एक पूर्व कप्तान और सम्मानित खिलाड़ी का यों अपमान करें. बोर्ड अध्यक्ष ने इस ओर ध्यान दिया. शरद पवार ने कप्तान राहुल द्रविड़ और कुछ वरिष्ठ खिलाड़ियों से बात की. बाद में ग्रेग चैपल को बुला कर हिदायत दी कि आगे से किसी भी खिलाड़ी पर ऐसी टिप्पणी न करें.

*

जिस प्रकार भारतीय भारोत्तोलकों पर एथेंस ओलिंपिक्स 2004 और उस से पहले भी शक्तिवर्धक दवाएं खाने के आरोप सिद्ध होते रहे हैं, उस से लगने लगा था कि हमारे भारोत्तोलकों का ऐसी दवाओं से नजदीकी रिश्ता है. मजे की बात यह है कि किसी भी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जाने से पहले भारतीय खेल प्राधिकरण की प्रयोगशाला में अन्य खिलाड़ियों की तरह उन का भी डोप टैस्ट होता है. फिर वहां जाने तक यह दवाएं उन्हें कैसे और कहां से मिल जाती हैं? क्या संबंधित कोच और वेट-लिफ्टिंग फेडरेशन के अधिकारियों को इस की जानकारी नहीं होती? या फिर खिलाड़ी चोरीछिपे ही ऐसी मादक दवाएं हासिल कर उन का सेवन कर लेते हैं.

अब एक और ऐसा ही मामला सामने आ गया. गत 15 मार्च से आरंभ मैलबर्न राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक की एक मजबूत दावेदार महिला भारोत्तोलक शैलजा पुजारी इन खेलों में

जाने से पहले ही डोप टैस्ट में असफल हो गई. शैलजा को 75 किलोग्राम वर्ग में भाग लेना था. यह परीक्षण पटियाला में चयन प्रतियोगिताओं के दौरान विश्व एंटीडोपिंग एजेंसी द्वारा 7 और 8 फरवरी को किए गए थे. पिछले राष्ट्रमंडल खेलों में शैलजा ने 3 स्वर्ण पदक जीते थे.

यह दूसरा अवसर है जिस में शैलजा को दवा खाने का दोषी पाया गया. इस से पहले 2003 में भी जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप में वह दोषी पाई गई थीं. भारोत्तोलक संघ द्वारा एंटीडोपिंग एजेंसी से एक बार फिर मूत्र सैंपल 'बी' का टैस्ट करने के लिए कहा जा रहा बताया. यदि उस में भी वह दोषी पाई गई तो उस पर सदा के लिए प्रतिबंध लगा दिया जाएगा.

आश्चर्य तो इस बात पर है कि उस पर 1 वर्ष का प्रतिबंध अभी कुल 7 महीने पहले ही समाप्त हुआ था. उस के बाद राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों के दौरान 9 बार उस का परीक्षण हो चुका है और परिणाम ठीक थे. अब जब पटियाला में विश्व एंटीडोपिंग एजेंसी के अधिकारियों ने परीक्षण किया तो उसे पाजिटिव पाया गया. मैलबर्न राष्ट्रमंडल खेलों से तो अब वह रह ही गई, जीवनपर्यंत प्रतिबंध का भय भी अब सिर पर मंडराने लगा.

*

मैलबर्न राष्ट्र मंडल खेलों में हाकी मुकाबलों में भारतीय टीम कैसा प्रदर्शन करती है, इस पर तो नजर रहेगी ही किंतु गत फरवरी में जो श्रृंखला भारत-पाकिस्तान के दरम्यान खेली गई, उस में तो भारतीय खिलाड़ी कमजोर ही दिखे. 6 मैचों की इस श्रृंखला में दोनों में देशों 3-3 मैच खेले गए. भारत में तीनों मैच जीत कर श्रृंखला तो पाकिस्तान ने पहले ही कब्जे में कर ली थी. हां, भारत ने अवश्य ही फैसलाबाद का मैच 3-1 से जीत कर पाकिस्तान के जीत के इस सिलसिले को तो उन की धरती पर ही तोड़ दिया लेकिन अंत में छठा मैच रावलपिंडी में 3-3 से ड्रा रहा. पाकिस्तान 4-1 से श्रृंखला जीत गया.

चलिए, यह तो दोस्ताना सीरीज थी या कहिए अभ्यास मैच थे दोनों देशों के लिए. किंतु भारत की न जाने कब से चली आ रही कमजोरियां वर्षों बाद अभी भी बदस्तूर कायम हैं. पैनल्टी कार्नर हो या सीधे निशाना दागने की क्षमता या सटीक पास देने की योग्यता, सभी में कमियां हैं. यदि यही स्थिति रहती है तो भले ही राष्ट्रमंडल खेल हाकी हम जीत भी जाएं पर ओलिंपिक और विश्वकप हाकी में वह आसान नहीं रहेगा. ●



व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

29 वर्षीय, 5'1", क्षत्रिय कोष्टा, बी.काम., एम.ए. (साहित्य) मोंटेसरी ट्रेंड कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

32, 160, कंप्यूटर इंजीनियर युवक, यू.एस. ग्रीन कार्ड होल्डर हेतु शिक्षित, उत्तम परिवारीय कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. विवरण भेजें : Sanjeev. 0119052907690, 00116478872722, Delhi : Pradeep. 9810136448, Rajinder. email : sanjeev@rogers.com

35, 5'7", सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, इकहरे बदन, सेक्स अनिच्छुक जीवनसाथी. कोई बंधन नहीं. विस्तृत विवरण सहित लिखें : Her self can also contact email : kaman_pin@yahoo.co.in

26, 175, बी.काम., बंसल, निजी व्यवसाय, बड़ी बाजार, युवक हेतु खूबसूरत घरेलू कन्या से वैवाहिक आमंत्रण. संपर्क : राजेंद्र 9810336565. ...सी. बंसल. 9810666108.

लेजर कास्मेटिक सर्जरी

लेजर द्वारा अनचाहे बालों, काली झाइयों, ...सों के दाग, जन्मजात दागों का इलाज ... कास्मेटिक सर्जरी, अमेरिका प्रशिक्षित कास्मेटिक ...न द्वारा. ई-34, ग्रेटर कैलाश-I, नई दिल्ली-...048. फोन : 26486912, 26436550.

सेरोगेट मदर

निसंतान दंपती मुंबईवासी हेतु जवान सुदर्शनी ...ना सेरोगेट मदर चाहिए. उचित इनाम ...ासित. संपर्क : 9892107285.

होस्टल

दीपशिखा छात्रा होस्टल, 20 मिशन कंपाउंड, ...ब्रिज के पास, मेरठ, अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल डा. ... गुप्ता द्वारा संचालित, शांत घर जैसा सुरक्षित ...रण, सुरुचिपूर्ण व स्वादिष्ठ भोजन, वाटर कूलर, ...की सुविधाएं. टेलीफोन व प्राथमिक चिकित्सा ... बड़े जेनरेटर द्वारा निरंतर बिजली उपलब्ध. ...ा के लिए संपर्क करें. फोन : 0121-2421143.

टूर एंड ट्रैवल्स

ट्रैवलईज : रेल तथा वायुसेवा की टिकटें, टैक्सी/कार की सुविधा, होटल बुकिंग तथा भ्रमण संबंधी अन्य सुविधाएं. विशेष हालीडे पैकेज-शिमला, मनाली तथा मसूरी के लिए. इस के अतिरिक्त देशविदेश के लगभग 100 से अधिक स्थानों पर जैसे, नैनीताल, डलहौजी, दार्जिलिंग, विदेश में मारीशस, बैंकाक, फुकेट, यूरोप, यू.एस.ए. आदि में सभी भ्रमण सुविधाओं के लिए संपर्क करें. फोन : 22459136, फैक्स : 9111-22502959 अथवा मंगलम आर-50, विकास मार्ग, नई दिल्ली (रविवार खुला है).

जासूसी

विवाह पूर्व/पश्चात, गुमशुदा आदि सभी प्रकार की गुप्त/विश्वसनीय तहकीकात हेतु 'टाइम्स' डिटैक्टिव (रजि.) # 09871233332, 011-55175007.

फैंसी ड्रेस

सभी तरह की बच्चों की फैंसी ड्रेस (स्कूल कार्यक्रम, डांस, नाटक हेतु) किराए पर उपलब्ध. चुनमुन फैंसी ड्रेस, 011-25398813, 9868222068.

सुहाग कलीरा

"सुहाग का गहना, दुलहन ने पहना." जो-जो कलीरा. अमृतसरी कलीरा. स्पेशल टिन बाक्स पैकिंग. संपर्क : अपना स्टोर्स 1/6704, ईस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32, आर.के. बैंगल 22428B, ग्राउंड-फ्लोर, सारागी मैनसन, एम.आई. रोड, जयपुर 302003.

रिक्त स्थान

दंपती या महिला अच्छी अंगरेजी ज्ञान सहित शिक्षित प्रबंधन एवं अकाउंटिंग, मुंबई के पास प्रोपर्टी हेतु. संपर्क : Sharda 09870196962.

शिक्षा

इंटीरियर डेकोरेशन डाक द्वारा सीखिए. इंगलिश/हिंदी माध्यम, एकेडमी आफ इंटीरियर डेकोरेशन, 10ए/14, शक्ति नगर, दिल्ली-110007.

गोद विज्ञापन

संभ्रांत बुजुर्ग व्यक्ति किसी भी उम्र के लड़के/लड़की को गोद लेने अथवा किसी स्त्री/दंपती की संगति हेतु इच्छुक. सभी सुख, आजीवन पेंशन और फोन : 0-9811435329. email : lifelongwisdom@hotmail.com वि.नं. 1208. सरिता, नई दिल्ली-110055.

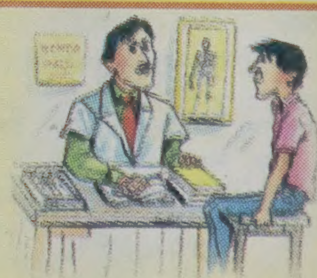
मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

अपनी शिकायतें निम्न पते पर भेजें : सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.



मुझे शिकायत है उन बच्चों से जो अपने रिश्तेदारों से फ्री में ट्यूशन पढ़ते हैं और किसी भी समय पढ़ने आ धमकते हैं. —शैलजा



मुझे शिकायत है उन होमियोपैथिक डाक्टरों से जो स्वयं को ऐलोपैथिक इलाज में भी पारंगत समझ कर भोलेभाले मरीजों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करते हैं. —अनुराग



मुझे शिकायत है ऐसे पड़ोसियों से, जो छोटीछोटी बातों पर लड़ाई-झगड़ा कर के दूसरे लोगों का जीना हराम कर देते हैं. —सतीश कुमार



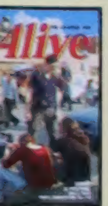
मुझे शिकायत है उन दुकानदारों से, जो कुछ ग्राहकों से देर तक मनोरंजक बातें करते रहते हैं और दूसरे ग्राहकों को चीजें समय पर नहीं देते. —अंजु कुमारी



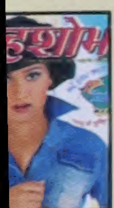
मुझे शिकायत है ऐसे पुरुषों से जो अपनी पत्नी को सम्मान देने के बजाय उस का अपमान करते हैं और उस पर हाथ उठाते हैं. —शर्मिला पुरी ●

सुरुचिपूर्ण व मनमोहक पत्रिकाएं

जो हर आयु वर्ग के लाखों पाठकों द्वारा पसंद की जाती है. शायद ही कोई विषय हो जो इन पत्रिकाओं की संपादकीय सूझबूझ से अछूता रहता हो.



रेजी की
वर्द्धक, प्रेरक
समीक्षात्मक
क पत्रिका जो
ाकांक्षी पाठकों
सफलता की राह
ती है.
काशित एवं
र्चित पुस्तकों
विशद समीक्षा
का विशेष
षण है.



(पाक्षिक),गुजराती,
, कन्नड़, तमिल,
मलयालम और
में प्रकाशित युवा
ओं की चहेती
क पत्रिका, जो उन
शाओं और
ओं को पूरा
है- गृहशोभा के
आकर्षण हैं नएनए
आधुनिकतम
रोचक कहानियां
क्तिगत समस्याओं
लझाने वाली



सामाजिक क्रांति की उद्देश्यपूर्ण पत्रिका जो हृदयस्पर्शी कहानियों, विचारोत्तेजक लेखों, ज्वलंत विषयों तथा फिल्म समीक्षाओं द्वारा पूरे परिवार को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करती है.



आगे बढ़ते किशोरों के लिए हिंदी की लोकप्रिय मासिक पत्रिका, जिसकी शिक्षाप्रद, मनोरंजक एवं चरित्रनिर्माण में सहायक कहानियां युवा पाठकों को सार्थक ज्ञान प्रदान करती हैं.



हिंदी, अंगरेजी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, मलयालम व कन्नड़ में ४ से १० वर्ष के आयु वर्ग के नन्हेमुन्नों की रंगबिरंगी पाक्षिक पत्रिका.



युवाओं के लिए हिंदी में एकमात्र मासिक पत्रिका जो कहानियों के साथसाथ व्यक्तित्व विकास, कैरियर संबंधी मार्गदर्शन, उद्योग, फैशन तथा फिल्म विषयक लेख एवं अनेक सामग्री के लिए लोकप्रिय है.



भारत की सब से अधिक बिकने वाली अंगरेजी पाक्षिक पत्रिका जो परिवार की सच्ची सहेली व शुभचिंतक होने के साथसाथ मनोरंजन भी करती है. महिला उपयोगी लेखों, कहानियों, स्वादिष्ट व्यंजन विधियों, नवीनतम फैशन तथा फिल्म संबंधी रोचक सामग्री से भरपूर.



जनसामान्य के लिए हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल व तेलुगु की लोकप्रिय पाक्षिक पत्रिका, जिसमें विशेष रूप से चुनी हुई ऐसी सामग्री प्रकाशित की जाती है, जो मनोरंजक होने के साथसाथ ज्ञानवर्द्धक भी होती है और पाठकों को जीवन में आगे बढ़ने में सहायता करती है.

सभी तो इन्हें पढ़ते, पसंद करते हैं व चाहते हैं.

दिल्ली प्रेस पत्र समूह
ई-3 झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055(भारत)

ita (Hindi) Fortnightly/(April-I) Rs.23/- (REGISTERED)RNI 625/57/DL(C)-14/1088/06-08/U(C) 151/16/2006